CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2001

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2001

Contents

28 February 2001 Vol. 15 No. 1

31 March 2001 Vol. 15 No. 2

31 May 2001 Vol. 13 No. 3

30 June 2001 Vol. 15 No. 1

31 August 2001 Vol. 15 No. 5

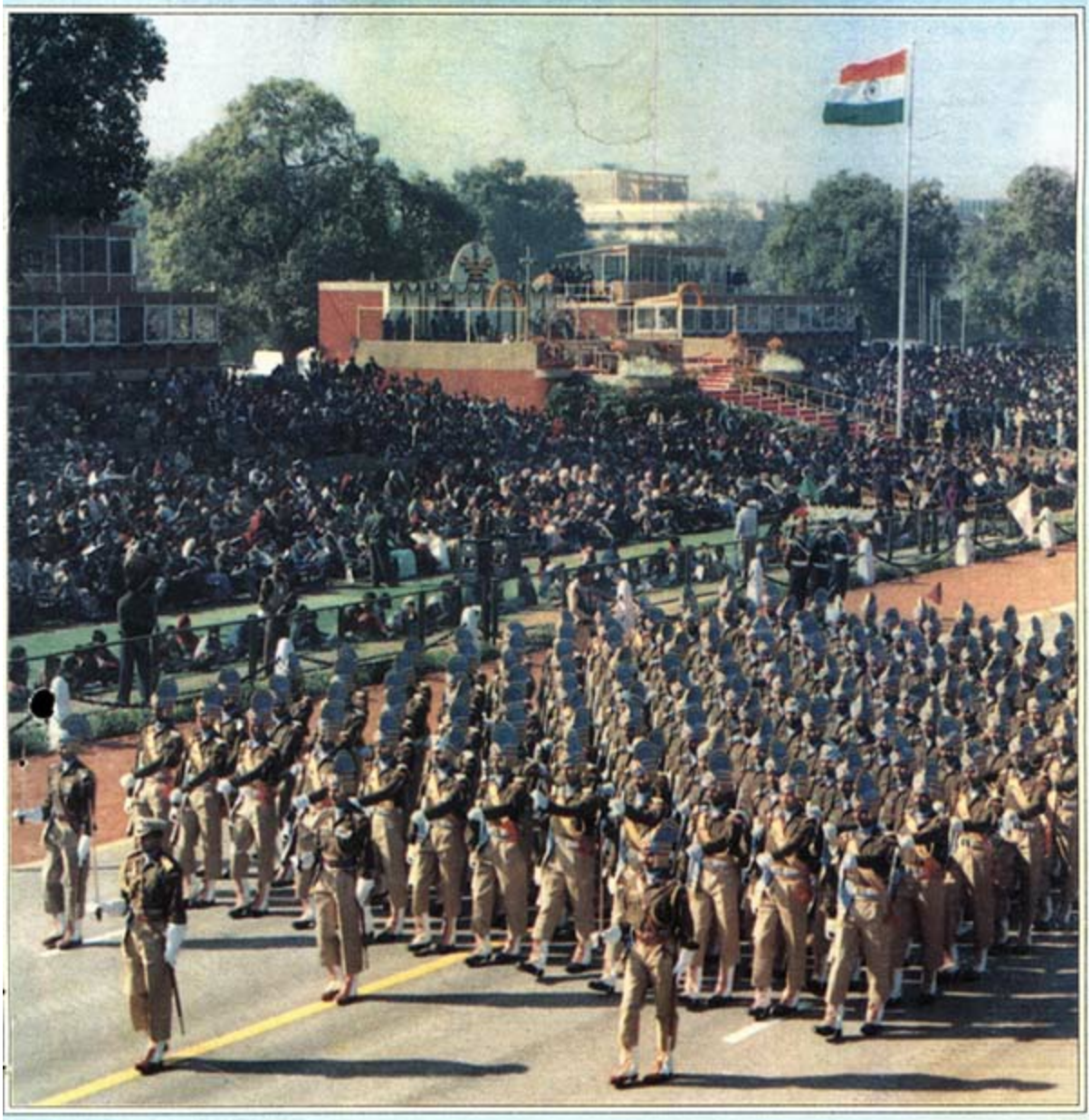
30 September 2001 Vol. 15 No. 6

30 November 2001 Vol. 15 No. 7

31 December 2001 Vol. 15 No. 8

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

28 फरवरी, 2001



गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेता केरिपु बल का दस्ता



*61*वीं वार्षिक परेड के अवसर पर एक विधवा को पदक प्रदान करते गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-15 अंक-1
29 फरवरी, 2001
10 फाल्गुन, शक 1922

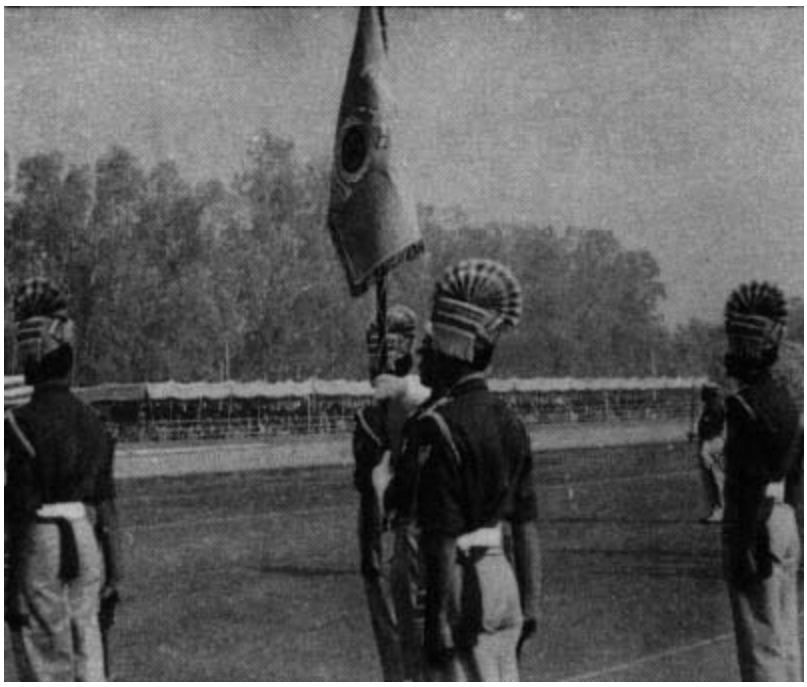
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में केरिपु बल का योगदान उल्लेखनीय

केरिपु बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केरिपु बल कल्याण मेला और प्रदर्शनी

केरिपु बल के दो दस्ते गणतंत्र दिवस परेड में

37 केरिपु बल कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

गुजरात के भुकंप प्रभावित इलाकों में केरिपु बल का बचाव और राहत अभियान

केरिपु बल ने तीन करोड़ सात लाख रूपये दिये प्रधानमंत्री राहत कोष में

55 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम

64 बटालियन की प्रशंसा की मुख्य मंत्री ने

माह दिसंबर, 2000 तथा जनवरी 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

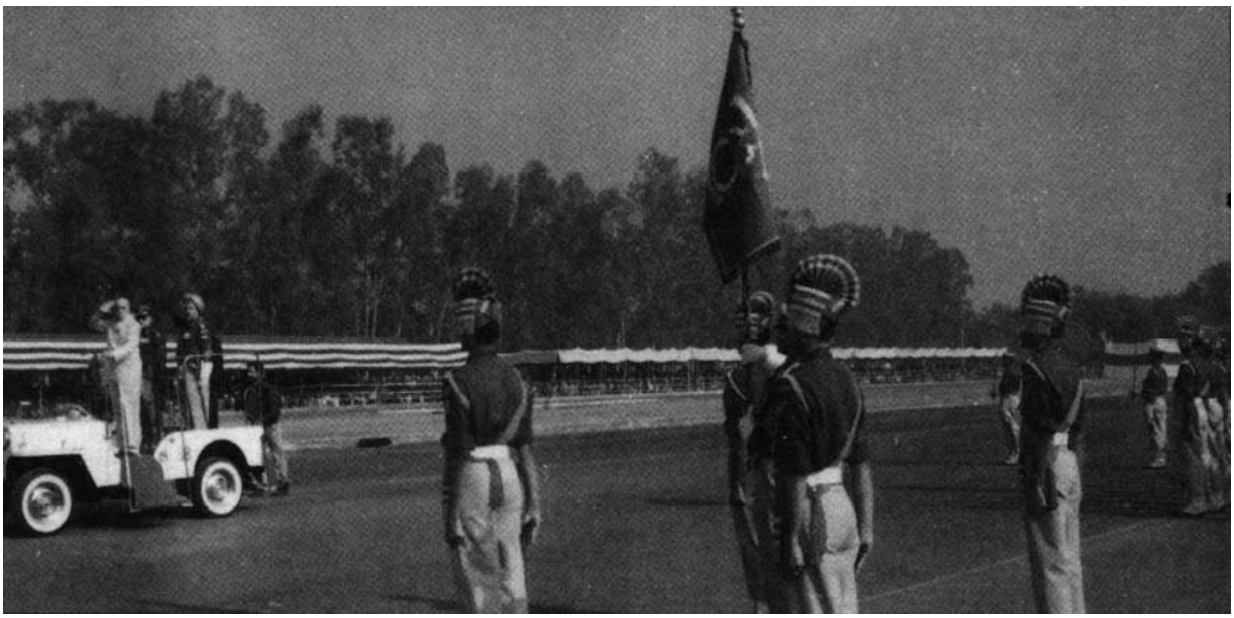
कविता

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

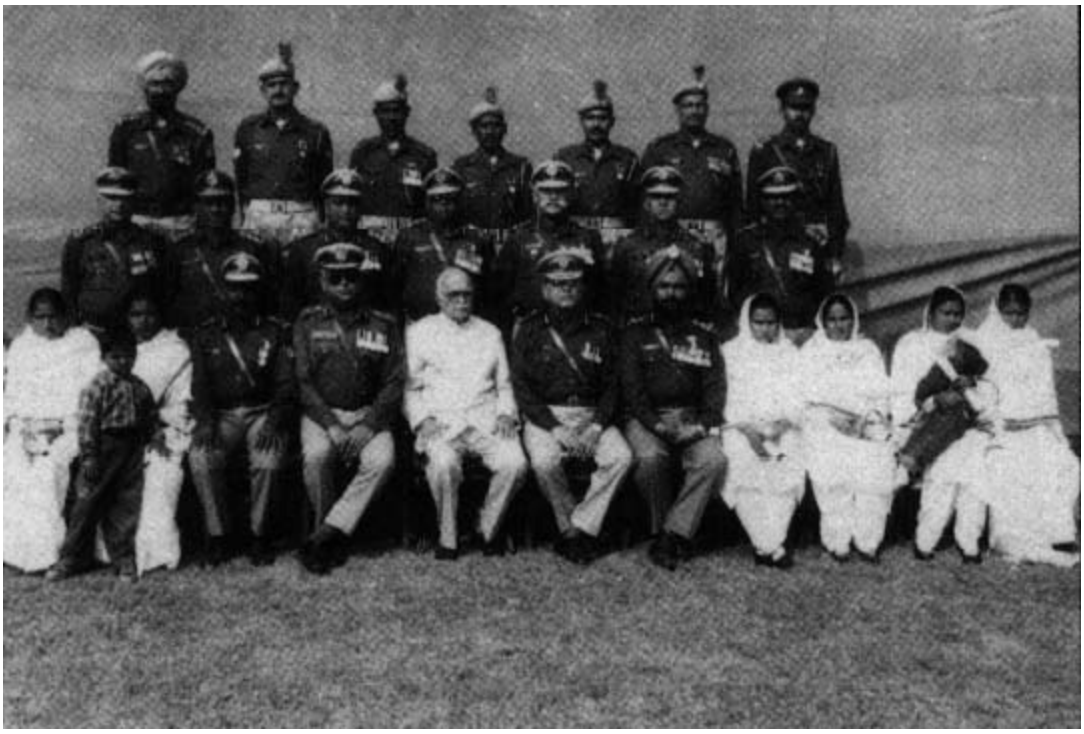
देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में केरिपु बल का योगदान उल्लेखनीय

-श्री लाल कृष्ण आडवाणी



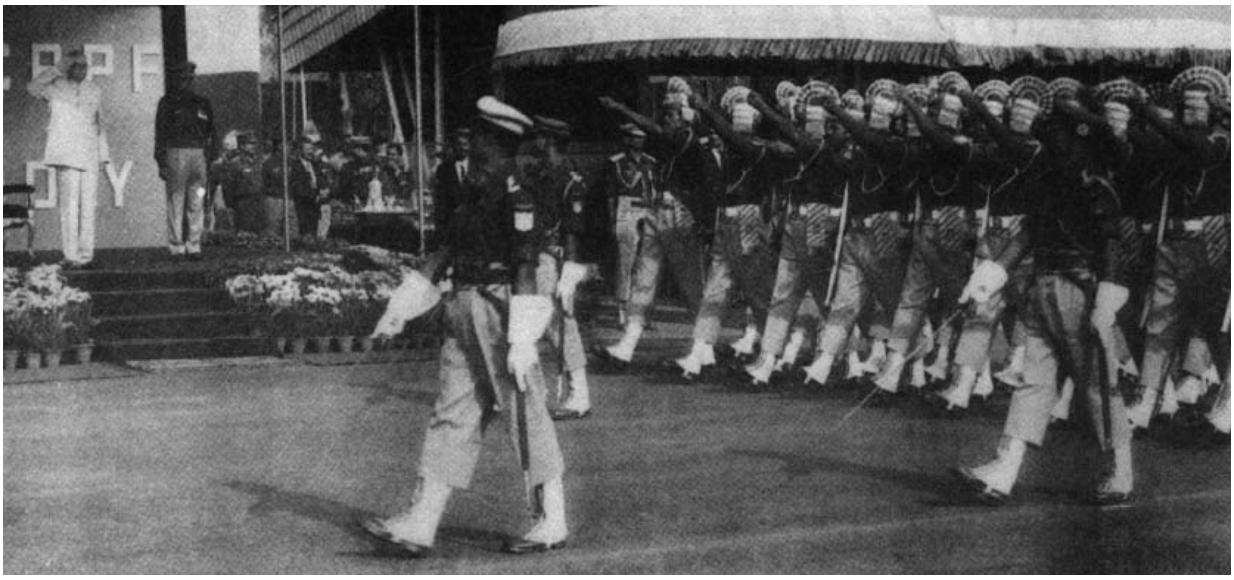
परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी

गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने बताया कि योजना आयोग ने केन्द्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के कार्मिक के आवास के लिए 120 करोड़ रुपये की एक योजना की स्वीकृति दे दी है। गृह मंत्री केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 61वीं वर्ष गांठ के अवसर पर 28 दिसम्बर 2000 को बल के ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में आयोजित एक भव्य परेड को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। गृह मंत्री ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कल्याण कोष में कल्याण कार्यक्रमों के लिए 2 करोड़ रुपये देने की भी घोषणा की।



वार्षिकोत्सव के दौरान पदक विजेताओं के साथ गृह मंत्री

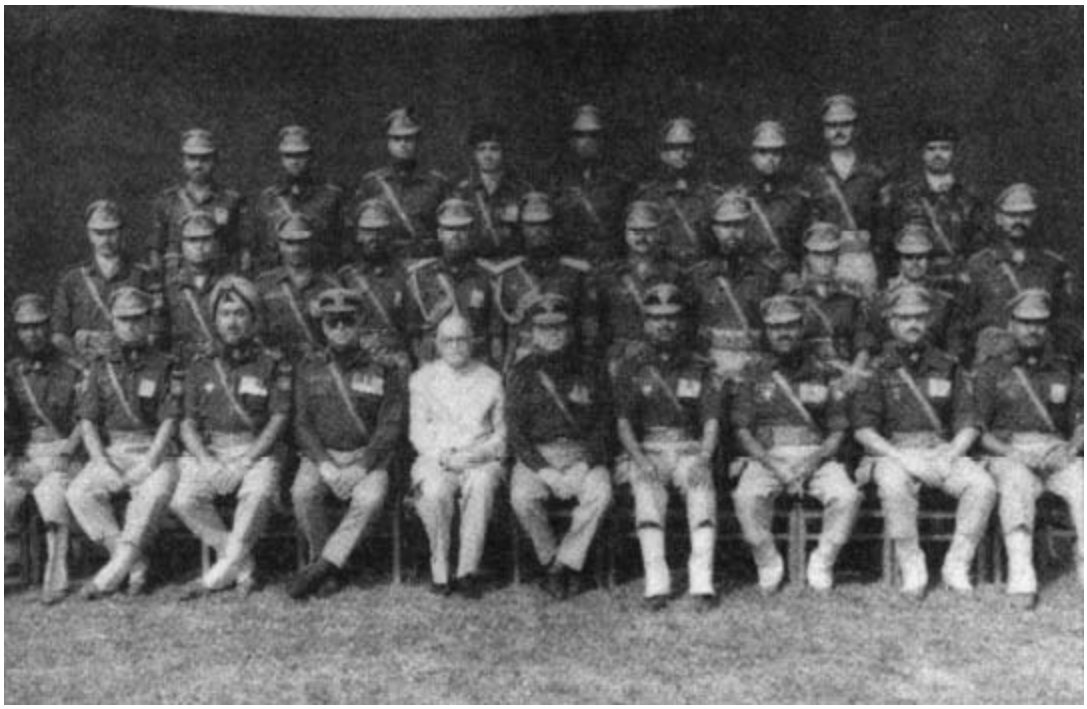
श्री आडवाणी ने जम्मू कशमीर और उत्तर-पूर्वी राज्यों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों द्वारा आतंकवाद के विरूद्ध मुहिम में दिये जा रहे योगदान की भरपूर प्रशंसा की और कहा कि केरिपु बल के जवान किसी से भी कम नहीं है और हर क्षेत्र में वे अग्रणी रहे हैं। इस मौके पर उन्होंने सात शहीद कार्मिकों के परिजनों सहित कुल 21 अधिकारियों और जवानों को शौर्यवीरता एवं विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये। इस मौके पर गृह मंत्री ने बल की 49 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान की, जबकि 60 बटालियन को उत्तर पूर्वी राज्यों में स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन और 28 बटालियन को जम्मू कशमीर स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी दी गयी। ग्रुप केन्द्र 2 अजमेर को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र, और वित्तीय अनुशासन की दो ट्राफियां प्रदान की गयी।



परेड की सलामी लेते हुए गृह मंत्री

इससे पूर्व गृह मंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने बल के इतिहास और गौरवशाली परंपराओं का परिचय देते हुए बल की तात्कालिक आवश्यकताओं और समस्याओं की और भी गृह मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया।

गृह मंत्री ने इस मौके पर एक आलीशान परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली। परेड में एक महिला टुकड़ी सहित बल के विभिन्न सेक्टरों की 11 टुकड़ियां शामिल थी। साथ ही बल के पदक विजेता और अर्जुन पदक विजेता खिलाड़ी भी परेड में शामिल थे। परेड का नेतृत्व कमांडेट गुरेंद्रजीत सिंह ने किया। इस मौके पर गृह सचिव श्री कमल पांडे सहित केन्द्रीय एवं अन्य पुलिस बलों के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।



परेड कमांडरों के साथ गृह मंत्री

केरिपु बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन



वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

"कर्तव्य निर्वाह के दौरान आने वाली चुनौतियों तथा कठिनाइयों का सामना करने के लिए साधनों और उपायों के विकास के लिए आप लोगों को प्रयास करने चाहिए।" 29 दिसम्बर, 2000 को बल ने मुख्यालय में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 61वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित केरिपु बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि भारी तैनाती, दबाव और तनाव के बावजूद केरिपु बल ने 2000 में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। बल की परिचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक बटालियन की एक कम्पनी को रोटेशनल ट्रेनिंग दिये जाने पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने ये भी कहा कि कई वर्षों के अंतराल के बाद हमने फील्ड एक्सरसाइज प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसी महीने में कम्पनी स्तर पर "आपरेशन अमन" एक्सरसाइज चितौड़ उदयपुर क्षेत्र में की गई है। आगामी वर्ष में हर सेक्टर में इस प्रकार का प्रशिक्षण चलाने की योजना है।

इस चर्चा में अपर महानिदेशक श्री जी.झा महानिरीक्षक के.टी.डी. सिंह और श्री प्रित पाल सिंह सिद्धू ने भी भाग लिया तथा अधिकारियों से अधिक से अधिक परिचालन दक्षता के लिए काम करने का आग्रह किया। इस सम्मेलन में पूरे देश से आए बल के करीब 100 अधिकारियों ने भाग लिया।

केरिपु बल का कल्याण मेला और प्रदर्शनी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दो दिवसीय कल्याण प्रदर्शनी और मेला 26 दिसंबर, 2000 को सीजीओ काम्पलैक्स, लोधी रोड में शुरू हुआ। प्रदर्शनी और मेले का उद्घाटन गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला आडवाणी ने किया और ग्रुप केन्द्र-1 अजमेर और ग्रुप केन्द्र इम्फाल को वर्ष 1998 तथा 1999 के लिए सर्वश्रेष्ठ परिवार कल्याण केन्द्र की ट्राफियां भी प्रदान की। केरिपु बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा मिश्र ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। उत्तरी सेक्टर की महानिरीक्षक श्रीमती मंजरी जारूहार ने मुख्य अतिथि के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रदर्शनी और मेले में पूरे देश में फैले बल के विभिन्न सेक्टरों ने अपने अपने क्षेत्रों की वस्तुओं के स्टाल लगाए। साथ ही बल के परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुएं भी इन स्टालों में रखी गयी। प्रदर्शनी और मेले के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं था।

इस प्रदर्शनी और मेले से होने वाली आय का उपयोग विकलांगों, बच्चों तथा शहीद हुए कार्मिकों की विधवाओं के कल्याण कार्यक्रमों के लिए किया जाएगा।

दिल्ली में इस तरह अंतर सेक्टर स्तर पर आयोजित होने वाली यह छठी परिवार कल्याण प्रदर्शनी है।

केरिपु बल के दो दस्ते गणतंत्र दिवस परेड में



गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेता केरिपु बल बैंड

देश के शांति प्रहरी - केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में दो दस्ते शामिल हुए। इनमें एक दस्ता बल के जवानों का एक और एक दस्ता बैंड वादकों का था।

केरिपु बल के पहले दस्ते में सहायक कमांडेंट मनीश कुमार मीणा तथा दो सब इंस्पेक्टरों के नेतृत्व में 144 जवानों की टुकड़ी थी। रंगीली साजसज्जा वाली बल की इस टुकड़ी के सदस्य गाढे नीले रंग की पगड़ियों, अंगोला कमीजों और खाकी पैंटों पर सफेद चमड़े की पेटी और नीले रंगी का स्कार्फ बांधे थे। इस टुकड़ी के जवानों का औसत कद 6 फुट था।

केरिपु बल की इस टुकड़ी के पीछे 97 सदस्यों वाला केरिपु बल ब्रास बैंड था जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर शिव बहादुर सिंह तीन अन्य अधीनस्थ अधिकारियों के साथ कर रहे थे। केरिपु बल ब्रास बैंड का गठन 1961 में किया गया।

बल की टुकड़ियां राजपथ से केरिपु बल के कथानक गीत "सेवा भक्ति का यह प्रतीक सीआरपीएफ कहाता है" की धुन पर मार्च करती हुयी गुजरी। मार्चिंग दस्ते के जवानों के हाथों में एसएलआर थी, जबकि उनके कमांडरों के हाथों में तलवारें।

---

37 केरिपु बल कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 37 अधिकारियों और जवानों को गणतंत्र दिवस 2001 के अवसर पर राष्ट्रपति के विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पदकों से सम्मानित किया गया है।

तीन कार्मिकों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 34 को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं।

पदक प्राप्त करनेवाले कार्मिक हैं -

राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक

कमांडेंट के पोटट्इया (महानिदेशालय), कमांडेंट आर.एन. मिश्र (ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर) तथा डिप्टी कमांडेंट वी.के. शर्मा (14 बटा)

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

कमांडेंट टी.ए.ए. हकीम (12 बटा.), कमांडेंट एस.एस. अलीखान (99 आरएएफ बटा.), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. वी.एम. सीता लक्ष्मी (बेस अस्पताल-1), द्वितीय कमान अधिकारी करन सिंह (5 सिगनल बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी महिपाल सिंह (24 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी विजय कुमार (67 बटा.), डिप्टी कमांडेंट ईश्वर सिंह (104 आरएएफ बटा.), सहायक कमांडेंट मदन लाल (16 बटा.), सूबेदार

मेजर बाबू सिंह (एसडीजी), सूबेदार मेजर बख्शीश सिंह (122 बटा.), इंस्पेक्टर एस.एस. नेगी (62 बटा.), इंस्पेक्टर ई.आर. मेनन (ग्रुप केन्द्र खटखटी), इंस्पेक्टर शुभ सिंह (107 आर.ए.एफ. बटा.), इंस्पेक्टर सी. राधवन नायर (97 बटा.), इंस्पेक्टर भगवान दास (137 बटा.), सब इंस्पेक्टर चुहार सिंह (ग्रुप केन्द्र पिंजौर), सब इंस्पेक्टर स्वर्ण सिंह (ग्रुप केन्द्र-अजमेर), सब इंस्पेक्टर कलिप सिंह (महानिरीक्षक कार्यालय जम्मू), सब इंस्पेक्टर आर.एन. त्रिपाठी (52 बटा.), सब इंस्पेक्टर गियारसी लाल (100 आरएएफ बटा.), सब इंस्पेक्टर राम नारायण (आरटीसी-I नीमच), सब इंस्पेक्टर हरी सिंह (16 बटा.), हैड कांस्टेबल ड्राईवर मुख्तियार चंद (ग्रुप केन्द्र जालंधर), हैड कांस्टेबल चौधरी राम (3 बटा.), हैड कांस्टेबल गुरदेव सिंह (49 बटा.), हैड कांस्टेबल एस.एस. यादव (10 बटा.), हैड कांस्टेबल भैरू सिंह (5 बटा.), हैड कांस्टेबल एम. लोगानाथन (28 बटा.), हैड कांस्टेबल एम. तेशरिंग (आंतरिक सुरक्षा अकादमी), हैड कांस्टेबल डी. बर्नाड (आर.टी.सी-II आवडी), हैड कांस्टेबल जीत बहादुर (74 बटा.), कांस्टेबल मोहिन्दर कुमार (7 बटा), फार्मेरिस्ट एम.आर. नगीना (46 बटा.) तथा कुक शियोजी शाह (ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर)।

गुजरात के भुकंप प्रभावित इलाकों में केरिपु बल का बचाव और राहत अभियान



बचाव और राहत कार्यों का निरीक्षण करते हुए पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने गुजरात के भुकंप से सर्वाधिक प्रभावित भुज जिले के

बचाऊ ताल्लुका के दो गांवों को गोद लिया है। वोंध और अधोइ दोनों ही गांव भूकंप के केंद्र थे। और इस भूकंप में यह दोनों ही गांव पूरी तरह तबाह हो गये। इन गांवों में केरिपु बल के चिकित्सा दलों द्वारा लगातार घायलों का इलाज किया जा रहा है। बेलसार सिविल अस्पताल के डाक्टरों की एक टीम भी अधोई में स्थापित केरिपु बल के मेडिकल कैम्प के साथ जुड़ गयी है। वोंध गांव में पूरी तरह उजड़ चुके लोगों को केरिपु बल के तम्बुओं में आवास उपलब्ध कराया है। इन पीड़ितों में महिलाओं और बच्चे भी शामिल हैं। केरिपु बल अब तक लगभग 1050 लोगों के लिए आवास की व्यवस्था कर चुका है।

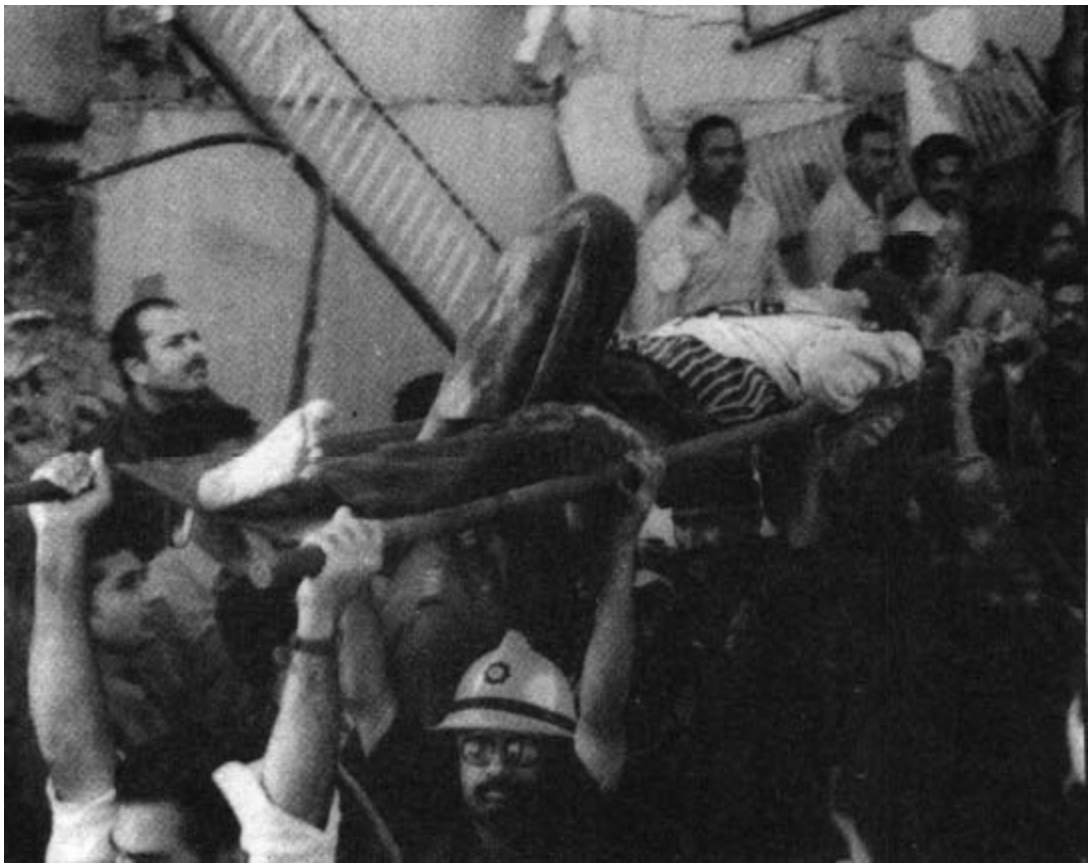
केरिपु बल ने अधिक से अधिक गांवों में अपने टैंकरों, और सिनटेक्स के टैंकों के जरिये पानी भी पहुंचाया है। गोद लिये गये गावों में ब्लीचिंग पाउडर आदि का छिड़काव किया जा रहा है। इन इलाकों में सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा भेजी गयी राहत सामग्री के वितरण का दायित्व केरिपु बल के पास है।

जनता में पुनः विश्वास पैदा करने तथा असमाजिक तत्वों पर रोक लगाने के लिए केरिपु बल के जवान लगातार भूकंप प्रभावित इलाकों में गश्त लगा रहे हैं। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा वित्तीय सहायता उपलब्ध कराए जाने के समय स्थिति को सामान्य बनाए रखने के लिए भी केरिपु बल योगदान दे रहा है।

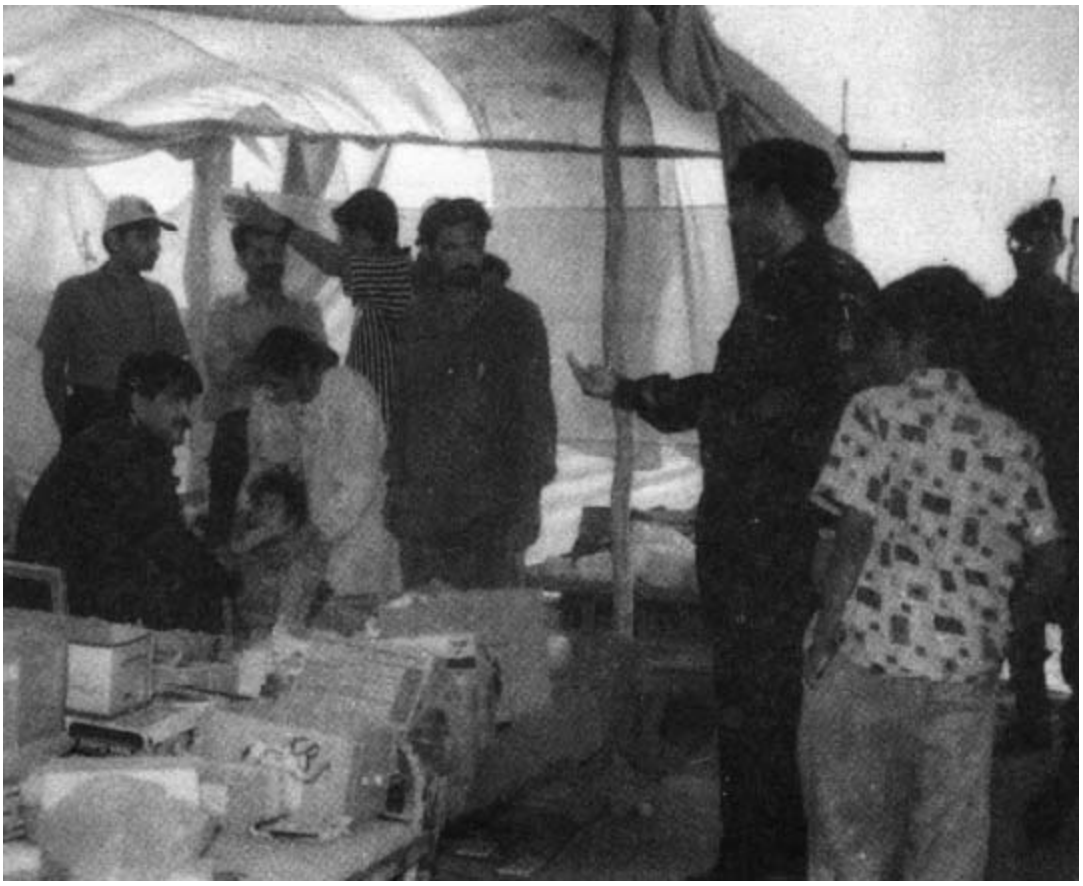
भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में केरिपु बल की एक और आरएएफ की 6 कंपनियों सहित एक डाक्टरों का दल बचाव और राहत कार्यों में लगा हुआ है।

गुजरात के भूकंप से प्रभावित इलाकों में बचाव और राहत कार्यों में जुटी रेपिड एक्शन फोर्स की 6 और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक कम्पनी अब तक मलबे में दबे 618 शवों को बाहर निकाल चुकी है। इसके अतिरिक्त बल के कर्मियों ने 218 घायलों और अन्य व्यक्तियों को भी मलबे से बाहर निकाला। बल का चिकित्सा बल अब तक लगभग 6,000 भूकंप पीडियों का उपचार कर चुका है तथा उनमें चार लाख रुपये मूल्य की दवाओं का भी वितरण कर चुका हैं। बल के कार्मिकों ने भूकंप से बुरी तरह प्रभावित इलाकों में 29725 खाने और राशन के पैकेट भी वितरित किये हैं। बल के कार्मिक अपने टैंकरों के जरिये प्रति दिन 20 चक्कर तक लगा कर प्रभावित इलाकों में पानी पहुंचा रहे हैं।

पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्र स्वयं भुकंप पीड़ित इलाकों में बचाव और राहत कार्यों का निरीक्षण कर रहे हैं।



मलबे में फंसे लोगों को निकालते बल के जवान



भुकंप प्रभावित इलाकों में बल द्वारा लगाए गए चिकित्सा शिविर

केरिपु बल ने तीन करोड़ सात लाख रुपये प्रधान मंत्री राहत कोष में दिये

प्रधान मंत्री के गुजरात भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिये किये गये आह्वान के अंतर्गत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने तीन करोड़ सात लाख रुपये का चैक प्रधान मंत्री राष्ट्रीय सहायता कोष के लिए प्रदान किया। बल के सभी अधिकारियों और जवानों ने यह राशि अपना एक एक दिन का वेतन देकर एकत्र की है।

---

66 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम



सिविक एक्शन के कार्यक्रम के दौरान बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित करते महानिरीक्षक श्री पी.सी. जोशी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 66 बटालियन ने अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले के पामपोर इलाके के राजकीय बालिका माध्यमिक स्कूल का जीर्णोद्धार किया। एक लाख रुपये से अधिक की राशि से इस विद्यालय के तीन कमरों का निर्माण किया गया।

16 दिसंबर, 2000 को ये नवनिर्मित कमरे विद्यालय को सौंपने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर महानिरीक्षक श्रीनगर श्री पी.जी. जोशी भी मौजूद थे। इस मौके पर श्री जोशी ने लगभग 200 स्कूली बच्चों को पाठ्य सामग्री भी वितरित की।

श्रीमती रितु दत्ता ने जीती सौंदर्य प्रतियोगिता



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 5 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी श्री रणदीप दत्ता की धर्मपत्नी श्रीमती रितु दत्ता को मिसेज हैदराबाद चुना गया है। श्रीमती दत्ता को यह खिताब हैदराबाद ने कंट्री क्लब द्वारा आयोजित बेस्ट एलीजेंट वूमेंट कांटेस्ट प्रतियोगिता जीतने पर दिया गया।

दो बेटियों की माता सुश्री दत्ता सिकंदराबाद के हीरो होंडा शोरूम में ईडीपी इंचार्ज है।

55 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम



त्रिपुरा के मुख्य मंत्री श्री माणिक सरकार कार्यक्रम के दौरान स्थानीय नागरिकों को सहायता सामग्री प्रदान करते हुए

केरिपु बल की 55 बटालियन ने 22 दिसंबर, 200 को कुंजावन पश्चिमी त्रिपुरा में सिविक एक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के तहत मैडिकल कैम्प, पाठ्य सामग्री का वितरण तथा स्वास्थ्य स्वच्छता एवं खेलों से जुड़ी सामग्री का वितरण शामिल था। सिविक एक्शन कार्यक्रम का उद्घाटन त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक सरकार ने किया। इस मौके पर भारी संख्या में स्थानीय लोगों ने इस कार्यक्रम में उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के चिकित्सा कैम्प में 1000 से अधिक रोगियों ने लाभ उठाया। इस कार्यक्रम से लगभग 12000 लोगों ने लाभ उठाया।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय जोखिम निधि से माह फरवरी, 2001 में मृत्यु के 32 मामलों में कुल 31,20,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये, इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में 3,20,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाने पर कुंजारानी को केरिपु बल महानिदेशक की बधाई



54वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाने पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कुंजारानी देवी को बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने बधाई दी है। उन्होंने कहा कि देश और बल को आप पर नाज है। पोर्ट इंडोर स्टेडियम विशाखापत्तनम में हुयी पांच दिवसीय वरिष्ठ राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता के प्रथम दिन 17 जनवरी, 2001 को महिला वर्ग में पुलिस स्पोर्टस कंट्रोल बोर्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए कुंजारानी ने 48 कि.ग्राम वर्ग श्रेणी में 185 कि.ग्रा. वजन उठा कर एक नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। जो सिडनी की स्वर्ण पदक विजेता के बराबर है।

64 बटा. की प्रशंसा की नागालैंड के मुख्यमंत्री ने



प्रदर्शनी में स्टालों का निरीक्षण करने आते मुख्य मंत्री श्री एस.सी. जमीर

64 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस ने नागालैंड राज्य के मोकोकचुंग जिले में गणतंत्र दिवस 2001 के अवसर पर अपनी टुकड़ी भेज कर परेड में हिस्सा लिया। श्री एम.एल. मीणा, कमांडेंट-64 बटालियन केरिपु बल, ने नागालैंड के मुख्यमंत्री श्री एस.सी. जमीर की अगुवाई की एवं राज्य भर के विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की टुकड़ियों तथा पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों की टुकड़ियों से परिचय करवाया। मुख्यमंत्री श्री एस.सी. जमीर ने अपने भाषण के दौरान 64 बटालियन, की प्रशंसा करते हुए नागरिकों को सुरक्षा, सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय तथा अन्य प्रकार के सौहार्द बनाये रखने के लिए कमांडेंट श्री एम.एल. मीणा के अथक प्रयास और कार्य कुशलता की प्रशंसा की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में 64 बटालियन, केरिपुबल की टुकड़ियों ने भव्य परेड एवं लेजियम के करतब प्रस्तुत किये। मुख्यमंत्री श्री एस.सी. जमीर ने जवानों के मनोबल को उंचा बनाए रखने के लिए उन्हें पुरस्कार प्रदान किये और उनके कार्यों की हृदय भाव से सराहना की।

ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम को हिंदी कार्यों के लिए शील्ड



ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम को हिंदी में कार्य के लिए शील्ड प्रदान करते राज्यपाल श्री सुखदेव सिंह कांग

11-25 जनवरी, 2001 तक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरूवनंतपुरम के तत्वावधान में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी की प्रतियोगिताओं में ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम के कार्मिकों नें सराहनीय प्रदर्शन किए। प्रतियोगिताओं में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के 103 सदस्य स्थापनाओं के कार्मिकों ने भाग लिया, जिसमें ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम के प्रतिभागियों ने कई पुरस्कार प्राप्त किए।

ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम को हिंदी कार्यों के लिए चल वैजयंती ट्रॉफी प्राप्त हुई। इसके अलावा वर्ष 99-2000 के दौरान हिंदी के उत्तम कार्यनिष्पादन के लिए ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम को प्रमाण-पत्र से भी सम्मानित किया गया। यह दोनों पुरस्कार क्रमशः ग्रुप केन्द्र के उप कमांडेंट (प्रशा)/राजभाषा अधिकारी श्री राम चरित्र व निरीक्षक/हिंदी अनुवादक पी.पी. सुनील ने, केरल के राज्यपाल महामहिम श्री सुखदेव सिंह कांग से प्राप्त किये।

माह दिसम्बर, *2000* तथा जनवरी, *2001* में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह दिसम्बर, 2000 तथा जनवरी 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल बिगुलर रामदेव यादव (118 बटा.), कांस्टेबल अब्दुल रहिद मीर (128 बटा.), हैड कांस्टेबल वीर सिंह (9 बटा.), कां. राकेश चंद (62 बटा.), कां. नरेश शर्मा

(62 बटा.), कां. करण सिंह (90 बटा.), जगपाते राम (48 बटा.), कां. शिव कुमार कुशवाहा (48 बटा.), है. कां. राम प्रकाश यादव (48 बटा.), कां. गणेश प्रसाद (80 बटा), है.कां. ओ. जोसफ (37 बटा.), है. कां. रणवीर सिंह (34 बटा.), है. कां. बद्री नारायण (38 बटा.), कां. विनोद कुमार शर्मा (12 बटा.), है. कां. पी.एन. बाबू (38 बटा.), कां. जी. चंद्रमोहन (63 बटा), है. कां. डी.के प्रकाश (53 बटा), है. कां. अशोक कुमार (106 बटा), है. कां. एस. अन्नादुराई (ग्रुप केंद्र बंगलौर), स.उ.नि. विपिन गोगाई (ग्रुप केंद्र खटखटी), कां. अंजनी कुमार मिश्रा (125 बटा.), है. कां. अजमेर सिंह (84 बटा.), ला. नायक घनश्याम सिंह (123 बटा.), इंस्पेक्टर एम.के.आर नाथन (उ. म. नि. कार्यालय श्रीनगर), कां. उत्तम देव नाथ (ग्रुप केंद्र गुवाहाटी), कां. के. लारेंस (84 बटा.), का. बी. बासुमैत्रयी (87 बटा), कां. ओंकार नाथ गुप्ता (123 बटा), उ.नि. हरेंद्र ठाकुर (87 बटा.), कां. पी. नायडु (87 बटा.), ला. ना. महेश्वर सिंह (123 बटा.), है. कां. चेतन बसेरा (83 बटा.), कां./दफ्तरी वाई. मुनीरतनम (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), कां. बिगुलर सुनील कुमार तिवारी (29 बटा.), ला. ना. राजपाल सिंह (69 बटा), कां. (महिला), बिंदु कुमारे (88 बटा.), सू.मे. एस.बी. चांद (72 बटा.), है. कां. रेडियो आपरेटर लाल चंद (36 बटा.), उ.नि. (एम.) ए.के. पाल (69 बटा.), बारबर कामता प्रसाद (4 बटा), उ.नि. मनोहर लाल (105 बटा) तथा उ.नि. सूरज मान शर्मा (आर.टी.सी. -4)

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार निम्न कार्मिक माह नवंबर, 2000 में मृत्यु को प्राप्त हुए – है.कां. ड्राईवर एच.यू. विड्डुप्पा (135 बटा.), धोबी जियालाल (36 बटा) तथा सूबेदार मेजर के.सी. शाह (124 बटा.)।

इंडो ब्रिटिश इंडयूरेंस चैंपियनशिप - 2001

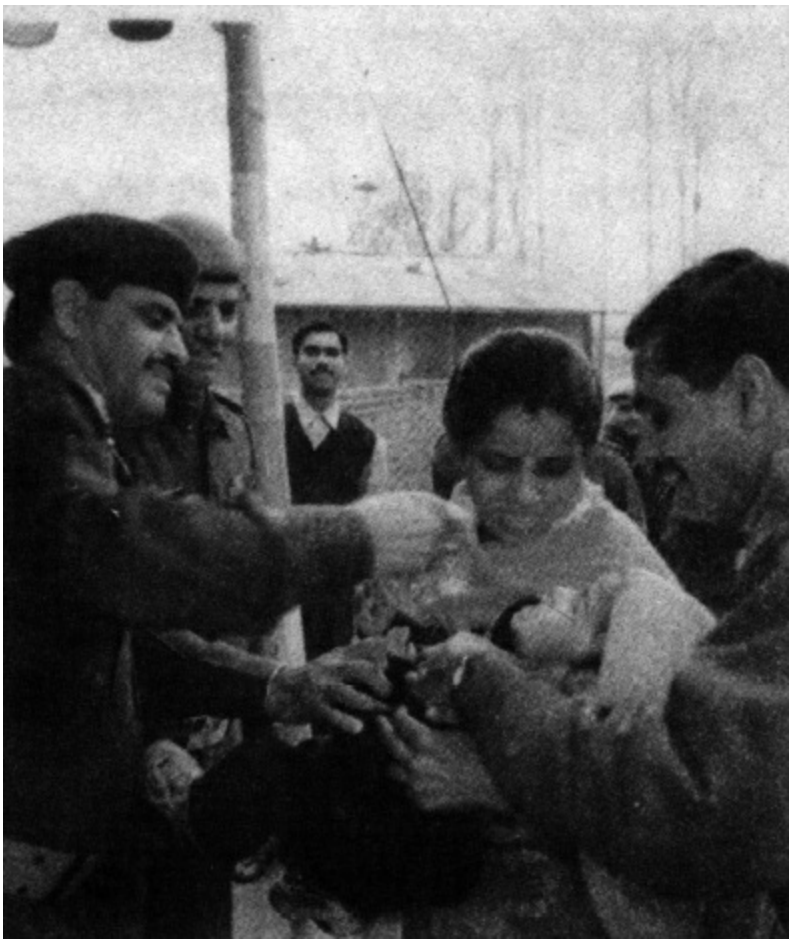
केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने समास्याग्रस्त कोसोवो में नियुक्त स्पेशल पुलिस युनिट (एस.पी.यू) भारत के केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सदस्यों को हाल ही में प्रिस्तीना कोसोवो में हुई इंडो ब्रिटिश इंडयूरेंस चैंपियनशिप-2001 जीतने पर बधाई दी है।

बल की टुकड़ी के कमांडेंट श्री जे. एस. गिल द्वारा मिली एक सूचना के अनुसार यू.के. काम्बेट सर्विसेस स्कार्डन बटालियन, ब्रिटिश के.एफ.ओ.आर. और भारत की स्पेशल पुलिस युनिट के बीच प्रीस्तीना में इंडो ब्रिटिश इंडयूरेस चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। चैंपियशिप में 12.5 कि.मी. क्रास कंट्री, 50 मीटर टाटा 407 बस पुश, 6 × 400 मीटर रिले दौड़, 200 यार्ड फायरमैन्स लिफ्ट और 3000 मीटर रोईंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

स्पेशल पुलिस युनिट भारत की टीम में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का विशेष अंग रेपिड एक्शन फोर्स भी शामिल है। इस प्रतियोगिता में आरएएफ के इन कार्मिकों ने शानदान दमखम का प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता 3-1 से जीत ली।



71 बटालियन द्वारा आयोजित पल्स पोलियो कैम्प में एक बच्चे को पोलियो खुराक पिलाते हुए कमांडेंट श्री अशोक मुंशी



122 बटालियन द्वारा आयोजित पल्स पोलियो कैम्प में एक बच्चे को पोलिया खुराक पिलाते कमांडेंट श्री महिपाल सिंह

कविता

समय क्रान्ति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो

समग्र क्रान्ति के लिए बढ़े चलो, बढ़े चलो।
चलो कि ऊंच नीच, जाति भेद का विनाश हो,
सभी को मिल सके खुशी, न कोई मन उदास हो।
समग्र-शांति के लिए बढ़े चलो, बढ़े चलो।
समग्र-क्रान्ति के लिए बढ़े चलो, बढ़े चलो।
विकास हो मगर किसी का हक कभी छिने नहीं,

बंटे प्रकाश हर जगह न अंधकार हो कहीं।
चलो कि लूट के खिलाफ युद्ध तुम लड़े चलो,
समग्र क्रान्ति के लिए बढ़े चलो, बढ़े चलो।
थके गिरे जो आज हैं, वो क्रान्ति-वीर बन सकें,
दमन की ताकतों के सामने, निडर जो तन सकें।
उन्हीं के वास्ते, नया समाज तुम गढ़े चलो,
समग्र क्रान्ति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
हरे भरे वनों का जिस तरह विनाश हो रहा,
अकाल बाढ़ से उजाड़ हो रही वसुन्धरा।
गगन में चिमनियां मिलों की है धुआं उगल रही,
नदी को गन्दी नालियां जहर में हैं बदल रही।
गलत विकास की दिशा के सामने अड़े चलो,
समग्र क्रान्ति के लिए बढ़े चलो, बढ़े चलो।

एस.एन. मिश्रा, उप-कमांडेंट
102 बटा, द्रुत कार्य बल



केरिपु बल कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन करती श्रीमती कमला आडवाणी

रजि. न. 4767/87



अहमदाबाद में भूकंप प्रभावितों के बचाव कार्यों में लगे आरएएफ के जवान

सी.आर.पी.एफ.
समाचार
31 मार्च, 2001



मानवाधिकारों पर केंद्रीय अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों के बीच हुयी वाद विवाद प्रतियोगिता की विजेता ट्राफी मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा से ग्रहण करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



*49*वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता की ट्राफी बल की टीम को प्रदान करते हुए डा. त्रिनाथ मिश्र



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के बच्चे गुजरात के भूकंप पीड़ितों के लिए एकत्र की गयी राशि का चैक महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र को सौंपते हुए



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-15 अंक-2
31 मार्च, 2001
10 चैत्र, शक 1923

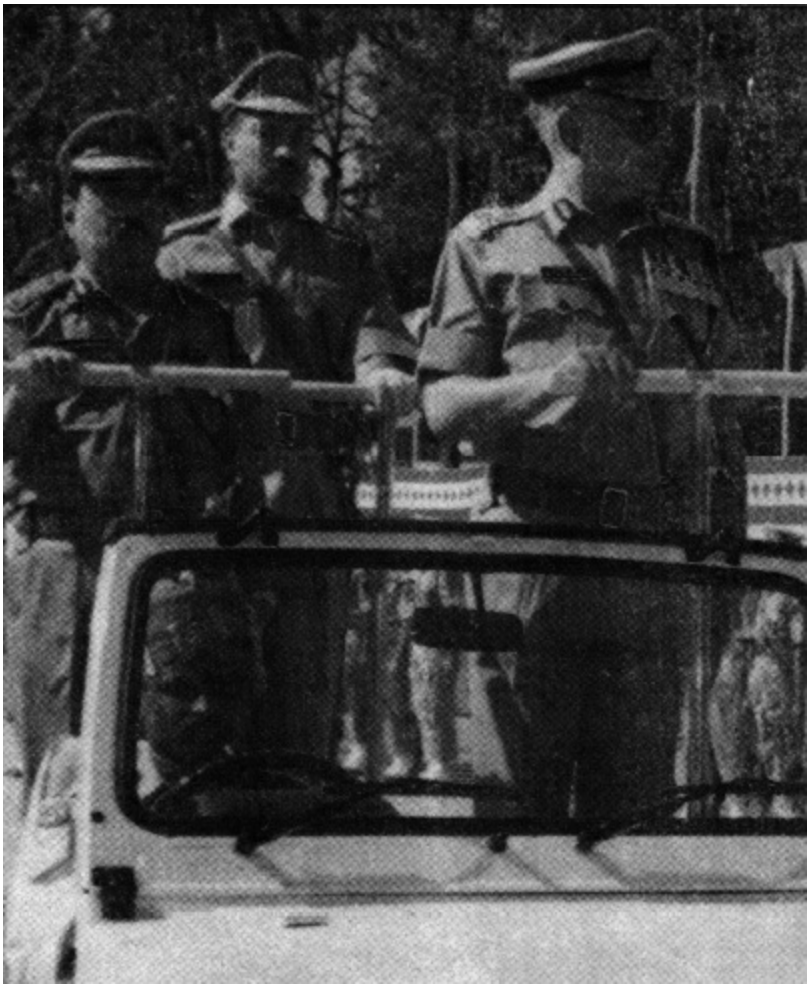
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

32वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड

केरिपु बल – 20वीं बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी का सिरमौर

मानवाधिकारों पर प्रशिक्षण

केरिपु बल ने मानवाधिकारों पर प्रतियोगिता जीती

गुजरात के राज्यपाल ने केरिपु बल की प्रशंसा की

संसदीय राजभाषा समिति का दक्षिण सेक्टर का दौरा

122 बटालियन द्वारा स्कल इमारत में निर्माण

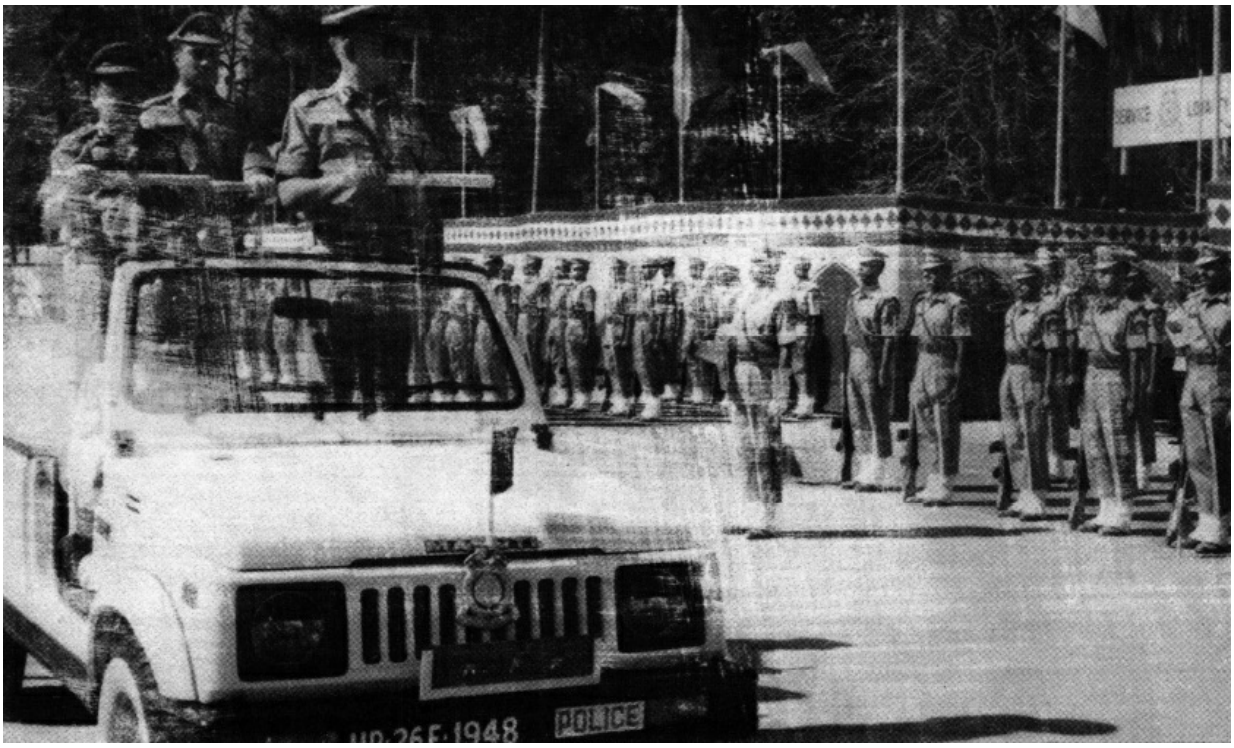
माह फरवरी 2001 में मृत कामैक

मानव

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

*32*वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड



*32*वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

"आज देश की आंतरिक सुरक्षा महज कानून व्यवस्था की स्थिति न रहकर कम क्षमता के बड़े आपरेशनों तथा छाया युद्धों में बदल गयी है। ऐसे में अधिकारियों को जटिल और संवेदनशील आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी पड़ रही है।" 19 मार्च 2001, को माउंट आबू राजस्थान स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सीधे नियुक्तराजपत्रित अधिकारियों के 32वें बैच की दीक्षांत परेड के अवसर पर उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि अधिकारियों को संवेदनशील स्थितियों से निबटते समय दक्षता का परिचय देते हुए चुनौतियों का सामना स्थापित कानून, धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ करना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों का आह्वान किया कि वे जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करें और स्वयं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखें।

केरिपु बल की भूमिका की प्रशंसा करते हुए डा. मिश्र ने कहा कि बीते सालों में इसकी भूमिका में कई नये आयाम जुड़ गये हैं। केरिपु बल आज देश के सर्वाधिक बहुमुखी पुलिस बल के रूप में जाना जाता है। इसे सौंपे गये सभी दायित्वों पर यह

सफलतापूर्वक खरा उतरा है तथा उत्तर पूर्वी राज्यों और जम्मू कशमीर में आतंकवाद विरोधी अभियान तथा आंध्र प्रदेश और बिहार में नक्सलवाद का सामना करने में इसने स्वयं को एक भरोसेमंद पुलिस बल के रूप में स्थापित किया है।

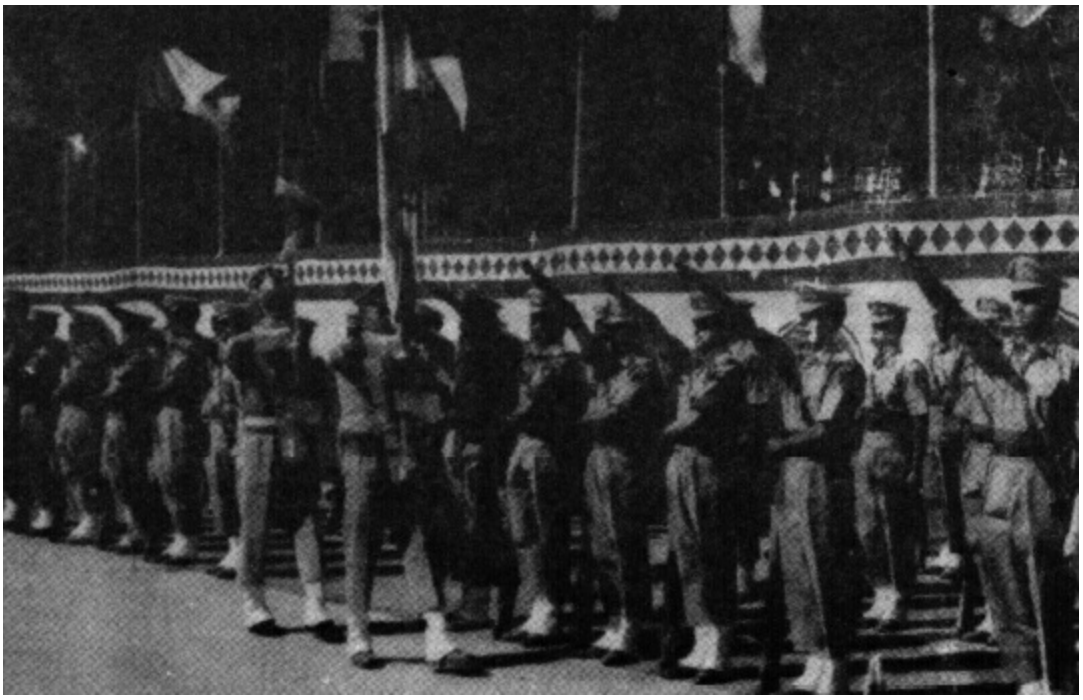
युवा अधिकारियों को बधाई देते हुए डा. मिश्र ने कहा कि केरिपु बल की एक कम्पनी अपने आप में एक लघु भारत का ही रूप है, जिस में देश के हर हिस्से, जाति, धर्म और वर्ग के जवान मिल जाएंगे। उन्होंने अधिकारियों को परामर्श दिया कि कम्पनी के प्रबंधक की हैसियत से उन पर इस संस्कृति और परंपरा को बनाए रखने की जिम्मेदारी के साथ-साथ अपने जवानों का सही मार्गदर्शन करने का दायित्व भी है।



*32*वें बैच के अधिकारी महानिदेशक तथा अन्य अधिकारियों के साथ

आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक श्री नारायण मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक परिदृश्य को दृष्टि में रखते हुए अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किया गया है कि परिस्थितियों से निबटने के लिए उनके अंदर आत्म विश्वास का निर्माण हो।

डा. त्रिनाथ मिश्र ने नव प्रशिक्षित 65 सहायक कमांडेंट अधिकारियों की परेड का निरीक्षण कर उनकी सलामी ली। उन्होंने अपने अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टों प्रदर्शन के लिए अधिकारियों को शील्ड और ट्राफियां भी प्रदान की। श्री ओम हरि ने सोर्ड ऑफ ऑनर तथा गृह मंत्री कप हासिल किया। श्री भवेश चौधरी ने इन्डोर प्रशिक्षण में सर्वोत्तम प्रशिक्षु की ट्राफी प्राप्त की। आउटडोर प्रशिक्षण में सर्वोत्तम प्रशिक्षु की ट्राफी श्री विजेन्द्र सिंह को दी गई एवं परेड कमांडर के लिए श्री दीपक भाटी को बेटन प्रदान की गई।



राष्ट्र के प्रति निष्ठा की शपथ

केरिपु बल - *28*वीं बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी का सिरमौर

–डी.जी. महापात्र



तैराकी प्रतियोगिता के समापन पर प्रतियोगिता के अधिकारियों से परिचय प्राप्त करते डा. त्रिनाथ मिश्र

केन्द्रीय रिवर्ज पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने 49वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं तथा क्रास कन्ट्री दोड़-२००१ में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए केरिपु बल तैराकों को बधाई दी है। ये प्रतियोगिताएं 26 फरवरी से 3 मार्च, 2001 तक औरंगाबाद, महाराष्ट्र से सम्पन्न हुई।

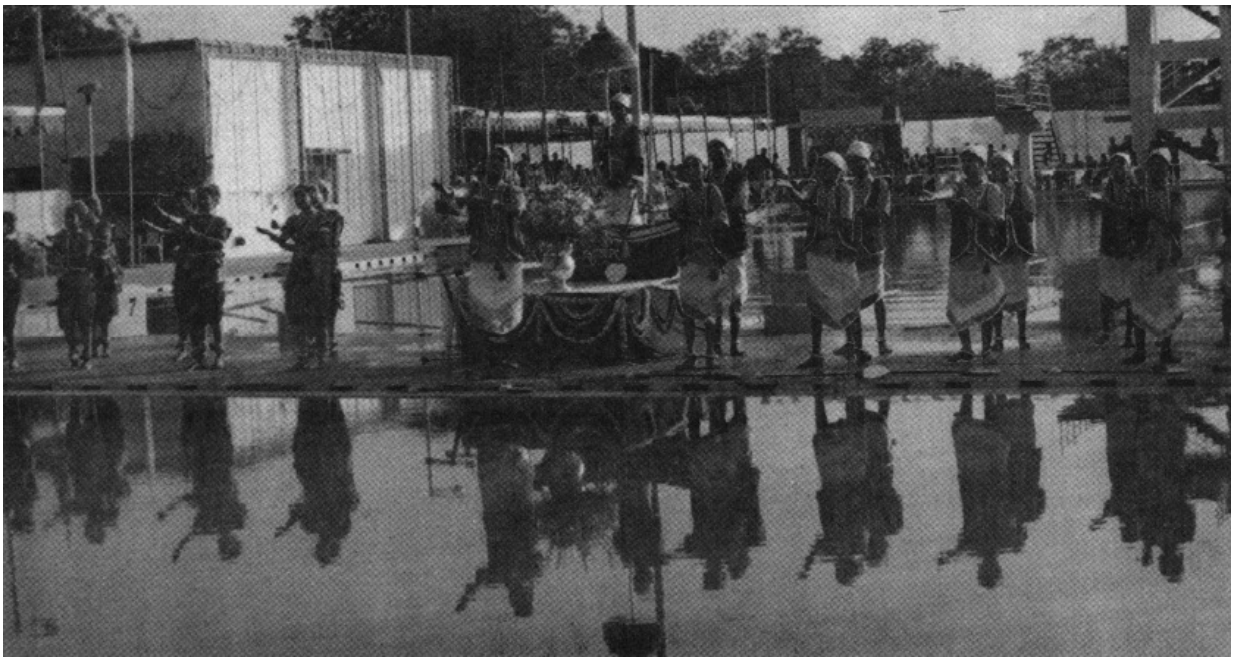
इस 6 दिवसीय प्रतियोगिता की ओवर आल चैम्पियनशिप केरिपु बल के तैराकों ने 213 अंकों के साथ जीत ली। बल की टीम ने तैराकी और वाटरपोलो चैम्पियनशिप भी जीती। तैराकी प्रतियोगिता में बल के तैराकों ने कुल 30 पदक जीते, जिनमें 17 स्वर्ण, 9 रजत तथा 4 कांस्य पदक शामिल हैं। बल के इंस्पेक्टर मुरलीचरण प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किए गए।

वाटरपोलो फाईनल प्रतियोगिता केरिपु बल ने केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को 6-4 से हरा कर जीती। सीमा सुरक्षा बल पंजाब पुलिस बल को 8-4 से हरा कर तीसरे स्थान पर रहा।

क्रास कन्ट्री दौड़ में 80 अंक प्राप्त कर केरिपु बल दूसरे स्थान पर रहा, जबकि 54 अंकों के साथ सीमा सुरक्षा बल को पहला स्थान हासिल हुआ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपने यहां खेलों को बढ़ावा देने तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने में सदैव अग्रणी रहा है। केरिपु बल के खिलाड़ियों की नर्सरी मुख्यतः इस के प्रशिक्षण संस्थान तथा युनिट हैं जहां नवीन प्रतिभाओं की खोज कर उन्हें विकसित किया जाता है। बल के खिलाड़ियों की प्रतिभा तथा खेलों के क्षेत्रों उनके कीर्तिमान सदैव नवोदित खिलाड़ियों को प्रेरणा देते रहे हैं। खेल जीवन में आने वाले हार जीत, आशा निराशा, संघर्ष विजय के पल जीवन का ही एक और रूप है। खेल

मनुष्य को इन स्थितियों का सामना करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। खेलों और केरिपु बल के जीवन की एक समानता यह है कि इन दोनों ही कार्य क्षेत्रों में हर रूकावट के बावजूद अंततः विजय मानव उत्साह की ही होती है। और इसी भावना के फलस्वरूप खेलों को केरिपु के जीवन के एक अंतरंग हिस्से के रूप में शामिल कर लिया गया है।



समापन समारोह के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

केरिपु बल की तैराकी टीम ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों में पहली बार 1960 में भाग लिया। और अपने पहले ही प्रदर्शन में केरिपु बल ने एक स्वर्ण पदक (यह पदक कांस्टेबल विश्वनाथन ने 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में जीता), तीन रजत और तीन कांस्य पदक जीते। इसी वर्ष केरिपु बल ने 12वीं राजस्थान तैराकी प्रतियोगिता की चैंपियनशिप ट्राफी जीत ली।

1963 की पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में केरिपु बल की टीम दूसरे स्थान पर रही। हालांकि उसके बाद का समय उतार चढ़ाव का रहा, मगर अगस्त, 1977 में केरिपु बल पहली बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता की चैंपियनशिप पर कब्जा जमाने में सफल रहा। उसके बाद केरिपु बल के तैराकों ने कभी पलट कर नहीं देखा। केरिपु बल के तैराक 1991 तक लगातार 15 वर्षों तक इस चैंपियनशिप ट्राफी पर कब्जा जमाए रहे। इसके बाद 1993, 1994, 1997 और 1999 में भी केरिपु बल अखिल भारतीय पुलिस तैराकी का चैंपियन रहा। 1992, 1995, 1996 और 1998 में केरिपु बल इस प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रहा। राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली पुलिस टीम में केरिपु बल के तैराक भारी संख्या में शामिल होते रहे है।

1983 में केरिपु बल में सब इंस्पेक्टर के रूप में शामिल हुए खजान सिंह को

आस्ट्रेलियायी कोच एरेक एरनोल्ड की देखभाल में प्रशिक्षण के लिए चुना गया। खजान सिंह आस्ट्रेलिया में अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 1986 के सियोल एशियायी खेलों में भारतीय टीम के एक सदस्य के रूप में शामिल हुए। और इन खेलों में 2000 मीटर बटरफ्लाई प्रतिस्पर्धा का रजत पदक जीत कर खजान सिंह ने एक कीर्तिमान स्थापित किया। एशियायी खेलों की तैराकी प्रतियोगिताओं में किसी भारतीय तैराक द्वारा यह पदक 21 वर्षों के अंतराल के बाद जीता गया था। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। 24 वर्षीय उपाधीक्षक खजान सिंह 1988 के सियोल ओलम्पिक खेलों के लिए भी चुने गये।

अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर खजान सिंह ने अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में कई पदक जीते। कई वर्षों तक तैराकी के कई राष्ट्रीय रिकार्ड भी उनके नाम दर्ज रहे। 1984 में भारत सरकार ने खजान सिंह को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।

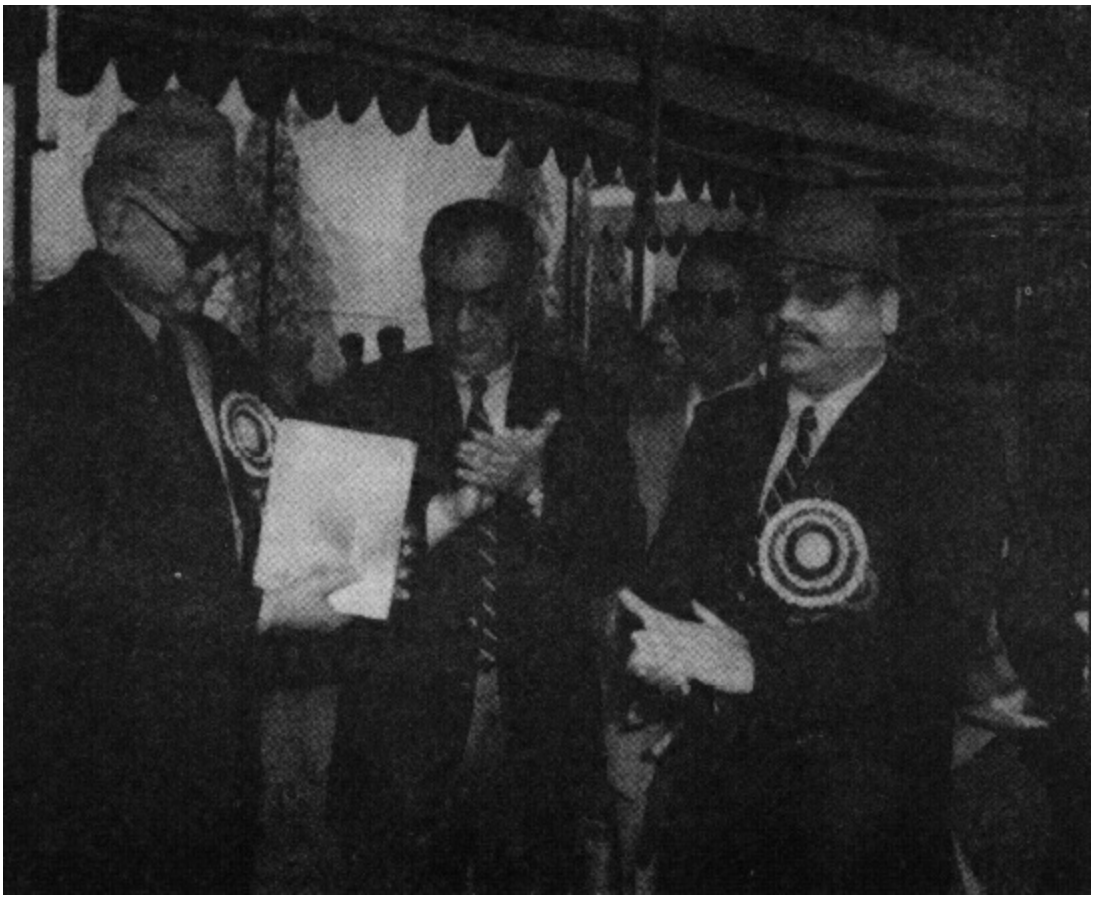
बल के एक अन्य ब्रेस्ट स्ट्रोक तैराक एस. राधाकृष्णन 1986 के सियोल एशियाई खेलों में शामिल हुए। एस. राधाकृष्णन ने 1993 में कोलोरोडो स्प्रिंग्ज में हुए विश्व पुलिस एंड 'फायर गेम्स' में एक स्वर्ण पदक जीता। बल के तैराक टी.जे. जैकब ने 1982 के दिल्ली में हुए एशियायी खेलों में भाग लिया।

अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले बल के कुछ अन्य तैराक है के. सोमशेखरन, पी.वी. पिल्लई, आर.के. राजन, के अलोयसिस, मोहिंदर कुमार, जी. कलेंमेंट तथा श्याम लाल।

डाईविंग में बल के ढाका सिंह, एम.एस. शेखावत, बी.एस. रविशेखर तथा पवित्रो शर्मा कई वर्षों तक राष्ट्रीय चैंपियन रहे हैं।

डिप्टी कमांडेंट मोहिन्दर सिंह ने 1985 के एस.ए.एफ. खेलों में स्वर्ण पदक जीता, इंस्पेक्टर राजाराम टोकस ने 1995 के एसएएफ खेलों में रजत पदक, कोरिया में हुए 10वें एशिया पेसिफिक तैराकी - 1996 मुकाबले में एक रजत पदक, आस्ट्रेलिया में हुए वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स - 1995 में दो रजत पदक, 1997 में कनाडा में हुए वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स में एक रजत तथा एक कांस्य पदक तथा 1999 में स्वीडन में हुए वर्ल्ड पुलिस एंड कायर गेम्स में तीन स्वर्ण पदक जीते।

इंस्पेक्टर कैलाश नाथ ने 1999 में नई दिल्ली में हुयी एशिया पेसिफिक तैराकी प्रतियोगिता में एक कांस्य पदक, 1999 में स्वीडन में हुए वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण और दो कांस्य पदक तथा 1999 में काठमांडू में हुए एसएएफ खेलों में तीन स्वर्ण और दो कांस्य पदक तथा 1999 के एसएएफ खेलों में इंस्पेक्टर एल्विस अली हजारिका ने दो स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक जीते, और इंस्पेक्टर सेंथिल कुमार ने इस प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण पदक जीते।



स्मारिका का विमोचन करते डा. त्रिनाथ मिश्र

तिरूवनंतपुरम में हुई 48वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता - 1999 में केरिपु बल की टीम ने चार में से तैराकी, क्रांस कंट्री रेस (4 कि.मी.) तथा वाटरपोलों की तीन चैंपियनशिप ट्राफियां जीती। बल की तैराकी टीम ने कुल 28 पदक जीते, जिनमें 18 स्वर्ण, सात रजत तथा तीन कांस्य पदक शामिल है।

17 फरवरी, 2000 को ऊंटी में हुयी फेडरेशन कप क्रास कंट्री चैंपियनशिप में केरिपु बल की महिला टीम ने प्रथम स्थान पाया।

बल की महिला तैराक सब इंसपेक्टर रिचा मिश्रा तथा सब इंस्पेक्टर अमर मुरलीधरन ने काशियांग चीनी ताईपेई में अगस्त, 2000 को हुयी 14वीं एशिया पेसिफिक ऐज ग्रुप तैराकी चैंपियनशिप में भाग ले कर क्रमशः चौथा एवं पांचवा स्थान हासिल किया।

नवंबर, 2000 में कोलकाता में हुयी 55वीं सीनीयर नेशनल तैराकी प्रतियोगिता में बल के तैराकों ने राष्ट्रीय पुलिस टीम की ओर से भाग लेते हुए 16 स्वर्ण, 14 रजत तथा 12 कांस्य पदक जीते। बल की महिला तैराक इंस्पेक्टर रिजा मिश्रा को प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ महिला तैराक घोषित किया गया।

मानवाधिकारों पर प्रशिक्षण



कार्यशाला में भाग लेने वाले कार्मिक

मानवाधिकारों के सम्मान, इनकी सुरक्षा और इनके निर्वहन के मामले में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का रिकार्ड बहुत अच्छा रहा है। इतना बड़ा अर्द्ध सैनिक बल होने तथा भारी रूम से परिचालनिक कर्तव्यों पर तैनात रहने के बावजूद यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास सोसायटी द्वारा रेपिड एक्शन फोर्स के मुख्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून तथा मानवाधिकार विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री गणेश्वर झा ने कहा कि केरिपु बल ने कानून व्यवस्था, आतंकवाद विरोधी तथा अन्य भिन्न प्रकार के कर्तव्यों का कठिन परिस्थितियों में भी निर्वाह करने के बावजूद यह सिद्ध कर दिया है कि यह मानवाधिकारों का कितना बड़ा चैंपियन है।

अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति के सलाहकार श्री डी.के. आर्य ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि मानवाधिकारों से संबंधित यह विश्व संगठन सभी क्षेत्रों में मानवाधिकारों से संबंधित जागृति पैदा करने का प्रयास कर रहा है। अपने स्वागत भाषण में बोलते हुए रेपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री जोर्ज सी. पोडीपारा ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास संगठन 1996 से केरिपु बल के अधिकारियों के लिए इस तरह के सात शिविरों का आयोजन कर चुका है जिनसे केरिपु बल के 240 से अधिक अधिकारी सीधे लाभान्वित हो चुके हैं। इस शिविर में आरएएफ सहित केरिपु बल के 40 अधिकारियों ने भाग लिया। शिविर आईसीआरसी के ब्रिगेडियर जनरल

(सेवानेवृत्त) माटेन रटस तथा विंग कमांडर (सेवानेवृत्त) पी. बक्शी के निदेशन में चलाया गया।

केरिपु बल ने मानवाधिकारों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने लगातार दूसरे साल राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा आयोजित मानवाधिकारों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता की ओवरआल चैंपियनशिप जीत ली। 5 मार्च 2001 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र को यह ट्राफी सौंपी।

इस वाद-विवाद प्रतियोगिता में केरिपुबल की तीन महिला प्रतियोगियों ने पुरस्कार जीतें। प्रतियोगिता के हिन्दी वर्ग में कांस्टेबल (महिला) बबली खनम ने प्रथम पुरस्कार जीता। सहायक कमांडेंट कुमारी एस कुरूप अंग्रेजी वर्ग में द्वितीय रही, और कांस्टेबल (महिला) मीना सैनी हिन्दी वर्ग में तीसरे स्थान पर रही।

विभिन्न केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की कुल सात टीमों के 28 प्रतियोगियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

दिल्ली को तीसरा स्थान

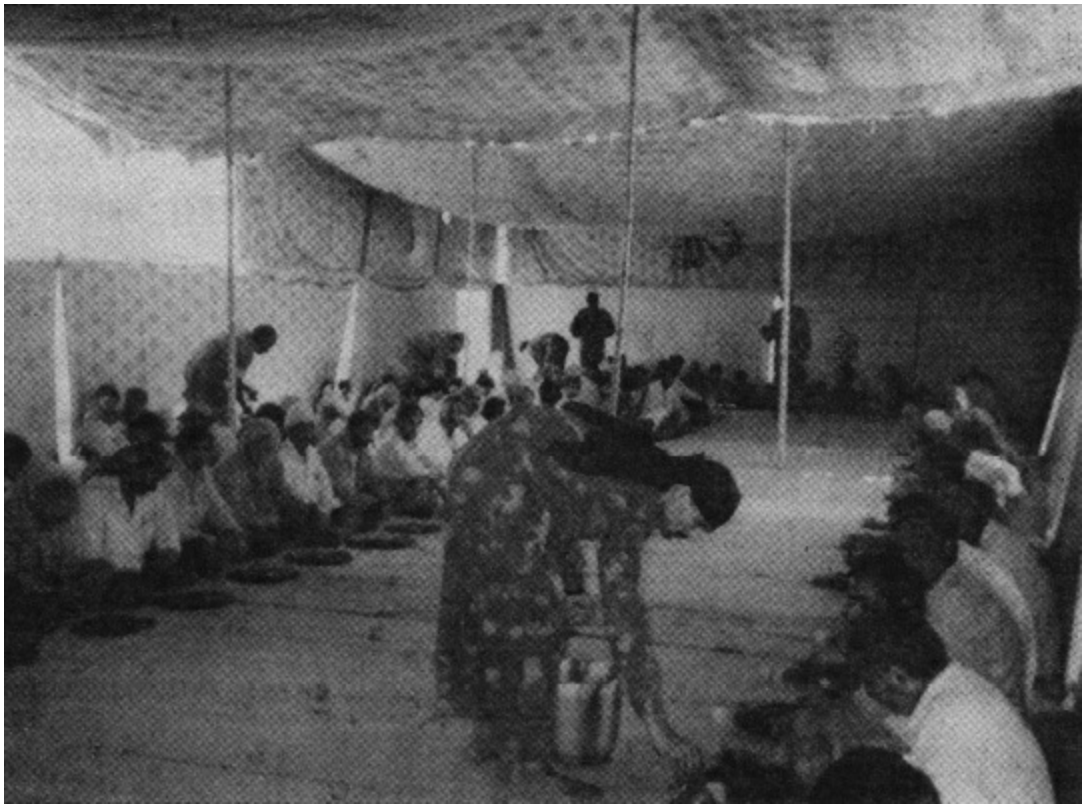
7से 11 फरवरी 2001 तक कर्नाटक में आयोजित 48वीं राष्ट्रीय कबड्डी चैम्पियनशिप में दिल्ली ने राजस्थान को 24-22 से परास्त कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। दिल्ली की टीम में शामिल केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अंगद सिंह, जयकुमार, कुलदीप, सुंदर सिंह, योगेन्द्र सिंह, मोहम्मद जलालुद्दीन, तथा अमर सिंह (कोच) शामिल थे।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल ने भेजी भूकंप पीड़ितों को सहायता राशि

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली के विद्यार्थियों और कर्मचारियों द्वारा गुजरात के भूकंप पीड़ितों के लिए एकत्र की गयी 68,7000 रूपये की राशि का चैक स्कूल के बच्चों और कर्मचारियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र को सौंपा।

यह राशि विद्यार्थियों द्वारा स्वेच्दा से एकत्र की गयी है। इस राशि में विद्यालय के कर्मचारियों ने एक दिन के वेतन का भी योगदान दिया है। विद्यालय के छात्रावास के विद्यार्थियों ने भी एक दिन का उपवास रख कर इस मद से बची राशि को भूकंप पीड़ियों की सहायतार्थ प्रदान किया है।

दो विद्यार्थियों नुपूर और हर्ष ने 10,000 रूपये की राशि का योगदान दिया है। स्कूल द्वारा एकत्र इस राशि का चैक प्रधान मंत्री राहत कोष में भेज दिया गया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के समस्त कर्मचारियों द्वारा एकत्र तीन करोड़ सात लाख रूपये की राशि पहले ही प्रधान मंत्री राहत कोष में भेजी जा चुकी है। इस मद में बची 26,291 रूपये की बाकी राशि का चेक भी प्रधान मंत्री राहत कोष में भेजा गया। यह राशि बल के समस्त कर्मचारियों ने अपने एक दिन के वेतन के योगदान से एकत्र की थी।



भूकंप प्रभावित इलाकों में आरएएफ द्वारा आयोजित लंगर का एक दृश्य

गुजरात के राज्यपाल ने केरिपु बल की प्रशंसा की

26 जनवरी, 2001 में आए विनाशकारी भूकंप के फौरन बाद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने जिस तत्परता से हरकत में आ कर बचाव और राहत कार्यों में अपना योगदान दिया, उसकी गुजरात के राज्यपाल श्री सुंदर सिंह भंडारी ने प्रशंसा की है। केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र को भेजे एक पत्र में राज्यपाल श्री सुंदर सिंह भंडारी ने कहा है कि "गुजरात में आये भूकंप से हुयी भयंकर तबाही में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने पीड़ित व्यक्तियों की सहायता, घायलों की चिकित्सा और मलबे में दबे मृतकों को निकाल कर उनके अंतिम संस्कार करने में सराहनीय कार्य किया है। मैं जवानों के धैर्य और साहस की प्रशंसा करता हूं।"

ज्ञातव्य है कि भूकंप के फौरन बाद रेपिड एक्शन फोर्स और केरिपु बल की सात कम्पनियों और डाक्टरों का दल तुरंत बचाव और राहत कार्यों में जुड़ गया था। केरिपु बल ने दो गांवों बोंध और अधोई को सम्पूर्ण विकास के लिए गोद लिया तथा सैंकड़ों घायलों और शवों को मलबे से निकाला। केरिपु बल के समस्त कार्मिकों के एक दिन के वेतन के योगदान और सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के बच्चों से मिले योगदान से एकत्र 3,07,94,991 रूपये की राशि भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए प्रधान मंत्री राहत कोष में दी गयी।

महानिदेशक का नीमच दौरा



अपने नीमच दौरे के दौरान आर.टी.सी. के स्थायी क्वार्टर गार्ड का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

13 दिसम्बर 2000 को डा. टी.एन. मिश्र महानिदेशक केरिपु बल नीमच के प्रथम दौरे पर आये। महानिदेशक महोदय, नीमच में त्रिगंजा पार्क स्थित शहीद स्मारक पहुंचे व शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उसके बाद उन्होंने स्टेशन क्वार्टर गार्ड, केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय-प्रथम, 4 सिगनल बटालियन व रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-प्रथम का दौरा किया।

महानिदेशक महोदय ने प्रशिक्षण केन्द्र-प्रथम के स्थायी क्वार्टर गार्द का उद्घाटन किया। रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-प्रथम की स्थापना 1 जुलाई 1968 को रंगरूटों को प्रशिक्षण देने के लिए बडवाह (म.प्र.) में की गई थी। 1 अगस्त 1984 को इसे बडवाह से नीमच स्थानान्तरित किया गया तब से इसका क्वार्टर गार्द किले में अस्थाई रूप से रखा गया था।

संसदीय राजभाषा समिति का दक्षिण सेक्टर का दौरा



संसदीय समिति के सदस्यों के साथ महानिरीक्षक दक्षिण सेक्टर एवं अन्य अधिकारी

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति का हैदराबाद का दौरा हुआ तथा 20 अक्तूबर 2000 को समिति द्वारा दक्षिणी सेक्टर मुख्यालय का निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान परिचर्चा में सेक्टर मुख्यालय की ओर से डॉ. डी.एन. गौतम, भापुसे, पुलिस महानिरीक्षक, श्री एम.एस. बालाकेशवन, कमांडेंट (लेखा), श्री टी.के. नम्बियार प्रशासन अधिकारी (प्रशासन) तथा हिंदी अनुभाग में कार्यरत गृह मंत्रालय, महानिदेशालय के श्री एस.एन. सिंह, हिंदी अधिकारी एवं सू.मे./वरिष्ठ हिंदी अनु. एम.बी. प्रसाद ने भी परिचर्चा में भाग लिया। निरीक्षण परिचर्चा सौहार्दपूर्ण वातावतरण में हुई तथा हिंदी प्रयोग में हो रही प्रगति की समिति द्वारा सराहना की गई। सुरक्षा तथा अन्य प्रबंध कार्य उत्तम कोटि का रहा है।

122 बटालियन द्वारा स्कूल में इमारत का निर्माण



122 बटालियन द्वारा बडगाम के राजकीय माध्यमिक स्कूल में निर्मित की गई एक कक्ष की इमारत का उद्घाटन करते हुए महानिरीक्षक श्री पी.सी. जोशी



भुवनेश्वर ग्रुप केंद्र अस्पताल द्वारा *25* फरवरी को एक स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया ,जिसमें लगभग *2000* रोगियों का उपचार किया गया ,मेले का उद्घाटन ईस्टर्न मीडिया के सम्पादक श्री सौमया रंजन पटनायक ने किया

बल के प्रयासों की प्रशंसा

केन्द्रीय गृहराज्य–मंत्री श्री एस.एच. विद्यासागर राव ने कामारेड्डी डिवीजन के रेड्डीपेट ग्राम में 27 मार्च 2001 को सीआरपीएफ की 98 बटालियन के स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर आयोजित एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री विद्यासागर राव ने कहा कि ग्रामों में शांति व्यवस्था को बनाए रखने की जिम्मेदारी जनता की है। ग्रामों में न ही पुलिस का और न ही नक्सलियों का हस्तक्षेप होना चाहिए, बल्कि जनता स्वयं ही शांति व्यवस्था बनाए रख सकती है। उन्होंने कहा कि यदि ग्रामीण जनता, संगठित रूप से मुकाबला करे तो ग्रामों पर नक्सलियों का वर्चस्व नहीं रह सकता।

सीआरपीएफ द्वारा शांति व्यवस्था बनाए रखने की सेवाओं की सराहना करते हुए श्री विद्यासागर राव ने कहा कि सीआरपीएफ कल्याणकारी कार्यों में भी बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रही है। नक्सलियों से प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन सराहनीय है।

हैदराबाद रेंज के डी.आई.जी. श्री साम्बशिव राव ने ग्रामीण क्षेत्र में सीआरपीएफ की सेवाओं की सराहना की।

बटालियन कमांडेंट श्री रामलिंगम ने सभा की अध्यक्षता की। सीआरपीएफ के डी.आई.जी. श्री टी.पी. दास, निजामाबाद एस.पी. श्री रविशंकर, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र रेड्डी एवं रेड्डीपेट सरपंच श्री यल्लय्या ने भी उपस्थितों को सम्बोधित किया।

माह फरवरी 2001 में मृत कार्मिक

माह फरवरी, 2001 में के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सब इंस्पेक्टर एम.एम. हकीम सिंह (ग्रुप केंद्र शिवपुरी), कांस्टेबल (महिला) मोनिका विश्वास (88 बटा.), है. कां. विश्वप्रकाश (72 बटा.), फार्मेसिस्ट वी.आर. अम्मानी (24 बटा.), कां. सादा राम (68 बटा.), नर्सिंग सहायक पूरन मल शर्मा (13 बटा.), स.उ.नि. चतुरी प्रसाद तरतिया (ग्रुप केंद्र शिवपुरी) तथा कांस्टेबल विनोद कुमार (94 बटा.)।

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार निम्न कार्मिक माह जनवरी 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

कांस्टेबल शेंडे भोज राज (64 बटा.), सब इंस्पेक्टर सुदीप कुमार (37 बटा.), कां. ए. अप्पला स्वामी (130 बटा) तथा कांस्टेबल मथुरा बासुमतारी (114 बटा.)

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय जोखिम निधि से माह फरवरी, 2001 में मृत्यु के 32 मामलों में कुल 35,14,390 रूपये देने स्वीकृत किये गये और अक्षमता के 6 मामलों में कुल 3,20,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह मार्च, 2001 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 48 मामलों में 55,93,00 रूपये देने स्वीकृत किये गये और अक्षमता के 17 मामलों में 6,81,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह मार्च, 2001 में जोखिम निधि 'बी' से इसके 4 सदस्यों की मृत्यु के मामले में 1,68,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	–नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	–वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	–डी.जी. महापात्र
4. नागरिकता	–भारतीय
5. पता	–ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	–डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	–डी.जी. महापात्र, भारतीय, ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	–महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लाक–1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

मैं डी.जी. महापात्र एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।
31 मार्च, 2001

ह.
डी.जी. महापात्र
प्रकाशक के हस्ताक्षर

मानव

–राजेन्द्र सिंह यादव, द्वितीय कमान अधिकारी, ग्रु.के. जमशेदपुर

संसार के सभी धर्मग्रंथों द्वारा इस बात की स्पष्ट रूप से पुष्टि की गई है कि संसार में मानव ही सर्वश्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट प्राणी है। यद्यपि मानवोत्पत्ति के इतिहास के संबंध में अलग–अलग विचारधाराएं तथा तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं, किन्तु इस बिन्दु पर सभी मतैक्य हैं कि "मानव" ही संसार की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है। मानव ही संसार की सृष्टि में एकमात्र विवेकशील प्राणी है जो अपनी बुद्धिमता से सही और गलत कार्यों, व्यवहारों तथा अन्य संस्कारिक प्रक्रियाओं में सूझ–बूझ और विवेक से काम लेता है।

मानव शब्द का यदि हम विश्लेषण करें तो मानव शब्द को मा+न+व में विभक्त कर सकते हैं। "मा" शब्द से मानवता, मानसिकता, मनोवृत्ति आदि शब्द की उत्पत्ति होती है। तात्पर्य यह बनता है कि "मानव" में मानवता होनी चाहिए, उसे दूसरों के साथ वही बर्ताव करना चाहिए जो वह दूसरों से अपने लिए अपेक्षा करता है। उसके कार्य सारी मानव जाति की उन्नति, सुख–समृद्धि तथा विकास के लिए होने चाहिए। उसकी मानसिकता संकीर्ण परिधि में न सिमट कर एक विस्तृत तथा व्यापक दृष्टि–बोध से भरी हो जिससे समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके।

कहने का तात्पर्य है कि मानव का सर्वप्रथम लक्षण मानवता का उसमें विद्यमान होना है। इस का अभाव "मानव" को "मानव" की संज्ञा से वंचित करता है।

मानव शब्द का अगला अक्षर "न" का यदि हम मानवं जीवन के कार्यकलापों, व्यवहारों से मिलान कर "न" का विश्लेषण करें तो इससे "नैतिकता" शब्द की उत्पत्ति होती है। प्रत्येक मानव में नैतिकता का समावेश होना अनिवार्य है। मानव का कार्य–व्यवहार सामाजिक क्रिया–कलापों पर आधारित तथा दूसरों के साथ उसके संबंध नैतिकता के आधार पर ही होने चाहिये। मानव अथवा मनुष्य के लक्षण उसकी समष्टिगत भावनाओं के विकास में सन्निहित हैं। बड़ों के प्रति आदर, समाज के दीन–हीन, कमजोर, लाचार, अभाव ग्रस्त व्यक्तियों के प्रति उदारता, परस्पर सहयोग की भावना, सामाजिक प्रगति के विकास हेतु सकारात्मक योगदान एवं नारियों के प्रति

सम्मान की भावना के साथ–हो–साथ अपनी गलतियों एवं कमजोरियों को सहज भाव से स्वीकार करने का अदम्य साहस "न" वर्ण को पूर्ण अर्थवत्ता प्रदान करता है।

मानव शब्द के अंतिम अक्षर "व" को मानव शब्द का आधारभूत अक्षर कहा जा सकता है, का यदि हम सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करे तो इससे "व्यवहार" शब्द की उत्पत्ति होती है। मानव का सकारात्मक व्यवहार ही मानव को मानव कहलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। "मानव" मानव के सारे गुण, सारी खूबियां निराधार तथा निरर्थक है, जब तक कि उसका दूसरों के प्रति व्यवहार सही नहीं हो। इस संदर्भ में सभी धर्मग्रन्थों तथा सभी धर्म गुरूओं, समाज सुधारकों ने भी "मानव" को एक–दूसरे के प्रति सदा उचित व्यवहार करने तथा आदर की भावना रखने का उपदेश दिया है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में मनुष्य के कार्य की प्रधानता पर बल दिया है। कार्य का तात्पर्य मनुष्य के कार्यकलापों एवं सद्व्यवहारों से ही है, जिसके अभाव में मानव–जीवन की अर्थहीन तथा निरर्थक कहा गया है। इस्लाम धर्म के जन्मदाता पैगम्बर मोहम्मद साहब ने अपने अंतिम समय में अनुयायियों के यह पूछे जाने पर कि संसार में सबसे अच्छी इबादत (उपासना) क्या है ? उन्होंने कहा था "एखलाक" अर्थात दूसरों के साथ सच्चा सद्व्यवहार। पैगम्बर ईसा मसीह ने भी सदा दूसरों के साथ सद्व्यवहार तथा दूसरों का आदर करने का उपदेश दिया है। तात्पर्य यह कि मानव का यह गुण फल से लदे उस वृक्ष के समान है जो पथिक की छाया तो देता ही है साथ ही फल भी। यदि मानव में अन्य सारे गुण विद्यमान है, किन्तु उसका व्यवहार निरंकुश तथा अविवेकपूर्ण एवं अव्यवहारिक है तो उसके सारे गुण निरर्थक तथा बेकार हैं। जिस प्रकार छाया तथा फल न देने वाले वृक्ष, बंजर भूमि, बिना पानी के चूना तथा विषहीन सर्प का अस्तित्व अर्थहीन तथा अधूरा है, उसी प्रकार सद्व्यवहार के गुण के अभाव में "मानव" जीवन निराधार तथा अधूरा है। इसके अभाव में "मानव" जीवन की कोई सार्थकता तथा अस्तित्व नहीं है।

अब हम आज के इस आधुनिक तथा विकसित संसार में मानव के वास्तविक स्वरूप की ओर दृष्टि डालें और देखें कि इसमें क्या कुछ परिवर्तन आये हैं। देखने से आभास होता है कि आज का मानव मानवता से दूर दानवता की प्रवृत्ति में संलिप्त तथा आसक्त हो गया है। उसके मानवीय लक्षण विलुप्त हो गये हैं तथा उसका स्थान दानवता न ले लिया है। मानव का एक–दूसरे के प्रति अमानवीय व्यवहार, कदाचार तथा उसके निरंकुश बर्ताव ने समस्त मानव–समाज की काया ही पलट दी है और मानव को "दानव" कहने पर लोग विवश हो गये हैं, जो मानव–जीवन के लिए अमावस की अंधेरी काली रात के समान है, जिसमें पथिक को अंधेरे के कारण मार्ग में पड़े पत्थरों से ठोकर खाकर घायल होना पड़ता है। आज मानव मानवता, नैतिकता एवं व्यवहारिकता के अभाव में स्वयं मानव समाज का सबसे बड़ा शत्रु बन गया है जो स्वयं उसके लिए भी घातक सिद्ध होगा।

अतः आज हम मात्र "मानव" शब्द के कह देने से "मानव" को "मानव" मानने के लिए तैयार नहीं है, जब तक कि उसमें मानवता, नैतिकता, व्यवहारिकता, सहिष्णुता,

स्नेह, भाईचारा आदि नहीं है।

मानव का सच्चा तथा वास्तविक स्वरूप तो मातृत्व से भरा, स्नेह, प्यार एवं दया से ओत–प्रोत, व्यवहार–कुशल जीवन है जो समस्त मानव जाति का दिल जीत सकता है और तभी सच्चे अर्थो में "मानव" के "मानव समाज" का अस्तित्व होगा अन्यथा यह माला के टूटे हुए धागे के उस मोती के समान है जिसका अलग–अलग रहने पर कोई सुन्दर तथा उपयोगी स्वरूप नहीं होता है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम "मानव" नेक और एक बनें। "वसुधेव कुटुंबकम" की भावना को लेकर चलें और समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु "मानव की सारगर्भित परिभाषा को अपने में आत्मसात करने की चेष्टा करें। विभु के विपुल सौष्ठव की इयत्ता मानव के परिमार्जित और मार्यादित स्वरूप द्वारा ही निर्धारित की जा सकती है।

"पांच तत्व के मेल से मानव निर्मित एक,
नियति नटी की लीला से उसके रूप अनेक।
जीवन में ना दे सका पांच तत्व का दान,
दानव बनकर कर दिया, मानव का अपमान।
हे मानव, शुचि जाग–जाग तन,
कर तू मानव का कल्याण।"



भूकंप प्रभावित इलाकों में एक घायल वृद्ध महिला का उपचार करते आर.ए.एफ. के डाक्टर

रजि. न. 4767/87



राजपत्रित अधिकारियों के 32वें बैच की दीक्षांत परेड की सलामी लेते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

सी.आर.पी.एफ. समाचार

31 मई, 2001



त्रिपुरा स्थित बल की 2 बटा. मुख्यालय पर एक आतंकवादी बल के महानिरीक्षक (परिचालन) त्रिपुरा श्री वागेश मिश्रा के समक्ष हथियार डालता हुआ।



98 बटा. द्वारा जिला परिषद हाई स्कूल रेड्डीपेट में आयोजित कैंप के दौरान गृह राज्य मंत्री श्री विद्यासागर राव



त्रिपुरा में आत्मसमर्पण कर चुके आतंकवादियों की पत्नियों को वस्त्र प्रदान करती *2* बटा. के कमांडेंट की पत्नी श्रीमती भारद्वाज



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-13 अंक-3
31 मई, 2001
10 ज्येष्ठ, शक 1923

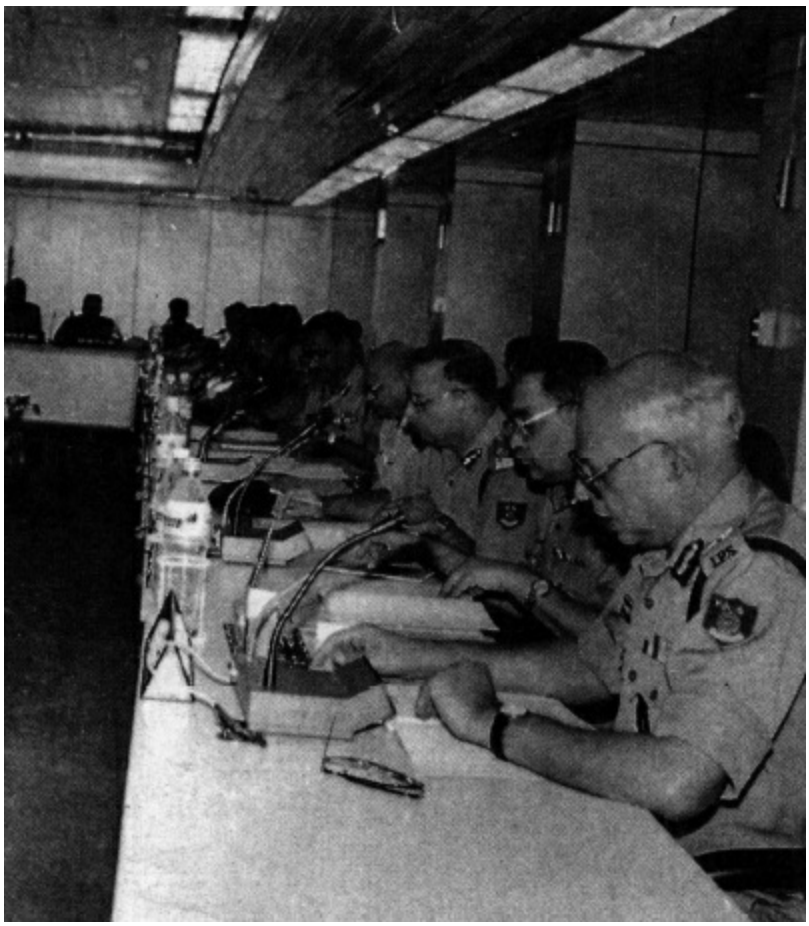
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

त्रिपुरा में 60 आतंकवादियों द्वारा आत्मसमर्पण

केरिपु बल के चिकित्सा अधिकारियों का सम्मेलन

उल्फा आतंकवादी द्वारा आत्मसमर्पण

बेस अस्पताल हैदराबाद में नया एक्सरे प्लांट

हरियाली की पहरेदारी

23 बटा. को दिल्ली में स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन का खिताब

केरिपु बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

11वीं अंतर सेक्टर क्रास कंट्री दौड़

फोटो फीचर

मार्च, अप्रैल 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

त्रिपुरा में *60* आतंकवादियों द्वारा आत्मसमर्पण



जिला मजिस्ट्रेट अगरत्तला (पश्चिम) श्री मनीश कुमार को अपने हथियार सौंपता एक आतंकवादी

"अब अधिक से अधिक संख्या में आतंकवादी आतंकी कारवाई से क्षुब्ध हो गए है तथा त्रिपुरा में राष्ट्र की मुख्य धारा में आ रहे हैं। 22 मई, 2001 को अगरतला में केरिपु बल, अधिकारियों के समक्ष 60 उग्रवादियों ने आत्म समर्पण किया।

केरिपु बल मुख्यालय में प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार नेशनल लिबरेशन फ्रंट आफ त्रिपुरा (एनएलएफटी) के 59 उग्रवादी तथा आल त्रिपुरा फोर्स (एटीटीएफ) के एक उग्रवादी ने 11 बटालियन केरिपु बल, सिंगरवील अगरतला में श्री वागेश मिश्र, पुलिस महानिरीक्षक केरिपु बल त्रिपुरा के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इस अवसर पर श्री मनीश कुमार जिला मजिस्ट्रेट, अगरतला (पश्चिम) भी उपस्थित थे।

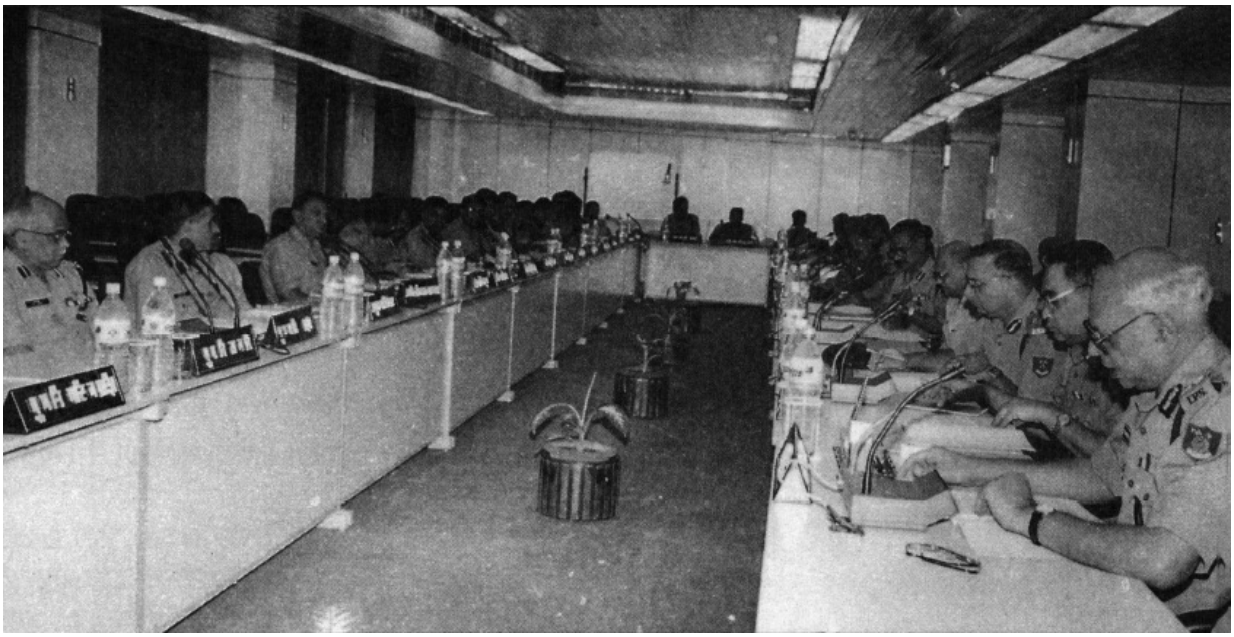
उग्रवादियों ने 21 देशी बन्दूक, 2 लैण्ड माईन्स, 2 देशी पिस्तौल, 1 चीनी ग्रेनेड, 1 राइफल ग्रेनेड, 6 एच.ई. ग्रेनेड तथा 9 एम.एम. राइफल की 6 राउन्ड गोलियां सौंपी।

यहां यह कहना समीचीन होगा कि गत दो माह में त्रिपुरा में केरिपु बल अधिकारियों के समक्ष 70 आतंकवादियों ने आत्म समर्पण किया है।



आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादियों द्वारा सौंपे गये हथियार

केरिपु बल के चिकित्सा अधिकारियों का सम्मेलन



चिकित्सा अधिकारियों के सम्मेलन को संबोधित करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

मूल कार्य के विपरीत वातावरण होने के बावजूद चिकित्सा अधिकारियों को बल में ईमानदारी और समर्पण भावना से सेवा करना है। डा. त्रिनाथ मिश्र, महानिदेशक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने केरिपुबल मुख्यालय में 23 मई, 2001 को आयोजित चिकित्सा अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए अधिकारियों को अपनी कार्यकुशलता को उन्नत करने तथा बल की भलाई के लिए गम्भीरता पूर्वक प्रयास करने का आह्वान किया।

डा. के.के. सैनी, निदेशक (चिकित्सा) ने अपने स्वागत भाषण के दौरान केरिपु बल के चिकित्सा अधिकारियों और पैरा मेडिकल स्टाफ की विभिन्न समस्याओं तथा कठिन परिस्थितियों में उनके द्वारा किये जा रहे कार्य पर प्रकाश डाला। इस सम्मेलन में पूरे देश के भिन्न-भिन्न ग्रुप सेन्टरों और बटालियन अस्पतालों के 30 से भी अधिक मुख्य चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया।

सहायता कार्य के लिए बल की प्रशंसा

29 अप्रैल, 2001 को आमून कैंट पठानकोट में सैनिक आयुद्ध डिपो में लगी भयंकर आग में समीप के गांव वासियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने व आसपास का इलाका खाली करवाने में ए/46 सीआरपीएफ के अधिकारियों व जवानों ने स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर सराहनीय कार्य किया। पठानकोट की एसएसपी ने 46 बटालियन के कमांडेट को लिखे पत्र में बटालियन के जवानों के कार्यों की भरपूर प्रशंसा की है।

उल्फा आतंकवादी द्वारा आत्मसमर्पण



75 बटा. के कमांडेंट एन.एस. ठाकुर को अपने हथियार सौंपता मनोरंजन नाथ

15 अप्रैल, 2001 को तेजपुर असम में अल्फा आतंकवादी मनोरंजन नाथ ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 75 बटालियन के कमांडेट एन.एस. ठाकुर के समक्ष आत्मसमर्पण किया। मनोरंजन नाथ 1992 में एक छोटा सा गुट बना कर उल्फा में शामिल हुआ था।

महानिदेशक केरिपु बल ने बल के खिलाड़ियों को बधाई दी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कबड्डी और वालीबाल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बल के खिलाड़ियों को बधाई दी।

केरिपु बल की कबड्डी टीम ने हाल ही में लातूर (महाराष्ट्र) में हुई छत्रपति शिवाजी स्वर्ण कप कबड्डी प्रतियोगिता जीत ली। केरिपु बल टीम के हैड कांस्टेबल सुंदर सिंह सर्वश्रेष्ठ रेडर घोषित किये गये, जबकि सब इंस्पेक्टर अंगद सिंह को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ कैचर घोषित किया गया।

केरिपु बल की वालीबाल टीम ने हाल ही में मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में हुयी अखिल भारतीय वालीबाल प्रतियोगिता में भाग ले कर दूसरा स्थान प्राप्त किया। केरिपु बल टीम के हैड कांस्टेबल अब्दुल मजीद टी.एस. को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।

त्रिपुरा में केरिपु बल ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों और जवानों द्वारा राज्य में विद्रोह को दबाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई जा रही है। त्रिपुरा के मुख्य मंत्री श्री मानिक सरकार ने 27 मई 2001 को गंडाचेरा, धलाई (त्रिपुरा) में 2 बटालियन केरिपु बल के कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जान माल का नुकसान होने तथा बहुत ही कठिन हालात में कार्य करते हुए कार्मिक अपना उच्च कोटी का परिचालनिक दबदबा बनाए रख रहे हैं। उन्होंने अशान्त राज्य में शान्ति लाने के लिए कार्मिकों द्वारा किए गए अच्छे कार्य की प्रशंसा की।

मुख्य मंत्री के साथ उर्जा मंत्री श्री बादल चौधरी तथा स्थानीय सांसद श्री वाजुवन रिआंग ने यूनिट के शहीद स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की।

इस अवसर पर राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा केरिपु बल के अधिकारी उपस्थित थे।

केरिपुबल मुख्यालय में नये उप महानिरीक्षक (कार्मिक)



श्री ओम प्रकाश सिंह ने 24 मई, 2001 से केरेपु बल मुख्यालय में उप महानिरीक्षक (कार्मिक) का पदभार संभाल लिया है।

2 जनवरी, 1960 को जन्मे श्री ओम प्रकाश सिंह भारतीय पुलिस सेवा के 1983 बैच के उत्तर प्रदेश काडर के अधिकारी हैं।

श्री सिंह भारतीय पुलिस सेवा में आने के पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में कार्यरत रहे।

श्री सिंह उत्तर प्रदेश पुलिस में विभिन्न पदों पर आसीन रहे जिनमें पुलिस अधीक्षक नगर इलाहाबाद एवम् अलीगढ़, पुलिस अधीक्षक अल्मोड़ा, पुलिस अधीक्षक लखीमपुर खीरी, बुलन्दशहर, मुरादाबाद एवम् लखनऊ, कमांडेन्ट - 11वीं वाहिनी पी.ए.सी. एवम् सहायक पुलिस महानिरीक्षक आजम गढ़ रेंज, मुरादाबाद रेंज, पुलिस उप महानिरीक्षक इन्टेलीजेन्स उत्तर प्रदेश पर नियुक्ति उनकी प्रमुख नियुक्तियों में रही।

इसके पूर्व एस.पी.जी. में प्रतिनियुक्ति में भी वह रहे। श्री सिंह 7 जुलाई, 2000 से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में पुलिस उप महानिरीक्षक (चण्डीगढ़) पद पर तैनात हुए।

श्री सिंह को पुलिस वीरता पदक, सराहनीय पुलिस सेवा पदक, एवम् कठिन सेवा पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार 1995 में अर्धकुम्भ मेला इलाहाबाद में अच्छा कार्य किये जाने के रूप में भी उन्हें सम्मानित कर चुकी है। वर्ष 1998 में एस.एस.पी. लखनऊ के रूप में सिया-सुन्नी विवादों का सफलता पूर्वक समाधान ढूंढ़ने में अहम भूमिका निभाने के फलस्वरूप राज्य सरकार द्वारा प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया जाना भी उनकी उपलब्धियों में शामिल है।

बेस असप्ताल हैदराबाद में नया एक्सरे प्लांट

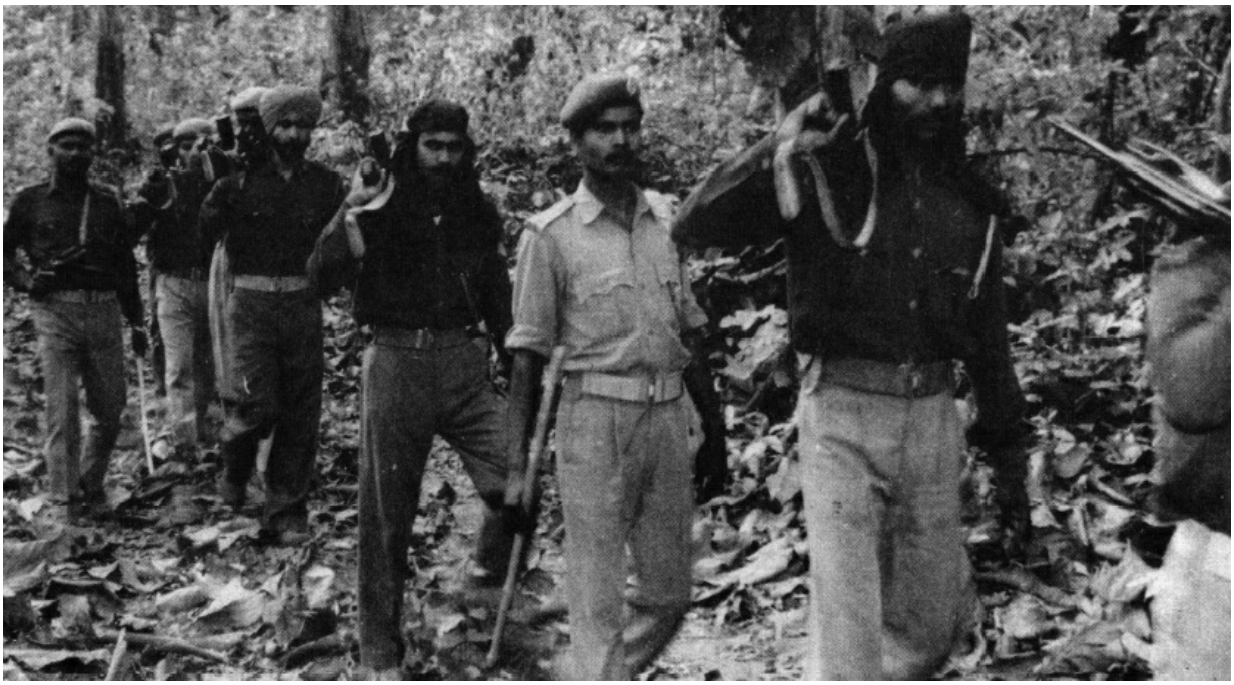


एक्सरे प्लांट का उद्घाटन करते हुए डा. डी.एन. गौतम

बेस अस्पताल हैदराबाद में एक नये 500 एम.ए. एक्सरे प्लांट की स्थापना की गयी है। इस एक्सरे प्लांट का उद्घाटन 22 मार्च, 2001 को दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक डा. डी.ए. गौतम ने किया।

हरियाली की पहरेदारी

-रूबेन बनर्जी



केरिपु बल के जवान बरबरा वन में गश्त पर

पक्षियों की चहचहाट, तेंदुओं की गरज, जंगली सुअरों की गुर्राहट और कठफोड़वों की चीखें। ओडीसा के खुर्दा जिले में बार्बाड़ा के घने और शांत जंगल में दिन की शुरूआत होते ही इस तरह की जानी-पहचानी आवाजें सुनाई देना सामान्य बात है। लेकिन पौ फटते ही अचानक एक अलग किस्म की आवाज भी सुनाई देती है। ठक, ठक, ठक... भारी बूटों की आवाज। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की एक कंपनी के जवान एके-47 और स्वचालित कार्बाइनों से लैस मार्च करते हुए निकल जाते हैं।

ये जवान कुछ साल से यहां डेरा डाले हुए हैं। खूबसूरत पहाड़ियों से घिरे बार्बाड़ा तक कार से पहुंचने में भुवनेश्वर से करीब दो घंटे लगते हैं। अब यह जंगल असामान्य किस्म का रणक्षेत्र बना हुआ है। पर यहां न तो आतंकवादी हैं और न ही विद्रोही। इमारती लकड़ी की बढ़ती मांग के चलते यहां टिंबर तस्कर जंगल को निशाना बना रहे हैं और सागौन, साल और आसन के पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करवा रहे हैं। सीआरपीएफ के जवान इसी माफिया से लोहा लेने में जुटे हैं। यह पर्यावरण को बचाने और इलाके को फिर से हरा-भरा करने की जंग है।

पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक ने 1993 में अर्द्धसैनिक बल की मदद लेने का फैसला किया था। सीआरपीएफ के 84 फीसदी जवान देश भर में उपद्रवग्रस्त जगहों पर तैनात होने के बावजूद यह बल इस काम के लिए राजी हो गया और अपने इस फैसले पर उसे कोई पछतावा नहीं है।

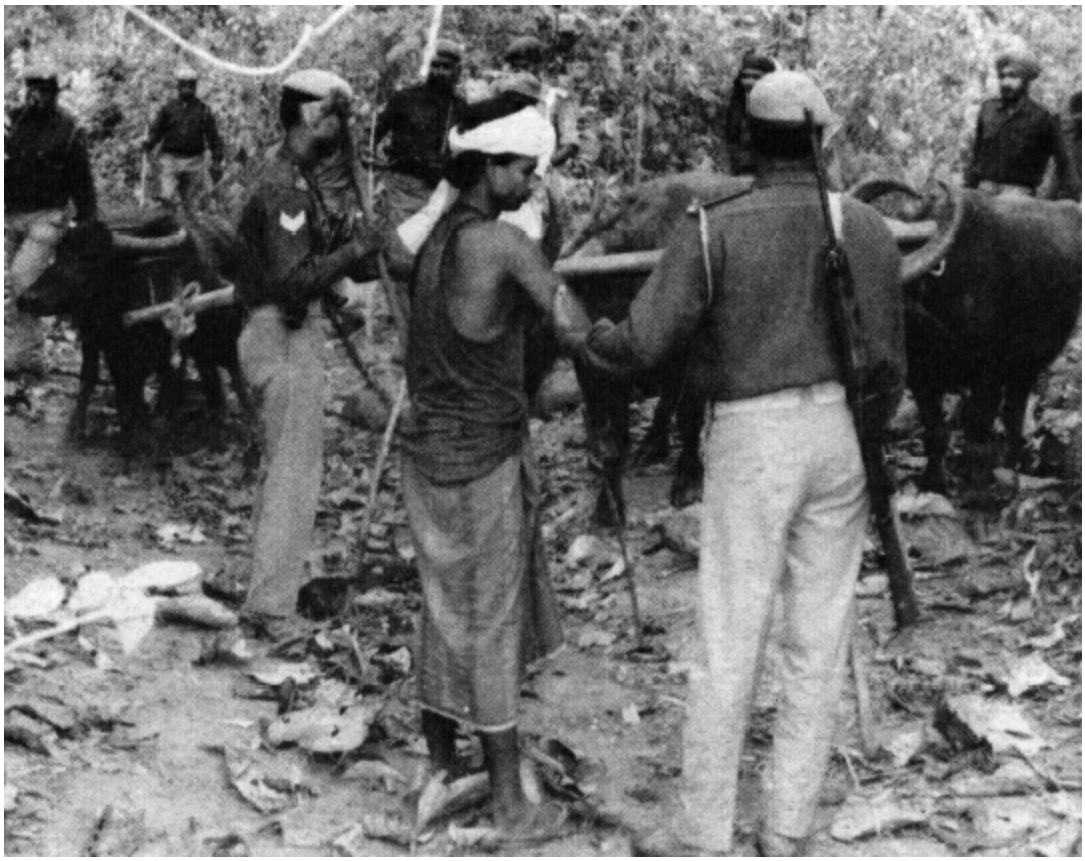
सीआरपीएफ के प्रवक्ता डी.जी. महापात्र कहते हैं, “यह प्रशंसनीय अनुभव है, जिसका काफी लाभ मिल रहा है।” अमूमन भयानक मुठभेड़ों में रूबरू होने वाले

सीआरपीएफ के लिए बाबाड़ा एक शांत जगह है। देशी हाथियारों से लैस यहां के तस्करों का पीछा करना और उन्हें पकड़ना इसके जवानों के लिए कहीं आसान है। लेकिन इस वजह से इनकी उपलब्धियों को कम नहीं आंका जा सकता। सीआरपीएफ की तैनाती के बाद 350 वर्ग किमी में फैले इस जंगल में हरियाली लौट आई है।

इस बल पर अक्सर ज्यादती और नागरिक अधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया जाता है, लेकिन बार्बाड़ा में उसकी भूमिका को मानवता और प्रकृति के प्रति वचनबद्धता के लिए सराहा जा सकता है। उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, लेकिन इसकी उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। खुर्दा के मंडल वन अधिकारी संजीव चड्ढा कहते हैं, "तरह-तरह के जीव-जन्तुओं वाले इस सुंदर जंगल को, जिसकी पैसे के हिसाब से कीमत 20,000 करोड़ रूपये है, खत्म होने से बचा लिया है।"

बिलाशक, यहां का वन विभाग सीआरपीएफ के आने से बहुत खुश है। रखवाली के उसके अधिकार सीमित होने-विभाग के अधिकारियों को लकड़ी तस्करों पर गोली चलाने का आदेश नहीं है, भले ही तस्कर हथियारों से बेहद लैस हों-सीआरपीएफ के आने से पहले ओडीसा तस्करों के सामने घुटने टेक चुका था।

बहुत सारे लोगों का जीवन प्रभावित होने की आशंका वाले इस अभियान को लेकर लाजिमी था कि स्थानीय तौर पर कुछ असंतोष भी उपजता। एक स्वयंसेवी संगठन ने मुद्दा उठाया है कि सीआरपीएफ के हस्तक्षेप से गांववाले जंगल में आजादी से आ-जा नहीं पाएंगे। कुछ लोगों का कहना है कि सीआरपीएफ की सशस्त्र पहरेदारी से जंगल की रखवाली के लिए सामुदायिक हिस्सेदारी के बुनियादी सिद्धांत का उल्लंघन होता है। लेकिन कठोर जमीनी सच्चाइयों को देखते हुए इस तरह की आलोचनाओं में कोई दम नहीं है। अधिकांश स्थानीय लोग भी गैर-कानूनी तरीके से जंगल की लकड़ियां काटते थे और वन संरक्षण की जरूरत को मानने से इनकार करते थे। नयागढ़ और गंजाम जैसे पड़ोसी जिलों के तस्कर भी जंगल में घुसकर जानवरों को मार डालते थे। लेकिन सीआरपीएफ की मौजूदगी से वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। पिछले कई साल में करीब 900 तस्कर पकड़े जा चुके हैं और इलाके में चल रही करीब 40 आरा मिलें बंद हो चुकी हैं। और तो और, 6 करोड़ रूपये मूल्य की लकड़ी भी पकड़ी गई है।



केरिपु बल के जवानों द्वारा पकड़े गये टिम्बर के तस्कर

नतीजतन, जंगल को नया जीवन मिला है और वह तेजी से हरा-भरा हो रहा है। देश में हल्के खारे पानी की सबसे बड़ी चिलका झील के लिए भी, जो यहां से 35 किमी दूर है, यह अच्छी खबर है। बार्बाड़ा इसके लिए प्रमुख जलग्रहण क्षेत्र का काम करता है और यहां वनों की कटाई और क्षरण होता तो झील में गाद भर जाती।

यह सच है कि बार्बाड़ा में अपने इस काम में जवानों को वीरता पुरस्कार नहीं मिलने वाला। पर अपनी उपलब्धियों से वे गौरव का अनुभव तो कर ही सकते हैं। आखिर वे नेक काम के लिए लड़ रहे हैं।

इंडिया टुडे से साभार

23 बटालियन को दिल्ली स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन का खिताब

वर्ष 2000 के लिए 23 बटालियन को दिल्ली स्थित बटालियनों में सर्वश्रेष्ठ बटालियन घोषित किया गया। 20 अप्रैल, 2001 को बटालियन मुख्यालय में आयोजित एक

समारोह में महानिरीक्षक उत्तरी सेक्टर श्रीमती मंजरी जारूहार ने 23 बटालियन के कमांडेंट श्री आर.एस. जैन को यह ट्राफी प्रदान की। इस मौके पर बोलते हुए महानिरीक्षक महोदया ने संसद परिसर की सुरक्षा के लिए तैनात इस बटालियन के जवानों की विशेष रूप से प्रशंसा की।



23 बटालियन के कमांडेंट को सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान करती हुई उत्तरी सेक्टर की महानिरीक्षक श्रीमती मंजरी जारूहार

शान्ति पूर्ण विधान सभा चुनाव सम्पन्न कराने में केरिपु बल द्वारा निभाई गई उल्लेखनीय भूमिका

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु एवं केरल राज्यों में 250 कम्पनियां तैनात करके शान्ति पूर्ण तरीके से विधान सभा चुनाव सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की 248 कम्पनियों में से केरिपु बल 173 कम्पनियां असम के 25 जिलों में तैनात की गई थी, जबकि केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की 176 कम्पनियों में से केरिपु बल की 35 कम्पनियां पश्चिम बंगाल के 13 जिलों में नियुक्त की

गइ थी।

इसी प्रकार केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की 111 कम्पनियों में से के.रि.पु. बल की 37 कम्पनियां तमिलनाडु के 20 जिलों में तैनात की गई थी, जबकि केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की 30 कम्पनियों में से के.रि.पु. बल की 5 कम्पनियां केरल के 3 जिलों में नियुक्त की गई थी।

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को 18 अप्रैल, 2001 को के.रि.पु. बल मुख्याल में संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि "गंभीर परिस्थितियों के अतिरिक्त और वह भी अगर यह परिस्थितियां देश की आंतरिक सुरक्षा से संबंधित हों तो, बल के कार्मिकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में कोई भी समझौता नहीं किया जा सकता।

डा. मिश्र ने कहा कि लगातार तैनाती की कारण पैदा हुए तनाव और दबाव के बावजूद वरिष्ठ अधिकारियों को बल की परिचालनिक दक्षता सुधारने के उपाय तलाश करने चाहिए।

उन्होंने बल के वरिष्ठ फील्ड कमांडरों का आह्वान किया कि वह बल के सदस्यों का नैतिक बल ऊंचा बनाए रखें और मनोवैज्ञानिक भूमिका की स्वयं समीक्षा करें।

इस सम्मेलन में के.रि.पु. बल के पूरे देश से आए सभी सेक्टरों के महानिरीक्षकों ने भाग लिया और देश के वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य पर विचार के साथ–साथ संचालनिक और प्रशासनिक विषयों पर भी विचार किया।

के.रि.पु. बल के जुडोकों ने राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने 31 मार्च से 3 अप्रैल, 2001 तक लखनऊ में हुयी राष्ट्रीय सिनियर जूडो चैंपियनशिप प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए बल के जूडोकों को बधाई दी हैं।

इस प्रतियोगिता में बल के महिला वर्ग की खिलाड़ियों ने मीट की चैंपियनशिप ट्राफी जीती हैं। उन्होंने दो स्वर्ण, एक रजत व तीन कांस्य पदक प्राप्त किये हैं जबकि पुरूष जुडोकों ने एक स्वर्ण तथा चार कांस्य पदक हासिल किये।

के.रि.पु. बल में आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया गया

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (के.रि.पु. बल) मुख्यालय में 21 मई, 2001 को आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया गया। श्री जी. झा, अपर महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ने महानिदेशालय में सभी अधिकारियों व स्टाफ को आतंकवाद विरोधी शपथ दिलाई।

श्री नथैनियल ने फोटो प्रतियोगिता का पुरस्कार जीता

राष्ट्रीय सुरक्षा गारद में ग्रुप कमांडर के पद पर कार्यरत श्री एम.पी. नथैनियल ने फोटो डिवीजन द्वारा आयोजित 14वीं राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता में दो सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किये। 22 मई, 2001 को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने उन्हें ये पुरस्कार प्रदान किये।

के.रि.पु. बल से प्रतिनियुक्ति पर राष्ट्रीय सुरक्षा गारद में गये श्री नथैनियल ने प्रतियोगता के श्वेत श्याम वर्ग में अपनी प्रविष्टियां भेजी थीं। फोटो प्रभाग द्वारा आयोजित इस फोटो प्रतियोगिता का विषय था – भारतीय नारी के बढ़ते कदम। श्री नथैनियल के चार चित्रों का चयन फोटो प्रभाग द्वारा लगायी जाने वाली फोटो प्रदर्शनी में प्रदर्शन के लिए किया गया।

*11*वीं अंतर सेक्टर क्रास कंट्री दौड़



स्पेशल सेक्टर की टीम को विजेता ट्राफी प्रदान करते मुख्य अतिथि

11वीं अंतर सेक्टर क्रास कंट्री दौड़ का आयोजन 14 माचे, 2001 को आर.टी.सी.–2 आवड़ी में किया गया । प्रतियोगिता का उद्घाटन अपर उप महानिरीक्षक श्री जे.पी. क्रिस्टोडोस ने प्रतियोगिता को झंडा दिखा कर किया । समापन समाहरोह में एयर कमाड़ोर एन.आई. रजाकीय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं और उप विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये ।

प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहें–

4 किमी व्यक्तिगत दौड़ – प्रथम – इंस्पेक्टर बाला राम (उत्तरी सेक्टर), द्वितीय – है.कां. सी.पी. तिवारी (स्पेशल सेक्टर), तृतीय – कां. उपेंद्र कुमार (स्पेशल सेक्टर)

4 किमी टीम– प्रथम – स्पेशल सेक्टर, द्वितीय – उत्तरी सेक्टर, तृतीय – उत्तर पश्चिम जोन ।

12 किमी दौड़– प्रथम – सब इंस्पेक्टर टी.डी. वर्गीज (उत्तर पश्चिम जोन), द्वितीय है. कां. मूरती नायक (उत्तर पश्चिम जोन), तृतीय – सब इंस्पेक्टर राम करण यादव (बिहार सेक्टर) ।

21 बटा. द्वारा सिविक एक्शन

21 बटालियन ने अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत डोडा जिले के आस पास कई कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया । इन कार्यक्रमों के तहत मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। गरीब बच्चों को शिक्षण सामग्री तथा स्कूल वर्दियां वितरित की गयी तथा पुल डोडा स्थित राजकीय माध्यमिक शिक्षा विद्यालय में दो प्रयोगशालाओं का निर्माण किया गया।

ग्रुप केंद्र इम्फाल द्वारा कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन

ग्रुप केंद्र इम्फाल ने अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तरत कई तरह के कल्याण कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन्हीं कार्यक्रमों के तहत ग्रुप केंद्र इम्फाल ने लागझिंग इम्फाल स्थित लागझिंग जूनियर हाई स्कूल इमारत की मरम्मत की गयी। मरम्मत के बाद स्कूल इमारत का उद्घाटन मणिपुर के उप मुख्य मंत्री श्री एल. चंद्रमणी ने किया।

इसके अतिरिक्त इम्फाल स्थित बुद्धिमंजुरी राजकीय जूनियर हाई स्कूल, टाकमेल खोंगबल राजकीय जूनियर हाईस्कूल, थोबुंगरवोक जूनियर हाई स्कूल, थांगजम लेईरक प्राईमरी स्कूल तथा पोईजिंग चिंगमेंग जूनियर हाई स्कूल की इमारतों की भी मरम्मत की गयी। बाद में इन स्कूलों के बच्चों को खेल सामग्री भी वितरित की गयी।

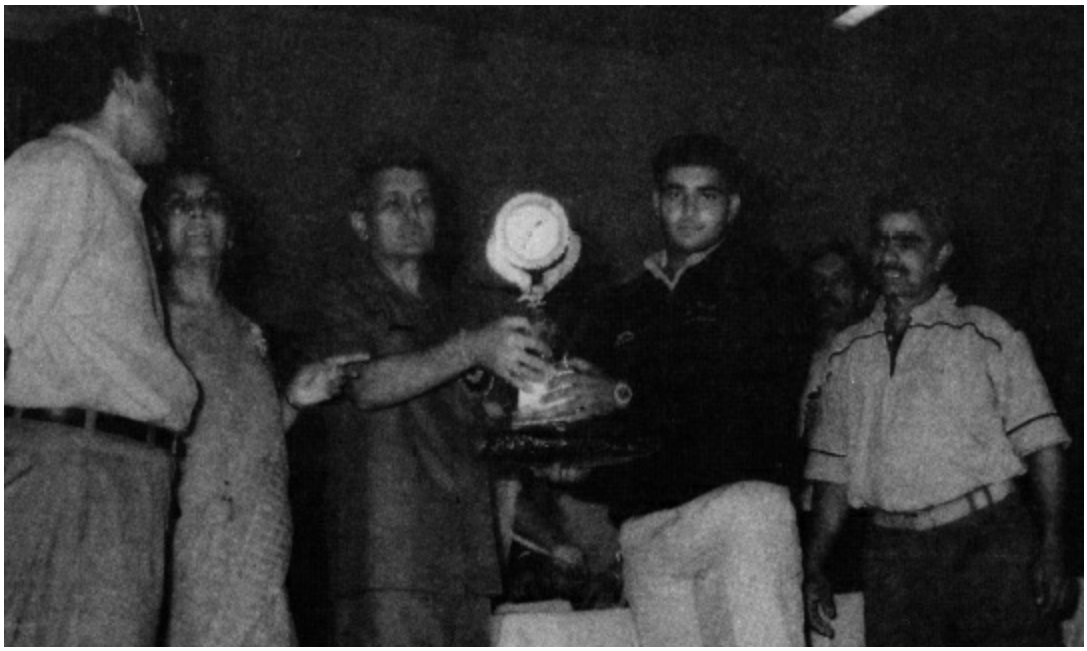
14 अप्रैल, 2001 को गांव ताकमल में एक चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 650 ग्रामीणों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गया।



ग्रुप केंद्र इम्फाल द्वारा आयोजित सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत मणिपुर के उप मुख्य मंत्री डा. एल. चंद्रमणी बल द्वारा मरम्मत किए गये स्कूल की इमारत के उद्घाटन के दौरान स्कूल को शिक्षण एवं खेल सामग्री प्रदान करते हुए



21 बटालियन द्वारा किये गये सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत स्कूल के विद्यार्थियों को वर्दियां और शिक्षण सामग्री वितरित की गयी।



केंद्रीय विद्यालय झड़ौदा कलां नई दिल्ली के रजत जयंती उत्सव के दौरान अपर उप महानिरीक्षक ग्रुप केंद्र नई दिल्ली श्री वी.डी. टोकस ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

माह मार्च, अप्रैल, *2001* में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह मार्च, अप्रैल 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

मार्च 2001

हैड कांस्टेबल अब्दुल कयूम (88 बटा.), कांस्टेबल फल पत (88 बटा.), कां. गुलाम हैदर (88 बटा.). कां. ड्राईवर वजीर सिंह (88 बटा.), है. कां. कारपेंटर बहादुर राम (90 बटा.), है. कां. सतीश चंद (19 बटा.), कां. टी. लालजी भाई (37 बटा.), है.कां. रोहताश किरार (115 बटा), कां. डोथा हेमराम (115 बटा.), है.कां. अनूप सिंह (29 बटा.), कां. जसवंत सिंह (29 बटा.), कां. महालिंग कोपड (130 बटा.), है. कां. मोहम्मद शफी मीर (130 बटा.), सहा. कमां. राम प्रसाद (86 बटा), कां. बी.सी. राय (65 बटा.), ला.ना. भिक्खू ओरेन (123 बटा.), ला. ना. विजय सिंह (75 बटा.), है.कां. हरी भाई (75 बटा.), वाटर कैरियर आर. वेंकटेश्वरलू (5 बटा), है.कां. फिटर दिलबाग सिंह (ग्रु. कें. जालंधर), सब इंस्पेक्टर दुर्गा दत्त (73 बटा.), है.कां. गोविंद सिंह (117

बटा.), सब इंस्पेक्टर गणेश प्रसाद (4 बटा.), है. कां. सहदेव चौधरी (4 बटा.), है.कां. जगदीश मंडल (4 बटा.), ला. नायक गंगा सिंह (4 बटा.), कां. सुभाष चंदर (4 बटा.), कां. पवन कुमार सिंह (4 बटा.), कां. महेश कुमार मालाकार (4 बटा.), कां. प्रीतम सिह (4 बटा.), कां. चंडा एच आर (4 बटा.), कां. रामानंद यादव (4 बटा.), कां. महाबीर सिंह (4 बटा.), कां. प्रदीप कुमार कारकेटा (121 बटा.), सफाई कर्मचारी डी. नागैय्या (ग्रु. कें. हैदराबाद), कां. वी.वी. रामन्ना (126 बटा), तथा कां उनीस मंडल (3 बटा.)।

अप्रैल 2001

कां. बशीर अहमद मीर (73बटा.), कां. एल शशीधरन (ग्रु.के. पल्लीपुरम), है.कां. रामजी सिंह (39 बटा.), का. ए.टी. हंसदा (118 बटा.), का. अश्वनी कुमार (89 बटा), कां. श्रीकांत दत्त (49 बटा.), है.कां. सी.जी. जाधव (ग्रु.कें. नागपुर), कां. सुखविंदर सिंह (2 बटा.) तथा कां. गुरमीत सिंह (2 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार निम्न कार्मिक भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

सितम्बर 1999 – कांस्टेबल महाजन नरेंद्र ओंकार (12बटा.)।

अप्रैल, 2000 – कां. अनिल साई टोपो (100 बटा.)।

नवंबर, 2000 – कां . मदन यादव (11 बटा.)।

जनवरी, 2001 – कां. महीम अली (12 बटा.), सफाई कर्मचारी आशा देवी (3 सिग बटा.), ला. नायक नानक चंद (87 बटा.)।

फरवरी, 2001 – है. कां. पुरूषोत्तम चंद्रा (98 बटा.), है.कां. केशर सिंह (2 सिग बटा.), है.कां. सत्य नारायण (44 बटा.), है.कां. ड्राईवर जसविंदर सिंह (123 बटा.), है.कां. रामसिंह (19 बटा.), स.उ.नि. हंसराज हरिजन (ग्रु.के. हैदराबाद), है. कां. फिटर आर.सी यादव (94 बटा.), कां. महेद्र पाल सिंह (9 बटा), कां. देवेंद्र कुमार (102 बटा.), है.कां. ड्राईवर राकेश कुमार (120 बटा.), है.कां. ड्राईवर ओ.वी. वीरन (ग्रु.के. पूणे), कां चुआईलोवा (48 बटा.) तथा कांस्टेबल श्रीनिवास यादव (28 बटा.)।

64 बटा. द्वारा मेडिकल कैम्प का आयोजन

मोकाक चुंग नागालैंड स्थित 64 बटा. केरिपु बल ने मई 2001 के द्वितीय सप्ताह में अपने कैम्प के नजदीकी गांव में मेडिकल कैम्प का आयोजन किया। बल के अधिकारियों व जवानों के अथक परिश्रम तथा लगन के कारण जनसेवा अभियान पूरी तरह सफल रहा । स्थानीय लोगों ने इस स्वास्थ्य शिविर में आकर अपना इलाज कराया। स्थानीय प्रशासन तथा जनता ने कैम्प के आयोजन के लिए बटालियन की प्रशंसा की



फोटो डिवीजन द्वारा आयोजित फोटो प्रतियोगिता के श्वेत श्याम वर्ग में सांत्वना पुरस्कार जीतने पर सूचना प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज बल के कमांडेंट एम.पी. नथैनियल को पुरस्कृत करते हुए। श्री नथैनियल वर्तमान में एन.एस.जी. में प्रतिनियुक्ति पर हैं



मानवाधिकारों पर वाद विवाद प्रतियोगिता के हिंदी वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर बल की बबली खानम को पुरस्कार प्रदान करते मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा

रजि. न. 4767/87



चिकित्सा अधिकारियों के सम्मेलन को संबोधित करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

सी.आर.पी.एफ. समाचार

30 जून, 2001



पंजाब के राज्यपाल ले.जन. (सेवानिवृत) जे.एफ.आर. जैकब ने 23 मई, 2001 को पंजाब राजभवन स्थित केरिपु बल की 28 बटा. की एक कम्पनी के जवानों के लिए एक मैस का उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद जवानों से बात करते श्री जैकब।



आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में अद्वितीय वीरता दिखाने के लिए *6* बटालियन के जवानों और अधिकारियों को बधाई देते जम्मू कशमीर पुलिस के महानिदेशक श्री ए.के. सूरी ,इस मुठभेड़ में *6* आतंकवादी मारे गये ,



मोकाक चुंग नागालैंड में *64* बटालियन द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में एक रोगी को लाते बल के जवान



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–15 अंक–1
30 जून, 2001
9 आषाढ़, शक 1923

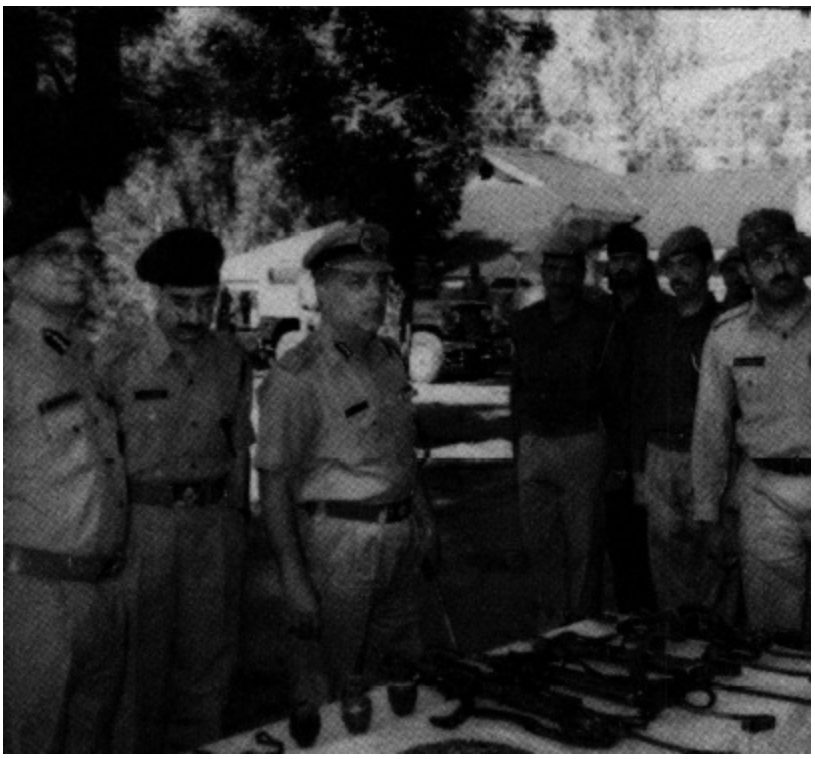
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

के.रि.पु. बल के नव आरक्षकों का दीक्षांत समारोह

104 बटालियन द्वारा मानवाधिकारों पर कोर्स

आंध्र प्रदेश में केरिपु बल द्वारा जन कल्याणकारी कार्य

के.रि.पु. बल खिलाड़ियों ने अमेरिका में विश्व पुलिस एवं फायर खेलों में लगाई पदकों की झड़ी

स्पेशल सेक्टर को फुटबाल का खिताब

6 बटालियन की उल्लेखनीय परिचालनिक सफलता

85 बटालियन ने स्थापना दिवस मनाया

केंद्रीय विद्यालय झड़ौदा कलां ने रजत जयंती उत्सव मनाया

107 बटालियन द्वारा चिकित्सा शिविर

राजपत्रित अधिकारी मैस रामपुर

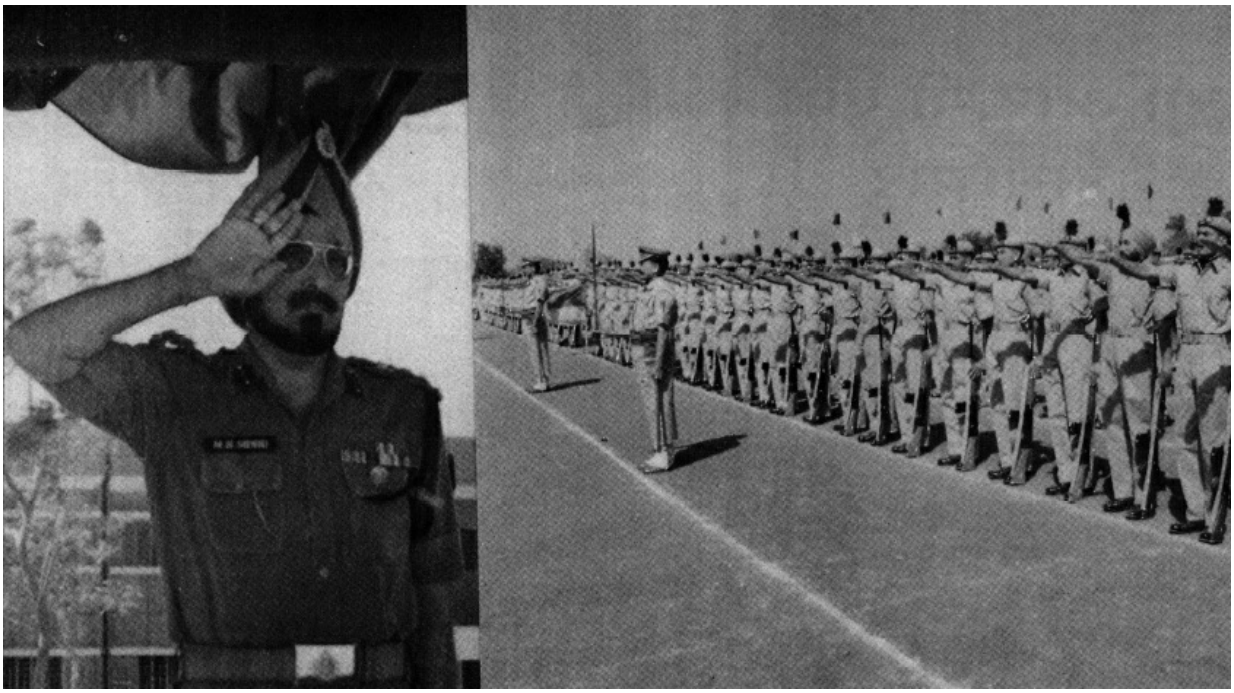
हम किसी से कम नहीं

ईनामी योजना। कविता

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

के.रि.पु. बल के नवआरक्षकों का दीक्षांत समारोह



नव आरक्षकों की शपथ परेड की सलामी लेते अपर उप महानिरीक्षक एम.एस. सिद्धू

नीमच सीआरपीएफ परिसर में 28 मई, 2001 को आयोजित एक समारोह में प्रशिक्षण प्राप्त नवआरक्षकों को राष्ट्र की सेवा व रक्षा के संकल्प की शपथ दिलाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर उप महानिरीक्षक एम.एस. सिद्धू थे।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस के रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र से 44 सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात 477 नवआरक्षियों को दीक्षांत समारोह में शपथ दिलाई गई। शपथ समारोह के दौरान की गई परेड का संचालन रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र सीआरपी के उप प्राचार्य नदीम अहमद समदानी ने किया। इस अवसर पर अपर उप महानिरीक्षक श्री सिद्धू ने अपने संबोधन में नवआरक्षियों को संदेश दिया कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद वे इस महान बल के सदस्य बन गए हैं और अब संवैधानिक संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने हेतु देश तथा देश के बाहर भी आतंकवाद, प्राकृतिक विपत्तियों इत्यादि से निपटने के लिए हर क्षण उन्हें खुद को मानसिक तथा शारीरिक रूप से तैयार रखना होगा। उन्होंने कहा आज के युग में देश विदेश की हर क्षण बदलती हुई आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों से पैदा होने वाली हिंसा की रोकथाम के लिए उन्हें सदैव सचेत रहना होगा।

श्री सिद्धू ने जवानों से कहा हमारे देश में लंबे समय से जम्मू–कश्मीर, पूर्वी राज्यों तथा मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और उड़ीसा आदि राज्यों में विभिन्न विषयों को लेकर अलगाववादी गुटों द्वारा आतंकवाद का सहारा लिया जा रहा है जिन पर नियंत्रण के लिए हमारी फोर्स को विशेष रूप से नियुक्त किया जाता है जिसके लिए जवानों को हर क्षण तैयार रहना चाहिए।

104 बटालियन द्वारा मानवाधिकारों पर कोर्स



कोर्स के समापन के अवसर पर बोलते हुए *104* बटालियन के कमांडेंट

अलीगढ़ स्थित रेपिड एक्शन फोर्स की 104 बटालियन द्वारा 12 से 23 मार्च 2001 तक मानवाधिकारों पर एक कोर्स का आयोजन किया गया। कोर्स का आयोजन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के राजनीतिक शास्त्र विभाग के अध्यक्ष तथा मानवाधिकार कार्यक्रम के समन्वयक प्रोफेसर एम.ए. किशोर के सहयोग से किया गया। आर.ए.एफ. की कार्य शैली को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम में पुलिस एवं जन

सपेक, भीड मनोविज्ञान, भारतीय कानून व्यवस्था एवं मानवाधिकारों, मानवाधिकार एवं आरएएफ जैसे विषयों तथा विषयों के विशेषज्ञों के साथ चर्चा भी शामिल थी। इसके अलावा कोर्स में शामिल प्रतिनिधियों ने जेल तथा चैरिटी होम का दौरा भी किया।

महानिदेशालय में नई नियुक्तियां

उप महानिरीक्षक श्री जय प्रकाश ने महानिदेशालय में उप महानिरीक्षक (परिचालन) का पदभार 1 जून, 2001 से संभाल लिया है। इससे पहले वह सी.टी. सी–1 नीमच में तैनात थे। अब तक इस पद पर कार्यरत उप महानिरीक्षक श्री सुखजिंदर सिंह की नियुक्ति उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर हो गयी है। उप महानिरीक्षक श्री आर.सी. पुरी ने 11 जून, 2001 को महानिदेशालय में उप महानिरीक्षक (प्रशासन) का पदभार संभाल – लिया। इससे पूर्व वह उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर के पद पर कार्यरत थे। अब तक उप महानिरीक्षक (प्रशासन के पद पर कार्यरत श्री ए.के. सिंह की नियुक्ति सी.टी.सी.–1 नीमच में हो गयी है।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रंगारेड्डी सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में एक

हैदराबाद से प्रकाशित होने वाले प्रतिष्ठित उर्दू दैनिक सियासत के 1 अप्रैल, 2001 के अंक के कैरियर काउंसिल स्तभ में साबिया जदाह से अख्तारी नवाज, अलखोबर से इम्तियाज अली, रियाद से मोहम्मद जाकिर और शिकागो से इनाम हुसैन ने अपने बच्चों के दाखिले के लिए जब किसी अच्छे स्कूल के बारे में परामर्श मांगा तो अखबार के स्तंभ लेखक ने जवाब दिया कि अगर वो हिंदूस्तान के स्कूलों के बारे में पूछ रहे हैं, तो ये लिस्ट लम्बी है, लेकिन अगर वो हैदराबाद के आसपास के स्कूलों के बारे में पूछ रहे हैं, तो यहां दो ही स्कूलों का अनुमोदन किया जा सकता है, जिन में एक सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल है।

आंध्र प्रदेश में केरिपु बल द्वारा जन कल्याणकारी कार्य

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 5, 35, 63, 98 और आरएएफ की 99 बटा. द्वारा आंध्र प्रदेश के नक्सलवाद से प्रभावित आठ जिलों में अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत कई कार्यक्रम चलाए गये।

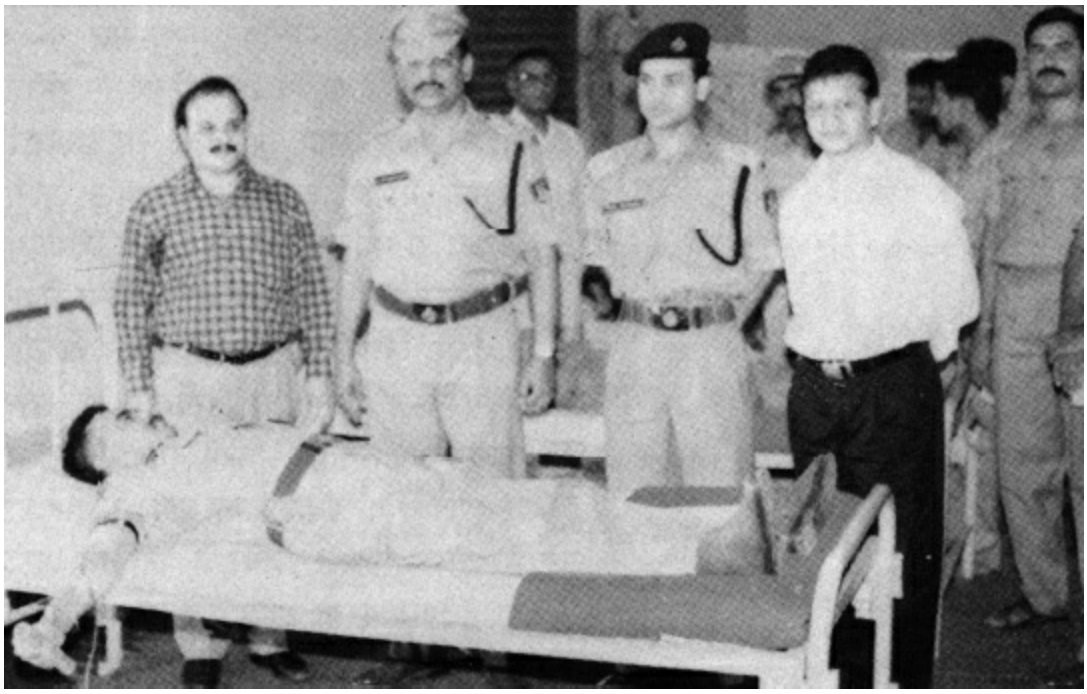
इन कार्यक्रमों के तहत जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री उपलब्ध करायी गयी, मुफ्त चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर नागरिकों को चिकित्सा सुविधाएं एवं दवाईयां उपलब्ध करायी गयी तथा स्थानीय नागरिकों में खेल सामग्री आदि वितरित की गयी।

63 और 98 बटालियनों ने अपने अपने मुख्यालयों में रक्तदान शिविरों का आयोजन किया, जिसमें 120 जवानों और अधिकारियों ने रक्तदान किया।



98 बटा. द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर के दौरान उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री विद्या सागर राव

बल की बटालियनों द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविरों में लगभग 2200 रोगियों का उपचार किया गया। लगभग 650 जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण सामग्री उपलब्ध करायी गयी। निजामाबाद जिले में रेड्डीपेट गांव में 98 बटालियन द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में गृह राज्य मंत्री श्री विद्या सागर राव ने भी दौर किया और केरिपु बल द्वारा किये जा रहे इन कल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा की।63 बटालियन ने वारंगल जिले के इटुरूनाग्राम में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया और जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की। करीमनगर जिले में 5 बटालियन ने वंगारा गांव में बच्चों के लिए खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया। साथ ही कालवा सिरामपुर में चिकित्सा कैम्प का भी आयोजन किया।



98 बटा. द्वारा रक्त दान शिविर में रक्तदान करते अधिकारी

केरिपु बल खिलाड़ियों ने अमेरिका में विश्व पुलिस एवं फायर खेलों में लगाई पदकों की झड़ी



भारत लौटने पर दिल्ली हवाई अड्डे पर खिलाड़ियों का स्वागत

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने 8 से 16 जून 2001 तक इण्डियाना पोलिस अमेरिका में हुए विश्व पुलिस एवं फायर खेलों में बल के खिलाड़ियों को उनके अभूतपूर्व प्रदर्शन के लिए बधाई दी है।

इन विश्व पुलिस एवं फायर खेलों में केरिपु बल ने ट्रेक एण्ड फील्ड, तैराकी तथा कुश्ती में 17 स्वर्ण, 7 रजत तथा 4 कांस्य पदक जीते।

महिलाओं के एथलेटिक्स वर्ग में सब इंस्पेक्टर आशिक बीवी पी.एच. ने चार स्वर्ण पदक जीते जबकि इंस्पेक्टर दीपा ए.के. ने तीन स्वर्ण तथा एक रजत और सब इंस्पेक्टर सुधा के.पी. ने दो स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक जीता।

पुरूषों के एथलेटिक वर्ग में सहायक कमांडेंट परमजीत सिंह तथा इंस्पेक्टर टी.एन. संजीव ने दो-दो स्वर्ण एवं रजत पदक जीते। जबकि सब इंस्पेक्टर शमशेर सिंह ने पोल वाल्ट में एक स्वर्ण पदक जीता।

सब इंस्पेक्टर राकेश पटेल ने कुश्ती में दो स्वर्ण पदक जीते।

तैराकी प्रतियोगिता में इंस्पेक्टर कैलाश नाथ ने एक स्वर्ण व दो रजत पदक जीते। जबकि इंस्पेक्टर दीपक कुमार ने तीन कांस्य पदक जीते।

स्पेशल सेक्टर को फुटबॉल का खिताब

ग्रुप केंद्र पिंजौर में 5 मार्च, 2001 को हुए सीआरपीएफ के 11वें अंतर क्षेत्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट को स्पेशल क्षेत्र की टीम ने जीत लिया। इस टीम ने कड़े मुकाबले के बाद

आरएएफ क्षेत्र की टीम को 4-1 से हराया। स्पेशल क्षेत्र ने यह टूर्नामेंट 4-1 से जीत लिया। सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर मनिक मंडल (आरएएफ) व सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी सुमीत सिन्हा (पूर्वी क्षेत्र) को चुना गया। समापन समारोह पर खिलाड़ियों को पुरस्कार सीआरपीएफ के अतिरिक्त महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा ने दिए।

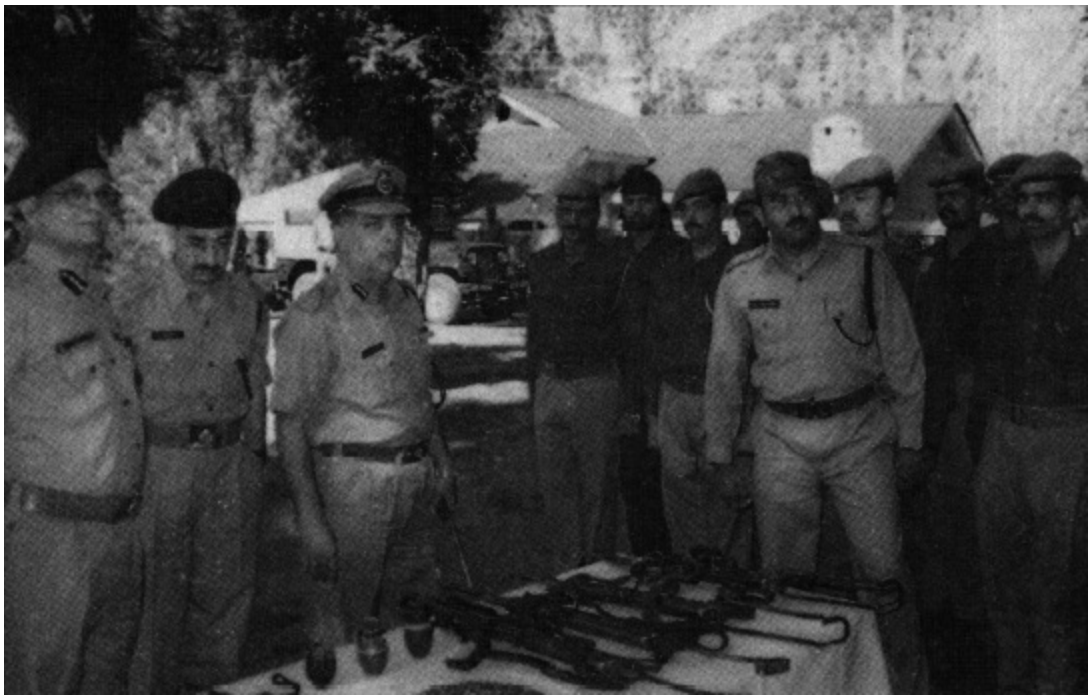
एडीआईजी पिंजौर डी.एस. पुंडीर इस अवसर पर मौजूद थे। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए जे.पी. वर्मा ने कहा कि सीआरपीएफ को अच्छे स्तर का खेल खेलना चाहिए। उन्होंने जवानों का आह्वान किया कि परिचालन के क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करने के साथ साथ वे खेलों के क्षेत्र में भी कीर्तिमान स्थापित करें। श्री जे.पी. वर्मा ने दोनों टीमों को ट्रॉफी प्रदान की। इससे पूर्व सभी टीमों के खिलाड़ियों ने मार्चपास्ट किया। श्री जे.पी. वर्मा ने ग्रुप सेंटर पिंजौर को इस खेल आयोजन के लिए बधाई थी। यह टूर्नामेंट 26 फरवरी को शुरू हुआ था। इसमें कुल 12 टीमों ने भाग लिया।

6 बटालियन की उल्लेखनीय परिचालनिक सफलता

5अप्रैल, 2001 को बनिहाल स्थित केरिपु बल की 6 बटालियन की डी. कम्पनी के कंपनी कमांडर एस.के. राणा को डोडा जिले के जेरादी नील-खोरा नील में कुछ विदेशी आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना मिली तो वह तुरंत जम्मू कशमीर पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स की एक टुकड़ी के साथ कूच कर गये।

बाद में उन्होंने 12 राष्ट्रीय राइफल की एक टुकड़ी को भी अपने अभियान में शामिल कर लिया। यह पुलिस पार्टी अभियान की गोपनीयता बनाए रखने के लिए करीब 15 किमी का पैदल रास्ता तय कर आतंकवादियों के छिपने के संदिग्ध स्थान पर पहुंची। जम्मू कशमीर पुलिस और राष्ट्रीय राइफल के जवानों को आतंकवादियों के संभावित भागने के रास्तों को रोकने के लिए तैनात कर श्री राणा अपनी पार्टी के साथ आतंकवादियों के छिपने के संभावित स्थान की तरफ बढ़े तभी उन पर आतंकवादियों ने भारी फायरिंग शुरू कर दी। श्री राणा ने कुशलता से अपने जवानों का नेतृत्व किया तथा आतंकवादियों की पोजीशन के पास पहुंच कर दो आतंकवादियों को मार गिराया। जिन की पहचान बाद में लश्करे तोयबा के अबू खालिद और अबू हफिजा के रूप में कर ली गयी । उनके पास से एक ए.के. 47 और ए.के. 56 रायफल अम्युनिशन के साथ बरामद की गयी । लेकिन गांव के कुछ घरों के अभी भी बल की पार्टी पर लगातार फायरिंग हो रही थी । इसी दौरान दो भागते हुए आतंकवादियों का जवानों ने पीछा किया और एक–एक कर दोनों को मार गिराया । मारे गये आतंकवादियों की पहचान लश्करे तोयबा के अबू गुलशन और अबू अकांशा

के रूप में कर ली गयी। दोनों विदेशी आतंकवादी थे। उनके पास से एक ए.के. 47 और एक ए.के. 56 रायफल कारतूस और चार ग्रेनेड बरामद किये गये।



पुलिस महानिदेशक जम्मू कशमीर आतंकवादियों से बरामद हथियारों का निरीक्षण करते हुए

अभी भी कुछ घरों के फायरिंग जारी थी, अतः श्री राणा ने 12 राष्ट्रीय रायफल के कमांडर के साथ योजना बना कर पूरे गांव को खाली करा कर अपनी घेराबंदी तंग करते हुए, आतंकवादियों के छिपे स्थान पर एल.एम.जी. राकेट और ग्रेनेड से हमला बोल दिया। बाद में इन घरों से दो आतंकवादियों के बुरी तरह जले शव मिले। इस प्रकार इस आपरेशन में 6 खतरनाक विदेशी आतंकवादी मारे गये।



आपरेशन में शामिल बल के कार्मिक

आपरेशन के दौरान सहायक कमांडेंट एस.के. राणा, हैड कांस्टेबल हृदय राम, कांस्टेबल उप्तल देव और कांस्टेबल एस. के. धारधे द्वारा दिखायी गयी अद्वितीय वीरता और साहस के लिए 6 बटालियन के कमांडेंट द्वारा उन्हें शौर्यवीरता के पुलिस पदक देने की अनुशंसा की गयी है।

85 बटालियन ने स्थापना दिवस मनाया



श्रीमती चहल बटालियन मुख्यालय के द्वार पर सलामी देते जवान की प्रतिमा का अनावरण करती हुयी

पिछले दो वर्षों से गोलाघाटा जिले के विवादग्रस्त सीमावर्ती असम–नागालैंड क्षेत्र में तैनात केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) 85वीं बटालियन ने बोकाजान स्थित अपने मुख्यालय तथा कंपनी लोकेशन में 3 जून 01 को अपना स्थापना दिवस मनाया। पिछले विधान सभा चुनाव में तैनात बटालियन की एक कंपनी के बहादुर हवलदार ने गत 10 मई की कार्बी आंग्लांग जिले के देवहरी गांव में आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर किये गये हमले में वीरतापूर्वक लड़ते हुए दो आतंकवादियों को घायल करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। इसी दौरान हवलदार मनमोहन एंव सिपाही राकेश कुमार रावत को भी विषम परिस्थितियों में अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए देश की सेवा में अपना बलिदान देना पड़ा था। समारोह के दौरान अपने इन साथियों के खोने का दुख बल के सभी जवानों के चेहरों पर स्पष्ट झलक रहा था।

समारोह की शुरूआत यूनिट मंदिर में पूजा से की गयी, व इसके उपरांत समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती चहल धर्मपत्नी पु. उ. महानिरीक्षक खटखटी रेंज का स्वागत श्रीमती ढिल्लो ने किया। इस अवसर पर बटालियन की प्रगति रिपोर्ट भी जारी की गई। समारोह में बटालियन के अफसरों, अधिनस्थ अधिकारियों व जवानों के साथ–साथ जवानों के परिवारजनों द्वारा भी बटालियन के स्थापना दिवस पर अपने–अपने विचार व्यक्त किये गये। बल के कमांडेंट हरीराम सिंह ने इस अवसर पर बटालियन के कुल 35 कर्मियों को भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य प्रदर्शन के लिए मुख्य अतिथि महोदया के हाथों प्रशस्ति पत्र दिलवा कर सम्मानित किया। श्री सिंह ने शहीद हुए जवानों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जवानों का स्थापना दिवस के अवसर पर श्रेष्ठ ड्यूटी प्रदर्शन, विनम्र व्यवहार एवं भाईचारा बरतने का आह्वान किया।

स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष आकर्षण मुख्य अतिथि श्रीमती चहल द्वारा बटालियन के प्रवेश द्वार पर सलामी देते हुए सैनिक की प्रतिमा का अनावरण रहा, जो कि बटालियन की उच्च व्यावसायिक क्षमता, अच्छे टर्न आउट, अनुशासन, अच्छे आदर्शों तथा उसूलों के प्रतीक के रूप में हमेशा बटालियन में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करता हुआ नजर आयेगा। इसके अलावा मुख्य अतिथि श्रीमती चहल ने शहीद हवलदार पी.एस. देवगम के बलिदान को हमेशा यादगार बनाये रखने के लिए बटालियन द्वारा निर्मित 134 मीटर पक्की सड़क का नामकरण 'शहीद देवगम मार्ग' के रूप में करने की घोषणा भी की।

महानिदेशालय स्टाफ कैम्प में सैनिक सम्मेलन

1 जून, 2001 को अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन) महानिदेशालय श्री दुलाल चंद्र डे ने महानिदेशालय में अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन) का पद संभालने के बाद पहली बार सैनिक सम्मेलन को संबोधित किया।

सैनिक सम्मेलन में श्री डे ने निम्न मुद्दों को और सभी कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित कर इस संबंध में विशेष सतर्कता का आह्वान किया।

वर्दी – श्री डे ने सभी कर्मचारियों का आह्वान किया कि वो अपनी वर्दी की इज्जत करें और उसकी गरिमा के अनुरूप आचरण करते हुए, उसे पूरे सलीके से पहने।

जवाबदारी – उन्होंने सभी सदस्यों से आह्वान किया कि वो अपनी जवाबदारी समझें, और अपना काम किसी और पर टालने की प्रवृत्ति से बचें।

अनुशासन – अनुशासन पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने कहा कि अनुशासन एक अच्छे वर्दी धारी की पहली पहचान है। विशेष कर वाहन चालकों से उन्होंने कहा कि वो गाड़ी चलाते समय पूर्ण अनुशासन का परिचय दे।

अवकाश से अनुपस्थिति – अवकाश से अनुपस्थिति अन्यथा अवकाश को बढ़ा लेने की प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि यह कर्मचारियों के अपने हित में है कि वो इस प्रवृत्ति का त्याग करें।

अंत में उन्होंने सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करने का सभी सदस्यों से आहवान किया।

केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु. बल कैम्पस झड़ौदा कलां ने रजत जयन्ती उत्सव मनाया



सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान स्कूल के बच्चे

केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु. बल झड़ौदा कलां ने 2 मई, 2001 को रजत जयन्ती उत्सव तथा वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह धूमधाम से मनाया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री वी.डी. टोकस, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक तथा अध्यक्ष विद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा किया गया। समारोह के दौरान श्रीमती उर्मिला गुलियानी, प्रधानाचार्य ने स्कूल की विभिन्न उपलब्धियों के बारे में बताया।

समारोह की शुरूआत सरस्वती वंदना और विभिन्न प्रकार के नृत्यों के साथ की गयी। विद्यालय के प्राथमिक कक्षा के बच्चों ने कृष्ण लीला का प्रदर्शन किया गया।

मुख्य अतिथि श्री वी.डी. टोकस ने समारोह के दौरान विद्यालय के मेधावी छात्रों को पुरस्कार दिए तथा शिक्षा के महत्व के बारे में प्रकाश डाला और विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

श्री देव कान्त ठाकुर, उप प्रधानाचार्य द्वारा समारोह की समाप्ति धन्यवाद ज्ञापन

के साथ हुआ।

बोर्ड परीक्षाओं में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल का शानदार प्रदर्शन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन के लिए सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों और शिक्षकों को बधाई दी है।

कक्षा 10 की परीक्षाओं में शामिल हुए 146 विद्यार्थियों में से 94 प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिन में से 48 विद्यार्थियों ने विशिष्टता (75 प्रतिशत से अधिक अंक) प्राप्त की। स्कूल टापर हिमांशु चड्ढा ने 92.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

इसी प्रकार कक्षा 12 की परीक्षा में शामिल हुए 91 छात्रों में से 79 प्रथम श्रेणी में पास हुए जिनमें से 31 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर विशिष्टता प्राप्त की। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश से मिली सूचना के अनुसार स्कूल टापर मयंक जैन ने 92 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

केरिपु बल द्वारा उड़ीसा में वन सम्पदा बरामद

केन्द्रीय रिवर्ज पुलिस बल के जवानों ने मई, 2001 में उड़ीसा में 2,53,920 रूपये की अवैध वन सम्पदा बरामद की।

खुर्जा जिले के बालू गांव थाने के अंतर्गत आने वाले बरबरा वन क्षेत्र में तैनात केरिपु बल की 39 बटालियन के जवानों ने यह 2,53,920 रूपये मूल्य की सामग्री मई माह से बरामद कर राज्य वन विभाग को सौंपी।

देश के सब से पुराने अर्द्धसैनिक बलों में से एक इस बहुआयामीय केरिपु बल ने 1994 में इस वन क्षेत्र को संरक्षण और संवर्धन के लिये अंगीकृत किया था, तब से बल के जवान तस्करों से करोड़ों रूपये की अवैध वन सम्पदा बरामद कर चुके हैं।

107 बटा. द्वारा चिकित्सा शिविर

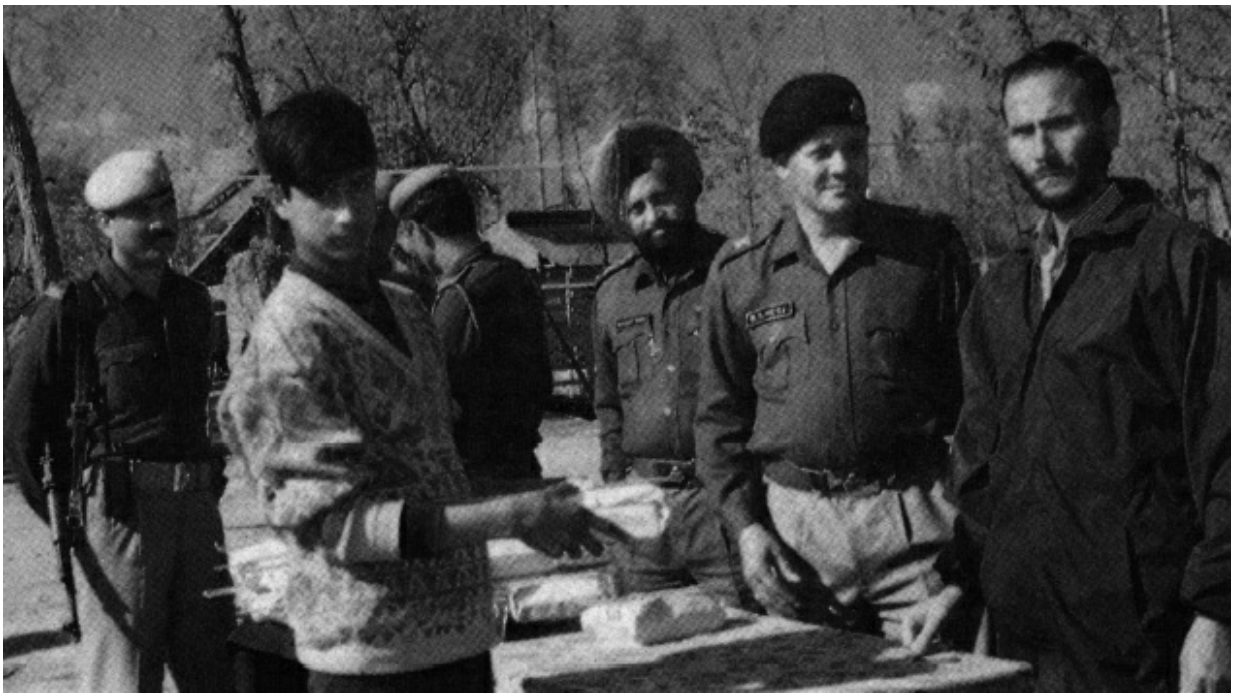


107 बटालियन द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में रोगियों को देखते डाक्टर

107बटालियन ने 21 से 23 मई, 2001 तक हिनोतिया गांव, रायसेन मध्य प्रदेश में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। 107 आरएएफ बटालियन द्वारा अंगीकृत किये गये गांवों से 300 से 400 तक महिलाओं, बच्चों और अन्य रोगियों ने इस चिकित्सा शिविर में आ कर अपना इलाज कराया।

---

47 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन

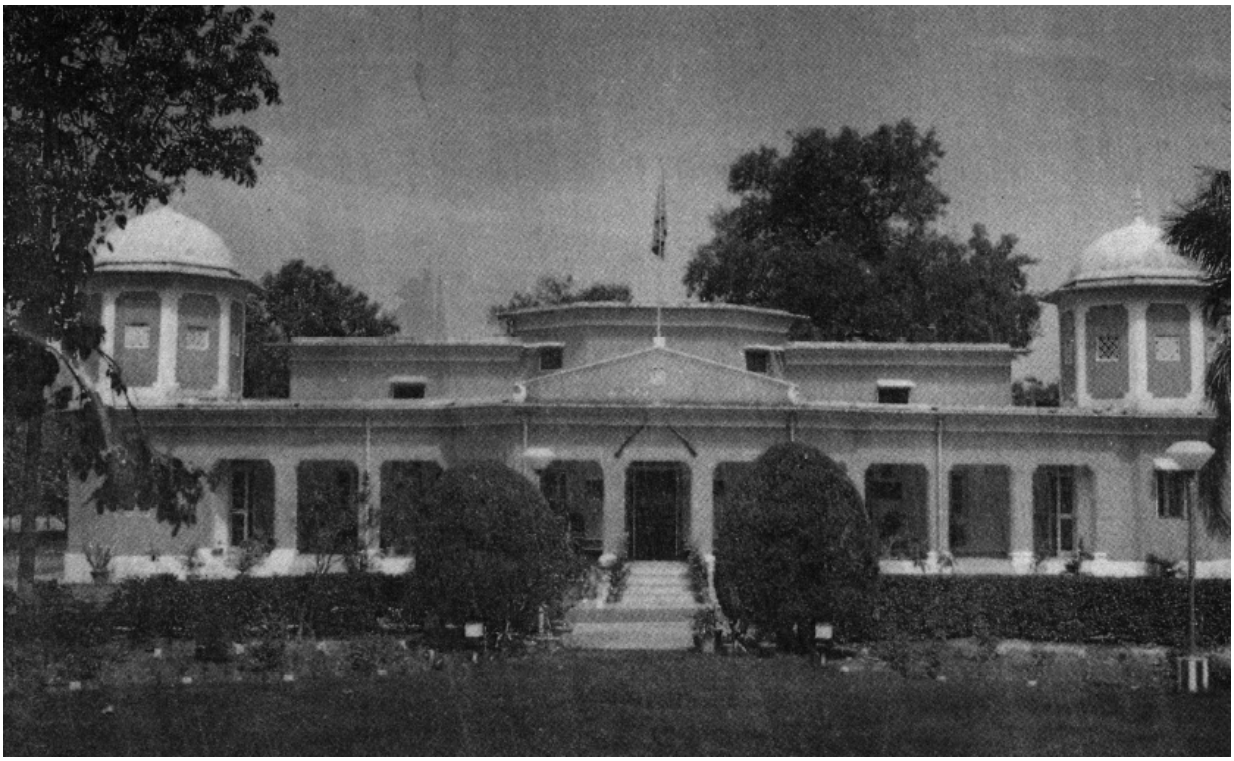


47 बटालियन ने अधिकारी स्कूली बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित करते हुए

जम्मू कशमीर स्थित 47 बटालियन द्वारा अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत पिछले दिनों करीब आठ स्कूलों के बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की गयी।

बटालियन ने बडगाम स्थित विभिन्न इलाकों में चार शौचालयों का भी निर्माण कराया।

राजपत्रित अधिकारी मैस, गुप केन्द्र, रामपुर



राजपत्रित अधिकारी मैस रामपुर

दिल्ली-लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग न. 24, पर स्थित, ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, रामपुर कैम्पस के पश्चिमोत्तर किनारे पर अपनी अद्भुत प्राचीनतम ऐतिहासिक कलाकृति की छवि लिये हुए, सागौन के घने वृक्षों से सुसज्जित यह भव्य इमारत अपनी कलात्मक वास्तु कला का नमूना है। उच्च पदाधिकारियों एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने इस ऐतिहासिक कलाकृति को भरपूर सराहा है तथा वे इस भव्य इमारत के प्राचीन रूपऔर सौन्दर्य को देख कर भाव-विभोर हो उठते हैं। यह इमारत प्राचीन स्थापत्य कला शैली का एक अनूठा एवं अद्भुत उदाहरण है। इस इमारत का निर्माण रामपुर के तत्कालीन शासक नवाब सर सय्यैद मौहम्मद अली खां ने अपनी सेना के लिये सन् 1934 में करवाया था। सन् 1945 में रजा आर्मी हैड क्वार्टर कैम्पस को रामपुर नवाब द्वारा नेशनल फायर सर्विस काले को हस्तांतरित किया। तत्पश्चात् सन् 1956 में इसे केरिपु बल को हस्तांतरित किया गया। केरिपु बल ने इस इमारत के प्राचीन ढांचे एवं ऐतिहासिक महत्व को बनाये रखने हेतु इसमें अपना राजपत्रित अधिकारी मैस स्थापित किया, जिसकी छटा से समस्त आगन्तुकगण भाव-विभोर हो उठते हैं।

इस प्राचीन ऐतिहासिक इमारत की अनूठी चित्र शैली एवं प्राचीन सौन्दर्य को पूर्ववत बनाये रखने हेतु, इसके मूल ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

हम किसी से कम नहीं

हिंसा प्रभावित इलाकों में तैनात आरएएफ की मदद के लिए महिला बटालियन की चार टीमों ने नगर में डेरा डाल रखा है। 96 महिला आरएएफ कर्मियों का यह दल अत्याधुनिक हथियारों से लैस हैं। इंसपेक्टर अंजू द्विवेदी के नेतृत्व में आई इन जांबाज महिलाओं का कहना है कि दंगा नियंत्रण करने वाले संगठन में चयन उनके लिए गौरव की बात है। इस संवाददाता ने इनसे विस्तार से बातचीत की। कमोवेश सभी का कहना है कि आरएएफ के प्रति लोगों में विश्वास है। हमारी मौजूदगी ही लोगों की सुरक्षा की गारंटी बन जाती है, हम किसी से कम नहीं, इनका कहना है कैसा भी महिलाओं का हुजूम हो हम मिनटों में काबू कर सकते हैं।

इंस्पेक्टर अंजू द्विवेदी ने बताया कि सीआरपी से विशेष साक्षात्कार और कड़े शारीरिक प्रशिक्षण के बाद दल में स्थान मिला। उन्होंने कहा दंगे के दौरान पहली प्राथमिकता बिना हथियारों के प्रयोग के इलाके की महिलाओं को सांत्वना देना है। इसके अलावा दंगे वाले इलाकों में कार्रवाई के दौरान आवश्यकता पड़ने पर महिलाओं को संभालना व तलाशी अभियान के दौरान सहायता भी करते हैं। आरएएफ की इस टुकड़ी में सभी प्रांतों की महिलाएं हैं। इसमें बाहुल्य असम की है। ड्यूटी लगने के इंतजार में बैठी आरएएफ की टुकड़ी ने बताया कि त्वरित दंगा नियंत्रण काफी जोखिम भरा काम है। लेकिन योजनाबद्ध और मनोवैज्ञानिक ढंग से कार्रवाई से कैसा भी दंगा हो आठ घंटे में काबू में आ जाता है। इसके लिए हमारे अफसर प्रशासन के सहयोग से रणनिती बनाकर कार्य करते हैं, क्योंकि अगर हमें फायरिंग का आदेश हो, तो हमें फायर खोल देना है। पंजाब की अंजना शर्मा कहती हैं कि अब तक देश के कई भागों में दंगे के दौरान काम किया है। इसलिए कुछ अलग सा नहीं लगता। उन्होंने कहा शांति हमारा लक्ष्य है। कंचन ने कहा हमारा एक सिपाही 50 उपद्रवियों पर भारी है। उन्होंने कहा कि हम गोली चलाने से लेकर पलक झपकते ऊंचे भवनों में प्रवेश करने की क्षमता रखती है। सुनिता ने कहा सभी को एक समान ट्रेनिंग और पढ़ाई कराई जाती है। इसलिए कभी महिला होने के कारण सुविधा मिलने और पीछे छोड़ने की बात तक मन में नहीं आती। उन्होंने बताया कि दल के साथ काम करने के कारण अक्सर उन्हें आठ घंटे से ज्यादा भी ड्यूटी करना पड़ती है। लेकिन कड़े प्रशिक्षण के कारण वे लोग कम खाने और सिर्फ बिस्कुट पानी पी कर देर तक कार्य कर सकती हैं।

–अमर उजाला से साभार

उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश भी देंगे शहीदों के आश्रितों को अनुग्रह राशि

उत्तर प्रदेश सचिवालय में पदस्थ श्री देवव्रत दीक्षित, सचिव वित्त एवं सचिव, उत्तर प्रदेश पुलिस एवं आर्ड फोर्सेस सहायता संस्थान, अधिकारी भवन, लखनऊ, द्वारा महानिदेशक एवं महानिरीक्षक, केरिपु बल को लिखित अर्द्ध शासकीय पत्र के तहत अवगत कराया गया है कि उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल के स्थाई निवासी केरिपु बल के वे कार्मिक जो कि देश के किसी भी भाग में तैनात हैं और वे इन्सरजेन्सी या आतंकवाद की घटनाओं में शहीद हो जाते हैं अथवा स्थाई रूप से अपंगता के आधार पर सेवा निवृत्त हो जाते हैं, को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनुग्रह राशि का भुगतान किया जायेग।

अनुग्रह अनुदान की धनराशि निम्नलिखित दरों के अनुसार भुगतान की जाएगी :–

	वीरगति को प्राप्त मामलों में	स्थायी रूप में अपंग घोषित मामलों में
1. कमीशण्ड अधिकारी (अर्द्ध सैनिक बल के कमीशण्ड अधिकारी जो पुलिस बल / सैन्यबल के उक्त रैंक के समतुल्य है)	75,000	30,000
2. जूनियर कमीशण्ड अधिकारी (जो उपरोक्तानुसार क्रमांक – (1) में दर्शाये गये समतुल्य रैंक के हों)	45,000	22,000
3. अन्य रैंक्स (उपरोक्तानुसार क्रमांक (1) में दर्शाए गये समतुल्य रैंक के अनुसार)	45,000	22,500

ईनामी योजना

सुनो भाईयों जरा ध्यान से सुनो गुटखा खाने वालों के लिए ईनामी योजना

प्रथम पुरूस्कार है – कैंसर
द्वितीय पुरूस्कार है – गले हुए गाल
तीसरा पुरूस्कार है – छोटा सा मुंह
चौथा पुरूस्कार है – जवानी में बुढ़ापा
पांचवा पुरूस्कार है – खराब गुर्दे
छठा पुरूस्कार है – खांसी, कफ, दांत गायब
सातवां पुरूस्कार है – (लक्की बम्पर)
राम नाम सत्य है।

हर गुटखे के साथ किसी ने किसी बीमारी की गारंटी जरूर है। कृपा करके इस बात का ध्यान जरूर दें और अपने पड़ोसी/अपने दोस्तों को भी इस बारे में जरूर बताये। ईनाम मिलने का स्थान शमशान घाट ।५५५ मुख्य अतिथि यमराज के कर

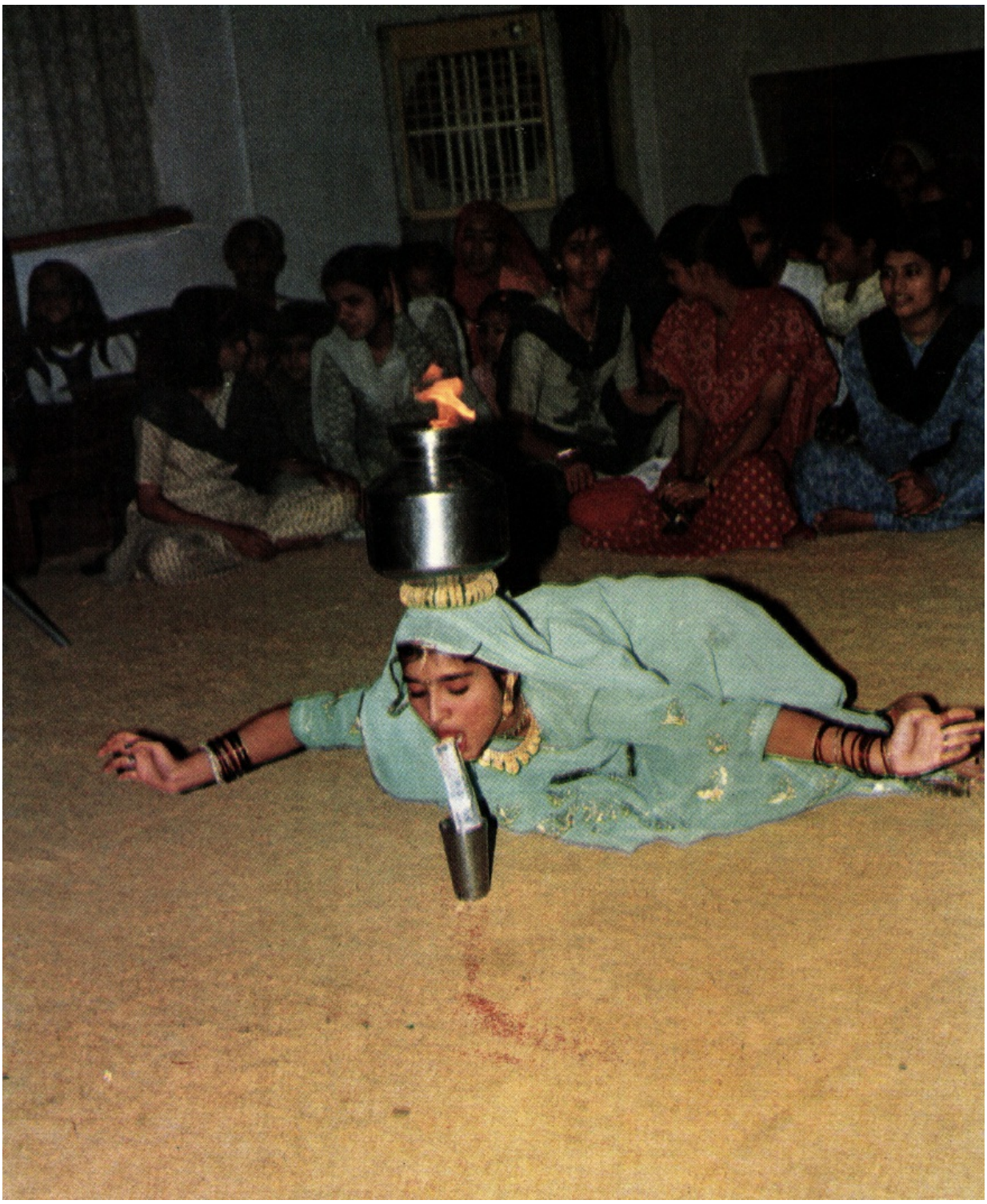
कमलों द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया जायेगा।

– मन मोहन सिंह
स.उ.नि./एम, ग्रुप केन्द्र रामपुर

52वीं वाहिनी के 32वें स्थापना दिवस पर

52 तेरा किस तरह करूं गुणगान
मेरा बचपन और जवानी चढ़ी यहीं परवान
52 तेरा किस तरह करूं गुणगान
ग्यारहवीं बी.एम.पी. से बदलकर 52 सीआरपी कहलाई
एक अप्रैल 69 को मोकामा घाट में अस्तित्व में आई
एक गढ़वाली दो आदिवासी तीन बिहारी कंपनियां पाई
मनीराम से प्रथम कमांडेंट ने ट्रेनिंग में दी रगड़ाई
ट्रेनिंग बाद पश्चिम बंगाल में नक्सलियों से जा टकराई
उड़ीसा जा, फिर मिजोरम में उग्रवाद से करी लड़ाई
काशमीर, पंजाब, असम, दिल्ली से घूमघाम मणिपुर में आई
चहुंदिशां भ्रमण करते-करते हुई 32 वर्ष की जवान
52 तेरा किस तरह करूं गुणगान
जब से मैं यूनिट में आया प्यार प्रेरणा सब यहां पाया
धीरे-धीरे उन्नति करते अब आकार है ये पद पाया
कभी खुशी कभी गम कभी ज्यादा कभी कम
कभी गुस्सा कभी नर्म कभी वो कभी हम
तरह-तरह के मिले कमांडर कुछ शांति रूप कुछ आग बवंडर
पर हम निश्चल, दृढ़, शांत सदा रहे अगली लाइन के अंदर
सदां अग्रणी रहे खेल हो या परेड या अभियानों पर
तेरे कारण ही पाया है हमने ये सम्मान
52 तेरा किस तरह करूं गुणगान

–धर्मपाल त्यागी
द्वितीय कमान अधिकारी
52 बटा.



ग्रुप केंद्र-*1* अजमेर में *22* मई *01* को आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम रही कुमारी वंदना

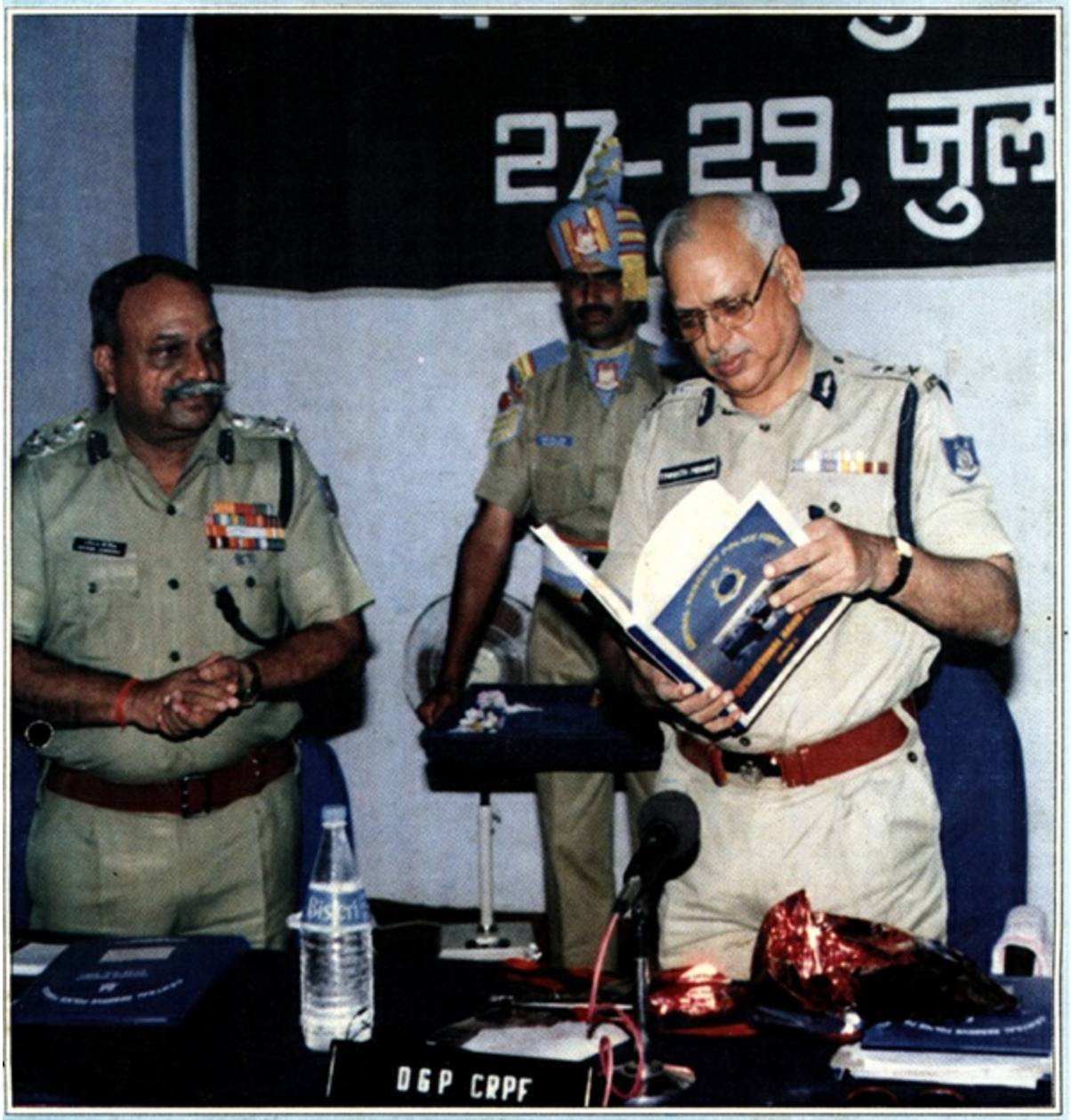
रजि. न. 4767/87



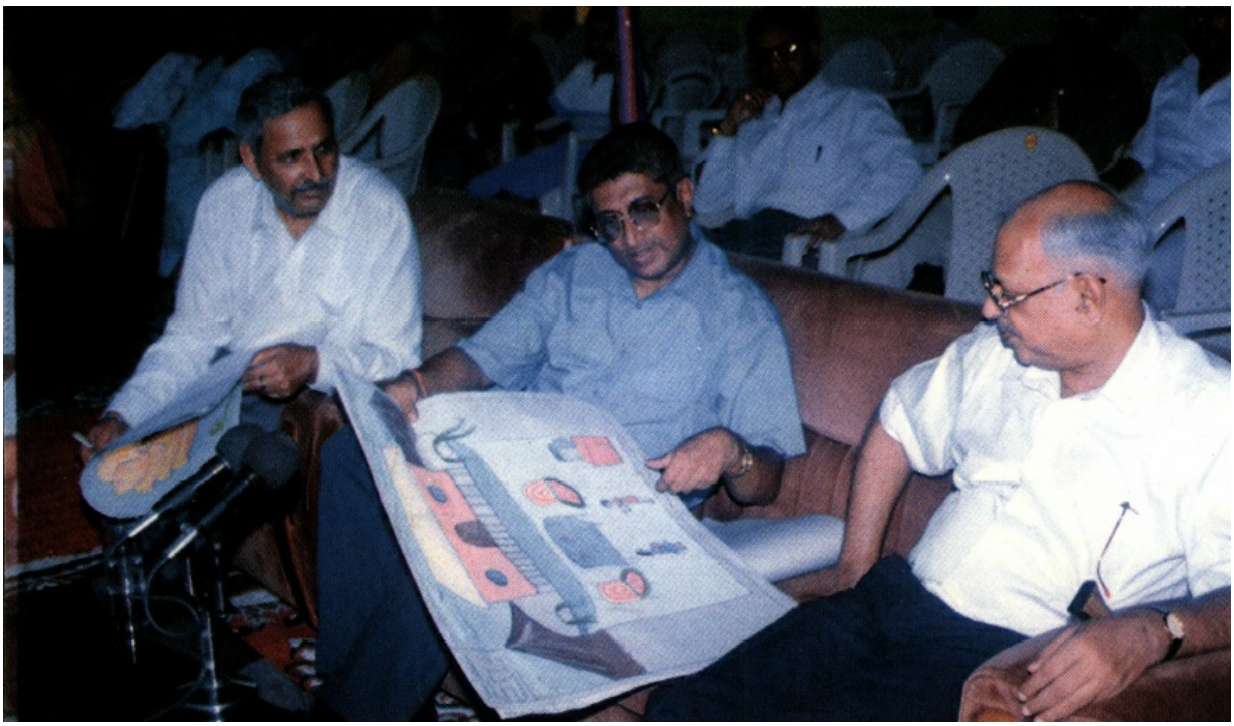
पूर्वी सैक्टर के महानिरीक्षक श्री सुभाष गोस्वामी 138 बटालियन के सब इंस्पेक्टर को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान करते हुए

सी.आर.पी.एफ. समाचार

31 अगस्त, 2001



नीमच में प्रशिक्षण संगोष्ठी एवं कार्यशाला के दौरान आपरेशनल हैंडबुक का विमोचन करते हुए महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



62वें स्थापना दिवस के अवसर पर नीमच के स्कूली बच्चों के लिए केरिपु बल परिसर में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों द्वारा बनाए गये चित्रों को देखते हुए महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र





सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-15 अंक-5
31 अगस्त, 2001
9 भाद्रपद, शक 1923

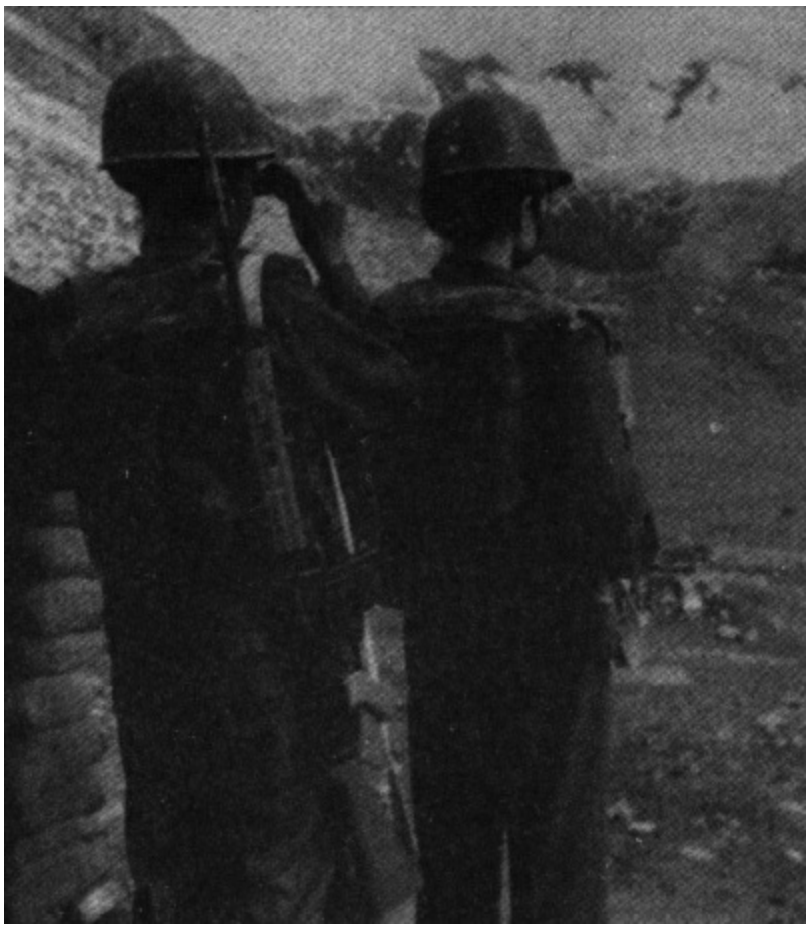
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

प्रशिक्षण को प्रासंगिक, प्रभावी और अर्थपूर्ण बनाया जाना चाहिए

एशियायी प्रतियोगिता में बल के भारोत्तोलकों ने पदक जीते

अमरनाथ यात्रा

श्रीनगर में केरिपु बल जवानों की पासिंग आऊट परेड

139 बटालियन की पासिंग आऊट परेड

72 बटा. ने दो गांवों को अंगीकृत किया

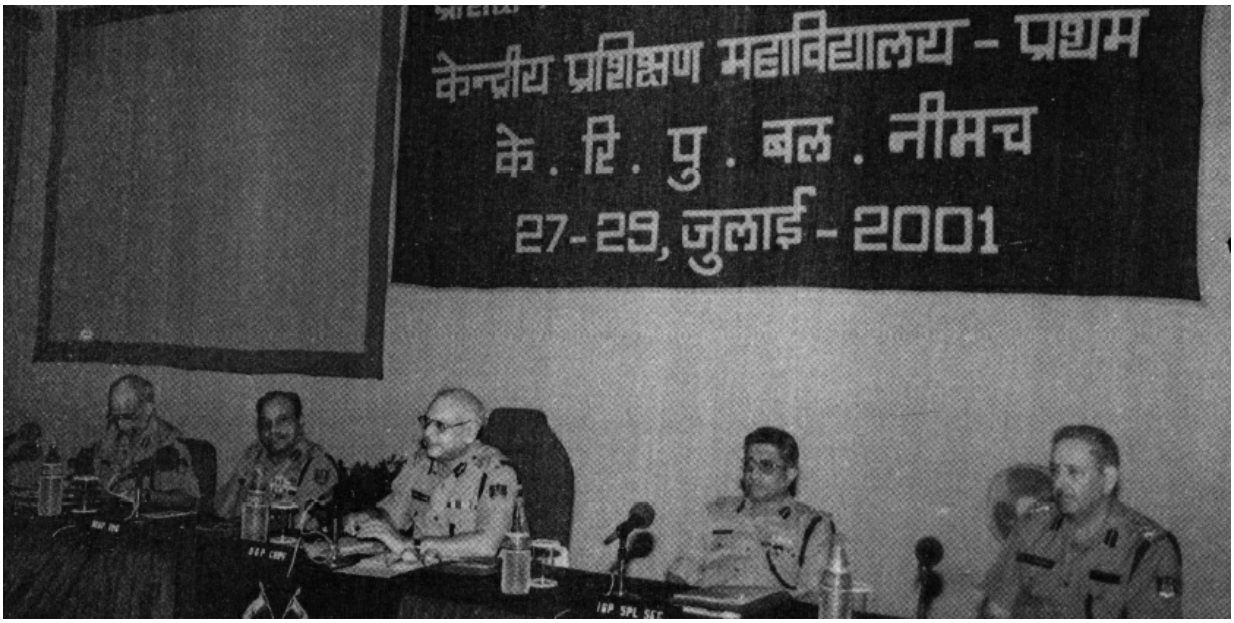
3 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया

बल द्वारा नक्कों को प्रदूषण मुक्त बनाने की मुहिम

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

प्रशिक्षण को प्रासंगिक, प्रभावी और अर्थपूर्ण बनाया जाना चाहिए



प्रशिक्षण गोष्ठी एवं कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र



इस मौके पर कुछ नये हाथियारों का प्रदशन भी किया गया

“संसार में हालात तेजी से बदल रहे हैं। अंतराष्ट्रीय, भोगोलिक, राजनीतिक, मानसिक तथा आर्थिक सभी तरह के परिवर्तन आ रहे हैं” केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय - प्रथम, नीमच में आयोजित ट्रेनिंग प्रशिक्षण गोष्ठी के द्वितीय दिवस समारोह में 28 जुलाई 2001 को गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉ. त्रिनाथ मिश्र, महानिदेशक, केरिपु बल ने कहा कि हम को भी हालातों के अनुसार बदलना होगा। कल्पना शक्ति व इच्छा शक्ति को इस्तेमाल करके अपनेआप में बदलाव ला सकते हैं। बल के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण जरूरी बताते हुए महानिदेशक ने कहा कि प्रशिक्षण के तौर-तरीकों में परिवर्तन लाएं, नए-नए तरीके अपनाएं, विचार-विमर्श किया जाए। उन्होंने कहा कि बल के कार्मिकों की तैनाती आतंकवादी मुहिम पर सबसे अधिक है, अतः प्रशिक्षण सिलेबस उसके अनुरूप होना चाहिए। महानिदेशक ने बताया कि प्रशिक्षण संस्थानों में जो काम कर रहे हैं, वे प्रशिक्षण को ऊंचे स्तर पर ले जाऐं। अनुदेशक केवल सिखलाई का काम ही न करें बल्कि आदर्श प्रस्तुत करें। कार्य के प्रति सभी की रूचि एवं लगन होनी चाहिए। कार्य में महारथ, दक्षता हासिल करने के लिए नई-नई विधाओं में महारथ हासिल करना जरूरी है। डॉ. त्रिनाथ मिश्र ने जोर देते हुए कहा कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति में मोहब्बत और गर्व होना चाहिए। ट्रेनिंग में भावनात्मक प्रशिक्षण पर जोर देना चाहिए तथा अभ्यास करते रहना चाहिए। कार्य के सभी क्षेत्रों में हम अपने स्तर को बढ़ा सकें तो हम अपने मकसदों में कामयाब हो सकेंगें।



महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र ने वृक्षारोपण कार्यक्रम का भी उद्घाटन किया

गोष्ठी में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए पुलिस महानिरीक्षक मोहनराज ने कहा कि प्रशिक्षण का आधुनिकीकरण एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिस पर ध्यान दिया जा रहा है। बल को विभिन्न प्रशिक्षण संस्थाओं में उपलब्ध आधुनिक प्रशिक्षण सहायता के अलावा बल के स्माल आर्मस ट्रेनिंग सिक्युलेटर (एस.ए.टी.एस) और (आई.डब्ल्यू.ई.एस. एस.) प्राप्त कर लिए हैं।

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय-प्रथम द्वारा चलाये जा रहे कोर्सों के प्रशिक्षण पद्धति, नवीन परिवर्तन तथा प्रशिक्षण में प्रस्तावित बदलाव पर श्री ए.के. सिंह., प्राचार्य सी.टी.सी. द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा की गई। गोष्ठी में आन्तरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा कम्पनी पोस्ट पर आत्मघाती दस्ते द्वारा हमला होने पर की जाने वाली तुरंत कार्रवाई का प्रदर्शन किया गया तथा चर्चा की गई।

गोष्ठी और कार्यशाला के तीसरे दिन 29 जुलाई, 2001 को गोष्ठी में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए केरिपु बल ने महानिदेशक श्री त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि चुनौतियों का मुकाबला करने में ट्रेनिंग सबसे अच्छा साधन है। ट्रेनिंग को प्रासंगिक, प्रभावी और अर्थपूर्ण बनाया जाए। बल के सामर्थ्य को आशानुकुल बनाने के लिए प्रशिक्षण में अन्य मुख्य पहलू-ज्ञान, कारीगरी, दक्षता, मनोवृत्ति को पुनः अनुकूल बनाया जाना है। महानिदेशक ने सलाह दी कि नई युद्धनीति और युक्ति, रणकौशल के वरिष्ठ प्रबंधक आपसी विचार विमर्श करके इस दिशा में निर्देश प्रतिपादित करने में समर्थ हो सकेंगें।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए पुलिस महानिरीक्षक, केरिपु बल, श्री मोहनराज ने कहा कि वर्ष 2000 में सभी अधिकारियों के लिए प्रमोशनल कोर्स शुरू कर दिए गए हैं और उनके बुनियादी ज्ञान और व्यवसायिक क्षमता में वृद्धि करने के प्रयास लिए जा रहे हैं।

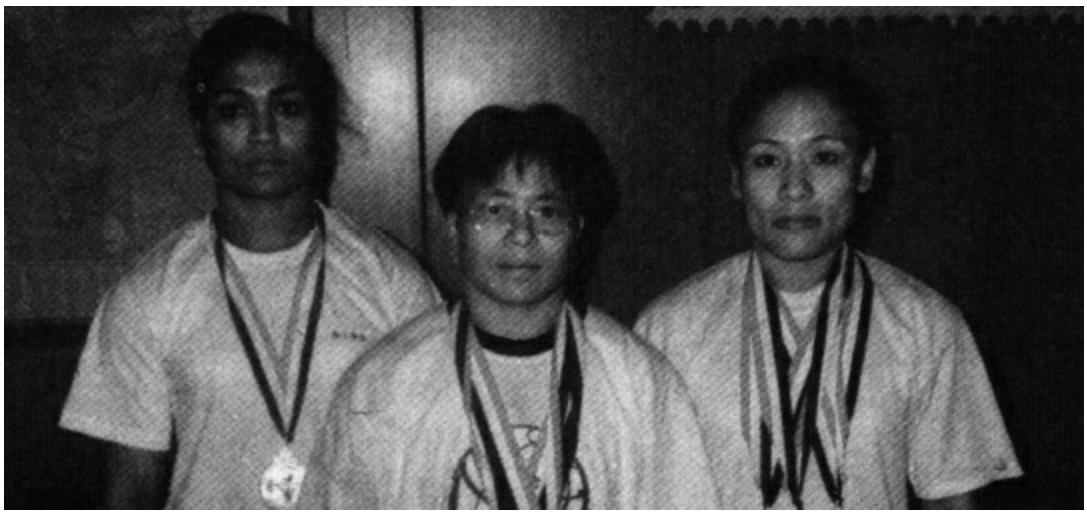
उप निदेशक (प्रशिक्षण, ब्रिगेडियर, रिटायर्ड) श्री गोविन्द जी मिश्र ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि धीरे-धीरे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की ड्यूटियां कानून और व्यवस्था से बदल कर प्रतिविद्रोह (काउंटर इंसरजेंसी) और फौजी कार्रवाई हो रही है। वर्तमान में बल 84 प्रतिशत इस तरह की कार्रवाईयों में प्रतिबद्ध है। उन्होंने आगे कहा कि बल पहले कभी इस तरह के क्षेत्र में शामिल नहीं होता था। बल की आपरेशनल क्षमता को बढ़ाने के लिए बल को आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित किया जाना है।

पुलिस महानिरीक्षक श्री एच.के. सरीन, प्राचार्य, सीटीसी-प्रथम, श्री ए.के. सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, नीमच श्री बी आर शर्मा और विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों ने चर्चा में भाग लिया। इस वर्ष पहली बार राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, सेना तथा अन्य केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया।

आतंकवाद एवं विद्रोही इलाकों में फायरिंग में अपनाया जाने वाला नवीन फायरिंग कौशल, यूनिट स्तर पर आसूचना सेल द्वारा परिचालनात्मक आसूचना इकट्ठा करने एवं प्रभावी पूछताछ, आंतरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा चलाये जाने वाले

कोर्सों के पाठ्यक्रम, पद्धति, नवीन परिवर्तन एवं कोर्सों में प्रस्तावित परिवर्तन पर प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा की गई। गोष्ठी में मौके तैयारी एवं रेड, इन्टरवेन्शन पद्धति, गाड़ियों को रोकना एवं तलाशी, आतंकवादियों द्वारा गाड़ियों में रखे बंधकों का छुड़ाने की कार्रवाई का प्रदर्शन केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा किया गया। विभिन्न परिचलानात्मक अभियानों की योजना एवं क्रियान्वन में सेन्ड मॉडल की उपयोगिता एवं विभिन्न प्रकार के नवीन सेन्ड मॉडलों का प्रदर्शन केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा किया गया। विभिन्न परिचालानात्मक अभियानों की योजना एवं क्रियान्वन में सेन्ड मॉडल की उपयोगिता एवं विभिन्न प्रकार के नवीन सेन्ड मॉडलों का प्रदर्शन केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय-द्वितीय द्वारा किया गया। गोष्ठी में केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय-तृतीय द्वारा चलाये जा रहे कोर्सों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, पद्धति, नवीन परिवर्तन तथा प्रशिक्षण में सुधार एवं प्रस्तावित बदलाव पर प्राचार्य, सी.टी.सी.-तृतीय द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। अंत में पाठ्यक्रम अद्यतन समिति की बैठक में विचार विमर्श किया गया।

एशियायी प्रतियोगिता में बल के भारोत्तोलकों ने पदक जीते



एशियाई प्रतियोगिता में पदक जीतने वाली बल की महिला भारोत्तोलक

12 से 17 जुलाई 2001 तक जियोंजू कोरिया में हुयी सीनियर एशियन वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में बल की टीम ने भाग ले कर 2 स्वर्ण, 2 रजत और 5 कांस्य पदक जीते ।

इनमें से सहायक कमांडेंट एन. कुंजारानी देवी ने 2 स्वर्ण और 1 रजत, इंस्पेक्टर प्रतिमा देवी ने एक रजत तथा इंस्पेक्टर नंदिनी देवी ने 3 कांस्य पदक जीते ।

अमरनाथ यात्रा

श्रद्धा और विश्वास का अनूठा संगम

लेख – अनिल गुप्ता
चित्र – एस.के. खन्ना

चंदनवाड़ी से अमरनाथ की पवित्र गुफा तक की यात्रा के दौरान कई ऐसे वाकये पेश आते हैं जो लंबे समय तक स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं, पहलगाम से पवित्र गुफा तक की 46 कि.मी. की यात्रा का पहला पड़ाव चंदनवाड़ी है। पहलगाम से 16 कि.मी. दूर चंदनवाड़ी तक छोटी गाड़ी से यात्रा की जा सकती है, मगर चंदनवाड़ी से पवित्र गुफा से तक की 32 कि.मी. तक की यात्रा पैदल या खच्चरों पर करनी पड़ती है। इस वर्ष की अमरनाथ यात्रा का पहला जत्था 2 जुलाई, 2001 को जम्मू से सीआरपीएफ जवानों की सुरक्षा और संरक्षण में रवाना हुआ। इस में हम भी शामिल थे। हमारे साथ फोटो अधिकारी एस.के. खन्ना और उनके दो सहयोगी श्री सत्य प्रकाश शर्मा एवं श्री एस. सरगरू भी शामिल थे। रात पहलगाम में गुजार कर अगले दिन चंदनवाड़ी से हमने खच्चर किया। हम किसी भी तरह चंदनवाड़ी से निकल कर शाम तक यात्रा के अंतिम पड़ाव पंचतरणी तक पहुंच जाना चाहते थे। सामान्य यात्रियों के लिए यह संभव नहीं था उन्हें पहलगाम से 29 कि.मी. की दूरी और 3720 मीटर की ऊंचाई पर स्थित शेषनाग में विश्राम के लिए रोक दिया जाता है, किंतु हमारे साथ सीआरपीएफ के एक डिप्टी कमान्डेंट पी.सी. झा भी थे, जिन्हें पूरे अमरनाथ यात्रा मार्ग पर संचार व्यवस्था चैक करनी थी। इस पूरी यात्रा के दौरान संचार और सुरक्षा का जिम्मा सीआरपीएफ के ही पास था। अतः हम लोग रात्रि लगभग 8.30 बजे पहलगाम से 41 कि.मी. दूर 3810 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यात्रा के अंतिम पड़ाव पंचतरणी पहुंच गये। यह यात्रा का सबसे कठिन भाग है।

पहलगाम में लगभग 15 हजार खच्चर यात्रियों, सुरक्षा बलों के जवानों, उनके साजो समान और रसद को ढोने के काम पर यात्रा के दौरान लगे थे। बस उनके पास कमाने के लिए यही एक दो महीने होते हैं, इस दौरान वो जो कमा लेते हैं, उसी से साल भर अपना पेट भरते हैं।



पवित्र अमरनाथ गुफा के पास यात्रियों की जांच के लिए तैनात बल की महिला कर्मी

शांत, निस्तब्ध प्रकृति के इस अप्रतिम सौंदर्य के बीच यात्रा के दौरान दो ही जय धोष गूंज रहे थे, बम बम भोले और हर हर महादेव। मगर कभी कभी बीच बीच में एक जय घोष और सुनायी देता था। जिसे 14 हजार फुट की ऊंचाई पर, ऑक्सीजन की कमी के कारण उखड़ी सांसों और थकान से चूर व्यक्तियों के मुंह से सुनना सुखद आश्चर्य था। यात्री अक्सर अपनी सुरक्षा के लिए तैनात सीआरपीएफ जवानों को देख कर चिल्ला उठते थे। जय हिंद, सीआरपीएफ जिंदाबाद। पूरे यात्रा मार्ग पर

सीआरपीएफ जवानों को उपस्थिति उन्हें आश्वस्त कर रही थी, अपनी सुरक्षा के प्रति और वो निश्चिंत हो कर अपनी आस्था के धाम अमरनाथ की ओर बढ़े चले जा रहे थे।

जम्मू से लेकर पवित्र गुफा तक पूरे यात्रा मार्ग पर यात्रियों की सुरक्षा के लिए चप्पे–चप्पे पर सीआरपीएफ के जवान तैनात थे। जम्मू से चलने वाला यात्रियों का कानवाय सीआरपीएफ की सुरक्षा में ही रोज निकल रहा था। यही आलम वापसी का भी था। जम्मू में यात्रियों के ठहरने के ठिकानों और यात्रियों की आवाजाही वाले अन्य स्थान भी सीआरपीएफ की कड़ी निगरानी में थे।



यात्रा के दौरान जम्मू बस अड्डे पर बल के जवानों की निगरानी

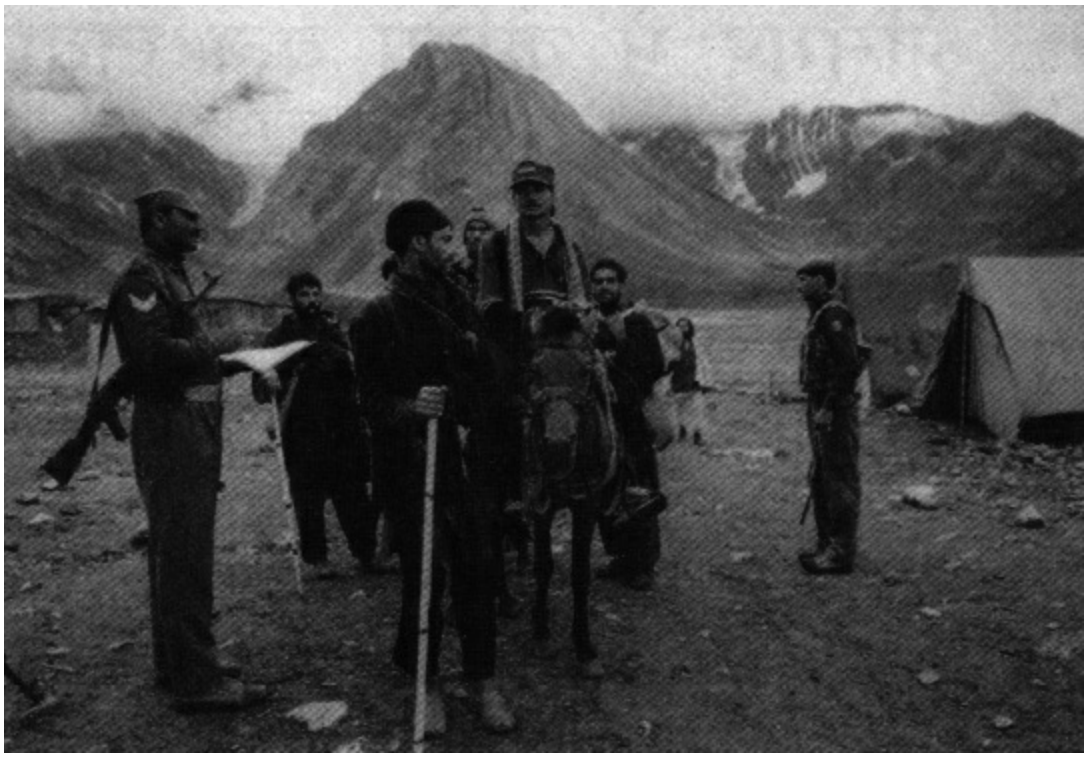
पहलगाम की और से पूरे यात्रा मार्ग पर पहले पड़ाव नूनवान से लेकर पहलगाम, चंदनवाड़ी, पिस्सूटाप, जोजीपाल, नागाकोटी, शेषनाग, वानबल, महागुना टोप, रबिबल, पोशपत्थरी, पंचतरणी और संगम होते हुए पवित्र गुफा तक हर जगह सीआरपीएफ के जवान तैनात थे। इस पूरे मार्ग पर के.रि.पु. बल की 29 कम्पनियों को तैनात किया गया। जिन में एक महिला कम्पनी भी शामिल थी, यहां तक कि पवित्र गुफा की देखभाल और सुरक्षा का जिम्मा भी सीआरपीएफ के ही पास था। यात्रियों की सुरक्षा के लिए संचार व्यवस्था भी सीआरपीएफ के ही पास थी। पवित्र गुफा पर सीआरपीएफ ने ही सैटेलाइट टेलीफोन व्यवस्था स्थापित की। पवित्र गुफा का शेष संसार के साथ सम्पर्क का यही एक मात्र जरिया था। पूरे मार्ग की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा सीआरपीएफ के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र स्वयं यात्रा शुरू होने से पहले ले चुके थे। साथ ही यहां की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार सीआरपीएफ के

महानिरीक्षक परिचालन (श्रीनगर) पी.सी. जोशी ने इस यात्रा मार्ग का स्वयं निरीक्षण किया था।



शेषनाग में तैनात बल के जवान

2 जुलाई, 2001 को यात्रियों के पहले कानवाय को जम्मू कश्मीर की पर्यटन राज्य मंत्री सुश्री सकीना ने झंडी दिखाकर जम्मू से विदा दिया। 2 जुलाई को पहलगाम से पहले नूनवान कैम्प से रात गुजारने के बाद यात्रियों का काफिला 3 जुलाई की सुबह पहलगाम से होता हुआ शेषनाग रूका। 4 जुलाई को शेषनाग से चल कर रात्रि विश्राम पंचतरणी में हुआ। और 5 जुलाई की सुबह यात्रियों के पहले जत्थे ने लगभग आठ फुट ऊंचे हिम शिवलिंग के दर्शन किये। कुछ यात्री इस से पूर्व भी पवित्र गुफा में दर्शन कर चुके थे, हम उन्हीं लोगों में थे। लगभग दो कि. मी. ग्लेशियर को पार कर गुफा तक पहुंच कर हिम शिवलिंग के दर्शन अपने आप में एक अद्भुत अनुभव है। पवित्र गुफा में शिवलिंग के साथ–साथ शेषनाग, पर्वती और गणेश की हिम प्रतिमाएं भी निर्मित होती हैं।



पंचतरणी में यात्रियों की जांच के लिए तैनात बल के जवान

यात्रा के अंतिम पड़ाव पंचतरणी में स्नान का विशेष महत्व है, कहते हैं, इसी स्थल से गंगा शिव जी जटाओं से मुक्त हो कर पांच धाराओं में प्रवाहित हुयी । गंगा की यही पांच धाराएं पंचतरणी कहलायी । इसी प्रकार शेषनाग, पिस्सूटोप, महागुना टोप आदि स्थलों के साथ भी कई कहानियां जुड़ी हैं । यात्रा का पहला पड़ाव चंदनवाड़ी वह स्थान है, जहां पार्वती ने शिव को पाने के लिए तपस्या की थी । अमरनाथ गुफा में एक कबूतर के जोड़े का वास है । कहते हैं कबूतरों का यह जोड़ा शिव पार्वती का ही प्रतीक है । इन कबूतरों के दर्शन होने पर ही यात्रा सफल मानी जाती है । पवित्र गुफा में प्रवेश कर यदि आप ऊपर की तरफ देखेंगे तो संभव है ये कबूतर आप को अपने ऊपर से उड़ते हुए नजर आ जाएं। पवित्र गुफा की एक और विशेषता है बाहर चाहे जितनी बर्फ पड़ी हो, सर्दी हो, किंतु पवित्र गुफा में सर्दी का अहसास बिल्कुल नहीं होता।

यात्रा की समाप्ती रक्षा बंधन के दिन श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर से छड़ी मुबारक के अमरनाथ गुफा तक पहुंचने से होती है। इस वर्ष छड़ी मुबारक 25 जुलाई को श्रीनगर से रवाना हुयी। छड़ी मुबारक के संबंध में भी कई आख्यान प्रचलित है, कहते हैं भगवान शिव ने स्वयं नागराज को यह छड़ी भेंट की थी, और उसके बाद से यह छड़ी काशमीर के राजा के पास है। वर्तमान में यह छड़ी श्रीनगर के दशनामी अखाड़े में रखी है। राज परिवार द्वारा छड़ी पूजन के बाद इस के साथ अमरनाथ की और प्रस्थान की परंपरा है।

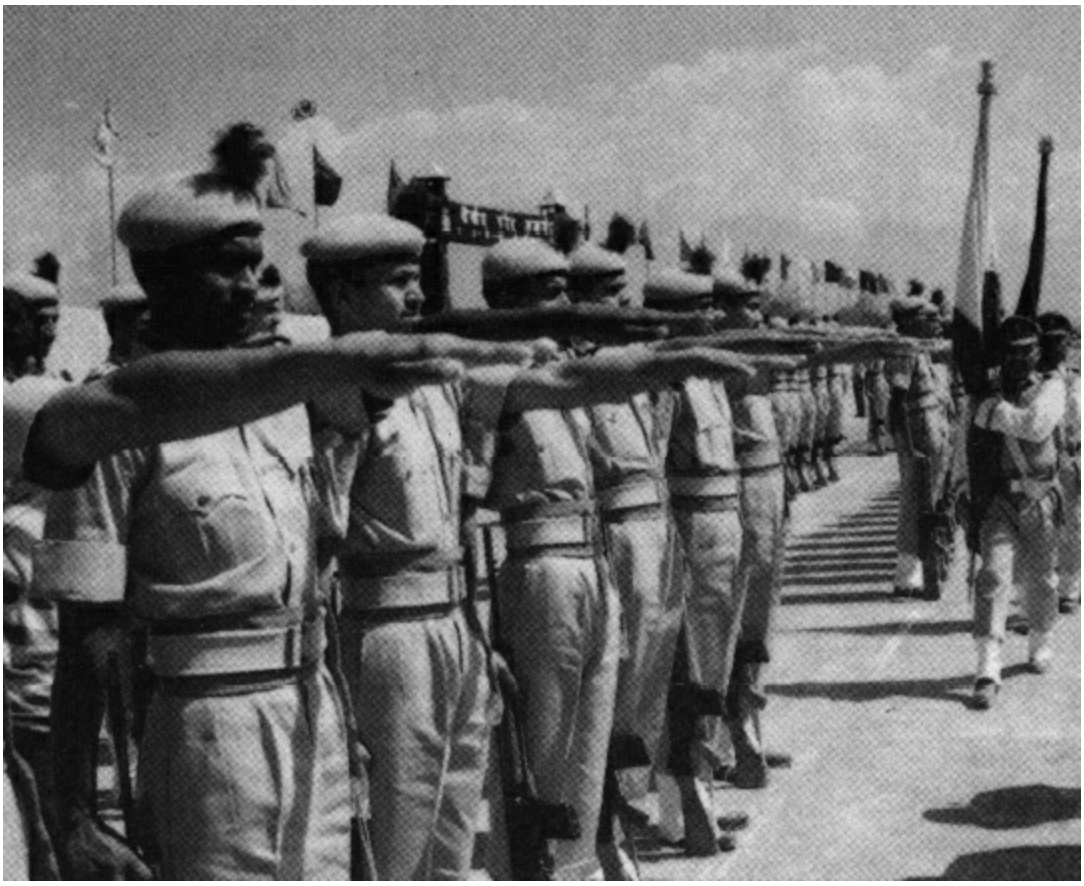
यात्रा के दौरान यात्रियों की व्यवस्था और सुरक्षा एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी,

मगर सीआरपीएफ के जवान हर पल, हर जगह चौकस थे, उपस्थित थे, और उनकी यह चौकसी और उपस्थिति यात्रियों को आश्वस्त करती रही, और उनकी यह आश्वस्ती और विश्वास अक्सर सीआरपीएफ जिंदाबाद के उद्घोष के साथ प्रकट होता रहा।



जम्मू में यात्रियों की सुरक्षा के लिए तैनात बल का श्वान दस्ता

श्रीनगर में केरिपु बल जवानों की पासिंग आऊट परेड



कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा और समर्पण की शपथ लेते जवान

जम्मू कशमीर में आतंकवाद के विरूद्ध अपने संघर्ष में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने खुद को मानवाधिकारों का रक्षक साबित किया है। 9 जुलाई 2001 को केरिपु बल के रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र - 4 हुम - हुमा, श्रीनगर में जवानों की पासिंग आऊट परेड के अवसर पर जवानों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए जम्मू कशमीर के गृह राज्य मंत्री श्री मुश्ताक अहमद लोन ने कहा कि केरिपु बल ने राज्य में आतंकवाद पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस शपथ परेड में 312 जवानों ने भाग लिया । केरिपु बल के महानिरीक्षक श्रीनगर श्री पी.सी.जोशी ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर घाटी स्थित पुलिस एवं अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों के अनेक वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

---

139 बटालियन की पासिंग आऊट परेड

3जुलाई, 2001 को ग्रुप केंद्र पूणे में केरिपु बल की नवगठित 139 बटालियन की दीक्षांत परेड सम्पन्न हुयी। परेड की सलामी केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने ली। इस से पूर्व उन्होंने परेड का निरीक्षण भी किया। महानिदेशक महोदय ने

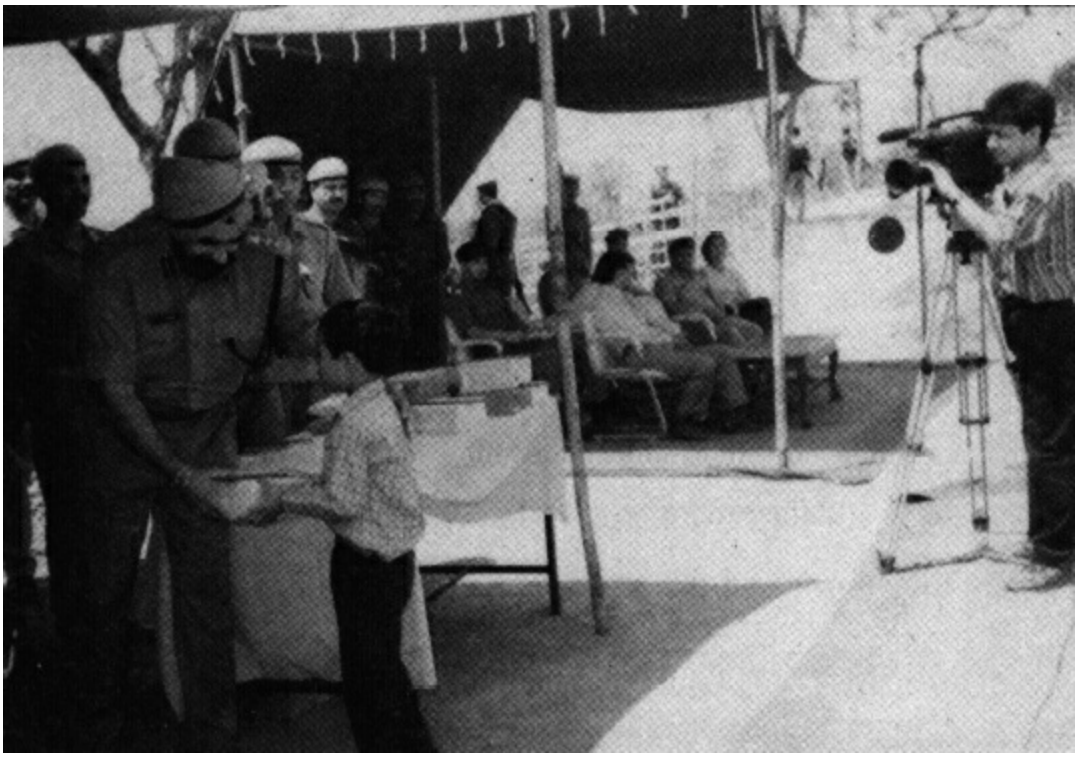
नवानोमैत क्वार्टर गार्ड, ग्रुप केंद्र के प्रशासनिक भवन और स्टोर ब्लाक का भी उद्घाटन किया।



परेड का निरीक्षण करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

72 बटा. ने दो गांवों को अंगीकृत किया

अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत मेघालय स्थित 72 बटा. ने वेस्ट सारो हिल्स जिले में स्थित कोंकी संगताल और असीपारा गांवों को विकास और कल्याण कार्यक्रमों के लिए अंगीकृत किया है। ये गांव तूरा से 20 किलोमीटर दूर जंगल में स्थित है। 30 जून, 2001 को इन गांवों में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया तथा स्कूली बच्चों को खेल तथा शिक्षण सामग्री वितरित की गयी। गांव वालों की सुविधा के लिए 72 बटा. के कार्मिकों ने एक 100 मीटर के कच्चे संपर्क मार्ग का भी निर्माण किया।

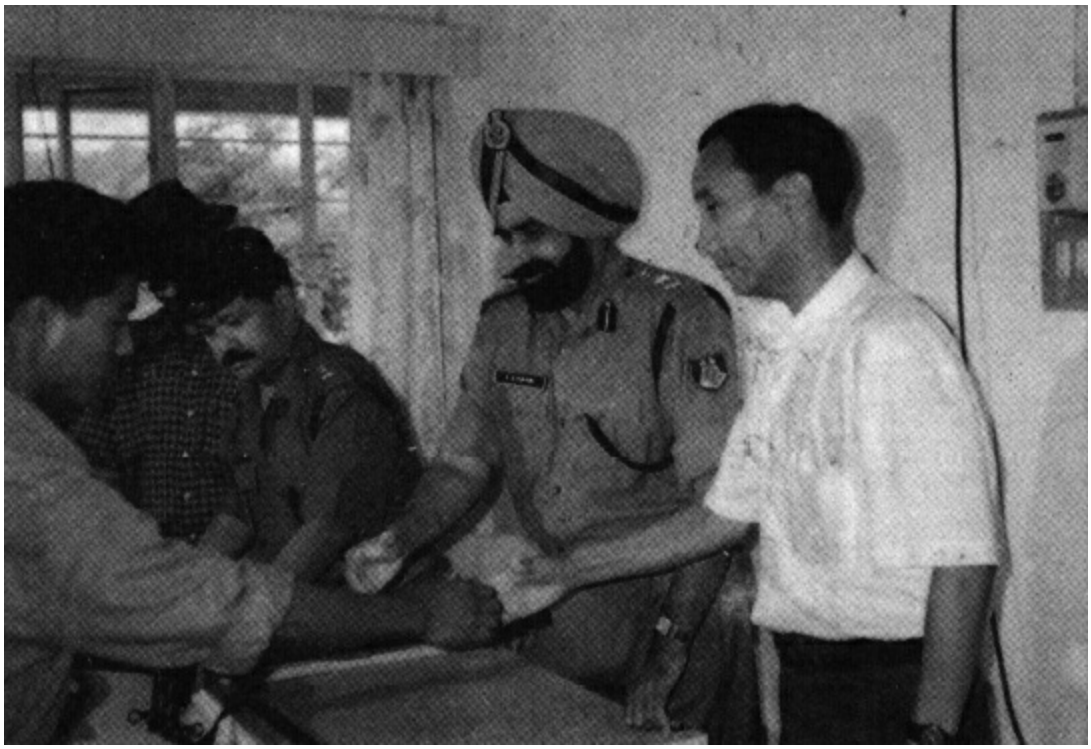


बच्चों को स्कूली सामग्री वितरित करते *72* बटा. के कमांडेंट

3 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया

ए.एन.वी.सी. के तीन कट्टर आतंकवादियों ने 8 जून, 2001 को उप महानिरीक्षक (पश्चिमी रेंज) तूरा श्री एस.जी. मोमीन और 72 बटालियन के कमांडेंट ए.एस. मान के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इन आतंकवादियों ने एक ए.के. 56 रायफल, दो चीनी सेमी आटोमैटिक असाल्ट रायफलों, चार ग्रेनेड और 351 सजीव कारतूसों के साथ ए.एन.वी.सी. के डिमांड नोट भी अधिकारियों को सौंपे।

आतंकवादियों को अपने हथियार डालने के लिए गारो वापिस्ट चर्च के प्रतिनिधियों ने प्रेरित किया था।



72 बटा. के कमांडेंट के सम्मुख अपने हथियार डालते दो आतंकवादी

बल द्वारा नक्की को प्रदूषण मुक्त बनाने की मुहिम

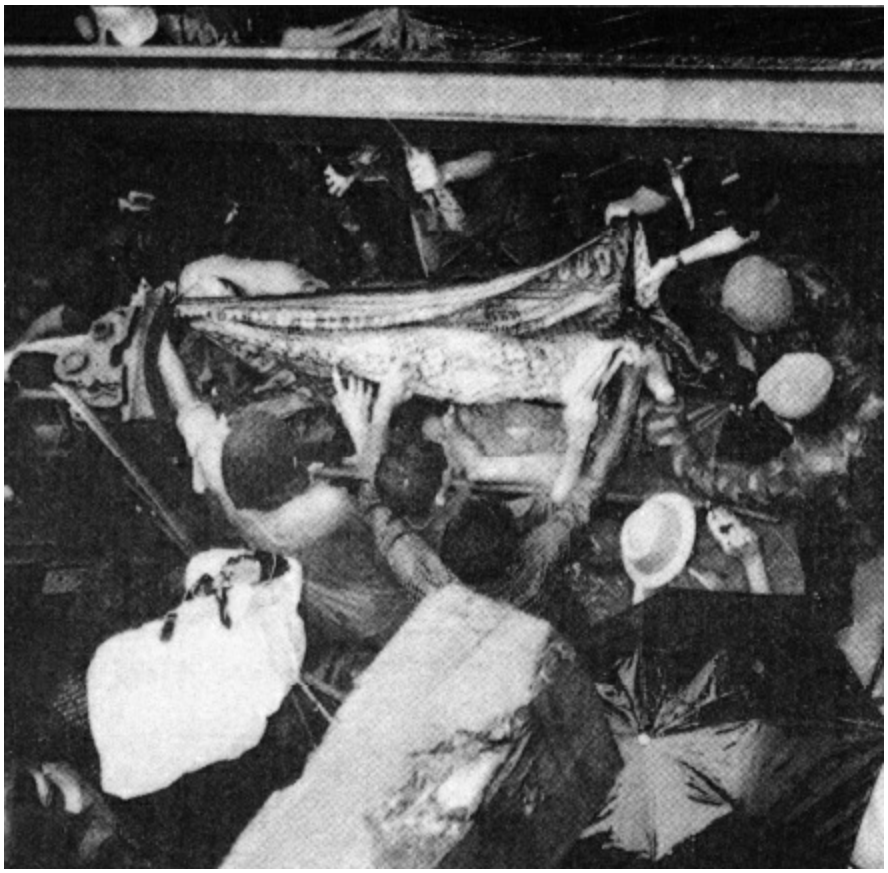
माउंट आबू की ऐतिहासिक नक्की झील के चारों ओर फैले प्रदूषण को लेकर 'नक्की झील प्रदूषण हटाओ' अभियान की 23 जुलाई, 2001 को अचानक ही शुरुआत हुई। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के पुलिस उप महानिरीक्षक राजेन्द्र सिंह व पुलिस अपर उप महानिरीक्षक डी.एन.एस. बिष्ट ने नक्की झील का दौरा करते-करते घूमते हुए यह महसूस किया कि चाहे कोई इस झील के लिए कुछ कर रहा हो या नहीं, लेकिन हमें कुछ करना है। इन दोनों पुलिस अधिकारियों के संकल्प से 23 जुलाई, 2001 प्रातः 6 बजे करीब 300 अधिकारी व जवान नक्की पहुंच गए और नक्की झील को प्रदूषण रहित बनाने का अभियान छेड़ दिया।

इन अधिकारियों व जवानों ने भारी मात्रा में प्लास्टिक व कचरा झील से निकाला और आबू के अन्य स्वयंसेवी संगठनों को गत वर्ष की तरह निमंत्रण दे डाला कि वे भी आगे आकर नक्की झील को प्रदूषण रहित बनाने के लिए कुछ न कुछ करे । जो अधिकारी श्रमदान में सम्मिलित हुए उनमें पुलिस उप महानिरीक्षक एवं उप निदेशक आंतरिक सुरक्षा अकादमी राजेन्द्र सिंह व अपर पुलिस उप महानिरीक्षक डी.एन.एस.

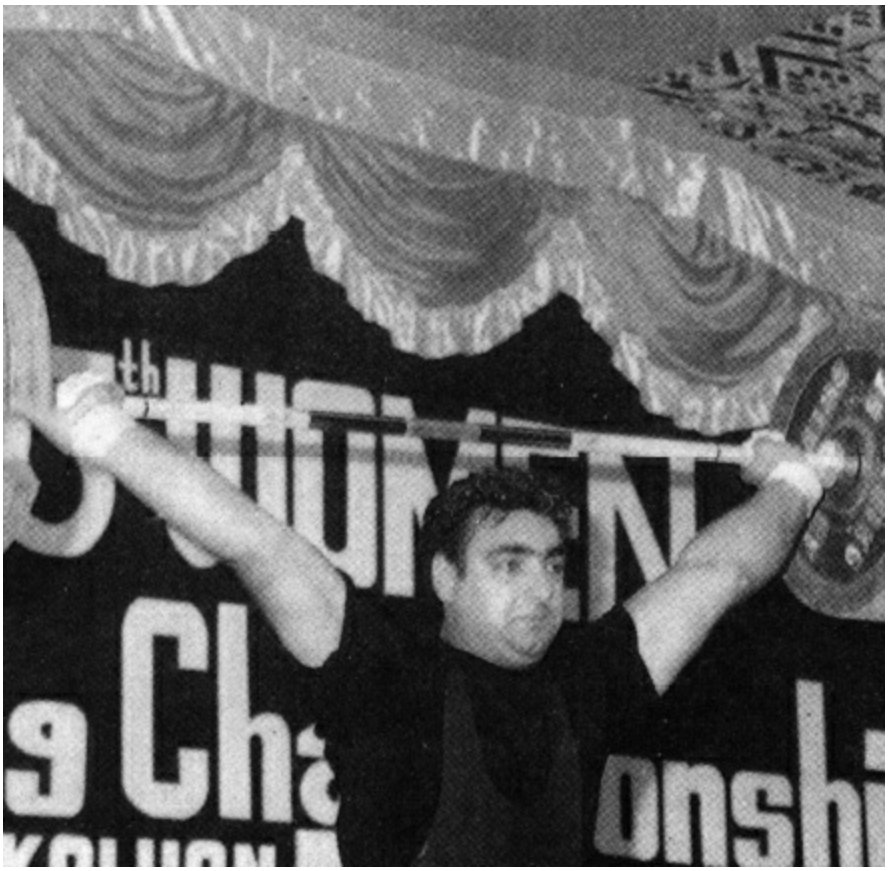
बिष्ट, अकादमी के सहायक निदेशक सहित सभी रैंक के अधिकारी तो इसमें शामिल थे ही यहां पर देश भर से प्रशिक्षण प्राप्त करने आए पुलिस अधीक्षक व कमांडेंट स्तर के अधिकारी, एक वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे राजपत्रित अधिकारी और पुलिस उप अधीक्षकों ने भी बड़े उत्साह से भाग लिया।

नक्की झील में काफी प्रदूषण फैलता जा रहा है जिसमें भारी मात्रा में प्लास्टिक ग्लास, बोतलें आदि इस झील में देखने को मिले, उन्हें हटाया वहीं तेजी से फैल रही झाड़ियों को हटाया गया और कई ट्रक कचरा अधिकारियों, जवानों ने एकत्र किया। यह अभियान अभी आगे भी जारी रहेगा। पुलिस उप महानिरीक्षक श्री राजेन्द्र सिंह ने इस अवसर पर कहा कि हम सबका दायित्व है कि हम राजस्थान के इकलौते पर्यटन केन्द्र की रक्षा करें। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, पर्यटन स्थल के साथ जुड़ा हुआ मुद्दा है। पर्यावरण प्रकृति की देन है जो सनातन से स्थित प्राकृतिक सौंदर्य एवं वैभव माउंटआबू में देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि इस झील की सुदंरता को, सौंदर्य को बरकरार रखना चाहिए जिसमें झील को प्रदूषण रहित रखना हमारा सर्वोच्च दायित्व होना चाहिए। पुलिस अपर उप महानिरीक्षक डी.एन.एस. बिष्ट ने कहा कि पर्यावरण संस्कृति का समग्र रूप है भारतीय दृष्टि में प्रकृति का साम्राज्य एवं पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक है, पर्याय है एवं आधार बिंदु भी है। विकास की धुरी समग्र पर्यावरण के पोषण से संभव हुई है ।

सभी को जीवन निर्वाह करना, वृद्धि करना जीवित रहना, प्रजनन करना आदि जितना महत्वपूर्ण है उतना ही ऊर्जा शक्ति का संतुलित होना भी आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। बिष्ट ने कहा माउंटआबू नगरपालिका, स्वयं सेवी संगठनों व आबू की जनता को गत वर्ष की तरह श्रमदान अभियान चला कर नक्की झील को प्रदूषण रहित बनाने के सार्थक प्रयास करने चाहिए। नगरवासियों द्वारा आंतरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा उठाए गए कदम की सराहना की गई।



केरल के कोधीकांडे के पास *22* जून, *2001* को हुयी रेल दुर्घटना के फौरन बाद *105* आर.ए.एफ. के जवान तुरंत राहत और बचाव कार्यों में जुट गये



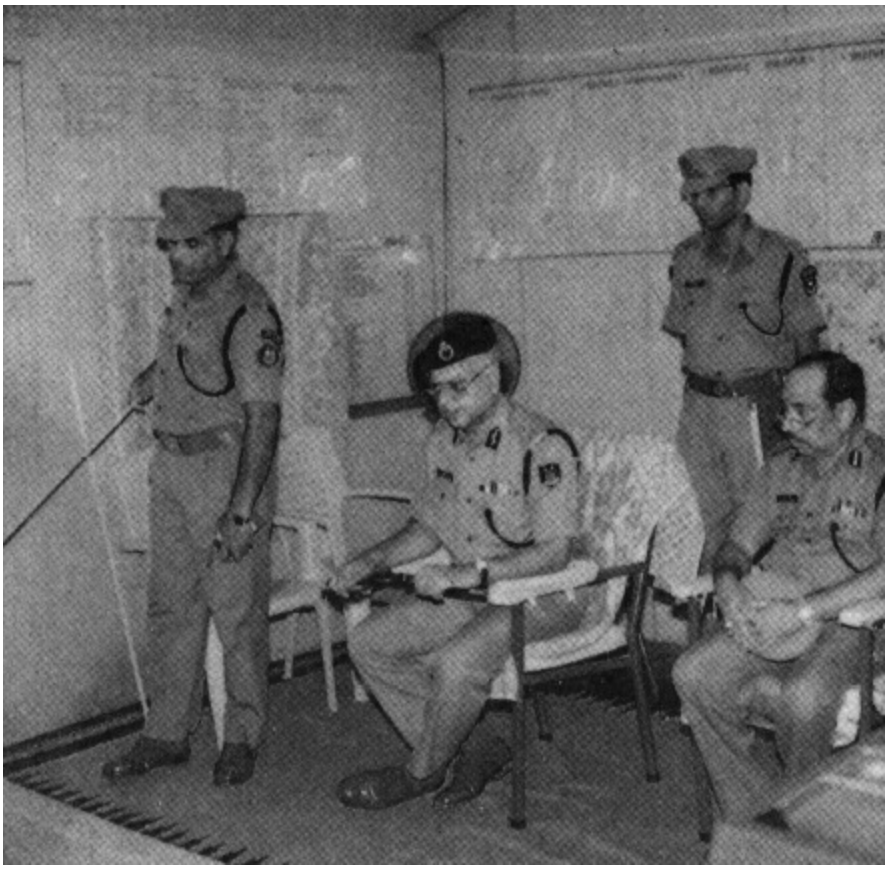
2 से *7* जुलाई *2001* तक दिल्ली में हुयी इंटर सेक्टर भारोत्तोलन, प्रतियोगिता में उत्तरी सेक्टर के सुखजिंदर सिंह ने दो राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़े



18 से *13* जून, *2001* तक ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम में हुयी इंटर सेक्टर हैंडबाल प्रतियोगिता की ट्राफी दक्षिण सेक्टर ने जीती



55 बटालियन ने अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत पश्चिमी त्रिपुरा में चिकित्सा कैम्प सहित कई अन्य कार्यक्रम आयोजित किये



1 जुलाई *01* को अपने मुम्बई दौरे के दौरान *102* बटा. में एक सैंड माडल के बारे में जानकारी लेते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



नौगांव असम में आयोजित गुवाहाटी रेंज की इंटर बटालियन हैंडबाल प्रतियोगिता की ट्राफी *60* बटालियन ने जीती
विजेताओं को पुरस्कार असम के नागरिक आपूर्ति एवं कृषि मंत्री डा. अरधेंदू डे ने वितरित किये



18 बटा. के जवान अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत उत्तरी त्रिपुरा में नागरिकों को दवाईयां वितरित करते हुए



आंध्र प्रदेश के खम्माम जिले के भनुगुरू इलाके में *35* बटालियन ने एक कैम्प आयोजित कर जरूरतमंद बच्चों में शिक्षण एवं खेल सामग्री वितरित की।



विश्व पुलिस खेलों में पदक जीतने वाले बल के खिलाड़ी महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र एवं अन्य अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों के प्रमुखों के साथ

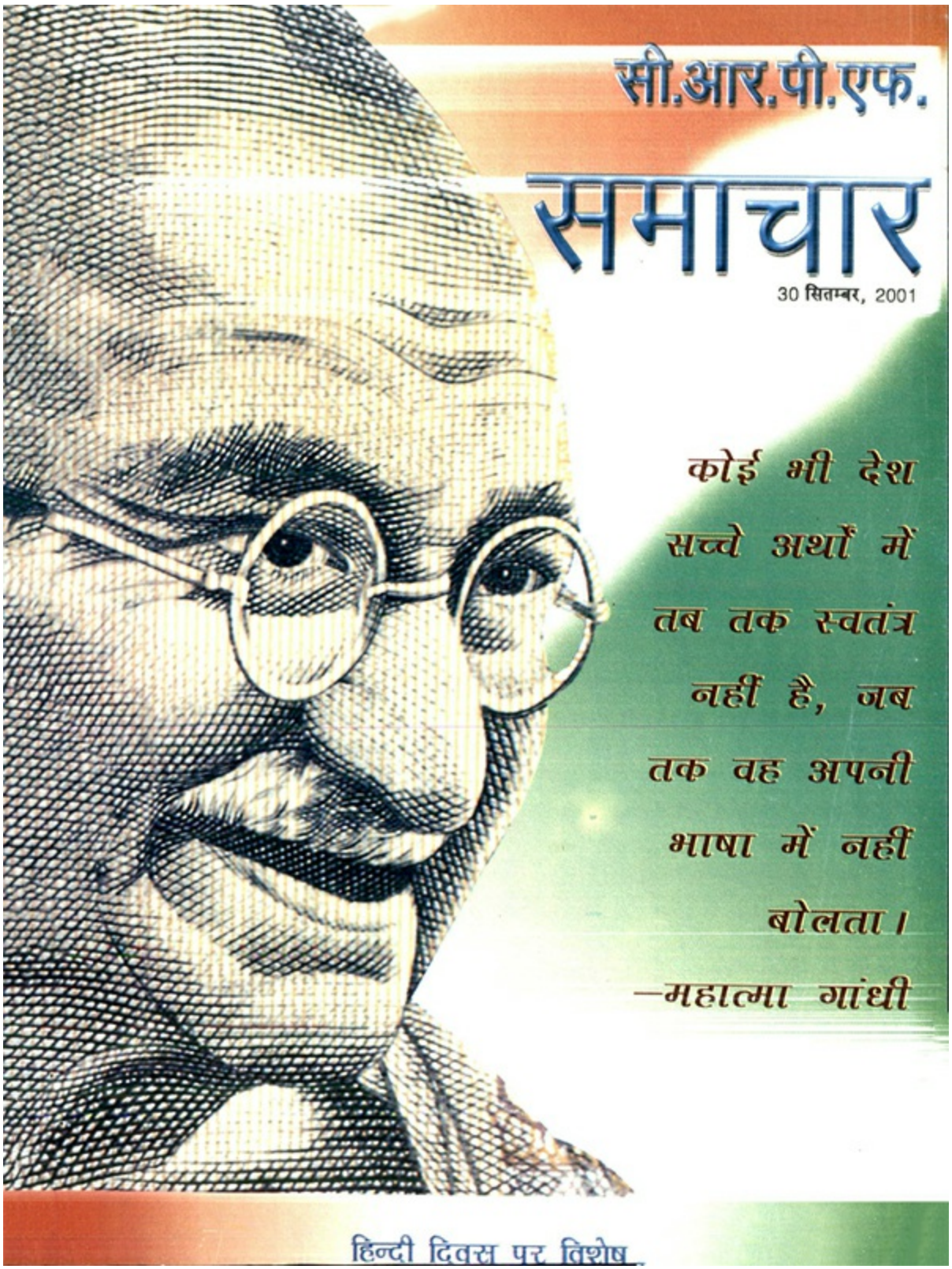


एशियाई प्रतियोगिता में पदक जीतने वाली बल की महिला भारोत्तोलक महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र के साथ

रजि. न. 4767/87



62वें स्थापना दिवस के मौके पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



सी.आर.पी.एफ.

समाचार

30 सितम्बर, 2001

कोई भी देश
सच्चे अर्थों में
तब तक स्वतंत्र
नहीं है, जब
तक वह अपनी
भाषा में नहीं
बोलता।

—महात्मा गांधी

हिन्दी दिवस पर विशेष



वर्ष *1998-99* और *1999-2000* के लिए गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते महानिरीक्षक *(*कार्मिक एव मुख्यालय*)* श्री पी.पी.एस. सिद्धू



अमरनाथ यात्रा के अंतिम चरण के दौरान पहलगाम में तैनात केरिपु बल जवान



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-15 अंक-6
30 सितम्बर, 2001
8 आश्विन, शक 1923

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

हिंदी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

–डा. अमरनाथ झा

हिंदी हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

–राहुल सांकृत्यायन

देश की भाषाओं को अपनाए बिना समृद्धि सम्भव नहीं।

–श्रीमती महादेवी वर्मा

इस अंक में

राजभाषा संदेश

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर का दौरा

राजरानी हिंदी को अब किस आधी रात का इंतजार

नियोजित विकास में राजभाषा की महत्ता

राष्ट्रभाषा और हम

हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारी भूमिका नगण्य क्यों

केरिपु बल के 35 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए किए गये उपाय

राष्ट्रीय एकता अखंडता में हिंदी का योगदान

देश की सम्पर्क भाषा और हिंदी

भाव पुष्प

संसदीय राजभाषा समिति सिंहावलोकन

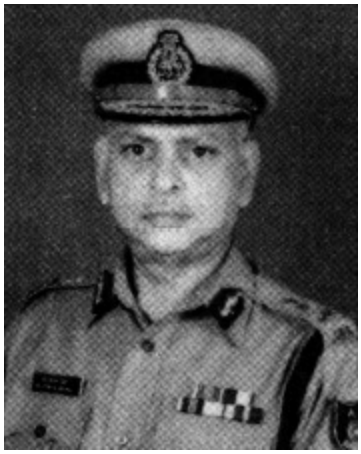
हिंदी भाषा, हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि का सेवाकालीन प्रशिक्षण

सरदार पोस्ट

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

राजभाषा संदेश



भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताओं के होते हुए भी अद्भुत एकता पाई जाती है। किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज उसकी जनता की भाषा में हो। इसी बात को ध्यान में रखकर ही हमारे संविधान में *18* प्रांतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है तथा देश का राजकाज चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिंदी को सौंप कर *14* सितम्बर, *1949* को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष *14* सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारे बल में विभिन्न आयोजन किये जा रहे हैं। हिंदी के प्रचार प्रसार तथा प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अधिनियम, नियम के तहत बनाई गई राजभाषा नीति का समुचित अनुपालन किया जा रहा है जिसमें कार्मिकों को हिंदी भाषा, टंकण, आशुलिपि तथा कंप्यूटर का प्रशिक्षण दिलाना, प्रतियोगिताएं, प्रोत्साहन योजनाएं, कार्यशालाएं चलाना, संगोष्ठी व समारोह आयोजित करना, सहायक साहित्य व यांत्रिक उपकरण सुलभ कराना आदि शामिल हैं। इन प्रयासों के बावजूद स्थिति बहुत अधिक उत्साहजनक नहीं है। सैद्धांतिक मान्यताओं के होते हए भी प्रयोग के क्षेत्र में हम अंग्रेजी का मोह पूरी तरह नहीं छोड़ पाये हैं जिसके फलस्वरूप पांच दशक बीत जाने के बाद भी हिंदी को वह स्थान नहीं दिला पाए हैं जिसकी वह अधिकारिणी है।

कई व्यक्तियों के मन में यह रूढ़ि घर कर गई है कि जब तक वे अंग्रेजी में बात या काम नहीं करेंगे, दूसरे उन्हें पूर्ण शिक्षित एवं आधुनिक नहीं मानेंगे। इसलिए वे गलत सलत ही सही किन्तु अंग्रेजी का व्यवहार करने में मिथ्या गर्व महसूस करते हैं। यह मनोवृत्ति भ्रमपूर्ण है। हिंदी का व्यवहार हमारे लिए गौरव एवं गर्व का विषय होना चाहिए। हमारी भाषा में गंभीरतम भावों की अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता है। अच्छी

हिंदी का व्यवहार गलत अंग्रेजी के व्यवहार के मुकाबले कहीं बेहतर है। मेरी व्यक्तिगत धारणा तो यह है कि व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध हिंदी भी अशुद्ध अंग्रेजी के मुकाबले अधिक बोधगम्य होती है।

सुरक्षा बलों के लिए तो राजभाषा का महत्व और बढ़ जाता है क्योंकि देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी निभाते समय उसकी भावनात्मक एकता मजबूत करने के लिए आम लोगों के साथ सम्पर्क करने में हिंदी ही जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। जहां तक केरिपु बल की बात है, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मुझे यह बताते हुए बड़े गर्व का अनुभव हो रहा है कि राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए केरिपु बल को गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष *1998-99* तथा *1999-2000* की लगातार राजभाषा शील्ड प्रदान की गई हैं। इसके अलावा बल के अनेक अधीनस्थ कार्यालयों को भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई हैं। इससे यह सिद्ध हो गया है कि देश की आंतरिक सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाए रखने में आगे रहने के साथ-साथ राजभाषा नीति का कार्यान्वयन, अनुपालन करने में भी केरिपु बल पीछे नहीं है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। इस प्रगति व उत्साह को हमें बनाए रखना है। मैं आशा करता हूं कि इस कार्य को अग्रसर करने में इसी प्रकार आगे भी योगदान देते रहेंगें। इस बारे में, मैं वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग की विशेष अपेक्षा करता हूं।

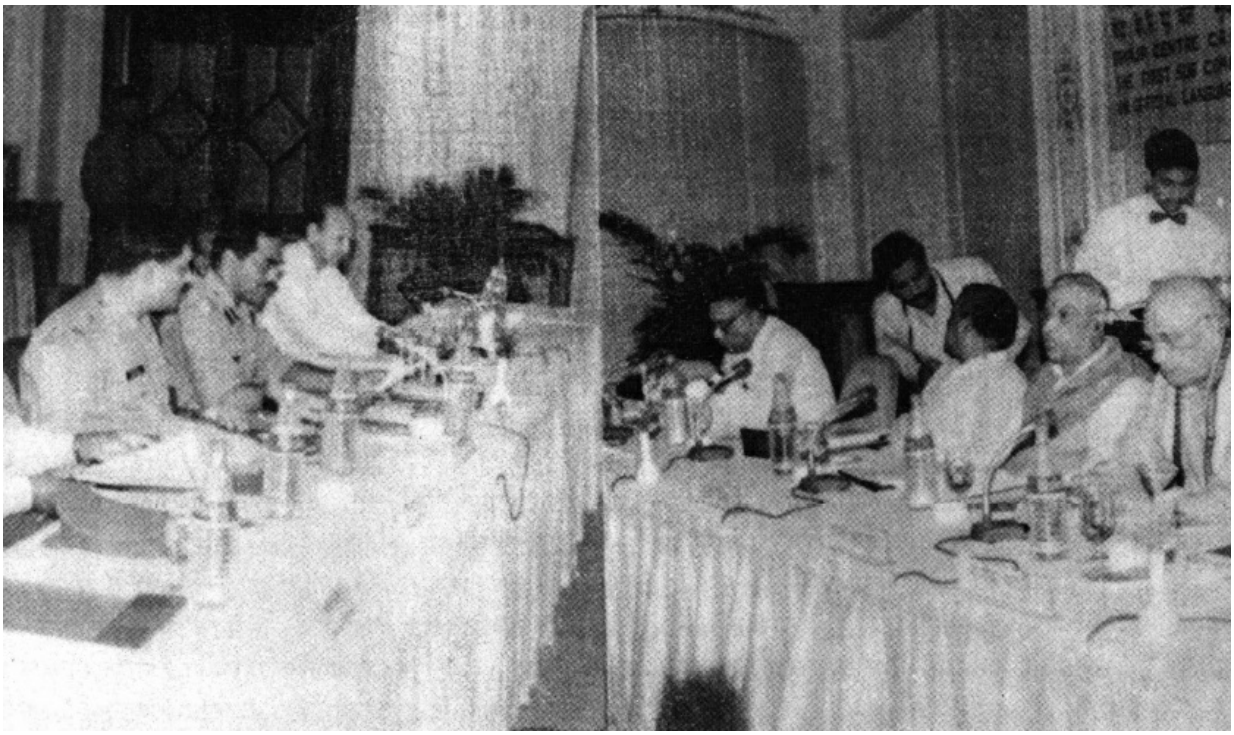
देश की सेवा और भक्ति, केरिपु बल की प्रतिबद्धता है। अतः बल के सभी सदस्यों से इस प्रतिबद्धता में राजभाषा के प्रति समर्पण को शामिल कर इसका निष्ठापूर्वक कार्यान्वयन एवं अनुपालन करने की अपील करता हूं तथा इस पुनीत अवसर पर अपनी शुभ कामनाएं देता हूं।

जय हिन्द



(डॉ. त्रिनाथ मिश्र)
महानिदेशक, केरिपु बल

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ग्रुपकेंद्र भुवनेश्वर का दौरा



संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों को बल में हिंदी के प्रयोग के बारे में जानकारी प्रदान करते अधिकारी

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा, भुवनेश्वर स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों व सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रगति की जानकारी प्राप्त करने के लिए 7 जुलाई, 2001 से 9 जुलाई, 2001 तक निरीक्षण किया गया। 9 जुलाई, 2001 को ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर का निरीक्षण किया गया, इसके लिए इस कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी अनुदेशों के अनुसार उचित तैयारियां की गई। इसके लिए विभिन्न नाम पट्टिकाओं, प्रश्नोत्तरियों तथा सुरूचिपूर्ण फोल्डर तैयार कराए गए। अ.पु. उप महानिरीक्षक आर.एन. मिश्र ने निरीक्षण के समय ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर के कार्यवाहक कार्यालय अध्यक्ष की क्षमता से माननीय संसद सदस्यों द्वारा हिन्दी प्रगति के बारे में पूछे गए विभिन्न प्रश्नों का समुचित उत्तर दिये। इस अवसर पर गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के निदेशक श्री राजेन्द्र सिंह तथा महानिदेशालय के हिन्दी अधिकारी श्री मणि भूषण प्रसाद के अतिरिक्त, ग्रुप केन्द्र के उप कमांडेंट श्री संजीव कुमार, प्रशासन अधिकारी श्री आर.जी. कण्णन तथा निरीक्षक हिन्दी अनुवादक सुरेन्द्र कुमार, द्वारा भी भाग लिया गया। समिति द्वारा इस ग्रुप केन्द्र के कार्यों की सराहना करते हुए राजभाषा की प्रगति के लिए और अधिक प्रयास किए जाने तथा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने की सलाह भी दी गई।

राजरानी हिंदी को अब किस आधी रात का

इंतजार !

–प्रो. रामचंद्र मिश्र

राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयंती बीत चुकी, किंतु समझ में नहीं आता कि प्रसन्न हों या कि शोक मनाएं ? कई प्रश्न मन-मस्तिष्क में मंथन पैदा कर रहे हैं, हृदय अशांत है, अधीर है। हिंदी का जनमानस विपन्न है, भविष्य अंधेरे गलियारों में भटक रहा है। व्यक्ति और राष्ट्र दोनों की पहचान, देश के गौरव एवं उससे प्रेम के भावों के उद्गार की एकस्वरीय भाषा तथा हमारी संस्कृति और सत्ता का एक प्रमुख अंग है – राष्ट्रभाषा या राजभाषा हिंदी। लेकिन खेद है कि अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक आरक्षित कर दिया गया है, हिंदी भला राजरानी अंग्रेजी की दासी कब तक बनी रहेगी ? भारती-भारती पुकार रही है, हम कौन थे जब हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में माथे लगाया था और अब हम क्या हो गए हैं या इसके आगे क्या होने वाले है ?

पचास वर्ष हिंदी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने के लिए बहुत लंबा समय होता है, लेकिन अब भी हम हिंदी के दासी बने रहने की दयनीय स्थिति को भुगत रहे हैं। कटे पर नमक छिड़कने वाले अंग्रेजीपरस्तों की दलील की सब कुछ अंग्रेजी में ठीक-ठाक चल रहा है तो हिंदी के चक्कर में पीछे क्यों मुड़े, हमें और भी ज्यादा हताश कर देती है। राजनीति की भाषा में भाषा की राजनीति दुरूह बना दी गई है, राजपथ से हटा कर हिंदी को ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों पर उतार दिया गया है। हिंदी का प्रश्न झझकोरे भी नहीं ले रहा है, बल्कि शिथिल पड़ गया है।

कई संकल्पों और चाहतों के साथ हम नई शताब्दि और साथ ही नई सहस्राब्दि का स्वागत कर रहे हैं। लेकिन हिंदी को उसका उचित स्थान दिलाने के संबंध में ऐसी कौन सी निर्णायक उपलब्धि हासिल हो पाई है जिससे हम प्रसन्न हों और उसके बलबूते विश्वास एवं आशा के साथ आगे बढ़ें या हिंदी को न्याय दिलाने के वास्ते अपनी आहुति दें ? विश्व में किसी भी देश की राष्ट्रभाषा के साथ इतनी अवहेलना और तिरस्कार, उसकी संवैधानिक स्थिति के साथ इतना खिलवाड़ और वस्तुतः उसके साथ इतना छल क्या कभी हुआ है ?

फिलहाल विचारणीय यह है कि हिंदी-कार्यकर्ता करें क्या, खम ठोक कर हिंदी को उसके हाल पर छोड़ दें, अरण्यरोदन करें, या फिर निराशा को त्याग कर हिंदी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने के प्रति तीक्ष्ण झंझावत पैदा करें, गंगा-यमुनी प्रचंड राष्ट्रीय अभियान चलाएं ? अथवा राष्ट्रभाषा के प्रति गौरव की भावना कैसे सक्रिय या तीक्ष्ण की जा सकती है ? हां, इस काम के लिए अब हमारे बीच कोई महात्मा गांधी नहीं है और न ही पुरुषोत्तम दास टंडन, जो राष्ट्रीय संविधान, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज के साथ राष्ट्रभाषा या राजभाषा को भी राष्ट्रीय महत्व के तत्व के रूप में वैसी ही प्रतिष्ठा देते थे। लेकिन शेष हैं उन सभी महापुरुषों से प्राप्त प्रेरणाएं जिनके बूते वर्तमान में राष्ट्रभाषा हिंदी को अंग्रेजी की दासता से मुक्ति दिलाने हेतु अर्थपूर्ण अभियान चलाया

जा सकता है।

संभवतः हिंदी की विफलता के लिए कई कारण जिम्मेवार रहे हैं जो बड़े राष्ट्रीय मुद्दों के अंग के रूप में हैं। अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी अंग्रेजियत के व्यामोह से कुंठित रहना, मन में स्वभाषा संबंधी हीनग्रंथि पाल रखना तथा इसे रोजी-रोटी से न जोड़ना, संकुचित मतभेदों में वृद्धि और राजनीतिक इच्छाशक्ति में हास तथा कालांतर उपभोक्ता (अप) संस्कृति के कुप्रभाव से नई पीढ़ी से स्वसंस्कृति-विहीनता एवं मूल्यहीनता आदि सभी परोक्ष या अपरोक्ष रूप में हिंदी की दुर्दशा के कारण साबित हुए हैं। युवा वर्ग विदेशी चाक्यचिक्य से यों सम्मोहित है कि अंग्रेजी का अभिजात वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। इन सब के बीच स्वभाषा से प्यार जैसी चीज धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। इन मुद्दों को सुलझाने के लिए ऐसी सरकार और प्रशासन की आवश्यकता है जो स्वदेशीपन के प्रति दृढ़ संकल्प से काम करे ताकि भाषा-संस्कृति के प्रति लोग ज्यादा उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण रखें। तभी राष्ट्रभाषा हिंदी निष्ठा और गौरव की भाषा बनेगी अन्यथा मुमकिन है कि भाषा भी राजनीतिक सट्टेबाजियों का पासा बनती रहेगी।

ज्ञातव्य है कि वर्तमान में हिंदी की सर्वाधिक चिंतनीय समस्या है इसके कार्यान्वयन पर अपरोक्षतः लागू निषेधाधिकार या 'वीटो'। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकृति मिली जो संविधान पारित होने पर 26 जनवरी, 1950 से लागू हुई। किंतु हुआ यह कि आगे के तेरह वर्षों तक राजभाषा अधिनियम नहीं बना और जब 1963 में अधिनियम पारित भी हुआ तो आगे के तरह वर्षों तक कार्यान्वयन संबंधी नियम नहीं बने। जब तक 1976 में नियम बने, 26 वर्षों तक हिंदी को, जिसे संविधान के अनुरूप सम्राज्ञी बनना था, फुटपाथ पर रखा गया और उसका प्रयोग हाशिये पर रहा।

संविधान के अनुसार 15 वर्ष तक हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग कायम रखना था और जनवरी 1965 से हिंदी को मुख्य राजभाषा बनना था। कालचक्र ज्यों-ज्यों इस ऐतिहासिक घड़ी की ओर घूमता गया, हिंदी के घटित होने संबंधी सुगबुगाहट होने लगी, सरकारी कर्मचारियों की भर्ती बढ़ाई गई जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान था और इस प्रकार भाषा की सत्ता में परिवर्तन को देखने की लालसा बढ़ी। लेकिन ऐसा कुछ होना नहीं था और जो हुआ वही इतिहास है। मद्रास राज्य में हिंसक अभियान हिंदी के विरोध में चलाया गया। हिंदी का इतिहास वहीं रूक गया और फिर हिंदी संबंधी कार्यों में ढील और ढुलमुल रूख आ गया। हिंदी विरोधी दंगों के भय से अंग्रेजी को कायम रखने संबंधी दिए गए आश्वासनों के फलस्वरूप 1967 में भाषा-अधिनियम संशोधन विधेयक पारित कर दिया गया जिसके अनुसार जब तक प्रत्येक राज्य की विधान सभाएं यह प्रस्ताव न कर दें कि अब अंग्रेजी रोक दी जाए, तब तक केंद्र में सभी कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग चलता रहेगा । अनिश्चित कालावधि के लिए हिंदी–निषेध संबंधी यह अप्रत्यक्ष 'वीटो' हिंदी के विरूद्ध सबसे बड़ा कुचक्र साबित हुआ । एक प्रभुतासंपन्न राष्ट्र भय के कारण राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के किसी संकल्प को त्याग

दे और संविधान की खिल्ली उड़ाए, यह सर्वथा अवांछनीय था। यदि उपरोक्त भाषा विधेयक भय के कारण न पारित हुआ होता तो अनिश्चित काल तक अंग्रेजी कायम रखने के बजाय, जो सर्वथा अवांछनीय था, 1965 से आगे दस या पंद्रह वर्ष के लिए ही अंग्रेजी का प्रयोग बढ़ाया जाता, और तब हिंदी का मार्ग अवरुद्ध न होता। ज्ञातव्य है कि हिंदी भाषी प्रांतों में इस विधेयक के विरूद्ध बड़ा आक्रोश हुआ, विद्रोह फैला, कई हस्तियों ने अपने पदों से त्याग पत्र दे दिया और उपाधियां लौटा दी, जिनमें कविवर समुत्रानंदन पंत द्वारा लौटाई गई पद्मभूषण की उपाधि उल्लेखनीय है, किंतु शैनेः शैने यह विरोध मृतप्राय हो गया।

माना कि पहले के वर्षों में हिंदी की क्षमता उतनी नहीं थी जो आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की अभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त होती अथवा तब तक विकसित अंग्रेजी में प्रशासन–व्यवस्था का अविलम्ब रूपांतरण बनती। अतः राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के उस वक्तव्य को सभी ने वजन दिया था जो उन्होंने 26 जनवरी, 1950 को पारित संविधान में 15 वर्ष तक के समय हिंदी द्वारा अंग्रेजी का स्थान लेने के संबंध में दिया था। उन्होंने कहा था – "मैं मानता हूं कि जो पंद्रह वर्ष की अवधि हमारे संविधान में अंग्रेजी को राजभाषा रहने के लिए दी गई है, वह इसलिए दी गई है कि हिंदी एक तरफ तो इतनी समृद्ध और सुगम हो जाए कि उससे सब काम आसानी से चलाया जा सके और दूसरी ओर अहिंदीभाषी प्रदेशों के लोग हिंदी का इतना ज्ञान प्राप्त कर लें कि वह हिंदीभाषियों के मुकाबले पीछे न रह जाएं। इन दोनों उद्देश्यों को पूरा करने में हिंदीभाषी प्रांतों के विश्वविद्यालय बहुत काम कर सकते हैं। हिंदी की शब्दावली को बढ़ाना, हिंदी रचना की, व्याकरण की, लेखन–शैली की उन्नति करना और हिंदी में सभी विषयों के उच्च कोटि के ग्रंथों का निर्माण करना, हिंदी को सार्वदेशिक भाषा बनाने के लिए आवश्यक है।" यदि हिंदी को मुख्य राजभाषा बनाने की शर्तें यही हैं तो कहना होगा कि हिंदी में अपेक्षित क्षमता, बल्कि इससे भी ज्यादा शक्ति बहुत पहले ही हासिल हो चुकी है। अब अंग्रेजी को कायम रखने के लिए कोई मान्य कारण नहीं बचा है। हिंदी के प्रति सरकार की शिथिलता, निष्क्रियता, अनिच्छा आदि और कुछ लोगों का अंधविरोध ही अंग्रेजी का प्रभुत्व स्वीकारने के अपरोक्ष कारण हो सकते हैं। इसी बीच राजनीति में मूल्यविहीनता आ जाने से संभवतः हिंदी राजनीतिक सट्टेबाजी का शिकार हो सकती है।

यद्यपि हिंदी की वर्तमान क्षमता निर्विवाद है, किंतु हिंदी विरोधियों के कुछ भ्रामक तर्कों को काटने के वास्ते इस संबंध में कुछ मुख्य तथ्यों का उल्लेख करना आवश्यक है। प्रशासन एवं ज्ञान–विज्ञान के सभी क्षेत्रों से संबंधित विषयवार हिंदी शब्दावलियां बहुत पहले से तैयार हैं और अनुप्रयोग की कसौटी पर खरी उतरी हैं। पांच लाख से ज्यादा शब्दों से युक्त यह शब्दावलियां अखिल भारतीय प्रकृति की हैं जिनमें सभी भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण किए गए हैं।

सतत् प्रयोग द्वारा यह शब्द परिचित और सुगम बन जाते हैं। प्रयोग किए बगैर जो लोग इन शब्दों को क्लिष्ट बताते हैं और हिंदी शब्दावलियों को 'अरब सागर में फेंक

देने' का रोष प्रकट करते हैं, उनकी आंखों पर और मास्तेष्क पर भी अंग्रेजीपरस्ता का मुलम्मा चढ़ा हुआ है। इसी प्रकार हिंदी कई विषयों के उच्च श्रेणी के ग्रंथ और तमाम पुस्तकें तैयार हैं जिन्हें उपयोक्ता की प्रतीक्षा है। निष्कर्ष यह है कि हिंदी के विविध प्रयोगों में परिष्करण तभी साबित होगा जब यह इन प्रयोगों में उतारी जाय। देश में तमाम विद्वान, विशेषज्ञ, प्रशासक, वैज्ञानिक, आदि हिंदी का परिष्कृत प्रयोग करने में संलग्न है, उन्हें भाषा विषयक ऐसी कोई मूलभूत कठिनाई महसूस नहीं होती जिससे हिंदी को उसका उचित स्थान दिलाने का बहाना बनाया जा सके।

विशेषतः कार्यालयीन हिंदी पर कई दशकों से यथेष्ट विकासात्मक तथा अभ्यासात्मक कार्य हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत पूरे देश में किए गए हैं। सुस्पष्ट एवं शीघ्र संप्रेषण, वस्तुनिष्ठ कथन, अर्थ संकोच, शुद्ध संरचना एवं वाक्य–विन्यास, शब्द–संतुलन, शब्द–मितव्ययिता, वैधानिकता और कार्यालयीन औपचारिकता तथा आदरसूचक रूपों के संबंध में निस्संदेह हिंदी श्रेष्ठ साबित हुई है जिसकी तुलना अंग्रेजी से करना सर्वथा अर्थहीन और अवांछनीय है। कामकाजी हिंदी का मानकीकरण भी हुआ है। उपरोक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यह जरूरी नहीं है कि बोलचाल की भाषा जैसी सरल हिंदी का प्रयोग अपेक्षित हो। यह बात किसी भी कार्यालयीन भाषा के साथ लागू होती है। अतः मात्र हिंदी पर दोषारोपण करना सर्वथा अनुचित है।

केंद्रीय कार्यालयों में कई दशकों से चला आ रहा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य भले ही उपयुक्त रहा हो, फिलहाल एक गैर–ईमानदार या झूठा क्रियाकलाप साबित हुआ है, उपहास का विषय बना हुआ है, मात्र एक प्रपंच बन गया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी दिवस आदि का आयोजन भी हिंदी का वार्षिक श्राद्ध जैसी अनावश्यक क्रिया साबित होती है। पत्र–लेखन, टिप्पणी–लेखन, द्विभाषी कागजात, नामपट, रबर मोहरें आदि बनाना वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत हर वर्ष निर्दिष्ट किए जाते हैं, उनका न्यूनतम प्रतिशत सूचित किया जाता है और फिर प्रत्येक कार्यालय द्वारा उपलब्धि की तिमाही रिपोर्ट केंद्रीय राजभाषा विभाग को भेजी जाती है। सर्वाधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि कार्यान्वयन के निर्दिष्ट लक्ष्य हासिल न होने पर और आधी–अधूरी निरर्थक तिमाही रिपोर्ट भेजने पर क्या कोई जवाबदेही मांगी जाती है, कोई प्रशासनिक कार्रवाई की जाती है, किसी दण्ड की व्यवस्था की जाती है ? ऐसा कुछ नहीं है तो भला वार्षिक कार्यक्रम और तिमाही रिपोर्ट की उपादेयता क्या रह गई, मात्र एक औपचारिकता पूरा करने का प्रपंच ? जो कुछ गंभीरता वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में आरंभ में थी वह अब न्यून से न्यून हो गई है। वार्षिक कार्यक्रम को जब हिंदी अधिकारी विचारार्थ पेश करते हैं तो कार्यपालक अब ऐसा कहते हैं कि 'इसमें क्या नया है, यदि कुछ नया हो तो बताइए, वरना (स्किप) छोड़ दीजिए।' हिंदी की प्रगति के निरीक्षण के लिए संसदीय राजभाषा समितियों को जिम्मेवारी दी गई हैं जिनका निर्णायक प्रभाव पड़ना चाहिए किंतु ढुलमुल प्रयासों के कारण इनका योगदान हाशिए पर ही है।

संसदीय राजभाषा सामीति के पूव उपाधयक्ष डॉ. शंकर दयाल सिंह ने इन समितियों के अधूरे इतिहास और भूगोल को रेखांकित करते हुए इनकी उपयोगिता के बारे में गालिब का यह शेर उद्धत किया था – "यदि यह समिति न होती हो सरकारी कार्यालयों में रस्मअदायगी के तौर पर भी हिंदी का नामलेवा मिलना कठिन था।" उन्होंने प्रश्न किया था कि 'संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा कहीं हम भी देश को बहला या फुसला तो नहीं रहे हैं ?' उन्हीं के शब्दों में "हिंदी जब देश की राजभाषा है, उसे जब संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, उसके साथ अधिनियम–नियम है, संकल्प और सरकारी सूचनाएं हैं ... गृह मंत्रालय का वार्षिक कार्यक्रम और राष्ट्रपति का आदेश है, फिर भी हिंदी है कहां ?" अंततः वे पूछते हैं कि "इस प्रकार हम किसे छल रहे हैं – संविधान को ? राष्ट्रपति जी को ? राष्ट्र को या अपने आप को ?" उन्हीं के अनुसार, "हमारा ही देश विश्व में शायद एक ऐसा अपवाद है, जहां राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीय फूल जितना महत्व भी राष्ट्रभाषा का नहीं है।" उन्होंने निष्कर्ष निकाला था कि "मैं निराश नहीं हूं, आश्वस्त हूं कि आने वाली पीढ़ी इसे कभी–भी सहन नहीं करेगी।" जी हां, इस अवसर की आवश्यकता यही है कि हिंदी कार्यकर्ता निराशा से उबर कर कुछ कर गुजरने की ठान लें। एक अदना से कार्यकर्ता के रूप में कुछ सुझाव यहां इसलिए प्रस्तुत कर रहा हूं इन पर और अन्य ऐसे बिंदुओं पर विचार–विमर्श हो और प्रभावी रूप से कुछ ठोस प्रयास हों। ज्ञातव्य है कि देश कठिन स्थितियों से गुजर रहा है, एक ओर कारगिल–युद्ध जैसी स्थितियां तो दूसरी ओर आम चुनाव का भार ढोने की चनौती। एक ओर राष्ट्रभाषा के माध्यम से देश–प्रेम जागृत करना तो दूसरी ओर इसे वोट की भाषा के रूप में प्रयोग में लाना। ऐसी स्थितियों में जब राष्ट्रभाषा हिंदी की भूमिका मुखर होती है, उस भाषा की समस्याओं को दरकिनार करना या नजरअंदाज करना सर्वथा एक कृतघ्न कार्य होगा।

शासन की भाषा बनने और अंग्रेजी का स्थान लेने से हिंदी को वंचित रखना देश के सभी लोकतंत्रवादियों के लिए समान रूप से एक गंभीर बात है। अतः सर्वप्रथम भाषा अधिनियम संशोधन विधेयक, 1967 की समीक्षा और उस पर पूर्णविचार सर्वथा आवश्यक है। प्रशासन से अनिश्चित या अनंत काल तक अंग्रेजी कायम रख कर हिंदी की प्रोन्नति की बात करना महज बेईमानी है। वर्ष 1965 से अब तक 35 वर्ष का समय–विस्तार व्यतीत हो चुका है, किंतु विधेयक के अनुसार क्या राज्यों की विधानसभाओं ने इस संबंध में कोई राय या निर्णय लेने का प्रयास किया है या केंद्र ने अपनी राय मांगी है अथवा समीक्षा हेतु निर्देश दिया है ? यह कैसा विधेयक है जिसके कुप्रभाव से हिंदीभाषी कर्मचारी भी हिंदी भूलते जा रहे हैं ? नियमानुशासन को ताक पर रख कर राजभाषा का नियमन होगा कैसे ? क्या इस काले विधेयक द्वारा हिंदी को मृत देह को नहीं ढोया जा रहा है ? अब समय आ गया है जब फरियादी बन कर नहीं बल्कि प्रचंड संघर्ष के द्वारा हिंदी को दासता से मुक्त कराया जाए। देश के कोने–कोने के हिंदी कार्यकर्ता संगठित होकर हिंदी आजाद हो, भारत–भारती आबाद हो, का अभियान चलाएं ताकि राष्ट्रभाषा के प्रति स्वाभिमान जागृत हो, झंकृत हो। देशभर में हस्ताक्षर अभियान चलाया जाए जिसके द्वारा काले विधेयक में संशोधन हेतु

राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को ज्ञापन प्रस्तुत किया जाए। इस ज्ञापन में प्रशासन में अंग्रेजी को कायम रखने की निश्चित कालावधि को एक उपयुक्त समयबिंदु पर समाप्त करने की मांग की जाए। इस बीच 'क' क्षेत्र में अंग्रेजी की अनिवार्यता अविलम्ब समाप्त कर दी जाए और कार्यालयीन कार्य अनुवाद की भाषा में न होकर मौलिक रूप में हिंदी में किया जाए। विधेयक में संशोधन के अनुसार 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्रों में अंग्रेजी की जगह हिंदी प्रतिष्ठित करने की एक समयबद्ध समय–सारणी बनाई जाए। निजी क्षेत्रों में भी हिंदी के प्रयोग संबंधी नियमन पर ध्यान दिया जाए। भारत स्थित बहु–राष्ट्रीय कंपनियां कोई 'ईस्ट इंडिया कंपनी' नहीं है, उनके द्वारा भी हिंदी का प्रयोग जरूरी हो।

नब्बे साल के संघर्ष के बाद एक आधी रात को भारत स्वतंत्र हुआ था, किंतु हिंदी को अब भी ऐसी आधी रात का इंतजार करना पड़ रहा है। माना कि सत्ताकामी आत्महीन हुए अंग्रेजीपरस्तों की संख्या बढ़ी है जो हिंदी को फूटी आंखों देखते हैं, उसके रास्ते के रोड़े बने हैं, माना कि स्थिति निराशाजनक है, किंतु निराशा के अंधकार को चीर कर हिंदी को आजाद करना ही वांछनीय लक्ष्य होना चाहिए।

विचारणीय है कि जिस हिंदी की संस्कृत सबल जननी है और प्रांतीय भाषाएं उसकी सुघड़ बहनें, जिसमें विपुल शब्द संपदा है, जो शतदल कमल जैसी संस्कृति को वाहक है और जिसे गोरे अंग्रेज भी हटा नहीं पाए, उस हिंदी को भला हम 'काले अंग्रेज' क्या हटा पाएंगें। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति सुप्तप्राय हुए प्यार को जागृत किया जाय तथा भारतवासियों में हिंदी के साथ मनोवैज्ञानिक रूझान सशक्त हो, ताकि हर भारतवासी गर्व से कहे कि –

भले ही वैश्वीकरण से सरोकार है मेरा,

अंग्रेजी की वैश्विकता को भले ही मानता हूं,

भले ही जर्मन, फ्रेंच, रूसी, जापानी – सभी भाषाओं में हाथ मिलाता हूं, मैं, लेकिन डंके की चोट पर कहता हूं कि, मैं हिंदी में हृदय से हृदय मिलाता हूं।

(लेख राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान लिखा गया था)

–इस्पात भाषा
भारती के साभार

नियोजित विकास में राजभाषा की महत्ता

–पद्मश्री डा. लक्ष्मी नारायण दूबे

नियोजित विकास में राजभाषा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की अहम् एवं प्रभावी भूमिका है। हम 'वोट' तो हिंदी में मांगते हैं परन्तु 'नोट' अंग्रेजी में लिखते हैं। इससे बड़ी विडम्बना तथा प्रवंचना क्या हो सकती है ? इसी के कारण ही न तो नियोजन ही चरितार्थ हो पा रहा है और न लोकतंत्र की सच्ची तथा वास्तविक छवि उभरकर आ पा रही है। तंत्र पर अंग्रेजी हावी है और लोक पर जनभाषा। अब केर–बेर का संग कैसे हो सकता है ?

नियोजित विकास का तात्पर्य है : व्यवस्थित, वैज्ञानिक तथा सुचिंतित रूप में व्यक्ति या समाज अथवा राष्ट्र की पुरोगामिता। विकास तो सबका ही होता है। बीज पौधे के रूप में विकसित हो जाता है और पौधा पादप का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार अरण्य बन जाता है जिसके लिए एक कहावत है : अरण्य–रोदन। दूसरी ओर माली उद्यान को करीने और सुविन्यस्त रूप में, यथासंभव काट–छांटकर, भव्य, उदात्त तथा विशाल स्वरूप प्रदान करता है जहां रोदन न होकर आनंद, सुख तथा प्रगति है।

नियोजित विकास आधुनिक विश्व का श्रेष्ठ सोच है जिसने समस्त विकासशील देशों को अपने क्रोड में संस्थित कर, उन्नति के कलश स्पर्श कराए हैं। इसी आधार पर हमारे राष्ट्र ने आठ पंचवर्षीय योजनाएं निर्मित तथा कार्यान्वित।

नियोजन किसके लिए हो और इसे आम–आदमी तक कैसे पहुंचाया जाए ? ये मुद्दे आज के बुद्धिजीवियों के मन–मस्तिष्क को आंदोलित कर रहे हैं। महात्मा गांधी तथा आचार्य विनोबा भावे ने आम–आदमी को दरिद्र नारायण कहा था और इसे पंगत का आखिरी आदमी कह सकते हैं जिस तक भोजन लाते–लाते समाप्त हो जाता है। यहीं लोक भाषा या जनभाषा की महत्ता स्वयंमेव उभर कर आती है। राष्ट्रीय आम चुनाव में तो अंग्रेजी से विद्रोह कर, अपनी लोकभाषा अवधी में 'दुई सुत सुन्दर सीता पावा' कहते हैं तो दूसरी और बोलियों में भी बड़ा साहित्य भरा पड़ा है। लोकभाषाएं लोकसाहित्य तथा लोकानुभव की अक्षय भण्डार हैं। ये जनता के लिए स्पंदनशील होती है। आल्हा–ऊदल, छत्रसाल, पद्माकर, इंसुरी तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की लोकभाषा बुन्देली भी परिवार नियोजन को रेखांकित करती है –

सास बहू की एक ही सोर।
लच्छो कढ़ गई पाखों फोर।।

घाघ तथा भड्डुरी की लोकोक्तियों का प्रयोग नियोजन की व्याप्ति में किया जा सकता है। इस तरफ कोई झांके तो महासागर लहराता मिलेगा, परन्तु हमने तो लक्ष्मण रेखा खींच रखी है।

हमारी जनसंख्या सौ करोड़ हो गई है। यह सुरसा का मुंह हमारे लिए एक भयानक तथा उत्पीड़नकारी समस्या है। इसके लिए अब अनुमान से नहीं अपितु हनुमान से ही काम चल सकेगा। इसके द्वारा समूचा नियोजित विकास निगला जा सकता है और हम गुबार देख रहे हैं। जो पढ़े–लिखे नहीं हैं अथवा ग्रामीण जगत के हैं उनके बोध, ज्ञान और सतर्कता के लिए लोकभाषा का आश्रय ग्रहण करने की

परमावश्यकता है। राष्ट्रभाषा तथा लोकभाषा सामान्यजन में जागरूकता तथा जागृति के अभियान की अमराई है।

हम चौरास्ते पर खड़े हैं। एक ओर हम कृषि, नहर, सिंचाई, बड़े बांधों, खेती के कार्य में विज्ञान तथा टैक्नालॉजी, जनता की वैज्ञानिक अवधारणाओं और दृष्टिकोण की बात करते हैं, परन्तु उन्हें जनता तक पहुंचाने की भाषा के माध्यम की नितांत उपेक्षा कर रहे हैं। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और कविवर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने तो उपेक्षिता, त्यकता–विस्मृता उर्मिला का उद्धार कर दिया परन्तु राजनीति तथा नौकरशाही के शिकंजे में फंसी बेचारी हिंदी का कौन उद्धार करे जो कि नियोजित विकास की कलकल निनादिनी है। रीतिकालीन कवि बिहारी की नायिका तो मुंह टापती रह गई और उसकी दूती ने ही नायक को फांस लिया। यही दूती अंग्रेजी आज महारानी बन बैठी है तथा उत्तरोत्तर तुन्दित होती चली आ रही है।

आज हमारे सोच का एक केन्द्र है: गरीबी हटाओ। गरीबों में परिवर्तन की लहर उत्पन्न कर दी है, परन्तु हम तभी फसल काट सकेंगे जबकि भारतीय भाषा का साधन हमारे पास हो। अब बहानेबाजी या पलायनवाद से काम नहीं चलेगा।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, नारी वर्ग, कमजोर तबका, पिछड़ा वर्ग या दलित समाज के उद्धार एवं प्रमुखता हेतु संविधान में संशोधन किए जा रहे हैं। इनकी भाषा सात समुन्दर पार की भाषा नहीं है। इन पर नियोजित विकास तथा आगामी योजनाएं केन्द्रित है जिनके कारणों को निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल की ऋचा से अभिषेक की परमावश्यकता है।

चौसठवां संशोधन पंचायत राज पर आधृत है। वह जड़ को पकड़ रहा है। जड़ बोली में बसती है। यह संशोधन गांव, कस्बे तथा जिले को अपने अंक में संस्थित करता है। मध्यप्रदेश ने पंचायत राज तथा सूचना–प्रौद्योगिकी में हिंदी में क्रांति तथा प्रतिमान ला दिया है।

पैसठवां संशोधन शहरी नियोजन से संबंधित है इसके पंचम अध्याय में योजना का भी प्रावधान है। जिला स्तर पर प्रत्येक गांव की पंचायत में एक समिति बनेगी जो कि पंचायतों तथा नगर पालिकाओं द्वारा निर्मित योजनाओं को जिला स्तरीय विकास योजना प्रारूप का स्वरूप प्रदान करेगी। यह योजना गांव तथा शहर के सामान्य हितों पर निर्भर होगी। इस समिति द्वारा बनाई गई योजना को ही राज्य सरकार को प्रेषित किया जाएगा। इस प्रकार अब देहली से रहली नहीं अपितु बिन्दु से सिंधु की यात्रा शुरू होगी। सीढ़ी से पीढ़ी पर आने के अवसर मिलेंगे। ये समस्त घटक तथा परिवेश सिद्ध करते हैं कि संस्कृत से प्राकृत की ओर उन्मुख होना होगा। इसके अतिरिक्त अब कोई मार्ग नहीं रह गया। संत कबीर की वाणी चरितार्थ हो रही है: "भाषा बहता नीर"।

हिंदी के अनेक रूप हैं। यह राजभाषा भी है। और राष्ट्रभाषा भी। दूसरी ओर वह क्षेत्रीय भाषा तथा मातृभाषा भी है। उसमें पूर्वी हिंदी तथा पश्चिमी हिंदी को मिलाकर

कुल नौ बोलियां हैं। उसके बोलने–लेखने तथा समझने वाले हमारे देश में 71 करोड़ व्यक्ति हैं। वह संसार की 2800 भाषाओं में चीनी के पश्चात् विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है। उसका राष्ट्र संघ में सातवीं भाषा के रूप में भविष्य उज्ज्वल है। वह उदारता, प्रेम, विनम्रता सौहार्द तथा सौमनस्यता के वातावरण में अपनी अस्मिता का निर्माण कर चुकी है। वह भारतीय संस्कृति एंव वाड्मय की अधिष्ठात्री, संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है। संस्कृत का प्रभाव दक्षिण की चारों द्रविड़ भाषों पर भी सुस्पष्ट परिलक्षित है। इस प्रकार उसके माध्यम से न केवल राष्ट्रभाषा के विकास में 'चरैवेति चरैवेति' के स्वर मिलते हैं, अपितु राष्ट्रीय पंचायतों को विधान सभाओं तथा लोक सभाओं के समकक्ष दर्जा प्रदान कर, हमने मूल उत्स को अपनी प्रणति प्रेषित की है। भारत जैसे बड़े देश को लोकतांत्रिक ढंग से शासन चलाने के लिए लगभग नौ सौ सांसद और लगभग छ: हजार विधायक पर्याप्त नहीं हैं। गांव के शब्दों से जुड़े व्यक्ति ही अब नियोजन के सूत्रधार तथा नियंता बन गए है। जवाहर रोजगार योजना गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले ग्रामीण भारत के 440 लाख परिवारों तक देश के कोने–कोने में लाभ पहुंचा चुकी। नारी को देवत्व नहीं, समानता प्रदान कीजिए। सरकार ने लोकतांत्रिक समस्याओं में निचले स्तर तक महिलाओं को प्रभावी भूमिका तथा उन्हें अधिकार देने के लिए एक राष्ट्रीय परिप्रेक्षण योजना (1988-2000) तैयार की थी जिसकी अनुशंसा है कि निचले स्तर पर कार्यरत सभी कर्मचारियों में से पचास प्रतिशत संख्या महिला कर्मियों की होनी चाहिए। ये गरीब, बेरोजगार, ग्रामीण, पंचायत के सदस्य और महिलाएं ऐसी भाषा के मोहताज हैं जो कि उनकी अपनी हो - जिसमें वे अपनी व्यथा-कथा, सुख-दुख आपबीती तथा संवेदनाओं को प्रकट करने के समर्थ हो सकें। यह लोकभाषा तथा बोली द्वारा ही संभव है।

योजना आयोग ने आठवीं योजना को तैयार करने के संदर्भ में रोजगार सेवा पर एक कार्यदल गठित करने का निर्णय लिया था जो कि एक ओर कम्प्यूटरीकरण के जरिए रोजगार सेवा के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी लाने के उपाय सुझावेगा और दूसरी ओर कमजोर वर्ग की इस दिशा की गतिविधियों को विस्तार देगा। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं कंप्यूटर के साथ जुड़ चुकी हैं। कम्प्यूटर के जरिए अंग्रेजी के पारिभाषिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्द को किसी भी मान्यता प्राप्त भाषाओं के पर्याय के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। मराठी का दलित साहित्य कमजोर वर्ग तथा सर्वहारा समाज के साथ न्याय कर रहा है।

हिंदी को नियोजित विकास के साथ कदम से कदम मिलाने में कोई दिक्कत या अड़चन नहीं है। हिंदी हर प्रकार से समर्थ तथा शक्तिशाली भाषा है। उसके सर्वनाम सरलतम हैं। उसमें क्रियाएं 'होना', 'करना' तथा 'बनाना' तीन धातुओं का ज्ञाना पर्याप्त है। उसमें वाक्य-विन्यास की सरलता है। 'नेरेशन' अंग्रेजी की एक बड़ी उलझन है। इससे फ्रेंच तथा रूसी भाषी बहुत घबराते हैं। अंग्रेजी में चार लिंग हैं परन्तु हिंदी में सिर्फ दो। हिंदी में 500 धातुओं का प्रयोग होता है। उनमें आधी सकर्मक एवं आधी अकर्मक है। हिंदी की शक्ति इसी से सिद्ध है कि मिलटन ने 8,000 तथा शेक्सपीयर ने पन्द्रह हजार शब्दों परन्तु तुलसीदास ने सत्रह हजार शब्दों का प्रयोग

किया है। ऐसी समर्थ भाषा नियोजित विकास तथा आधुनिक योजना-पद्धतियों को वाणी देने में सर्वथा सुपुष्ट है।

देवनागरी लिपि संसार की अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है जिसने हिंदी, मराठी तथा नेपाली को आधार शिला प्रदान की है। कलकत्ता के न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र ने 1905 में 'एक लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना की थी। महात्मा गांधी तथा आचार्य विनोबा भावे ने भी समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि को रेखांकित किया था जिससे देश-भक्ति की भावना का उन्नयन तो हो ही, भाषायी सौहार्द भी सम्बद्धित हो सके। एक लिपि से नियोजित विकास को भी राष्ट्रीय स्वरूप तथा अन्तर्देशीय क्रियान्विति के सोपान सफलतापूर्वक मिल सकते हैं।

हिंदी को राजभाषा बने पचास वर्ष हो चुके हैं। हम अपनी स्वाधीनता के पांचवें दशक को पार कर चुके हैं। हिंदी समूचे देश में समझी, बोली तथा पढ़ी जाती है। उसे राष्ट्रभाषा की संज्ञा किसी हिंदी वाले ने नहीं दी अपितु अहिंदी भाषी मनीषियों तथा महापुरूषों ने उसे राष्ट्रभाषा के रूप में संबोधित किया जिनमें महामति श्री प्राणनाथ जी, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, सुभाषचन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक, मोटरू सत्यनारायण, गोपीनाथ बारदोलाई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। देश में हिंदी को 71 प्रतिशत लोग समझते हैं।

हम अपनी मातृभाषा में जितनी अच्छी अभिव्यक्ति कर सकते हैं उतनी अन्य भाषा में नहीं। इसलिए समस्त भारतीय भाषाओं को समवेत रूप से संबद्ध होकर राष्ट्र के कल्याण की मूल जड़ - नियोजित विकास को सहस्रबाहु बनाने की आवश्यकता है। इसमें प्रत्येक राष्ट्रीय भाषा को अपना महत्व तथा अपनी गरिमा है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना तथा नियोजित विकास के द्वारा हिंदी सहित समस्त भारतीय भाषाओं के लिए उन्मुक्त तथा प्रेरणास्पद परिवेश सुनिश्चित किया जाना विचारणीय है। एक कहावत है :

'न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी।'

हिंदी में नौ मन नहीं नब्बे मन तेल हो चुका है और राधा को नाचना ही पड़ेगा।

-इस्पात भाषा
भारती से साभार

राष्ट्रभाषा और हम

-मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी, केरिपु बल

हमारा देश राजनैतिक दृष्टि से हालांकि लोकतांत्रिक है परन्तु भाषा जैसे आधारभूत सवाल पर हमारे देश का रूख ठीक इसके विपरीत है। दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले तथाकथित लोग अठानवे प्रतिशत लोगों पर अपनी श्रेष्ठता का दबदबा बनाए हुए हैं। भारतीय भाषाएं जितनी गौरवशाली हैं उतनी अंग्रेजी नहीं है। भाषा की गुलामी अधिक खतरनाक होती है। हमें अंग्रेजी की पहचान अंग्रेजियत के रूप में करनी चाहिए जो एक प्रकार की संस्कृति है और यह हमारी भारतीय संस्कृति को तोड़ती है। इससे लड़ने के लिए दिखावटी नहीं बल्कि अंतः करण का संकल्प करना होगा।

अंग्रेजी हमारी संवेदना और अभिव्यक्ति का अंग नहीं है किन्तु थोड़े से तथाकथित महत्वपूर्ण लोगों की आदत बन गई है। तथा वे दूसरों पर भी अधिरोपित किये हुए हैं। हम सभी जानते हैं कि मैकाले द्वारा अंग्रेजी का लाया जाना भारत की भाषा और संस्कृति के ताने-बाने को तोड़ने का सुनियोजित षडयंत्र था। अंग्रेजी भाषा का जितना ही प्रभाव बढ़ता जाएगा, भारत की भाषाएं उतनी ही टूटती जाएंगी, उनकी अस्मिता नष्ट होगी।

अंग्रेजों ने सामान्य रूप से अंग्रेजी को अनिवार्य नहीं बनाया था किन्तु उन्होंने इसकी उपयोगिता को बढ़ावा दिया जिससे भारतवासी स्वेच्छा से इस ओर आकर्षित हो गए। शासकों की भाषा होने के कारण विशिष्टता उससे जुड़ी थी। परिणाम यह हुआ कि भारतीय भाषाओं के प्रयोग का विकल्प व्यर्थ गया और अंग्रेजी फलती-फूलती गई। इसके विपरीत जब भारतीय भाषाओं को राजकाज की भाषा बनाने तथा उचित स्थान देने का निर्णय लिया गया तो शासकों द्वारा यह प्रयास नहीं किया गया कि भारतीय भाषाओं की व्यावहारिक उपयोगिता को अंग्रेजी से अधिक महत्वपूर्ण किया जाए।

आज तो स्थिति यह है कि हिंदी भाषी राज्यों में ही हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी अधिक उपयोगी है। कागजात अंग्रेजी में तैयार किये जाते हैं और बाद में उसका हिंदी अनुवाद कराया जाता है, जिसे मूल कहा जाता है। सारे कानून अंग्रेजी में उपलब्ध हैं तथा प्रमाणिकता भी अंग्रेजी की मानी जाती है। अतः जब तक अंग्रेजी का विकल्प समाप्त नहीं होगा तब तक हिंदी या भारतीय भाषाओं को स्थान नहीं मिल सकता है।

आज आवश्यकता है अंग्रेजी से मोह भंग करने को, इसके विकल्प को समाप्त करने को, मन से अंग्रेजी की सर्वोच्चता मिटाने की क्योंकि अब हिंदी में किसी भी चीज की कमी नहीं है और जो कमी है, वह है प्रयोग करने की इच्छा शक्ति की।

अतः हिंदी सप्ताह या पखवाड़े के अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि अभी भी जिन क्षेत्रों में अंग्रेजी का बर्चस्व है उनमें हिंदी के लिए धीरे-धीरे पैठ बनाएं ताकि अनुवाद का सहारा बंद हो और मूल रूप से हिंदी में काम हो सके।

हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारी भूमिका

नगण्य क्यों?

- डॉ. शेर जंग गर्ग

हिंदी राष्ट्रभाषा है, हिंदी राजभाषा है, हिंदी जन-जन की भाषा है, हिंदी भारतवर्ष में सबसे ज्यादा बोली-समझी जाने वाली भाषा है - ये समस्त तथ्य स्वीकार किए जाने पर भी लोग अपने व्यवहार, अपने जीवन और अपनी आत्मा में हिंदी का समावेश किस सीमा तक कर पाए हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न आज भी है। यह प्रश्न मेरे लिए मात्र विचारणीय न होकर भीतर तक कुरेदने वाला है कि क्या सरकार द्वारा हिंदी को राजभाषा अंगीकार कर लिए जाने के कारण लोगों में, जनता में इस कार्यक्रम के प्रति उत्साह नहीं रह गया है, क्या प्रत्येक बैंक में 'यहां हिंदी में लिखे चैक स्वीकार किए जाते हैं' लिखे होने के प्रतिक्रियास्वरूप इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता। क्या इसके स्थान पर 'यहां हिंदी में काटे गए चैक स्वीकार नहीं किए जाते' ऐसा लिखा जाए, और फिर ऐसा किए जाने की प्रतिक्रिया क्या होगी। लोग बैंकों के सामने धरना देंगे, जुलूस निकालेंगे, संसद में प्रश्न उठाएंगे अथवा उठवाएंगें। मगर ऐसे ही सब लोग क्या फिलहाल अपना काम हिंदी में करते हैं।

इन्हीं दुखद परिस्थितियों, कथनी और करनी के इन्हीं अंतरों, इन्हीं बहरूपिया मानसिकताओं, इन्हीं कमजोर नीतियों ने मुझे सोचने पर मजबूर किया है। यह पीड़ा, यह आक्रोश, यह तकलीफ, यह नाराजगी कहीं सिर्फ मेरा दिमागी फितूर तो नहीं जिसके अंतर्गत मैं किसी भी हिंदी के जानकार और शिक्षित भारतीय को हिंदी की अवमानना करते देख कर तड़प उठता हूं, परेशान हो जाता हूं। क्या हो जाता है मुझे जब मैं एक अति अल्पशिक्षित व्यक्ति को भी अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते पाता हूं। क्या हो जाता है मुझे जब मैं सिर्फ हिंदी भाषा को ही ठीक से जान-समझ सकने वाले व्यक्ति को बड़े गर्व से कहते सुनता हूं – मुझे हिंदी जरा कम आती है, क्यों द्रवित हो उठता हूं मैं जब हिंदी कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में ऐसे लोगों को काफी जोर-जोर से बोलते सुनता हूं जो हिंदी की गाड़ी को आगे ले जाने के बजाए पीछे की ओर धकेल रहे हैं जिनका सरोकार मात्र नामे और ड्रामे से है और जिनमें आत्म-सम्मान, स्वदेश-गौरव किंचित् भी शेष नहीं रह गया है, भला उन शरीफजादों को हिंदी के सम्मान वगैरह से क्या लेना-देना?

माना कि अंग्रेज अपने पीछे एक ऐसी मानसिकता छोड़ गए हैं कि अधिकतर थोड़े-बहुत पढ़े-लिखे भारतीय भी अब हिंदी के प्रयोग से कतराने लगे हैं। उन्हें भय रहता है कि हिंदी के प्रयोग से वे किसी प्रकार के कठमुल्लापन को जन्म तो नहीं दे रहे हैं और इसी डर, आशंका, संकोच के वशीभूत हो अंग्रेजी का प्रयोग वे धड़ल्ले से कर रहे हैं। मगर क्या उनके पास मेरे इन प्रश्नों का जवाब है कि प्रत्येक पंद्रह अगस्त को लालकिले की प्राचीर से दिया जाने वाला हर भाषण सिर्फ हिंदी में ही क्यों होता है और अगर अमिताभ बच्चन ने हिंदी फिल्मों में नहीं, अंग्रेजी फिल्मों में काम किया

होता तो क्या वे कितने लोकप्रेय होते ? वास्तविकता यह है कि इस देश में आज जिस व्यक्ति को जन-जन तक पहुंचना है, अपने व्यक्तित्व और कृतित्व को भारत के प्रत्येक कोने में पहुंचाना है, उसे हिंदी का प्रयोग ही करना होगा और जिन्होंने ऐसा किया है, वे जन-जन तक निश्चित रूप में पहुंचे हैं।

हिंदी पत्रकारिता से शुरू करके और इसके बाद गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना में अध्यापन कार्य के दौरान समझ में आया कि मात्र हिंदी के साहित्य का पठन-पाठन ही पर्याप्त नहीं है, इस दिशा में लोगों में प्रतिबद्धता एवं संकल्प भावना जगाना भी बहुत जरूरी है। इसके बाद मैं केंद्रीय हिंदी निदेशालय में पंद्रह वर्षों तक हिंदी संबंधी कार्य में लगा रहा। वहां संपूर्ण परिवेश ही हिंदी का था इसलिए स्थिति की भयावहता का मुझे किंचित भी अंदाजा नहीं हुआ। वहां किसी किस्म की चुनौती मेरे सामने नहीं थी। सुविधा हो तो हिंदी में काम करो और सुविधा न हो तो अंग्रेजी में भी काम चल जाएगा। काम तब भी हिंदी में खूब किया, मगर कोई द्वंद्व, कोई दुविधा, कोई गहरी चिंता सचमुच ही मेरे सामने नहीं थी। सब सहज भाव से चलता रहा और मेरा हिंदी निदेशालय का कार्यकाल भी बीत गया।

हिंदी के प्रति गहरे लगाव और इसे कार्यान्वित करने की तीव्र आवश्यकता का अहसास मुझे पिछले एक दशक में जितनी तीव्रता से हुआ उतना संभवतः पहले कभी नहीं हुआ था। हिंदी कार्यान्वयन से जुड़ जाने के कारण मैंने महसूस किया कि हिंदी-भाषी क्षेत्रों में जन्मे लोग भी हिंदी की कोई कम उपेक्षा नहीं करते हैं। हिंदी प्राध्यापकों, अध्यापकों, पत्रकारों ने हिंदी को एक पेशे के रूप में तो अपनाया है, मगर उसे अपनी निष्ठाओं से नहीं जोड़ा है। वे हिंदी को हाथी के दिखाई देने वाले दांतों की तरह तो इस्तेमाल करते हैं, मगर उनके असली दांत बिल्कुल ही गायब हैं। ऐसी हालत में मुझे लगा कि समाज के दबे-पिछड़े वर्गों में अगर हिंदी का प्रयोग चलता भी रहा तो वह मजबूरी का नाम ... जैसी उक्ति से किसी भी कीमत पर ज्यादा नहीं हो सकता।

स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी किसी राष्ट्र के वासियों को यह बतलाना पड़े कि जनता, अधिकारी, व्यापारी, उच्चाधिकारी, वकील और डॉक्टर हिंदी के महत्व को समझें तो कम अजीब नहीं लगता। मगर किसी को कह-समझा कर भी क्या होता है, लोग मुश्किल से सुनते हैं, सुन भी लेते हैं तो दूसरे कान से निकाल देते हैं। सारी स्थिति एक मखौल, मजाक और फूहड़पन के सिवा कुछ नहीं लगती। लोग हिंदी की बात तब करेंगें जब उन्हें मौलिक अंग्रेजी लिखने को कहा जाएगा क्योंकि आज भारतीयों द्वारा खासकर क्लर्कों, अफसरों, इंजीनियरों, दुकानदारों, डाक्टरों द्वारा अंग्रेजी में कुछ भी मौलिक नहीं हो रहा है, अंग्रेजी और स्वयं ही असलियत समझने का मौका भी उन्हें नहीं मिल रहा है, सब कुछ पिटी-पिटाई लीक पर चल रहा है। लोग हिंदी जानते हैं, उसके महत्व को मान भी लेते हैं मगर मौका मिलते ही अंग्रेजी में हस्ताक्षर कर डालते हैं, छोटे-छोटे कामों में भी हिंदी की उपेक्षा कर देते हैं और फिर भी उन्हें गलतफहमी है कि वे आजाद हैं और एक स्वतंत्र देश के सम्मानित नागरिक हैं।

न जाने कौन-सी घड़ी में हम भारतीयों के दिमाग बदलेंगे और हम हिंदी को अपनाएंगें फिलहाल तो यही सवाल मेरे दिमाग में, मेरे मन में कौंधता रहता है। कई बार अपने से पूछने को मन करता है कि कहीं यह मेरी सीमा, मेरा संकुचित दृष्टिकोण तो नहीं जिसके कारण मैं इतना दुराग्रही हो गया हूं।

कहीं ऐसा तो नहीं कि हिंदी का प्रयोग न करने वालों को मैं स्वार्थवश भ्रमित अथवा पथच्युत समझने लगा हूं? मगर हर बार मुझे यही उत्तर मिला है कि मैं किसी सिरे से गलत नहीं हूं। अब कम-से-कम दूसरे भी तो अपने बारे में सोचने का कष्ट करें कि आखिर वे हैं क्या? क्या वे सचमुच ही राष्ट्र की कोई भलाई कर रहे हैं, ऐसा करके क्या उन्होंने अपने आत्मविकास की राहें बंद कर ली हैं ? मेरी कामना है कि मेरे ऐसे बंधु इस दिशा में सोचने में अपना थोड़ा-बहुत समय अवश्य लगाएं।

-इस्पात भाषा भारती से साभार

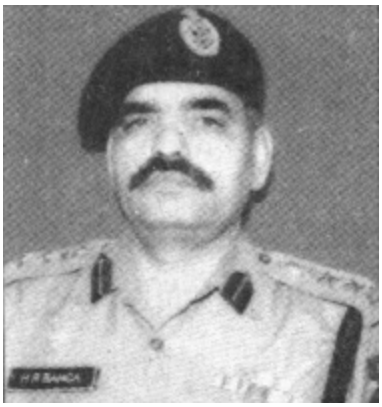
स्वतंत्रता दिवस पर बल के 35 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 35 कार्मिकों को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से तीन अधिकारियों को विशिष्ट सेवाओ के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 32 अधिकारियों तथा कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक निम्न प्रकार हैं।

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



अपर पुलिस उप. महा. श्री ए.एन. श्रीनिवासन (ग्रुप केंद्र बंगलौर)



श्री एच.आर. बंगा, कमां. *(100* बटा. आरएएफ*)*



डा. श्रीमती पी. कौशल *(*ग्रु. के. जालंधर*)*

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



कमा. बी.के. टिक्कू *(*महानिरीक्षक परिचालन, श्रीनगर कार्या.*)*



कमां. एस.के. कपूर *(*सीटीसी *I*-नौमच*)*



कमां. विनोद वीर सिंह *(7* बटा.*)*



कमां. बिजेन्द्र पाल सिंह *(108* आरएएफ बटा.*)*



डिप्टी कमा. वी.वी. पोनाप्पन *(*ग्र.के. पल्लीपुरम*)*



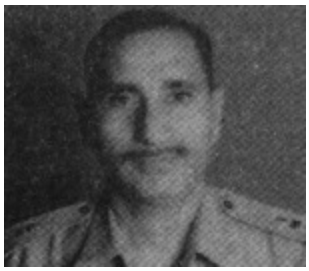
डिप्टि कमां. बीर सिंह *(89* बटा.*)*



सहा.कमां. टी.एम.के. नाम्बियार *(ग्रु.के., बंगलौर)*



डा. एच.आर. राघवन *(बेस अस्पताल, नई दिल्ली)*



सूबेदार मेजर बुद्धि सिंह *(20 बटा.)*



इंस्पेक्टर/आरमोरर ए.आर.जी.के. नायर *(एडब्ल्यूएस खटखटी)*



इंस्पेक्टर/क्रिप्टो मोहन राम आर्य, *(संचार शाखा, महानिदेशालय)*



इंस्पेक्टर रघुबीर सिंह *(23* बटा.*)*



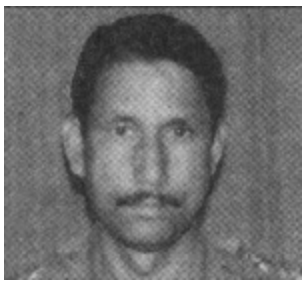
इंस्पेक्टर बाबू लाल *(48* बटा.*)*



इंस्पेक्टर डी.एस. मिश्रा *(*ग्रु.के. भोपाल*)*



इंस्पेक्टर आर.एस. फुके *(40* बटा.*)*



इंस्पेक्टर बी.एल. वर्मा *(115* बटा.*)*



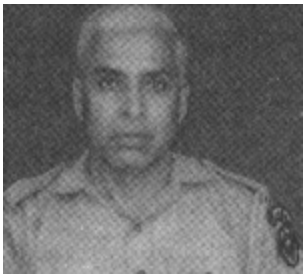
इंस्पेक्टर ललित मोहन वर्मा *(ग्रु.के. नीमच)*



इंस्पेक्टर उत्तर चंद पटियाल *(रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र, श्रीनगर)*



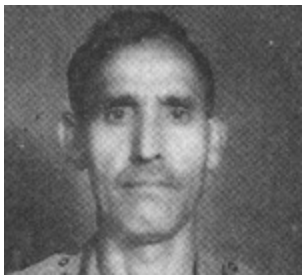
सब इंस्पेक्टर आर. भार्गवन *(ग्रु.के. पल्लीपुरम)*



हैंड कांस्टेबल/ड्राइवर विद्या नंद *(21* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल/ड्राइवर एम.पी. खंडूरी *(88* बटा.*)*



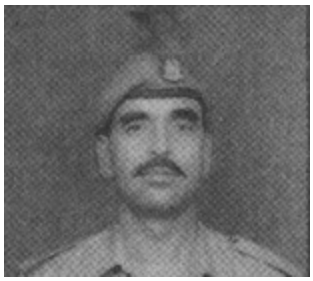
हैड कांस्टेबल रणजीत सिंह *(120* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल के.सी.एस. नायर *(63* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल बिरेन्द्र सिंह *(103* आरएएफ बटा.*)*



हैड कांस्टेबल पानी राम *(ग्रु.के. लखनऊ)*



हैड कांस्टेबल रियाजत खान *(130* बटा.*)*



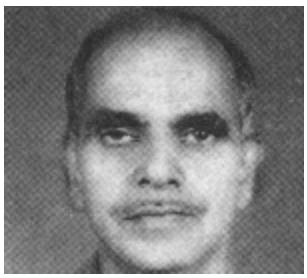
कांस्टेबल एच.के. थापा *(67* बटा.*)*



कांस्टेबल मो. सादिक *(134* बटा.*)*



कां. मुमताज अहमद खान *(16* बटा.*)*



निजी सचिव टी. राघवन *(*अपर महानिदेशक उ.प. जोन कार्यालय*)*



वार्ड सिस्टर एन.जीवन माला देवी *(*बेस अस्पताल हैदराबाद*)*



कुक बाल बहादुर *(54* बटा.*)*

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए किए गए उपाय

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा संकल्प 1968 के पैरा 1 के अनुसार केन्द्रीय सरकार को हिंदी प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकार प्रयोजनों के लिए हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के लिए प्रति वर्ष एक गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने और उसे कार्यान्वित करने का दायित्व सौंपा गया है। इस संकल्प के अनुसरण में राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। कार्यान्वयन की दृष्टि से राज्यों/ केन्द्र शासित प्रदेशों को "क", "ख" और "ग" के लिए कुछ पुरस्कार क्षेत्रवार दिए जाते हैं। ये पुरस्कार भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को उनके द्वारा राजभाषा नीति के श्रेष्ठ अनुपालन के लिए दिए जाते हैं। योजना में प्रतिभागियों के लिए ये पुरस्कार राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित मानदण्डों के अनुसार तय किए जाते हैं। इस योजना के पांच भाग हैं : (क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड, (ख) बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड, (ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड, (घ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड और (ङ) हिंदी

में मौलिक पुस्तक लेखने के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

हिंदी के प्रयोग से संबंधित तिमाही रिपोर्ट

भारत सरकार के राजभाषा संबंधी आदेशों के कार्यान्वयन की प्रगति देखने के लिए सभी मंत्रालयों और विभागों से तिमाही प्रगति रिपोर्ट मंगाई जाती हैं। सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा संबंधित विभाग या मंत्रालय द्वारा स्वयं की जाती है।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हिंदी पदों का सृजन

सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों व उपक्रमों/बैंकों/निगमों आदि में राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित मानदण्डों के अनुसार पर्याप्त संख्या में हिंदी पदों का उपलब्ध होना आवश्यक है। इन पदों के सृजन की शक्ति प्रशासनिक मंत्रालयों के सचिवों को प्रत्यायोजित कर दी गई है।

निर्धारित कागज-पत्रों का द्विभाषिक रूप में जारी किया जाना

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) में यह व्यवस्था की गई है कि संघ के निर्धारित सरकारी प्रयोजनों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा। सरकार इस व्यवस्था के अनुपालन पर विशेष ध्यान दे रही है। मंत्रालयों/विभागों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों के अनुसार कुछेक अपवादों को छोड़कर धारा 3(3) के अंतर्गत अधिकांश कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए गए।

निरीक्षण कार्य में प्रगति

सभी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन की निगरानी (मानीटरिंग) का दायित्व नोडल विभाग होने के नाते राजभाषा विभाग को सौंपा गया है। यह दायित्व राजभाषा विभाग तथा इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण करके पूरा किया जाता है।

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अन्तर्गत हुई प्रगति

राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन बनाए गए राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनाके के लिए प्रयोग) नियम, 1976 के नियम, 10(4) के अनुसार केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के 80: या उससे अधिक कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उनके नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाने की व्यवस्था है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत कार्यालयों को अधिसूचित करने की कार्रवाई तेजी से की जा रही है। 31.12.2000 तक 68 मंत्रालयों/विभागों तथा 26,100 केन्द्रीय कार्यालयों को अधिसूचित किया जा चुका है।

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता में हिंदी का योगदान

-शिवकुमार खंडेलवाल, हिंदी अनुवादक, ग्रु.के. नीमच

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के आवश्यक तत्व - धर्म, भाषा, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय स्तर का प्रभावशाली व्यक्तित्व है। इन चारों तत्वों में भाषा की भूमिका अहम तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भाषा अभिव्यक्ति, विनिमय एवं भाव प्रकाशन का सशक्त माध्यम है।

आज देश की सर्वाधिक विकट समस्या राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की है। आसाम, पंजाब, नागालैंड, मिजोरम से लेकर अरूणाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर एवं झारखंड तक हर तरफ पृथकवादी आग जल रही है।

भाषा समन्वय सूत्र है। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के सूत्र में सबको आबद्ध करने का श्रेय केवल भाषा को है। यह कार्य हिंदी बखूबी निभा रही है।

अंग्रेजी शासन की नीति - "फूट डालो और राज करो" से लेकर आज तक हिंदी ही सम्प्रेषणीयता का सशक्त माध्यम बनी। हिंदी ही वैचारीक तथा आत्मीय एकता को स्थापित कर राष्ट्र की आजादी की नीवं बनी और आज भी राष्ट्र के हृदयों को जोड़े है। हिंदी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को टुकड़ें होने से बचाए हुएं है।

राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं जातियों का उत्थान पतन सदा उनकी भाषा के समानान्तर होता है। भाषा पर कुठाराघात राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए घातक सिद्ध हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप हर व्यक्ति अपने को पहले पंजाबी, बंगाली, मद्रासी, कन्नड़, मराठी समझता है, हिंदुस्तानी बाद में। इसलिए खालिस्तान, गोरखालैंड एवं झारखंड मुद्दे उठ खड़े हुए। राष्ट्र से अलग हिंदी का अपना अस्तित्व नहीं है। किसी भाषा से इसका टकराव नहीं है, क्योंकि हिंदी की दृष्टि ही विविधताओं के संगम में है, अनके भाषाएं अपने निजत्व के बावजूद भी इसमें घुलमिल गई है। हिंदी सभी प्रादेशिक व आंचलिक भाषाओं का वृहत्तर रूप है इसलिए यह समस्त राष्ट्र की एकता की कड़ी एवं अखण्डता की नींव है।

प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा ने देश में एकता, अखण्डता बनाए रखी। सारे वेद पुराण आदि संस्कृत में रचे गये। इसके बाद हिंदी अपने जन्म से ही साधु-संतों, सुफी, फकीरों तथा भक्त विचारकों, तीर्थ यात्रियों एवं साहित्यकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही। अपभ्रंश हिंदी द्वारा जैन एवं नाथपंथी साधु-संतों ने अपने विचार देश के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैलाकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता को बनाए रखा।

मुस्लिम सम्राट इब्राहिम लोदी, शहाबुद्दीन गौरी एवं शेरशाह सूरी के समय की

मुद्राओं पर ही देवनागरी के अक्षर "श्री हम्मीर महमूद तथा ओम" प्राप्त हुए हैं। सभी मुस्लमान कवियों (रसखान) आदि ने हिंदी में रचनाएं रची। तब हिंदी के व्यवहार एवं प्रयोग में धर्म बाधक नहीं था। साहित्य के क्षेत्रों में भी सभी साहित्यकारों का मेल जोल बना रहा है। सुफी संत और निर्गुण भक्ति कवि इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

हिंदी ने राष्ट्र को विकसित, संगठित, एकत्रित एवं अखंड बनाए रखने में योगदान दिया है, यह इतिहास प्रमाणित हो चुका है।

18वीं शताब्दी में पेशवा, सिंधिया, होलकर आदि मराठी राजघरानों में हिंदी में ही राजकार्य होता था। महाराष्ट्र के संत नामदेव एवं ज्ञानेश्वर गुजरात के नरसी मेहता, राजस्थान के दादू और रज्जबा, पंजाब के गुरूनानक असम के शंकरदेव एवं बंगाल के चेतन्य महाप्रभु आदि ने अपने उपदेश हिंदी द्वारा ही जनसाधारण तक पहुंचाए। मुगल बादशाहों के दरबारी काम–काज की भाषा भी हिंदी ही थी। अतिश्योक्ति नहीं है, प्राचीनकाल से ही हिंदी सभी प्रांतों को एक दूसरे से जोड़े हुए है। देशवासियों की बात को एक कोने से दूसरे कोने तक सुगमता से पहुंचाकर राष्ट्रीय एकता, अखंडता को हिंदी ने ही चरमोत्कर्ष पर पहुंचाया है।

जरा ध्यान दीजिए, आज एक बंगाली या पंजाबी या अन्य माध्यम से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को नौकरी मद्रास में करनी पड़े तो कितनी मुश्किल होगी। किन्तु एक हिंदी माध्यम से पढ़ा व्यक्ति देश के हर कोने में आसानी से नौकरी कर सकता है। अतः भाषाई विवाद एवं पृथकतावादी प्रवृत्ति विशुद्ध राजनैतिक है, व्यक्तिगत नहीं। इन व्यर्थ के झगड़ों से राष्ट्रीय एकता अखंडता विखंडित होती है, लेकिन हिंदी इस अलगाववादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर राष्ट्रीयता का मस्तक ऊंचे उठाए हुए है। भारत जैसे देश में जहां कई भाषाएं एवं अनेक बोलियां बोली जाती है, वहां हिंदी ही सम्पर्क, संसर्ग, सर्वसुलभ एवं सार्वभौमिक भाषा सिद्ध होती है। यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता की प्रतीक है।

डॉ. जाकिर हुसैन ने ठीक ही कहा है "हिंदी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत के लिए सुंदर हार का सृजन करेगी।

देश की संपर्क भाषा और हिन्दी

–जगतपति शरण निगम

संपर्क भाषा वह भाषा होती है जो किसी क्षेत्र, प्रदेश या देश के ऐसे लोगों के बीच पारस्परिक–विचार विनिमय के माध्यम का काम करे जो एक दूसरे की भाषा नहीं जानते। दूसरे शब्दों में विभिन्न भाषाभाषी वर्गों के बीच सम्प्रेषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह संपर्क भाषा कहलाती है।

भारत एक बहुभाषी देश है, यहां हजारों बोलियां बोली जाती है, यह कोई आश्चर्य

की बात नहीं है क्योंकि एक प्रचलित लोकोक्ति के अनुसार "कोस–कोस पर पानी बदले, बीस कोस पर बानी"। किंतु बोलियां बदलती भी हैं तो एक दूसरे के अजनबी नहीं हो जाती। उनमें बहुत ही थोड़ा अंतर आता है, यह क्रमिक परिवर्तन होता है और दूरी बढ़ जाने पर अर्थात् भारत जैसे बड़े देश के एक कोने की बोली दूसरे कोने की बोली से बिल्कुल भिन्न हो जाती है। इसलिए परस्पर एक जैसी बहुत सी बोलियों का समूह मिलकर एक अलग भाषा का रूप ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार काफी बड़े क्षेत्र की एक भाषा बन जाती है। जो निकटस्थ क्षेत्र की भाषा से भिन्न लगती है। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में 3448 बोलियां बोली हैं और 1652 भाषाएं प्रचलित हैं जबकि इनमें से 18 भाषओं को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सांविधिक मान्यता प्राप्त है। ये भाषाएं हैं – असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिन्धी, कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली।

अनेकता में एकता हमारी अनुपम परम्परा रही है। वास्तव में सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत सदैव एक ही रहा है। हमारे इस विशाल देश में जहां अलग–अलग राज्यों में भिन्न–भिन्न भाषाएं बोली जाती हैं और जहां लोगों के रीति–रिवाजों, खानपान, पहनावे और रहन–सहन तक में भिन्नता हो वहां संपर्क भाषा ही एक ऐसी कड़ी है जो एक छोर से दूसरे छोर के लोगों को जोड़ने और उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है। अर्थात् यह दायित्व संपर्क भाषा ही निभाती है और वह हिंदी है।

हिंदी को सम्पर्क भाषा का स्वरूप प्रदान करने में हमारे ऋषियों–मुनियों, साधु–संतों का महान योगदान रहा है जिन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक और द्वारिका से डिब्रुगढ़ तक घूम–घूम कर लोगों को अपनी पवित्र वाणी से उपकृत किया। वह चाहे पंजाब के नानक हों, उत्तर प्रदेश के कबीरदास हों, बंगाल के बंकिम, असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत रविदास आदि संतों ने जिस आध्यात्मिक चेतना को जागृत किया, वहीं दक्षिण के सेमना, आलवर आदि संतों की वाणी की भूमि भी वही थी।

वर्तमान में हिंदी को व्यापकता प्रदान करने में फिल्मों का बहुत बड़ा योगदान है। यों फिल्में तो बंगला, तमिल, पंजाबी, मराठी, कन्नड़, मलयालम आदि भाषों में भी बनती हैं पर उनका दायरा बहुत सीमित रहता है। एक हिंदी की फिल्में ही ऐसी हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर चलती हैं। बंगला में भी बंगला से अधिक हिंदी की फिल्मों की मांग है और इसी तरह दक्षिण में भी। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ या मलयालम बोलने वाले भी बड़े चाव से हिंदी फिल्मों को देखते हैं और उनके गीतों को गुनगुनाते हैं। प्रायः सभी फिल्म निर्माता कम्पनियां अहिंदी भाषी क्षेत्रों में ही स्थित हैं। सच पूछिए तो फिल्मों ने हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का जितना बड़ा काम किया है, उतना कोई दूसरा एक माध्यम अब तक नहीं कर सका है। फिल्मों के बाद इलेक्ट्रानिक मीडिया का स्थान आता है। रेडियो और दूरदर्शन में यह वैशिष्ट्य है कि वे जीवित भाषा को सामने लाते हैं। जीवित भाषा से तात्पर्य उच्चारित भाषा से है

अर्थात् भाषा जिस रूप में बोली जाती है उसे रेडियो और दूरदर्शन उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उसे भाषा संबंधी संस्कार में जो सहायता मिलती है, वह पुस्तकों, समाचार पत्रों अथवा पत्रिकाओं जैसे मुद्रित साधनों से नहीं मिल सकती। हाल के वर्षों में दूरदर्शन के नए–नए चैनलों द्वारा प्रसारित हिंदी धारावाहिकों के प्रति सुदूर अहिंदी प्रदेशों के लोगों की अभिरूचि इसका प्रमाण है। महाभारत, रामायण जैसे धारावाहिकों ने तो कीर्तिमान स्थापित किया।

भाषा के प्रसार में वाणिज्य और व्यवसाय का बहुत बड़ा हाथ रहता है। आज की सभ्यता वणिक सभ्यता है। वाणिज्य जीवन पर छा गया है। हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है और उसका सर्वोत्तम माध्यम है, वाणिज्य।

आजादी की लड़ाई लड़ते समय हमारी यह कामना थी कि स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होगी जिससे देश एकता के सूत्र में सदा के लिए जुड़ा रहेगा। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, मदनमोहन मालवीय, राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, गोपाल स्वामी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, सेठ गोविंददास प्रभृति महापुरुषों ने एक मत से इसका समर्थन किया। क्योंकि हिंदी हमारे समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आंदोलनों की ही नहीं अपितु राष्ट्रीय चेतना एवं स्वाधीनता आन्दोलन की अभिव्यक्ति की भाषा भी रही है।

हिंदी सदियों से ही प्रमुख संपर्क भाषा रही है और इसलिए यह बहुत पहले से 'राष्ट्रभाषा' कहलाती है क्योंकि हिंदी की सार्वदेशिकता संपूर्ण भारत के सामाजिक स्वरूप का प्रतिफल है। भारत की विशालता के अनुरूप ही राष्ट्रभाषा विकसित हुई हैं जिससे उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम कहीं भी होने वाले मेलों – चाहे वह प्रयाग में कुंभ हो अथवा अजमेर शरीफ की दरगाह हो या विभिन्न प्रदेशों के हमारी सांस्कृतिक एकता के आधार स्तंभ तीर्थस्थल हों – सभी स्थानों पर आदान–प्रदान की भाषा के रूप में हिंदी का ही अधिकतर प्रयोग होता है। इस प्रकार इन सांस्कृतिक परम्पराओं से हिंदी ही सार्वदेशिक भाषा के रूप में लोकप्रिय है। विशेषकर दक्षिण और उत्तर के सांस्कृतिक सम्बंधों की दृढ़ श्रृंखला के रूप में हिंदी ही सशक्त भाषा बनी। हिंदी का क्षेत्र विस्तृत है। हिंदी भाषी क्षेत्र की जनसंख्या रूस और अफ्रीका की जनसंख्या से भी अधिक है। हिंदी ने पिछले हजार वर्षों में विचार–विनिमय का जो उत्तरदायित्व निभाया है वह एक अनूठा उदाहरण है।

हमारे संविधान के प्रमुख आधार स्तम्भ हैं – लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समता एवं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय। इन्हें हम तब तक सार्थक नहीं कर सकते जब तक राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ नहीं हो जाती। राष्ट्र होने के लिए किसी भी देश के लिए यह आवश्यक नहीं है कि सारे देश की केवल एक भाषा हो, सभी का एक धर्म हो और सभी प्रजाति के हों। एक राष्ट्र होने के लिए यह जरूरी हैं कि एक इतिहास, अतीत के सह–अनुभूत उत्थान एवं पतन की समृतियां, वर्तमान में राष्ट्र के सुख–समृद्धि और सुरक्षा के लिए एक संकल्प तथा भविष्य के लिए संजोए सामूहिक स्वप्न और उन्हें साकार करने का व्रत। फिर भी केवल एक भाषा की अनिवार्यता न

होते हुए भी अलग–अलग भाषाओं के बीच एक सेतु की आवश्यकता तो है ही। इसी विचार को दृष्टिगत रखते हुए हमारे संविधान में अनुच्छेद 346 के अंतर्गत संपर्क भाषा का प्रावधान किया गया है जिसे अंग्रेजी में 'लिंक लैंगवेज' कहते हैं।

राष्ट्रभाषा प्रायः राष्ट्र के भीतर की अपनी भाषा होती है, बाहर से आई हुई राष्ट्रीय भाषा नहीं हो सकती। किसी भाषा के राष्ट्रभाषा होने की अनिवार्य शर्त यह है कि वह न्यूनाधिक अंशों में सारे राष्ट्र में व्याप्त हो, राष्ट्रभाषा स्वतः इस पद पर आसीन हो जाती है। इसके लिए किसी आदेश या विधि–विधान की आवश्यकता नहीं पड़ती। धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भों में राष्ट्र के भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी समुदाय परस्पर सम्पर्क में आने पर प्रायः जिस भाषा का उपयोग सहज ही करते हैं वह उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा होती है। गुजराती मातृभाषा वाले महात्मा गांधी ने इस तथ्य का अन्वेषण मात्र किया था कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है, उन्होंने इस तथ्य को ईमानदारी के साथ स्वीकार किया था और निःस्वार्थ देश सेवा की भावना के अधीन इस तथ्य का प्रसार किया था लेकिन उन्होंने इस तथ्य का अविष्कार या आदेश नहीं किया था। उनकी प्रेरणा में अहिंदी क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा प्रचार समितियां स्थापित हुई थीं जो आज तक हिंदी का प्रचार पूरे समर्पण भाव से कर रही हैं।

हिंदी समझना और बोलना दोनों ही उच्चारण की दृष्टि से सभी भाषा–भाषियों के लिए अति सुविधाजनक है। तीसरी विशेषता यह है कि इसकी लिपि देवनागरी विश्व की सभी लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक है, इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है। आचार्य विनोबा भावे के शब्दों में "देवनागरी में समस्त भारतीय लिपियों को लिखने की क्षमता है और देवनागरी के माध्यम से हम सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं का लिप्यांतरण कर सकते हैं और सीख सकते हैं। यह राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है।" जस्टिस शारदा चरण मित्र ने अपने 'देवनागर' नामक पत्र में लिखा था कि – "यदि भाषाओं में से लिपि की दीवार को हटा दिया जाएं और सब भाषाओं को 'देवनागरी' लिपि में लिखने की परम्परा चल पड़े तो भारत की एकता अखंड रह सकेगी, एक लिपि के माध्यम से हमारी एकता सर्वथा अक्षुण्ण रह सकेगी। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने विश्वास के साथ भविष्यवाणी की थी कि – "हिंदी ही वह समर्थ भाषा है जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में ऐक्य बन्धन स्थापित कर सकती है। "डा. सत्येन्द्रनाथ बसु के शब्दों में – "हिंदी ही वह सेतु है जो हमारे देश की विविध भाषाओं को जोड़ने का कार्य कर रही है और भविष्य में भी करती रहेगी।"

कुछ लोगों की यह धारणा है कि हिंदी पहले राष्ट्रभाषा कहलाती थी। बाद में इसे सम्पर्क भाषा कहा जाने लगा। अब इसे राजभाषा बना देने से इसका क्षेत्र सीमित हो गया है। वस्तुतः यह उनका भ्रम है। जैसाकि पहले उल्लेख किया जा चुका है हिंदी सदियों से सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषा एक साथ रही है और आज भी है। भारत की संविधान सभा द्वारा सितम्बर, 1949 को इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लेने से उसके प्रयोग का क्षेत्र और विस्तृत हुआ है। जैसे बंगला, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि को क्रमशः बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आदि की राजभाषा

बनाया गया है। ऐसा होने से क्या उन भाषाओं का महत्व कम हो गया है। वास्तव में इससे उन सभी भाषाओं का उत्तरदायित्व और प्रयोग क्षेत्र पहले की अपेक्षा बढ़ गया है। जहां पहले केवल परस्पर बोलचाल में काम आती थी या साहित्य रचना होती थी, वहीं अब उनके प्रशासनिक कार्य भी हो रहा है। यही स्थिति हिंदी की है। इस प्रकार हिंदी सम्पर्क और राष्ट्रभाषा तो है ही, राजभाषा बनाकर इसे अतिरिक्त सम्मान प्रदान किया गया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि जहां पहले हिंदी की रचनात्मक भूमिका साहित्य तक सीमित भी तदनंतर राजभाषा बनने पर राजकाज और शासन–प्रशासन तक पहुंची, वहीं इस कम्प्यूटर युग में ज्ञान–विज्ञान के नए–नए आविष्कारों और नवीनतम टेक्नालोजी में हिंदी पीछे चल रही है। इसका मुख्य कारण उच्च वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा का होना है, पर हमें इस चुनौती को स्वीकार कर अपनी गति बढ़ानी पड़ेगी और हिंदी के प्रयोजन मूलक स्वरूप को अधिकाधिक सुदृढ़ करना पड़ेगा। साथ ही इसे सामाजिक सरोकारों से सम्युक्त करना पड़ेगा। यह समय की मांग है अन्यथा हिंदी को इक्कीसवीं शताब्दी में ले जाने की संकल्पना पर प्रश्नचिह्न लग जाएगा। इस पहलू पर चिंतन की आवश्यकता है, और अपेक्षा है ठोस प्रयासों की।

–राजभाषा भारती के साभार

भाव पुष्प

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।

–डॉ जाकिर हुसैन

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि हिंदी भारत–भारती होकर विराजती रहे।

–गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर

अगर आज हिंदी भाषा मान ली गई तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।

–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी। हिंदी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली

जाती है। हमें इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना हो चाहिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हिंदी के बिना हमारा काम चल नहीं सकता।

–रविन्द्र नाथ ठाकुर

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

–डॉ जाकिर हुसैन

शायद हममें कुछ ऐसे आदमी हैं, जिन्हें इस बात का डर है कि हिंदीवाले हमारी मातृभाषा को छुड़ाकर उसके स्थान में हिंदी रखवाना चाहते हैं। यह भी निराधार भ्रम है। हिंदी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है वह आगे चलकर हिंदी से लिया जाए। अपनी माता से भी ज्यादा प्यारी मातृभाषा बंगला को तो हम कदापि नहीं छोड़ सकते, किंतु भारत के विभिन्न प्रान्तों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिंदी या हिंदुस्तानी तो सीखनी ही चाहिए। स्वाधीन भारत के नवयुवकों को हिंदी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच आदि यूरोपीय भाषों में ऐसी एक–दो सीखनी पड़ेगी, नहीं तो अंतर्राष्ट्रीय मामलों में हम दूसरी जातियों का मुकाबला नहीं कर सकेंगें।...

–सुभाष चन्द्र बोस

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा।

–महादेवी

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

–लोकमान्य तिलक

शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह तो स्पष्ट है कि जहां रटने की शक्ति, बढ़ती है वहां समझने की शक्ति मन्द पड़ जाती है। हमारे मुल्क की संस्कृति एक ही है – यह हिंदी संस्कृति है।

–सरकार बल्लभ भाई पटेल

संसदीय राजभाषा समिति –

सिंहावलोकन

–हंस राज गुगनानी, सूबेदार मेजर (हिंदी अनुवादक)

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में की गई व्यवस्था के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिंदी है। अनुच्छेद 351 में कहा गया है कि केन्द्रीय सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए। अपने इस दायित्व के निर्वहन की दिशा में केन्द्रीय सरकार द्वारा वर्ष 1963 में संसद के दोनों सदनों में पारित राजभाषा अधिनियम, 1963 लागू किया गया। इस अधिनियम की धारा 4 में प्रावधान किया गया कि : –

(1) जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात् राजभाषा के संबंध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर गठित की जाएगी।

(2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगें, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगें।

(3) इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करे और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करे और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाऐगें और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगें।

(4) राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगे।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की उपर्युक्त धारा के अधीन वर्ष 1976 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया। आमतौर पर केन्द्रीय गृह मंत्री को इस समिति का अध्यक्ष चुना जाता है। यह समिति केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित स्थिति की समीक्षा कर अपना प्रतिवेदन सिफारिशों सहित राष्ट्रपति को प्रस्तुत करती है। अपना प्रतिवेदन तैयार करने के लिए समिति अन्य तरीकों के साथ–साथ केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित निरीक्षण करती है। इस प्रयोजन के लिए समिति ने तीन उप समितियां गठित की हैं और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को तीन समूहों में बांट दिया गया है। समिति की पहली उप समिति अन्य मंत्रालयों/विभागों के साथ–साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के सभी स्थैतिक कार्यालयों तथा बटालियनों का निरीक्षण करती है। चूंकि इस

सामीते को संवैधानिक दर्जा प्राप्त है अतः सामीते के निरीक्षण को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। निरीक्षण की सूचना मिलते ही संबंधित कार्यालय के प्रमुख द्वारा संपर्क अधिकारी की नियुक्ति तथा उससे संबंधित ब्यौरे समिति सचिवालय के साथ–साथ महानिदेशालय को भेजने के अतिरिक्त निरीक्षण प्रश्नावली में सही–सही आंकड़े भरने तथा निरीक्षण संबंधी अन्य व्यवस्थाएं करने की कार्रवाई तत्काल आरंभ कर दी जानी चाहिए।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में निरीक्षण के अतिरिक्त विभिन्न प्रयोजनों और उनसे संबंधित अन्य विषयों में राजभाषा के प्रयोग का आंकलन करने के उद्देश्य से यह समिति शिक्षा, विधि, स्वयंसेवी संगठनों तथा मंत्रालयों के सचिवों/विभागों के प्रमुखों आदि जैसे गणमान्य व्यक्तियों को मौखिक साक्ष्य के लिए भी आमंत्रित करती है। समिति ने निर्णय लिया था कि राष्ट्रपति को एक प्रतिवेदन देने की बजाए उसे विभिन्न खंडों में प्रस्तुत किया जाए और प्रत्येक खंड राजभाषा नीति के पहलू विशेष के संबंध में हो। तदुनसार, समिति ने केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में अनुवाद व्यवस्था से संबंधित पहला खंड जनवरी, 1987 में, कार्यालयों में यांत्रिक सुविधाओं में हिंदी तथा अंग्रेजी के प्रयोग से संबंधित दूसरा खंड जुलाई, 1987 में, कर्मचारियों के हिंदी शिक्षण व उनके हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण से संबंधित तीसरा खंड फरवरी, 1989 में, सरकारी कार्यालयों और उपक्रमों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति के बारे में चौथा खंड नवम्बर, 1989 में, विधायन की भाषा और विभिन्न न्यायालयों एवं न्यायाधिकरणों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में पांचवां खंड मार्च, 1992 में तथा केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग, संघ तथा राज्य सरकारों के बीच तथा संघ व संघ राज्य क्षेत्रों के बीच परस्पर पत्र व्यवहार में उनकी राजभाषाओं के प्रयोग से संबंधित छठा खंड नवम्बर, 1997 में राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत किया। इनमें से पहले पांच खंडों पर राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा राष्ट्रपति जी के आदेश जारी हो चुके हैं। सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा इन आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाना अपेक्षित है।

हिंदी भाषा, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि का सेवाकालीन प्रशिक्षण- एक नजर

–निरीक्षक (हि.अ.) रणबीर सिंह

राष्ट्रपति जी के दिनांक 2 अगस्त 1960 के आदेशानुसार “घ” वर्ग के कर्मचारियों,

औद्योगिक स्थापनाओं के कर्मचारियों तथा कार्य प्रभारित कर्मचारियों को छोड़कर केन्द्रीय सरकार के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी का सेवाकालीन प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है। इसी के अनुपालन में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ का प्रशिक्षण निम्नानुसार निर्धारित किया गया है।

पद	हिंदी का प्रशिक्षण लेना अपेक्षित है
महानिदेशक/ अपर महानिदेशक	प्राज्ञ
महानिरीक्षक	प्राज्ञ
पुलिस उप महानिरीक्षक	प्राज्ञ
कमांडेंट	प्राज्ञ
सहायक निदेशक	प्राज्ञ
द्वितीय कमान अधिकारी/उप कमांडेंट	प्राज्ञ
संयुक्त सहायक निदेशक/आडिट आफिसर	प्राज्ञ
सू.मे./(कार्यालय अधीक्षक)/ आशु.	प्राज्ञ
नि.(मं.)/मुख्यलिपिक)/(आशु.)	प्राज्ञ
उप नि. (मं)/उच्च श्रेणी लिपिक (आशु.)	प्राज्ञ
स.उ.नि. (मं)	प्राज्ञ
मुख्य चिकित्साधिकारी/वरिष्ठ चिकित्साधिकारी	प्रवीण
चिकित्साधिकारी/मेट्रन	प्रवीण
स्टाफ नर्स/वार्ड नर्स/फार्मासिस्ट	प्रवीण
एक्स-रे तकनीशियन/लेबोरेटरी	प्रवीण
तकनीशियन	प्रवीण

प्रशिक्षण के लिए योग्यता एवं प्रात्रताः

प्रबोध : यह प्रशिक्षण प्रारंभिक स्तर का है। कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी इस प्रशिक्षण को प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिनका हिंदी का ज्ञान प्राइमरी स्तर का नहीं है, प्रबोध प्रशिक्षण प्राप्त करने के पात्र हैं।

प्रवीण : यह पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर का है। इसमें प्रबोध परीक्षा पास कर्मचारी तथा मराठी, गुजराती, बंगला, असमियां और उड़िसा भाषा भाषी अधिकारी/कर्मचारी सीधे प्रवेश ले सकते हैं। इसके अलावा वे सभी कर्मचारी जिनका हिंदी का ज्ञान पांचवीं कक्षा के स्तर का है, इसमें भाग ले सकते हैं।

या

केन्द्रीय सरकार के जिन कर्मचारियों ने अहिंदी भाषी राज्यों से मैट्रिक स्तर तक हिंदी

द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है तथा हिंदी में न्यूनतम 33 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किए हैं, उन्हें हिंदी प्रबोध स्तर तक का ज्ञान प्राप्त माना जाएगा तथा ऐसे कर्मचारियों के लिए प्रवीण स्तर का प्रशिक्षण लेना भी आवश्यक होगा।

प्राज्ञ : यह अंतिम पाठ्यक्रम हैं इसमें प्रवीण पास कर चुके अधिकारी/कर्मचारी तथा उर्दू, सिंधी, पंजाबी तथा पश्तो भाषी अधिकारी/कर्मचारी सीधे प्रवेश ले सकते हैं एवं केन्द्रीय सरकार के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अहिंदी भाषी राज्यों से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है, भले ही उन्होंने *33* प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त किये हों, तथा राजभाषा नियम 1976 के उपनियम 10 के तहत यह घोषणा करने पर भी कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उनके बारे में यह नहीं माना जायेगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। ऐसे कर्मचारियों को हिंदी प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा।

परीक्षा पास करने पर प्रोत्साहनः राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित की गई शर्तों को पूरा करने पर हिंदी को निर्धारित परीक्षा पास करने पर 12 मास के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर राशि वैयक्तिक वेतन के रूप में कार्यालय अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत की जाती है। हिंदी प्रबोध परीक्षा में 70 प्रतिशत, 60 प्रतिशत तथा 55 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर अधिकारी/कर्मचारी क्रमशः 400/-, रुपये 200/-, रुपये 100/-, प्रवीण परीक्षा में क्रमशः 600/-, रुपये 400/-, रुपये 200/- रुपये, तथा प्राज्ञ परीक्षा में क्रमशः रुपये 600/-, रुपये 400/-, रुपये 200/- रुपये के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार पाने के हकदार होंगे। इस राशि की स्वीकृति विभागाध्यक्ष द्वारा प्रदान की जाती है तथा पुरस्कार की राशि पर कोई आयकर नहीं लगता है।

हिंदी टाइपलेखन प्रशिक्षण

पात्रता : हिंदी टंकण का प्रशिक्षण सभी सहायक उप निरीक्षक (मंत्रालयिक) के लिए अनिवार्य है। हिंदी टंकण की कक्षा में उपनिरीक्षक (मं) तथा हिंदी अनुवादकों को भी स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है। परीक्षा पास करने पर वे भी निर्धारित वित्तीय प्रोत्साहन पाने के पात्र होंगें। हिंदी टंकण की कक्षा में दाखिले के लिए शैक्षिक योग्यता हिंदी प्रवीण परीक्षा या अन्य समकक्ष कोई परीक्षा पास होना अनिवार्य है। जिन कर्मचारियों ने हिंदी की अपेक्षित परीक्षा पास नहीं की है उन्हें पहले हिंदी प्रवीण स्तर की परीक्षा पास करनी होगी तत्पश्चात ही वे हिंदी टंकण के प्रशिक्षण में भाग ले सकते हैं। हिंदी टंकण के किसी एक प्रश्न पत्र में यदि कोई कर्मचारी अनुत्तीर्ण हो जाता है अथवा अनुपस्थित रहता तो उसे केवल उसी प्रश्न पत्र में अगली परीक्षा पूरक परीक्षार्थी के रूप में अथवा स्थिति अनुसार पूर्ण परीक्षा में सम्मिलित होने का अवसर दिया जाता है ऐसी स्थिति में कार्मिक को प्रशिक्षण हेतु नामित नहीं किया जाएगा।

प्रोत्साहन : हिंदी टंकण परीक्षा उत्तीर्ण होने पर एक अग्रेम वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन कार्यालय अध्यक्ष द्वारा स्वीकृति किया जाएगा तथा परीक्षा में 97 प्रतिशत, 95 प्रतिशत तथा 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर कर्मचारी क्रमशः 600/-, 400/- तथा 200/- रुपये के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार पाने के हकदार होंगे तथा पुरस्कार विभागाध्यक्ष द्वारा स्वीकृत किया जाएगा। यह राशि कर्मचारियों को उनके विभाग द्वारा प्रदान की जाएगी तथा यह राशि आयकर से मुक्त होगा।

हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण

पात्रता : हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण सभी वर्ग के आशुलिपिकों, तथा आशुलिपिक पी.ए., सीनियर पी.ए.पी.एस. के लिए अनिवार्य है। हिंदी आशुलिपि की कक्षाओं में स्थान उपलब्ध होने पर ऐसे स.उ.नि. (मं) को भी प्रशिक्षण दिलाया जा सकता है बशर्ते कि हिंदी शिक्षण योजना, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत हिंदी टंकण परीक्षा उत्तीर्ण हो अथवा स.उ.नि. (मं) हिंदी टंकक हों तथा संबंधित कार्यालय यह प्रमाणित करे कि यह प्रशिक्षण जनहित में है। हिंदी आशुलिपि की कक्षा में दाखिले के लिए हिंदी विषय सहित मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

प्रोत्साहन : हिंदी आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण होने पर हिंदी भाषा-भाषी आशुलिपिकों को एक तथा अहिंदी भाषा-भाषी आशुलिपिकों को दो अग्रिम वेतन वृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन कार्यालय अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत किया जाएगा तथा हिंदी आशुलिपि में 95 प्रतिशत, 92 प्रतिशत तथा 88 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर कर्मचारी को क्रमशः 600/-, 400/ तथा 200/- रुपये के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार स्वीकृत किए जाएंगे तथा पुरस्कार विभागाध्यक्ष द्वारा स्वीकृत किया जाएगा तथा यह राशि आयकर से मुक्त है।

रण ऑफ कच्छ में केरिपु बल बहादुरों की शौर्य गाथा

–सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)

जनवरी, 1965 में करीमशाही में तैनात भारतीय सीमा पुलिस ने पाया कि पाकिस्तानियों ने सरई से डींग तक 10 किमी का ट्रैक लगभग एक मील भारतीय सीमा के अंदर से गुजरते हुए बिछा लिया।

10 फरवरी को राइफलों/स्टेनगनों तथा मशीनगनों से लदी एक पाकिस्तानी टुकड़ी ने कंजरकोट पर कब्जा कर लिया। 15 फरवरी,1965 को कंजरकोट में

डी.आइ.जी. राजकोट और इन्डस रेंजरस् के कमांडेंट लेफ्टीनेंट कनेल आफताब अली के बीच एक बैठक हुई। इन्डस रैंजर्स के कमांडेंट ने बताया कि उन्होंने कंजरकोट पर कब्जा नहीं किया है, बल्कि वे लोग कंजरकोट के दक्षिण ट्रैक तक इलाके में गश्त कर रहे हैं, जो कि "सुरई और डींग" ट्रैक पर गश्त की एक पुरानी परंपरा है। 18 फरवरी को भारतीय हाई कमिश्नर ने पाकिस्तान के विदेश विभाग से निवेदन किया कि वे अपने विशेषज्ञ सर्वेयरों के साथ भारतीय सर्वेयरों की बैठक की व्यवस्था करें, ताकि सीमा रेखा का निर्धारण हो सके और पाकिस्तानी फौजों को भारतीय इलाके से हटाया जा सके। (इंडिया-पाक वार-1965 व रन आफ कच्छ) (लेखक श्री आर.एच. गुप्ताः 50 व 51)

3 मार्च, 1965 को पाकिस्तानी टुकड़ियों ने सीमा के लगभग 1000 गज दक्षिण में स्थित कंजरकोट किले के खंडहरों पर एक पोस्ट की स्थापना कर ली और उसे खाली करने से इंकार कर दिया।

15 मार्च, 1965 को पाकिस्तानियों ने भारतीय सीमा के अंदर डींग में एक और पोस्ट की स्थापना कर ली।

यह सब हरकतें हिन्दुस्तानी सीमा पर हमला करने और उसे कब्जाने के पाकिस्तानी इरादे को जाहिर कर रही थी। कंजरकोट और डींग में पाकिस्तानी पोस्टों की स्थापना के बाद भारतीय सीमा पुलिस बीगोकाट में हरकत में आयी और इसने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की दो कंपनियों को भारतीय सीमा के 6 मील अंदर स्थित सरकार पोस्ट की ओर रवाना किया। भारतीय सीमा पुलिस में उस समय केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की 2 बटालियन की 4 कंपनियां थीं।

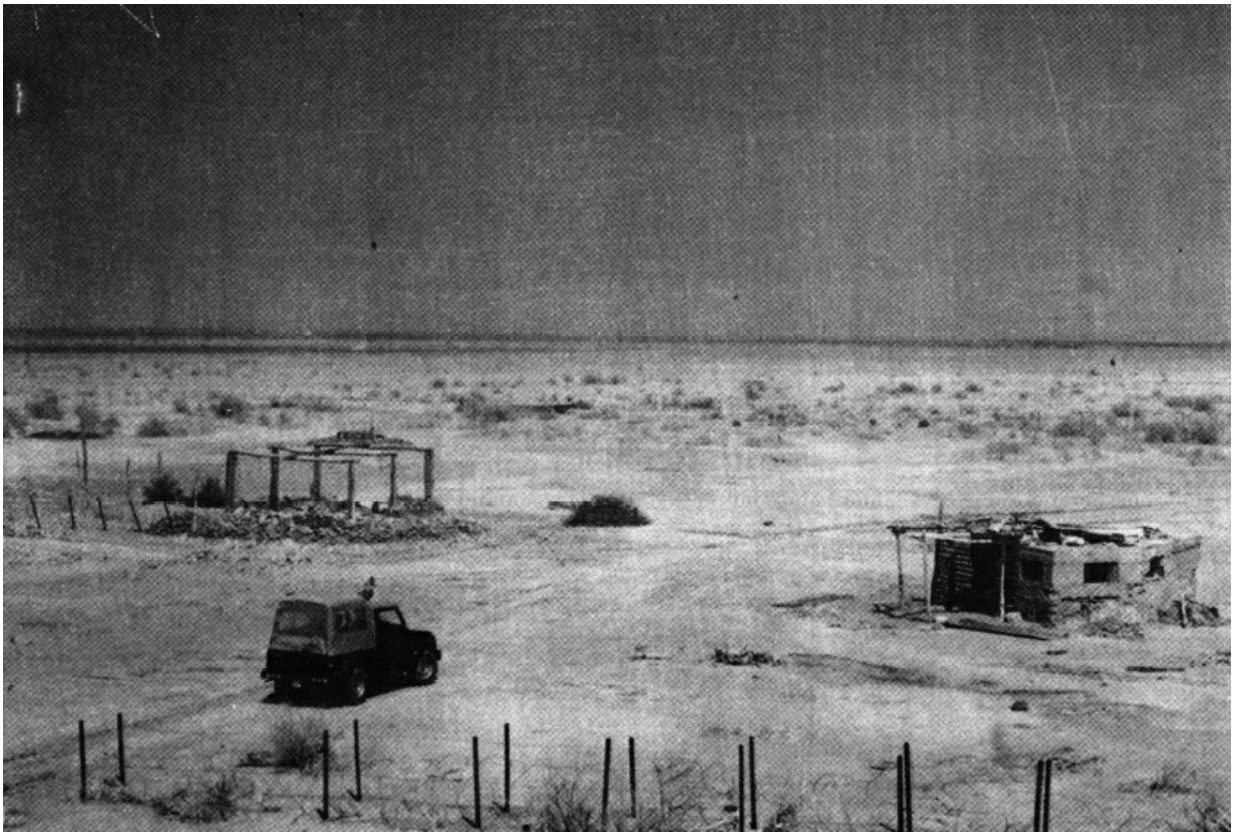
युद्ध

कंजरकोट और डींग में पाकिस्तान द्वारा अपनी पोस्टों की स्थापना को एक हमलावर कदम मानते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दूसरी बटालियन की 4 कंपनियों को आगे बढ़कर पाकिस्तान को रोकने और सरदार तथा टॉक में अपनी चौकियां स्थापित करने के लिए आदेश दिए गए। कंजरकोट और डींग चौकियां मार्च, 1965 से पहले अस्तित्व में नहीं थी। सरदार पोस्ट कंजरकोट के 4600 गज दक्षिण पश्चिम में और टाक पोस्ट हींग पोस्ट के 1000 गज दायरे के अंदर थी। चीन की दोस्ती और नए हासिल किए युद्ध के उपकरणों से मिले साहस ने पाकिस्तान को भारतीय सीमा चौकियों पर "आपरेशन डेजर्ट हॉक" के तहत हमला करने के लिए प्रेरित किया। मार्च के दूसरे हफ्ते में इस आपरेशन की योजना बनाई गई और ब्रिगेडियर बजहर खां के नेतृत्व में 51वीं इन्फेंट्री ब्रिगेड का मूवमेंट इस योजना का एक हिस्सा था। साथ-साथ आठ इन्फेंट्री डिवीजन भी अपनी सहायक टुकड़ियों के साथ हरकत में आ गई। इस जोखिमपूर्ण दुःसाहस के लिए वायु सेना का सहयोग भी वाडिन एयर बेस से उपलब्ध था। यह स्थान कंजरकोट के 30 मील उत्तर में स्थित है ।

सरदार पोस्ट एक सपाट मैदान में स्थित थी जो कि रणनीति की दृष्टि से सही नहीं

था और जिस पर सेना के स्थानीय युनेट कमांडर (लेफ्टीनेंट कर्नल के. सुन्दरजी जो कि बाद में सेना अध्यक्ष भी बने) ने आपत्ति भी जताई थी, लेकिन पाकिस्तानियों को रोकने के लिए यह पोस्ट वहीं बनी रही।

पाकिस्तानियों ने अपने आपरेशन "डेजर्ट हॉक" के इरादे के बारे में पूरी सावधानी बरती और भारतीय पोस्ट को अंधेरे में रखने में पूरी चालाकी बरती। 8 अप्रैल को बेस्ट पाकिस्तानी रेंजर की तरफ से पुलिस उप महानिरीक्षक राजकोट रेंज पुलिस को एक संदेश भेजा गया, जिसमें 10 अप्रैल, 1965 को स्थानी कमांडरों की एक बैठक का प्रस्ताव किया गया था। यह बैठक बोर्डर पर यथा-स्थिति बनाए रखने के लिए थी। उनका इरादा शान्ति वार्ता का प्रस्ताव देकर भारतीय पक्ष की गतिविधियों को रोकना था। जब पाकिस्तान द्वारा यह प्रस्ताव किया जा रहा था, 51वीं ब्रिगेड ने 3500 आदमी जिनमें 18 पंजाब, 8 फ्रंटियर राइफल्स और 6 ब्लूच के जवान शामिल थे, ने 7 अप्रैल को लेफ्टीनेंट कर्नल मुमताज अली के नेतृत्व में भारतीय सीमा पोस्ट सरदार की ओर बढ़कर 8/9 अप्रैल की तड़के हमला कर दिया। 9 अप्रैल, 1965 को सुबह लगभग 3.30 बजे पाकिस्तानी टुकड़ियां अपनी पोजीशन से आगे बढ़ीं और धुएं के आवरण का सहारा लेते हुए पाकिस्तानी सेना के मोर्टर और 25 पोंडर बंदूकों के साथ सरदार और टॉक पोस्टों पर हमला कर दिया।



सरदार पोस्ट

उस समय हैड कां. रणजीत सिंह एक मशीनगन थामे ड्यूटी पर तैनात थे, उन्होंने

50 से 100 गज उत्तर की ओर कुछ हलचल देखी। यह मानकर यह हलचल दुश्मन की हो सकती है, उन्होंने घुसपैठियों को ललकारा, बदले में उन्हें मिली गोलियों की बौछार जो कि पाकिस्तानी सेना के लिए एक संकेत थी मोर्टर और 25 पोंडर का फायर खोल देने के लिए। एक पूरी ब्रिगेड ने अपनी पूरी ताकत के साथ सरदार और टॉक पोस्ट पर हमला कर दिया, जिसकी सुरक्षा के लिए केरिपु बल की 2 बटा. की 4 कंपनियां तैनात की गई थी। पोस्टों में स्थित जवानों ने तत्काल पोजीशन लेकर गोलीबारी रोक दी और पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने दिया। वे सांस रोके पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ते हुए देखते रहे, चारों और छाए मौत के से सन्नाटे ने पाकिस्तानियों को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि उनके द्वारा की गई भारी फायरिंग के कारण या तो पोस्ट में मौजूद सभी जवान मर गए हैं या घायल हो गए हैं। उत्साहित पाकिस्तानी टुकड़ियों ने आगे बढ़कर पोस्ट को चारों ओर से घेर लिया। पोस्ट पर जीवन का कोई निशान मौजूद नहीं था। इस मौके पर 20 हमलावर कालम आगे बढ़े कि सभी पोस्ट में मौजूद 3 मशीनगनें हरकत में आ गई और दुश्मन पर आग बरसाने लगीं। एक पल में वे सभी जमीन पर मृत पड़े हुए थे। दुश्मन का दूसरा हमला पिछली तरफ से हुआ और उनका हर्ष भी वही हुआ जो पहले कॉलमों का हुआ था। इस हमले में 14 मारे गए और 4 को जीवित पकड़ लिया गया। दुश्मन को एक छोटी सफलता तब मिली, जब उत्तर पूर्वी कोने में स्थित मशीनगन जाम हो गई लेकिन केरिपु बल के जवानों ने तत्काल स्थिति को संभालते हुए जवानी हमला कर दुश्मन को खदेड़ दिया। हालांकि हमलावर लौट गए, लेकिन वह अपने साथ 19 केरिपु बल जवानों को पकड़ कर ले गए, जिनमें पोस्ट कमांडर मेजर सरदार कर्नल सिंह भी थे। यह गोलीबारी एक घंटे तक चली जिसमें दुश्मन ने पोस्ट पर कब्जा करने की तीन कोशिशें की और तीनों ही बार उसे भारी नुकसान के साथ वापस लौटना पड़ा। केरिपु बल जवानों द्वारा जवाबी कार्रवाई दुश्मन के लिए इतना बड़ा आघात थी कि संख्या और उपकरणों में बहुत श्रेष्ठ होने के बावजूद उसने दोबारा हमला करने की हिम्मत नहीं की। पोस्ट पर मौजूद हमारे कुछ सौ जवानों जिनके पास हथियार भी पर्याप्त मात्रा में नहीं थे - का ऐसा था साहस और आखिरी सांस तक लड़ने की प्रतिबद्धता कि दुश्मन भी हैरत में पड़ गए।

जब सुबह का धुंधलका फैला, तो पोस्ट के चारों ओर दश्मन की लाशें बिखरी पड़ी थीं, केरिपु बल जवानों की जवाबी कार्रवाई से घबड़ाया दुश्मन अपने 34 साथियों की लाशें पीछे छोड़ गया था और इसी धुंधलके में केरिपु बल जवानों पर यह राज भी खुला कि रात को उन पर हमला पाकिस्तानी सेना की पूरी पैदल ब्रिगेड ने किया था मगर केरिपु बल के बहादुर इससे घबराए नहीं और 5 बजे तक लगातार लड़ते हुए पोस्ट की रक्षा करते रहे, जब तक कि भारतीय टुकड़ियों ने आकर पोजीशन नहीं संभाली केरिपु बल को वापस बिर्गोकोट भेज दिया गया।

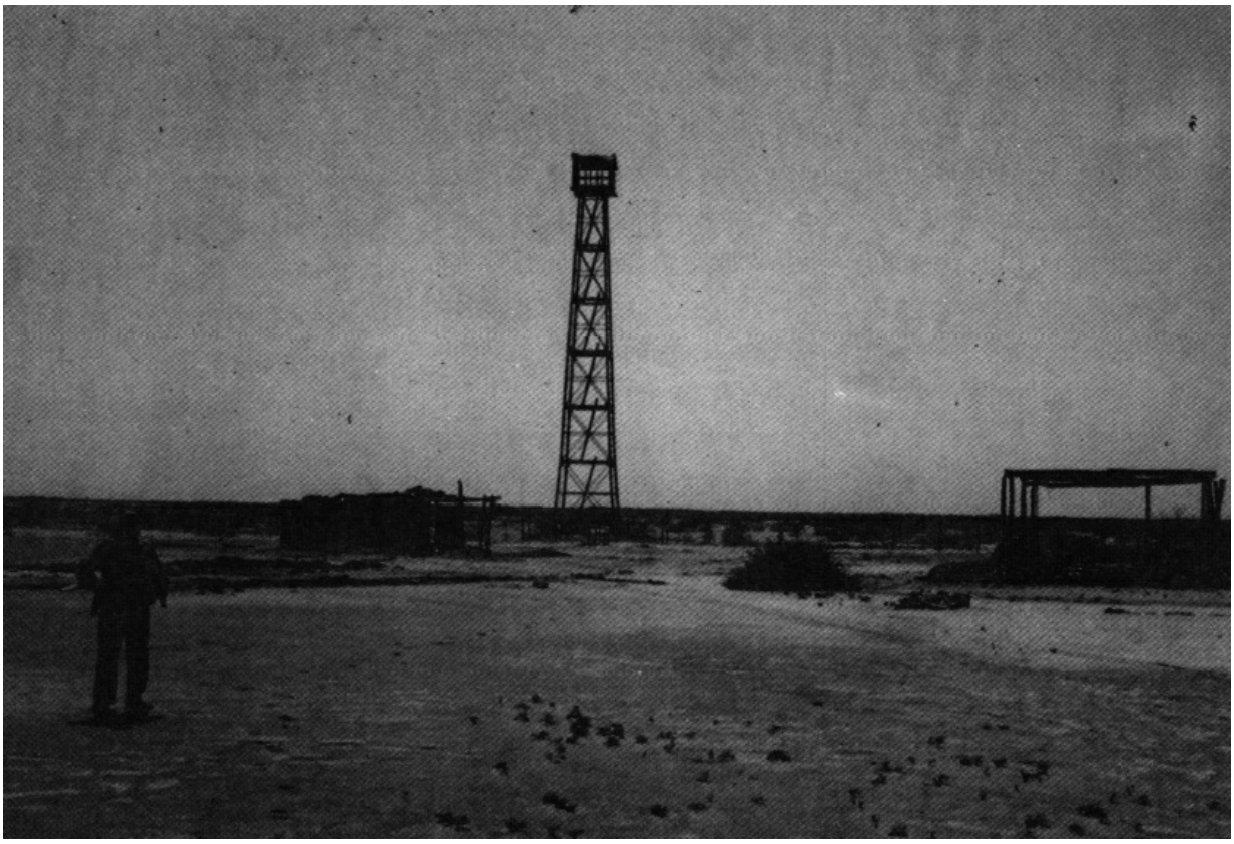
बाद के हालात

युद्ध के इतिहास में यह एक बेजोड़ घटना थी, जिसमें एक भारी संख्या में शस्त्रों

और कामैकों से सुसज्जित सेना की टुकड़ी को एक छोटे से अद्ध सैनिक पुलिस बल की टुकड़ी ने लगातार 12 घंटे तक उलझाए रखा। यह नेतृत्व और संचालन की, सहयोग और मर मिटने की भावना की उच्चकोटि के शौर्य और कौशल की अद्वितीय मिसाल थी। तत्कालीन गृह मंत्री गुलजारी लाल नंदा ने जब संसद में भारतीय जवानों के इस पराक्रम की सूचना दी, तो जवानों के शौर्य की सभी संसद सदस्यों ने मुक्त हृदय से सराहना की। केरिपु बल के जवानों की प्रशंसा करते हुए गृह मंत्री ने संसद में कहा कि सरदार पोस्ट पर मौजूद हमारी केरिपु बल यूनिटों ने कड़ा मुकाबला करते हुए पाकिस्तानी बटालियनों को अपने चार जीवित साथियों और 34 साथियों की लाशों को छोड़कर जिनमें दो अधिकारी भी हैं, पीछे लौटने के लिए मजबूर कर दिया। सरदार पोस्ट पर भारतीय जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री नंदा ने कहा कि :–

"मैं सरदार पोस्ट पर पुलिस बल के उन जवानों की बहादुरी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने पाकिस्तानी सेना की दो बटा. के हमले को भारी कठिनाईयों के बीच भी 12 घंटे तक बहादुरी के साथ लड़ते हुए विफल कर दिया।"

इस युद्ध में केरिपु बल की दूसरी बटा. के जवान मातृभूमि की रक्षा में और देश की अखण्डता को बनाए रखने के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए : (1) ना. किशोर सिंह, (2) सिपाही शमशेर सिंह, (3) सिपाही खान सिंह, (4) सिपाही हुद्दू राम, (5) सिपाही सिघवीर प्रधान - (वह घायल हो गए थे और 19.4.65 को वीरगति को प्राप्त हुए) (6) सिपाही किशन सिंह लोन : (31 जुलाई, 65 को पाकिस्तानी हिरासत में वीरगति को प्राप्त हुए। वह सरदार पोस्ट पर हमले के दौरान गोली से घायल हो गए थे।)



आज की सरदार पोस्ट, जो सीमा सुरक्षा बल की आउट पोस्ट है

केरिपु बल के इन अधिकारियों और जवानों की बहादुरी पर पूरे देश ने सम्मान किया। उन्हें राष्ट्रपति के पुलिस एण्ड फायर सर्विस मेडल और शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदकों से नवाजा गया।

शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस और फायर सर्विस मेडल : (1) श्री डी.एस. पॉल, पुलिस उप अधीक्षक, कम्पनी कमांडर, (2) सूबेदार कबोरमन सुब्बा, (3) हवलदार रणजीत सिंह, (4) सिपाही विश्वनाथ सिंह, (5) सिपाही मदल साम दत्ता और (6) सिपाही थरो राम।

शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदक : (1) सूबेदार बलबीर सिंह, (2) जमादार जय नारायण सिंह, (3) हवलदार भवन राम, (4) हवलदार महादेव मिलगुडे, (5) सिपाही सुचा सिंह, (6) सिपाही किशन सिंह और (7) सिपाही मुन्नी सिंह।

इन पदकों के अलावा सरदार पोस्ट पर अद्वितीय वीरता दिखाने वाले अन्य जवानों को बिना बारी के पदोन्नतियां और नकद इनाम दिए गए।

दूसरी बटालियन के इन बहादुर जवानों को शौर्य वीरता के पुलसि पदक प्रदान करते हुए गृह मंत्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा :–

“यह युद्ध सिर्फ भारतीय पुलिस के इतिहास में ही नहीं बल्कि सैनिक युद्ध के इतिहास में दर्ज किया जाएगा।”

सरदार पोस्ट पर केरेपु बल की एक छोटी सी, मगर बहादुर टुकड़ी के 3500 सदस्यों वाली एक विशाल सशस्त्र पाकिस्तानी टुकड़ी को खदेड़ देने की यह एक अद्वितीय मिसाल है, यह है अद्वितीय बहादुरी, कर्तव्य परायणता और मातृभूमि की रक्षा के लिए सीधे मौत से भीड़ जाने का केरिपु बल का गौरवमयी इतिहास।



केरिपु बल की *19* बटा. के कमांडेंट श्री आर.के. स्वामी की पुत्री सुश्री वरूधा ने दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम में भरतनाट्यम का एकल प्रदर्शन किया। इस मौके पर केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे

रजि. न. 4767/87



केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद नई दिल्ली द्वारा महानिदेशालय केरिपु बल के एस. रमेश, उप निरीक्षक (मं.) को उनके द्वारा सम्पूर्ण सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए हिंदी सेवी विशेष सम्मान से पुरस्कृत किया गया। 6 अगस्त, 2001 को सेवा भवन, रामाकृष्णा पुरम में आयोजित पुरस्कार समारोह में केन्द्रीय विद्युत राज्य मंत्री श्रीमती जयवंती बेन महेता स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए।

संसदीय राजभाषा समिति ने 7 से 9 जुलाई 2001 तक ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर का दौरा कर राजभाषा की प्रगति का जायजा लिया



सी.आर.पी.एफ. समाचार

30 नवम्बर, 2001



आरएएफ स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि झारखण्ड के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल मराण्डी, 85वीं बटा. के कमांडेंट श्री एस.एस.ए. खान को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हुए



झारखंड के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल मराण्डी आरएएफ के परेड कमांडरों से परिचय कराते हुए बल के महानिदेशक डा त्रिनाथ मिश्र



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में स्थापना दिवस के अवसर पर स्कूल पत्रिका सृजन का विमोचन करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–15 अंक–7
30 नवम्बर, 2001
9 अग्रहायण, शक 1923

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

उप संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

आरएएफ ने मनाया स्थापना दिवस

रैपिड एक्शन फोर्स–समाज सेवा ही मकसद

के.रि.पु. बल की 88 महिला बटा. द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना

परिचालनिक क्षेत्रों में पैट्रोलिंग

के.रि.पु. बल ने हिन्दी दिवस मनाया

के.रि.पु. बल में पदोन्नित के नए एवेन्यु

कोसोवो से लौटे आरएएफ के कार्मिकों का सम्मान

ग्रुप केन्द्र रामपुर ने मनाया सद्भावना पखवाड़ा

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल ने वार्षिकोत्सव मनाया

के.रि.पु. बल में पदोन्नति के बेहतर अवसर

आरएएफ में मानवाधिकार कोर्स

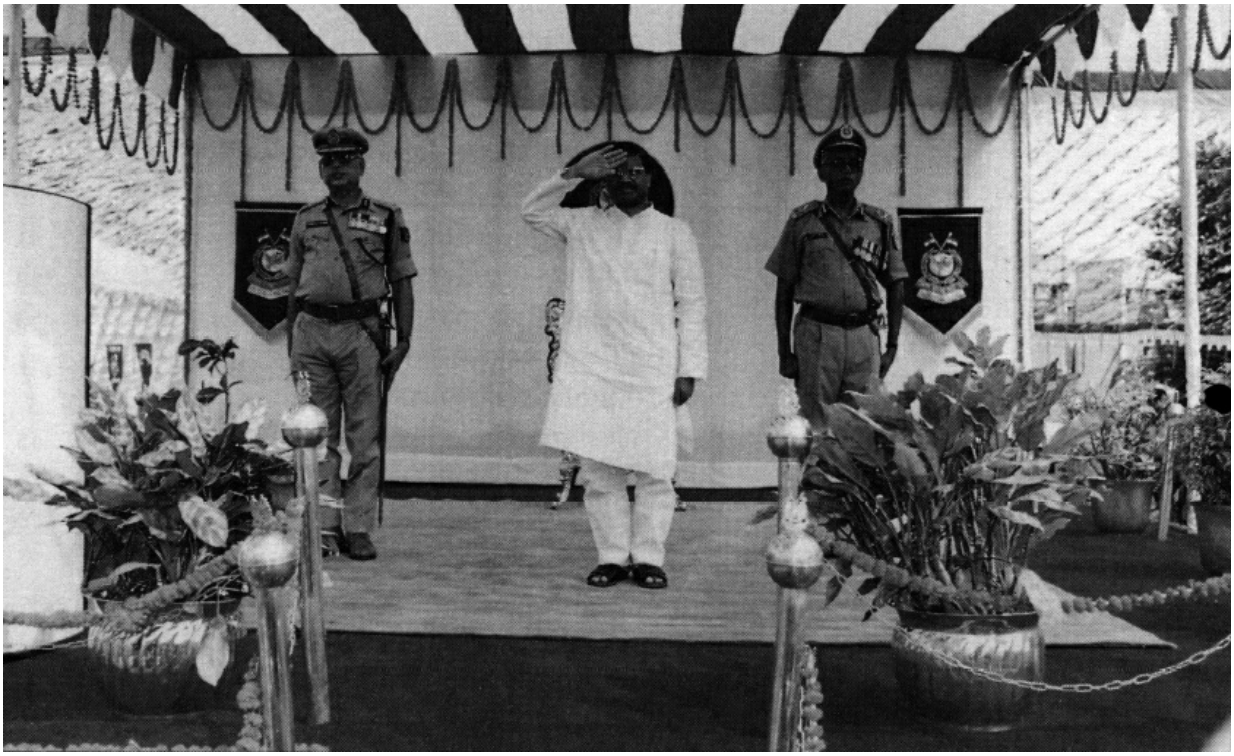
लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

आरएएफ ने मनाया नौवां स्थापना दिवस

रेपिड एक्शन फोर्स के गठन से ही बड़े पैमाने पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगों और दंगों जैसी स्थितियों पर कुशलता और प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण कर पाना संभव हुआ है । रेपिड एक्शन फोर्स की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, जमशेदपुर में अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री बाबू लाल मराण्डी ने कहा कि अपने धर्म निरपेक्ष स्वरूप और सार्वदेशिक चरित्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की इस विशिष्ट दंगा विरोधी शाखा ने अपनी व्यवसायिक कुशलता, प्रशिक्षण, उपकरणों तथा अचूक कर्तव्यपरायणता के बल पर एक पहचान बनायी है । श्री मराण्डी ने कहा कि आरएएफ के जवानों द्वारा की जा रही निस्वार्थ सेवा ने ही इनको देश की जनता के दिलों में प्यार और मोहब्बत तथा आदर/सम्मान की भावना पैदा की है ।

इस मौके पर श्री मराण्डी ने एक शानदार परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली । उन्होंने के.रि.पु. बल और आरएएफ के 61 अधिकारियों और जवानों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किये ।



मुख्य अतिथि झारखण्ड के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल मराण्डी परेड की सलामी लेते हुए

इससे पूर्व के.रि.पु. बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि के.रि.पु. बल देश के विभिन्न हिस्सों में कानून व्यवस्था की स्थितियों में तैनाती के अतिरिक्त आतंकवाद और विद्राही गतिविधियों से ग्रस्त राज्यों में भी अपने कर्तव्य को कुशलता पूर्वक निभा रहा है। आरएएफ की भूमिका की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इस बल ने अपने नौ वर्ष के छोटे कार्यकाल में ही अल्पसंख्यक समुदाय के अन्दर विश्वास का संचार किया है, और देश के सुरक्षा परिदृश्य में अपनी अलग पहचान बनायी है।



सर्वश्रेष्ठ परेड टुकड़ी कमान्डर को ट्राफी प्रदान करते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

डा. मिश्र ने आगे कहा कि चाहे प्राकृतिक व अप्राकृतिक आपदा हो आरएएफ के जांबाज जवान अपने आराम, सुरक्षा और स्वास्थ्य की परवाह किये बिना तत्काल कम से कम समय में हरकत में आ कर प्रभावित क्षेत्रों में सक्रिय हो कर पीड़ित मानवता की सेवा करने और शांति और सद्भाव बहाल करने में कामयाब रहे। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में भाग ले कर आरएएफ ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनायी है। आरएएफ की टुकड़ियां संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत 1965 में हैती तथा अब कोसोवो में तैनात हैं। उच्च स्तर की व्यवसायिक कुशलता, समर्पण, इच्छा और देशभक्ति की भावना ने इस बल को देश का जाना पहचाना नाम बना दिया है।

आरएएफ के महानिरीक्षक श्री जाजे सी. पोडीपारा ने अंत में अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

रैपिड एक्शन फोर्स–समाज सेवा ही मकसद

–डी.जी. महापात्रा, जन सम्पर्क अधिकारी

पुलिस का प्राथमिक कार्य कानून व्यवस्था बनाए रखना, अपराधों की रोकथाम और उनकी जांच करना है। वक्त के साथ बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिदृश्य के अनुरूप पुलिस के इस परंपरागत कार्य क्षेत्र का भी विस्तार हुआ है। पुलिस के चरित्र में आए इस बहुआयामी विस्तार के कारण पुलिस का कार्यदक्षता प्रभावित होने के कारण, जरूरत के वक्त उसकी क्षमता में भी कमी आयी है। देश में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक दंगों तथा मुख्य रूप से दंगों जैसे परिस्थितियों से निपटने के लिए देश में एक फोर्स बनाने की आवश्यकता महसूस हुई। इस जरूरत को पूरा करने के लिए 7 अक्टूबर 1992 में के.रि.पु. बल की 10 बटालियन हैदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबद, मुंबई, दिल्ली, अलीगढ़, त्रिवेन्द्रम, जमशेदपुर, भोपाल तथा मेरठ में रेपिड एक्शन फोर्स के रूप में खड़ी की गई। अपने 9 वर्ष के अल्प कार्यकाल में आरएएफ ने जनता के बीच धर्म निरपेक्षता, निष्पक्षता तथा मित्रता की मिसाल कायम की है।

हालांकि इस बल का गठन मुख्य रूप से साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगें जैसी स्थिति से निपटने के लिए किया गया था फिर भी सरकार इसका उपयोग आपात कालीन स्थिति में देश की कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए कर सकती है। बल, चिकित्सा कैम्प, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रोढ़ शिक्षा आदि जैसे सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित करता है। आरएएफ दंगा प्रभावित क्षेत्र में पहुंचते ही दंगा पीड़ितों को चिकित्सा सहायता तथा घायलों को अस्पताल पहुंचाना आदि जैसे सहायता कार्यों में तुरंत जुट जाता है इसलिए बल के इस मानवतावादी स्वरूप को सभी पसंद करते हैं।

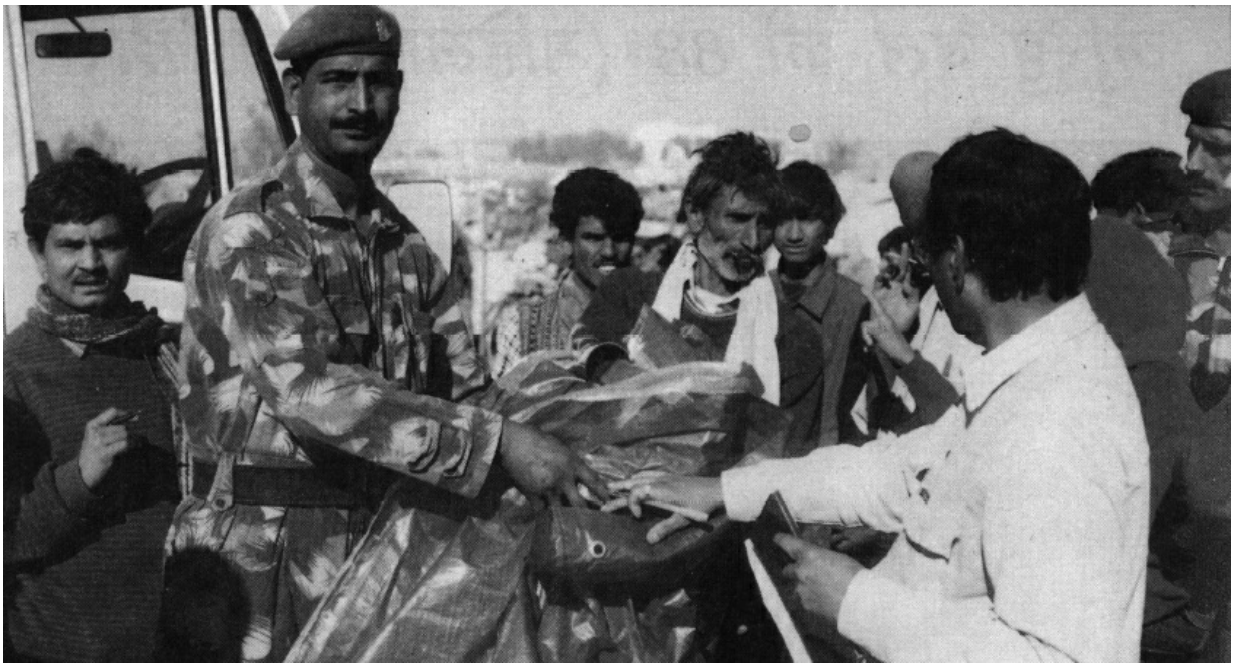
आरएएफ में सभी जाति, वर्ग व धर्म के लोगों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व है, इसलिए, इसका बहुमुखी स्वरूप है। आरएएफ की हर बटालियन एक लघु भारत है जिसमें देश के विभिन्न भागों से विभिन्न धर्म व भाषा के लोग कार्यरत है तथा सभी अलग–अलग धर्मों में विश्वास रखते हैं फिर भी सभी के दिल में देश प्रेम सर्वोपरि है। जो फोर्स धर्म निरपेक्ष नहीं है उससे निष्पक्ष रूप से जातीय दंगों से निपटने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। धर्म निरपेक्ष स्वरूप ही इस बल को जनता के करीब लाया है।

आरएएफ की बटालियनों को शाक वेटन, रबड़ ट्रेन–चोन प्लास्टिक पैलेट तथा रबड़ की गोलियां जैसे उपकरण दिए गए हैं। जो जरूरत के समय प्रभावी तो है किन्तु घातक नहीं है। बल के पास विशेष अश्रु गैस गोले तथा स्टन ग्रेनेड भी उपलब्ध कराए गए हैं।

अपनी अलग पहचान बनाए रखने के लिए आरएएफ के जवानों को अलग तरह की वर्दी दी गई है। आपरेशन के समय नीली सफेद चितकबरी डागरी पहनते हैं। बल के कार्मिकों के पास दंगा नियंत्रण सामान्य उपकरणों के अलावा विशेष अश्रु गैस गोले तथा स्टन ग्रेनेड भी उपलब्ध कराये गये हैं। स्टन ग्रेनेड एक जोर से लाईट के साथ धमाका करने वाला यंत्र है, जिससे बिना क्षति पहुंचाये भीड़ को तितर बितर किया जा सकता है। इससे दंगाईयों के कपड़ों पर चिन्ह लग जाते हैं जिससे उपद्रवियों की पहचान करने में सहायता मिलती है।

आरएएफ का मुख्य उद्देश्य जीरो रिस्पोंस में स्थिति पर काब पाना है अर्थात कम से कम सम्भव समय में शांति बहाल करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आरएएफ को टीम स्तर पर सरकार द्वारा आधुनिक पर्याप्त मोटर वाहन उपलब्ध कराये गये हैं। दंगा नियंत्रण वाहन बज्र दंगाई भीड़ को प्रभावी रूप से नियंत्रण करने में बहुत ही उपयुक्त साबित हुआ है। वाहन के ऊपर माल्टी वेरल लांचर लगाया गया है, जिसका उपयोग अश्रु गैस गोले तथा रबड़ की गोलियां इलेक्ट्रीकली तथा मैनुअली दोनों ही तरह से चौतरफा चलाने में किया जाता है। यह वाहन हर प्रकार से अभेद है।

प्रशिक्षण : प्रशिक्षण आरएएफ की नियमिति प्रक्रिया है। फोर्स में आये सभी नये कार्मिकों को 12 हफ्ते का परिचितीकरण प्रशिक्षण दिया जाता है, इसके अतिरिक्त मानवाधिकार फस्ट–एड, फायर–फायटिंग, बचाव व राहत कार्य तथा आपदा प्रबन्धन जैसे विशेष कोर्सों में भी कार्मिकों को प्रशिक्षण लेना होता है। वर्ष में लगभग चार हजार कार्मिकों को विभिन्न प्रकार के कोर्स में प्रशिक्षित किया जाता है। यह भी प्रयास किये जा रहे हैं कि विभिन्न धर्मों के सिद्धांतों एवं परम्पराओं के बारे में कार्मिकों को विस्तार से बताया जाये तथा उन पर अमल कराया जाये ताकि उन्हें वार्तालाप करने में कोई हिचकचाहट न हो तथा उन्हें साम्प्रदायिक गलतफहमियों तथा रूढ़ियों के बारे में जानकारी हो सके।



भूकम्प प्रभावित क्षेत्र भुज में राहत सामिग्री बांटते हुए आरएएफ के जवान

कई राज्य सरकारों से के.रि.पु. बल महानिदेशालय को अपने सशस्त्र बल कार्मिकों को आरएएफ पेट्रन पर प्रशिक्षण देने में सहायता प्रदान के अनुरोध प्राप्त होने से आरएएफ का उत्साह और भी बढ़ा है। अभी तक फोर्स ने पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली राज्य के सशस्त्र पुलिस बल कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया है। विद्यमान में गोवा पुलिस के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

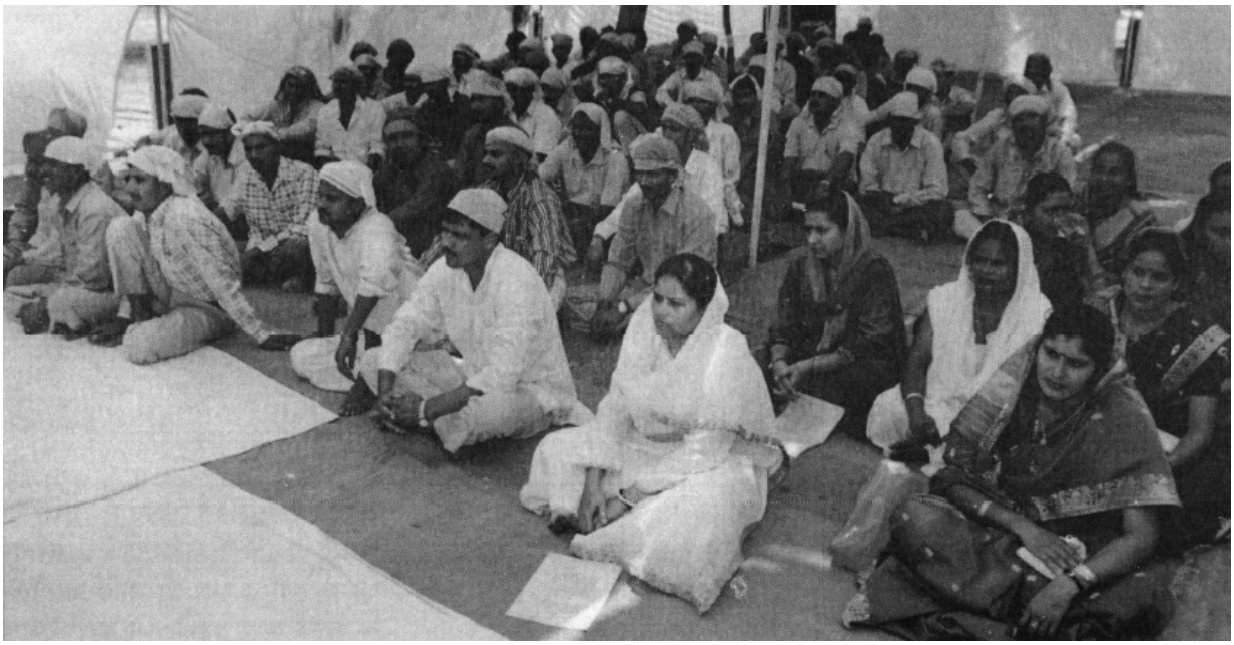
उपलब्धियां : चालू वर्ष के दौरान आरएएफ ने बहुत सी प्रशंसनीय उपलब्धियां हासिल की है। 26 जनवरी, 2001 को गुजरात राज्य में आये विनाशकारी भूकम्प प्रभावित क्षेत्र में वस्त्राल में स्थिति 100वीं बटालियन आरएएफ की चार कम्पनियां : अहमदाबाद एक घंटे के भीतर इतने कम समय में पहुंचकर राहत कार्य शुरू करने पर, अहमदाबाद के नागरिकों द्वारा बल कार्मिकों का आभार व्यक्त किया गया। 102वीं बटालियन आरएएफ मुंबई से तथा 107 वीं बटालयिन भोपाल से प्रभावित क्षेत्र में पीड़ितों की सहायता के लिए भुंज, वचाऊ, अंजार गांधीधाम, में पहुंची। आरएएफ ने अक्टुबर 1999 में उड़ीसा राज्य में आए विनाशकारी तूफान के दौरान भी इसी प्रकार की सहायता प्रदान की थी, इसलिए आरएएफ, प्राकृतिक तथा अप्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए प्रभावी एजेंसी के रूप में उभरी है। आरएएफ के कार्मियों ने जून, 2001 में जगन्नाथपुरी तथा अहमदाबाद की प्रसिद्ध रथ यात्रा को शांत पूर्ण ढंग से पूरा कराया। मार्च, 2001 के दौरान जब कानपुर तथा अगस्त, 2001 अहमदाबाद में साम्प्रदायिक दंगे भड़के तो स्थिति पर काबू पाने के लिए आरएएफ को तैनात किया तभी लोग इस बल से परिचित हुए।

संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में आरएएफः पिछले नौ वर्षों में आरएएफ कई बार देश

की सरहदों के पार भी शांति का पैगाम ले कर गया है। 1995 में आरएएफ के 124 सदस्यों का एक दल संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत हैती में चुनाव प्रक्रिया को शांतिपूर्वक कराने के लिए भेजा गया था जिसे कर्तव्य परायणता के लिए भरपूर प्रशंसा मिली।

वर्तमान में विशेष रूप से प्रशिक्षित तथा सुसज्जित आरएएफ की 240 कार्मिकों की दो कंपनियां संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत अशांत कोसोवो में तैनात भारतीय दल के एक अंग के रूप में काम कर रही हैं। यह विशेष पुलिस दल संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ–साथ स्थानीय पुलिस को हिंसक प्रदर्शनों एवं आन्दोलनों के दौरान भीड़ पर काबू पाने में वहां कार्यरत मानवीय कार्यों में लगी संस्थाओं को मदद दे रहा है।

के.रि.पु. बल की *88* (महिला) बटा. द्वारा सर्वधर्म सद्भावना प्रार्थना का आयोजन



सर्वधर्म सद्भावना प्रार्थना सभा में *88*वीं बटा. के कार्मिक

88(म.) बटा, के.रि.पु. बल देश की ही नहीं बल्कि एशिया की पहली महिला बटालियन है जिसे खड़ी करने का विचार तत्कालीन प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के दिमाग में विभिन्न धरनों, प्रदर्शन तथा अन्य दंगो में शामिल महिलाओं से निपटने को देखते हुए आया था। उसी के परिणाम स्वरूप यह बटा. 1986 में खड़ी की गई थी।

खड़ी होने के बाद इस बटालियन की कम्पानेयों को जम्मू एवं कशमीर, असम, मणिपुर में प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाई के लिए तैनात किया। यह ही नहीं इस बटा. की कुछ कम्पनियों को देश की सरहदों से बाहर सेना के साथ भारतीय शान्ति सुरक्षा बल के रूप में श्रीलंका में भी तैनात किया। श्रीलंका में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए बटालियन की एक महिला सिपाही को विशिष्ट पुरस्कार, सेना मेडल से नवाजा जा चुका है।

बटालियन का मुख्यालय 1986 में खड़ी होने से ही ग्रुप केन्द्र के.रि.पु. बल झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अन्य संस्थानों के साथ संयुक्त परिसर में स्थापित किया गया था। अभी हाल ही में बटालियन अपने नए मुख्यालय– पपन कला (द्वारिका) में शिफ्ट हुई है जहां पर इसकी अपनी पहचान होगी। अतः किसी अच्छे कार्य की शुरूआत अच्छे तरीके से ही की जाए तो अच्छा होता है। अतः इसी उपलक्ष्य में बटालियन मुख्यालय में सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों ने अपने धर्म के मूल तत्व को बताते हुए बटालियन को भविष्य में अपने सभी उद्देश्यों/मोर्चा पर सफलता प्राप्त करने का आर्शीवाद दिया तथा ईश्वर से उज्जवल भविष्य की कामना की। इस शुभ कार्य में गांधी स्मृति तथा गांधी दर्शन समिति, राजघाट नई दिल्ली तथा विभिन्न धर्माचार्यों ने मार्गदर्शन किया। इस समारोह में बल के महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया। विशेष अतिथि के रूप में इस पावन अवसर पर स्वर्गीय महात्मा गांधीजी की पोती श्रीमति तारा भट्टाचार्जी भी बटालियन कार्मिकों के बीच उपस्थित थी।

परिचालनिक क्षेत्रों में पैट्रोलिंग

– निरीक्षक (एचटी) शांति स्वरूप

Patrolling means the act of walking or travelling around an area especially at regular intervals in order to protect or surprise one or more persons or vehicles assigned or sent out on patrol especially a detachment of guards, Police etc.

Oxford Dictionary

समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की आपराधिक गतिविधियों को रोकने तथा इनसे जुड़ी जनता की समस्याओं से निपटने तथा देश में आंतरिक सुरक्षा व कानून व व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस पैट्रोलिंग का जो महत्व है उससे कहीं अधिक महत्व, देश की सीमाओं की सुरक्षा, बाहरी आक्रमणों से रक्षा करने के लिए "सेना पैट्रोलिंग"

का है।

लड़ाई के मैदान में पैदल सेना की जो बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियां होती हैं, गश्त लगाना भी एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। गश्त लगाने से पता चल जाता है कि गश्त लगाने वाले जवानों को रण–कौशल व युद्ध कौशल की सिखलाई कैसी है। जो सैनिक गश्त लगाने में पक्के होते हैं, उनसे यह आशा की जाती है कि वे लड़ाई में भी अधिक होशियार साबित होगें। बड़ी–बड़ी सैनिक कार्रवाइयों की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि गश्त लगाने वालों को मिली सूचनाएं कहां तक ठीक हैं।

सभी कमांडर लगातार यही चेष्ठा करते हैं कि उन्हें ऐसी सूचनाएं मिलती रहे जिनसे उन्हें सेना से ठीक ढंग से काम लेने में सहायता मिल सके। इसके साथ ही वे यह भी कोशिश करते हैं कि शत्रु को उनके बारे में सूचनाएं न मिले और उनकी सेना सुरक्षित रहे। इस काम के लिए उनके पास जो साधन होते हैं उनमें गश्त लगाने वाले दस्ते ही सबसे अधिक भरोसे के होते हैं।

पैट्रोलिंग दो प्रकार की होती है : (1) रैकी पैट्रोलिंग, (2) बचाव पैट्रोलिंग

रैकी करके वे सूचनाएं प्राप्त करना जिनके आधार पर कमांडर अपनी योजनाएं बना सके। टोह का उद्देश्य लड़ना नहीं बल्कि सूचनाएं प्राप्त कर उचित स्थान पर समय रहते पहुंचा देना है। यदि हालात इस तरह के हों कि बिना लड़े सूचना समय पर नहीं मिल सकती हैं तो उसे प्राप्त करने के लिए कभी–कभी लड़ना भी जरूरी हो सकता है। जहां बिना लड़े खबर मिल सकती है वहां दस्ते का कमांडर अफसर और उसके साथ एक या दो सुरक्षा एस्कार्ट होना चाहिए।

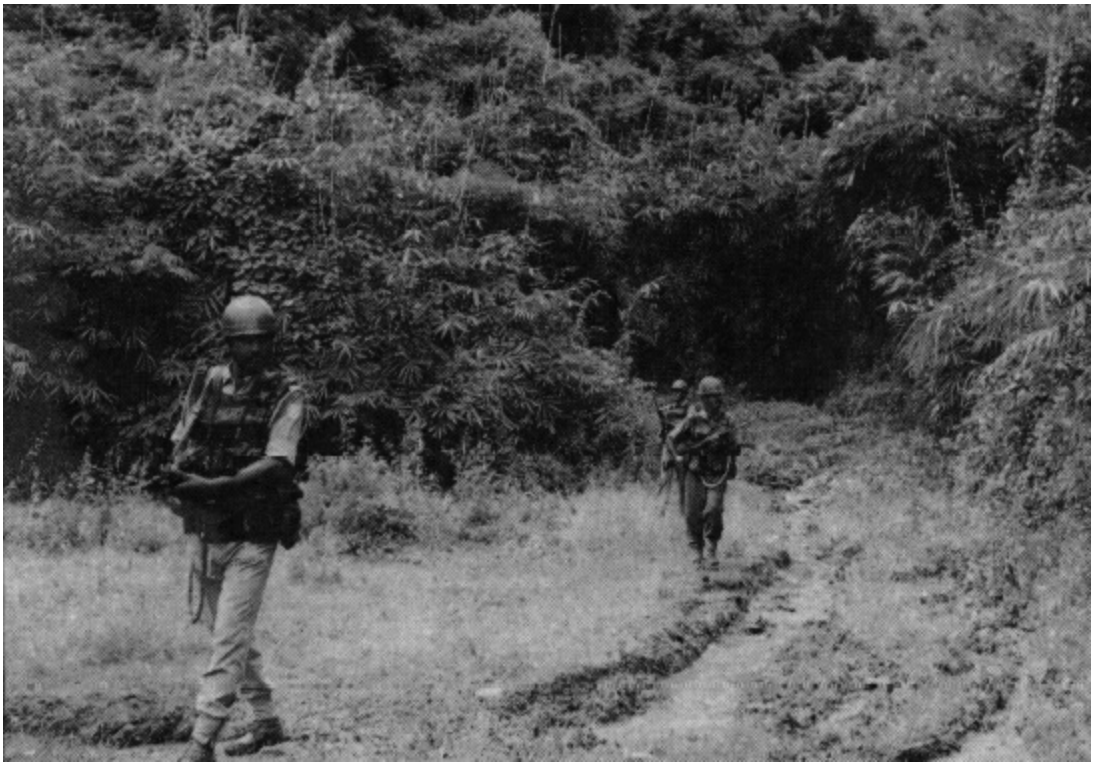
बचाव के लिए भेजे गए गश्ती दस्ते लड़ने के लिए तैयार रहें तथा इसकी सीमाएं निर्धारित कर देनी चाहिए। रैकी करने व तैयारी करने के लिए गश्त में कम से कम कितना समय लगेगा यह निश्चित करना बहुत मुश्किल है। अतः कुछ हालातों में, कुछ दिन, चार से छः घंटे या इससे भी कम समय लग सकता है। गश्त में जितने विस्तार से सूचना मिलेगी उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। इन खबरों के अलावा नए नक्शे और हवाई चित्र भी दिए जाएं। कोई गश्त अपनी यूनिट को लौटता है तो पूछताछ की जाती है। गश्त रिपोर्टों से निकाली गई खबरें तथा गश्त के रास्ते गश्त के नक्शे पर लिखे और दिखाएं तथा उनकी ध्यान पूर्वक जांच पड़ताल की जाए। हवाई फोटों, हवाई टोह, प्रेक्षण चौकियों, लड़ाई के कैदियों तथा असैनिक व्यक्तियों जैसे दूसरे सूत्रों से मिलने वाली खबरों से उनका मिलान करें।

किसी गश्त को घात लगाने का खास काम भी सौंपा जा सकता है ताकि बंदियों के जरिए दुश्मन के बारे में जानकारी हासिल हो सके या किसी खास रास्ते में जा रहे या आने वाले शत्रु को घायल किया जा सके। घात लगाने की कार्रवाई में अपने को छिपाकर रखना चाहिए तथा पहले व अचानक हमला किया जाना चाहिए ताकि चलते हुए शत्रु को अधिक से अधिक जान व माल का नुकसान हो। घात लगाने/योजना बनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

(क) गश्ती दलों की ब्रीफिंग व डिब्रीफिंग की जाए, (ख) पूरे इलाके की चुपचाप

रैकी की जाए। (ग) रैकी के समय बचाव की जरूरत, (घ) शत्रु की आदतें जानना, (ङ) घात लगाने की पोजीशन तक पहुंचने का छिपा रास्ता और वहां से निकलने के लिए रास्तों का चुनाव करना, (च) कार्रवाई के बाद गश्त के जवानों के मिलने की जगह, (छ) ठीक जगह पर रिजर्व का बंदोबस्त हो, (ज) घात लगाने वाले जवानों की पोजीशन जिससे उनका फायर एक दूसरे को नुकसान न पहुंचाए, (झ) घात लगाने वाले दल के आराम का प्रबंध किया जाना चाहिए। आराम के समय केवल संतरी तैनात किया जाए, (ट) जब भी हो सके घात लगाने की योजना का पूर्वाभ्यास किया जाए, (ठ) घात लगाने के दल में स्काउट, कवरिंग पार्टी, रोकने वाले, रिजर्व पार्टियां होनी चाहिए।

यह हालात को देखकर तय करना चाहिए कि कवरिंग दल और रिजर्व में कितने जवान हों। यदि कवरिंग दल का काम केवल शत्रु के बीच गड़बड़ी फैलाना है और लड़ाई, रिजर्व में रखे हुए जवानों को लड़नी हो तो कवरिंग दल में थोड़े ही, जैसे एक लीडर और 2 जवान काफी होंगें। इसके विपरीत यदि यह पता हो कि घात लगाए जाने वाले शत्रु के सैनिक इतने अधिक हैं कि कवरिंग पार्टी के थोड़े जवान उनका सामना नहीं कर सके तो यह साफ कवरिंग दल में भी काफी जवान रखे जाने चाहिए। घात लगाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।



पूर्वोत्तर क्षेत्र में पैट्रोलिंग करते केरिपु बल के जवान

1. घात लगाने समय यदि दुश्मन बहुत देर तक बहाना करके मरा हुआ बनकर पड़ा रहे तो ऐसी सूरत में गोली मारकर या संगीन चुभोकर या दोनों से यह पक्का कर

लिया जाए कि शत्रु सचमुच मर गया है ।

2. कभी–कभी दुश्मन फांसने के लिए, रास्ते पर अपना लोहे या टोप या कोई और लुभाने वाली चीजें छोड़ देता है जिसे उठाने के लिए गश्ती दल वहां रूकेगा जिससे दुश्मन के लिए अच्छा निशाना साबित हो सकता है और भारी नुकसान हो सकता है।

3. कवरिंग दल के जवानों को पगडंडियों के एक ओर या दोनों ओर लगाया जाए यह इलाके को देखकर ही फैसला किया जाना चाहिए।

4. पहाड़ की ढाल पर घात लगाते समय यह सवाल सामने आ सकता है कि घात शत्रु से ऊपर वाली पहाड़ी या दोनों जगहों पर लगाई जाए। शत्रु से ऊपर वाली पहाड़ी पर घात लगाने से कवरिंग फायर डालने वाली टोली को ज्यादा लाभ होगा। इससे एक नुकसान भी हो सकता है कि नीचे की पहाड़ी पर होने से दुश्मन ज्यादा आसानी से भाग जाएगा।

5. अन्य चीजों के मुकाबले पैरों के निशानों को देखकर दुश्मन हमारा पता ज्यादा आसानी से लगा सकता है। धूलभरे रास्तों पर बहुत सावधानी बरतनी चाहिए ताकि यह न पता चल सके कि यहां कोई आया है।

6. घात लगाने वाले दल के कमांडर द्वारा फायर शुरू करने का जो इशारा दिया जाए जो एकदम साफ हो।

7. कारगर गश्त के लिए क्षेत्र-कौशल की ऊंची योग्यता की जरूरत होती है। अतः क्षेत्र कौशल की अच्छी सिखलाई दी जानी चाहिए। इसमें रास्ते में निशान देखकर दुश्मन को पता लगाना, रात में सुनाई देने वाली आवाजों का पता लगाना दिन व रात के समय बाइनाकुलर का इस्तेमाल, हथियारों का फायर फार्मेशन के अनुसार सही इस्तेमाल, नक्शा, शडैट टार्च आदि का इस्तेमाल करने के बारे में जानकारी रखनी चाहिए।

8. यदि बहुत अधिक जवान शत्रु के चंगुल से सफलतापूर्वक निकल जाएं तो पलटकर निम्न कार्रवाई की जानी चाहिए। (क) चारों तरफ से अपनी सुरक्षा का पूरा इंतजाम किया जाए, (ख) हैड क्वार्टर से सम्पर्क बनाया जाए, (ग) घायलों को उठाकर लाया जाए, (घ) रास्ते की रूकावटें हटाएं, (च) पूछताछ के लिए शत्रु के घायलों और बंदियों को इकट्ठा करना और मरों को उठाकर लाना चाहिए, (छ) पूछताछ के लिए वहां के निवासियों को इकट्ठा करना चाहिए, (ज) मदद करने वाले और सैनिकों का प्रबंध करना चाहिए, (झ) अपना काम जारी रखना चाहिए।

उपर्युक्त संदर्भ में केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बल के बारे में हाल में श्री के. सुब्रमणियम की अध्यक्षता में नियुक्त कारगिल समीक्षा समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अध्याय बी (4) के अनुसार परिष्कृत हथियारों से सुसज्जित व सुप्रशिक्षित भाड़े के सिपाहियों द्वारा जो कि सीमापार/नियंत्रण रेखा पार करके लगातार घुसपैठ कर रहे हैं उनके द्वारा फैलाए गए सीमापार के आतंकवाद से निपटने के लिए अर्द्धसैनिक व केन्द्रीय पुलिस बलों को प्रशिक्षित व सुसज्जित नहीं किया जाता है । वर्षों से, इन बलों को उचित

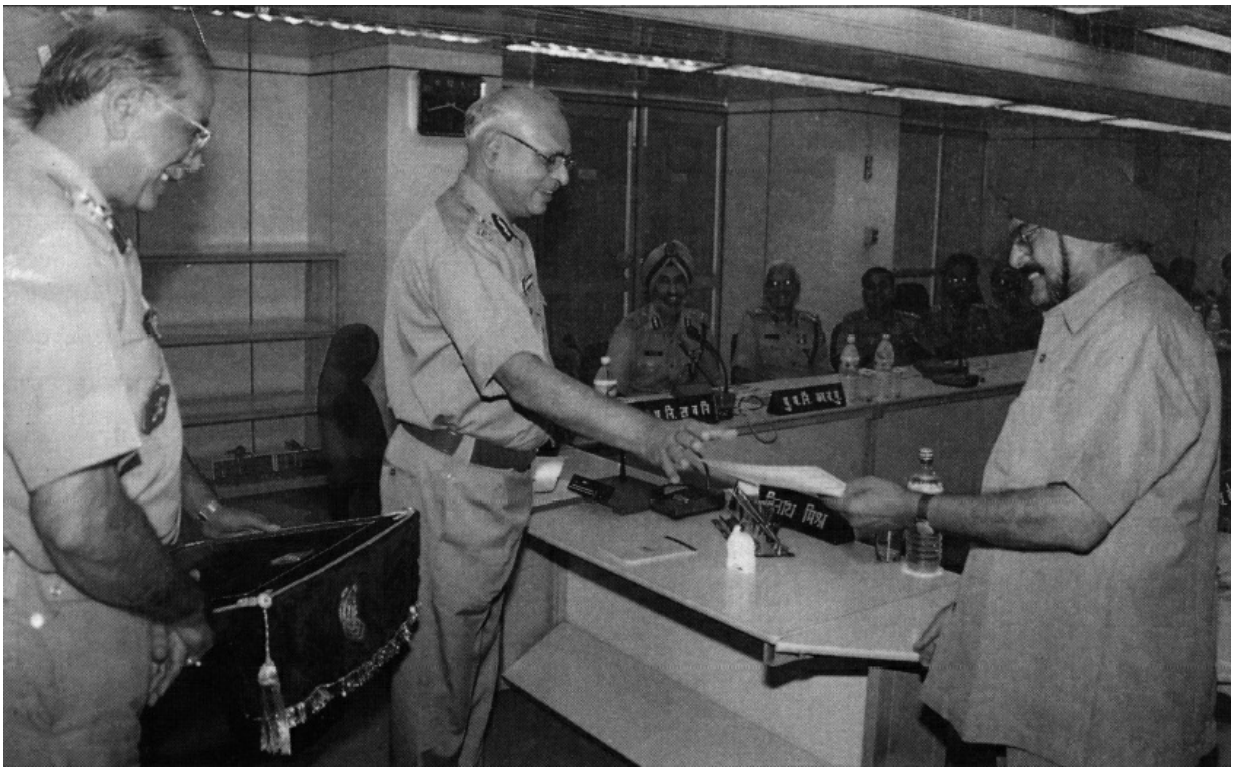
प्रकार से कारगर बनाने के लिए इनकी योग्यता को नहीं बढ़ाया गया जिसके परिणामस्वरूप इनसरजेंसी से निपटने के लिए सेना पर निर्भर रहना पड़ा। समिति ने आसूचना संग्रह करने, आसूचना रिपोर्ट करने तथा आसूचना का मिलान व मूल्यांकन करने को मौजूदा पद्धति में खामियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है। आसूचना संबंधी खामियों के बारे में व्यक्त राय के अलावा समिति ने अपने निष्कर्षों में यह भी कहा है किः

"A Kargil-type situation could per haps have be avoided, had the Indian Army followed a policy of siachenisation to plug unheld gaps along the 168 km. stretch from Kaobal Gali to Chorbat La. This would have entailed establishing a soues of winter cut-off posts with communications and other logistic support and specially equipped and trained troops to hold these positions and undertake winter patrolling dispite risk of cold injuries and avalance casualties which would have to be accepted.

पैट्रोलिंग के संदर्भ में सशस्त्र टुकड़ियों के लिए नेतृत्व एक बहुत महत्वपूर्ण वस्तु होती है। एक अच्छी सुशिक्षित, सुसज्जित व अनुभवशाली टुकड़ी भी छोटे से छोटे कार्य में असफल हो सकती है अगर उसका नेतृत्व ठीक प्रकार न किया जाए। जैसा कि कहावत - है "कोई सशस्त्र टुकड़ी खराब नहीं होती बल्कि उसका नेतृत्व दुर्बल होता है।

अंत में यही कहना उचित होगा कि पैट्रोलिंग न केवल एक महत्वपूर्ण काउंटर इनसरजेंसी ऑरेशन है बल्कि एक कठिन युद्धकला है। यह ऊंचे पहाड़ों, जंगलों तथा दलदल वाले क्षेत्रों में और भी कठिन व थका देने वाली होती है। अतः इस कला में जवानों को सुव्यवस्थित व प्रभावशाली ढंग से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा उचित योजना बनाकर व विभिन्न स्तरों पर संगठित करके ही उन्हें ऑपरेशन के लिए भेजना चाहिए। इसके बाद ही सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

केरिपु बल ने हिन्दी दिवस मनाया



हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए अनुभाग अधिकारी श्री कुलवीर सिंह को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

किसी भी देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और भारत में यह भूमिका हिन्दी ही निभा सकती है क्योंकि देश की 85 प्रतिशत आबादी यह भाषा बोलती और समझती है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में हिन्दी दिवस पर आयोजित एक विशेष समारोह में बल के महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र ने अधिकारियों और कार्मिकों का आह्वान किया कि वे अपने काम काज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में बल का अधिकांश कार्य हिन्दी में होने लगेगा।

डॉ. मिश्र ने इस मौके पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र भी प्रदान किये। अधिकाधिक सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सेक्टर तथा अनुभाग रंनिग शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उत्तरी सेक्टर केरिपु बल ने सेक्टर शील्ड तथा महानिदेशालय की जन सम्पर्क शाखा ने अन्तर अनुभाग शील्ड जीती।

पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री आर.सी. पुरी ने गृह मंत्री, गृह सचिव तथा महानिदेशक का राजभाषा संदेश पढ़ा। हिन्दी अधिकारी श्री मणि भूषण ने बल में हिन्दी की प्रगति की रिपोर्ट से अवगत कराया तथा अंत में पुलिस महानिरीक्षक (कार्मिक/मुख्यालय) श्री पी.पी. सिद्धू ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस मौके पर सीआरपीएफ समाचार का हिन्दी विशेष अंक का भी विमोचन

किया।

केरिपु बल में पदोन्नति के नए एवेन्यू

गृह मंत्रालय के दिनांक 17 मई, 2000 के यू.ओ. संख्या-1-45020/5/2000-कार्मिक के अनुसार बल में पुरूषों तथा महिलाओं के लिए उपनिरीक्षक (जीडी) पद के लिए सीमित विभागीय प्रतियोगिता-परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया है। यह व्यवस्था स्थानीय पदोन्नति के माध्यम से उपनिरीक्षक रैंक में की जाने वाली पदोन्नति तथा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा की जाने वाली सीधी भर्ती के अलावा होगी। उपनिरीक्षक स्तर पर रिक्तियों का बंटवारा इस प्रकार होगी

"स्थानीय पदोन्नति कोटा - 50 प्रतिशत, क.च.अ. के माध्यम से सीधी भर्ती - 33 प्रतिशत, सी.वि.प्र.प. - 17 प्रतिशत"

इस योजना के अंतर्गत उपनिरीक्षक (जीडी) पद के लिए सीमित विभागीय प्रतियोगिता परीक्षा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता परीक्षा में प्रशिक्षण अवधि सहित न्यूनतम 4 वर्ष की सेवा तथा अधिकतम आवेदन देने की अंतिम तारीख को 32 वर्ष की आयु पूरी करने वाले हवलदार तथा सिपाहीगण परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इस परीक्षा के लिए शैक्षिणक योग्यता स्नातक तथा शारिरीक मापदंड उपनिरीक्षक की सीधी भर्ती के लागू मानदंड रखे गये हैं। चीकित्सा की दृष्टि उम्मीदवार शेप-1 होना चाहिए। उन सभी उम्मीदवारों को शारीरिक मापदंड तथा शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए बुलाया जाता है जिनके आवेदन-पत्र सही पाए जाते हैं तथा सेवा रिकार्ड बेदाग होता है। जो कार्मिक पहले शारीरिक मापदंड में छूट प्राप्त कर चुके हैं वे परीक्षा में बैठने के पात्र नहीं होंगें। लिखित परीक्षा के तीन प्रश्न पत्र होंगें, प्रथम प्रश्न सामान्य बुद्धिमता तथा तर्क-वितर्क, दूसरा प्रश्न पत्र-सामान्य ज्ञान तथा जागरूकता, तीसरा प्रश्न पत्र पत्राचार तथा लेखन योग्यता का है। शारीरिक तथा लिखित परीक्षाएं पास करने वाले उम्मीदवारों को व्यक्तिगत परीक्षा के लिए बुलाया जाता है। व्यक्तिगत परीक्षा में "मनोवैज्ञानिक परीक्षा, कमान तथा ग्रुप टास्क लैक्चर तथा ग्रुप चर्चा" शामिल हैं।

डाक्टरी जांच के लिए उन्हीं उम्मीदवारों को बुलाया जाता है जिन्होंने शारीरिक, लिखित, मौखिक, व्यक्तिगत परीक्षाएं पास कर ली हैं। बल के निर्धारित मापदंड के अनुसार डाक्टरी परीक्षा पास करने पर उम्मीदवार का अधिकारियों के एक बोर्ड द्वारा साक्षात्कार किया जाता है। उपरोक्त परीक्षाएं (स्टेज) सफलता पूर्वक पास करने पर मैरिट के आधार पर उम्मीदवारों का अंतिम रूप से चयन किया जाता है।

सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन बल में योग्य एवं कुशल युवा वर्ग को अधिक प्रतिनिधित्व देने के उद्देश्य से किया गया है। उप निरीक्षक के 53 पदों को भरने के लिए इस वर्ष पुलिस महानिरीक्षक, आरएएफ के नियंत्रण में इस परीक्षा का

आयोजन किया गया था। पहली बार आयोजित सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा में 13 सिपाही/हवलदार अंतिम रूप उप निरीक्षक के पद पर चयनित हुए हैं। विभाग द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण के उपरान्त इन कार्मिकों को फील्ड यूनिटों में तैनात किया जायेगा, जिससे कुछ हद तक फील्ड यूनिटों में उप निरीक्षक की रिक्तियों को पूरा किया जा सकेगा। बल में इस स्कीम को लागू करने से योग्य एवं कुशल बल कार्मिकों को अपनी योग्यता एवं व्यवसायिकता को विकसित करने का मौका मिलेगा तथा साथ ही उन्हें पदोन्नति के बेहतर अवसर प्राप्त होंगें। केन्द्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों में यह प्रतियोगिता परीक्षा आयोजित करने वाला केरिपु बल देश का पहला पुलिस बल संगठन है।

कोसोवो से लौटे आरएएफ के कार्मिकों का सम्मान



कोसोवो से लौटे आरएएफ के अधिकारियों व जवानों वार्तालाप करते बल के अपर महानिदेशक श्री जी. झा

नई दिल्ली में 1 सितम्बर, 2001 को कोसोवो से लौटे आरएएफ के अधिकारियों एवं जवानों के सम्मान में आयोजित समारोह में उपस्थित अधिकारियों व जवानों को सम्बोधित करते हुए केरिपु बल के अपर महानिदेशक श्री गणेश्वर झा ने कहा कि पिछले सालों में केरिपु बल की यह विशिष्ट शाखा शांति का संदेश लेकर कई बार देश की सीमा से बाहर गई है और कठिन परिस्थितियों में शान्ति बहाल करने में सक्षम रही है। मई 2000 में विशेष रूप से प्रशिक्षित रैपिड एक्शन फोर्स की दो कम्पनियों के

240 कार्मिक संयुक्त राष्ट्र शान्ति मिशन के तहत कोसोवो में वसने वाले सर्वो तथा अल्वेनियाओं के बीच भीषण जातीय संघर्ष के दौरान शान्ति बनाए रखने हेतु तैनात किये गये थे। कोसोवो में तैनाती के दौरान इस स्पेशल पुलिस यूनिट के दायित्व में भीड़ नियंत्रण, सुरक्षा प्रदान करना, संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस को सहायता एवं बैक अप देना, जन व्यवस्था के लिए उत्पन्न खतरों से निपटना तथा मानवता वादी एजेंसियों की सहायता करने जैसे कार्य शामिल थे।

बल के अपर महानिदेशक ने बताया कि दुनिया के अन्य देशों में आरएएफ जैसी पुलिस बल अभी तक देखने को नहीं मिली है। पुलिस समुदाय में आरएएफ का नाम बहुत ही गर्व से लिया जाता है। इस बल का सपना देश में ही नहीं बल्कि विदशों में भी साकार हुआ है। उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह बल जनमानश में आस्था को बनाए रखने के लिए हरेक धर्म व वर्ग के लोगों में विश्वास जगाया है और दंगों के दौरान तुरन्त हरकत में आकर स्थिति में काबू पाने में निपुण रहा है। आरएएफ की विशेष रूप से प्रशिक्षित महिला कान्टीजेंट की भी जातीय संघर्ष को समाप्त करने में बहुत ही उत्कृष्ट भूमिका रही है। इस बल के सदस्य विदेशों में मिले दायित्व को पूरे समर्पण और कर्तव्य निष्ठा के साथ निभाने में सफल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के मेमोरेंडम आफ अंडर स्टेंडिंग के मुताबिक भारतीय टुकड़ियों की हर छः महीने के बाद दो चरणों में बदली की जाती है।

उपरोक्त अवसर पर रैपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री जार्ज सी. पोडीपारा तथा उप महानिरीक्षक श्री एम.एल. शर्म भी उपस्थित थे।

ग्रुप केन्द्र रामपुर ने मनाया सद्भावना पखवाड़ा



पुलिस महानिरीक्षक मध्य सेक्टर श्री पी.सी. जोशी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रा जोशी, सद्भावना वृक्ष लगाते हुए।

भारत सरकार के निर्देशानुसार विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक 28 अगस्त, 2001 से 6 अक्टूबर 2001 तक ग्रुप केन्द्र रामपुर में सद्भावना पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री हरिबंश सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, रामपुर ने बताया कि यह सद्भावना पखवाड़ा देश की एकता-अखंडता व आपसी भाई-चारे को बनाए रखने में काफी महत्वपूर्ण है और इससे समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा होता है, जिसके लिए हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी ने पूरे समर्पण भाव से कार्य किया था। उन्होंने बल के सभी उपस्थित अधिकारियों व जवानों का आवहान करते हुए कहा कि हमारी फोर्स एक अखिल भारतीय फोर्स है जिसके लिए और भी आवश्यक है कि हम अपने कर्तव्य निर्वहन में कोई शिथिलता ने बरतें जिससे देश की एकता-अखण्डता, आपसी भाई-चारे एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के सिद्धान्तों को ठसे पहुंचे। सद्भावना पखवाड़ा देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी के जन्म दिन 20 अगस्त से देश के प्रति उनके बहुमूल्य योदान के मद्देनजर मनाया जाता है। सद्भावना पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रम जैसे भारत में राष्ट्रीय एकता का महत्व, राष्ट्रीय एकता को प्रभावित करने वाले तत्वों और प्रस्तावित उपायों के बारे में संगोष्ठी का आयोजन किया गया और खेलकूद के क्षेत्र में सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय टीमों से सद्भावना क्रिकेट मैच, वालीबाल और ओपन बैडमिन्टन प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। इसके अलावा सद्भावना दौड़ का भी आयोजन किया, जिसमें प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले कार्मिकों को मुख्य अतिथि श्रीमति चन्द्रा जोशी धर्मपत्नी श्री पी.सी. जोशी, पुलिस महानिरीक्षक, मध्य सेक्टर के कर-कमलों से ट्राफी प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। दिनांक 6 अक्टूबर, 2001 को ग्रुप केन्द्र परिसर में सद्भावना

पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया। इस सद्भावना पखवाड़े के दौरान आयोजित विचार गोष्ठियों, खेल-कूद व सद्भावना दौड़ में ग्रुप केन्द्र रामपुर परिसर में स्थित कार्यालयों के सभी अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल ने वार्षिक उत्सव मनाया



रंगा रंग कार्यक्रम प्रदर्शित करने वाले छात्र छात्राओं के बीच मुख्य अतिथि केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र व स्कूल के प्रिंसिपल श्री सूरज प्रकाश

शैक्षिक संस्थानों को अपनी गतिविधियां इस प्रकार संचालित करनी चाहिए जिस से कि देश के भविष्य विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभा उजागर हो सके तथा उनको विकसित होने का मौका मिले। सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर बोलते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र ने स्कूल की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे आने वाले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में अपने स्तर को ऊंचा उठाने के साथ-साथ अन्य

गतिरोधियों में भी नाम रोशन करें।

डॉ. मिश्र ने इस मौके पर विद्यालय की पत्रिका सृजन का विमोच किया तथा मेधावी छात्र-छात्राओं को परितोषक प्रदान किया।

इससे पूर्व विद्यालय ने प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उप महानिरीक्षक तथा विद्यालय के प्रबंधक श्री आर.सी. पुरी ने भी इस मौके पर अपने विचार प्रकट किये। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

केरिपु बल में पदोन्नति के बेहतर अवसर

देश में पनप रहे उग्रवाद, अलगाववाद, साम्प्रदायिक तनाव तथा आंतरिक कानून व्यवस्था की सुलगती आग को शांत करने के लिए अर्द्ध सैनिक बलों में युवा नेतृत्व की जरूरत बहुत पहले से महसूस की जा रही थी। केरिपु बल की अधिकांश बटालियनें जम्मू कश्मीर एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र में उग्रवाद एवं अलगाव वाद से जूझ रही है। इसके अलावा जहां भी देश में अन्दरूनी साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होने की आशंका हो या कानून व्यवस्था स्थापित करने की जरूरत या प्राकृतिक आपदा, केरिपु बल हर समय उनसे निपटने को तैयार रहती है। केरिपु बल के जवान ऐसी विकट परिस्थितियों में भी घंटों-घंटों ड्यूटी पर तैनात रहना पड़ता है।

ऐसे कठिन एवं दुर्गम क्षेत्रों इतनी लम्बी ड्यूटी करने पर जवानों के मनोबल को ऊंचा बनाए रखने तथा अपने कर्तव्यों के निर्वाह में पूरी निष्ठा बनाए रखने के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य सरकार द्वारा फोर्स में युवा एवं योग्य कार्मिकों को उन्नयन के श्रेष्ठ अवसर प्रदान करने के लिए सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

केरिपु बल में 50 प्रतिशत पदोन्नति कोटे में से 17 प्रतिशत पदों को सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से भरने का निर्णय लिया गया। इस प्रतियोगी परीक्षा में 35 वर्ष से कम आयु के उपनिरीक्षक, निरीक्षक परीक्षा में बैठने के पात्र होंगें। कार्मिकों को विभाग द्वारा निर्धारित की गई सभी बेसिक अहताएं पूरी करने पर लिखित, शारीरिक, चिकित्सा परीक्षा में उत्तीर्ण होना होता है तथा साक्षातकार में पश्चात् रिक्तियों के अनुसार मेरिट के आधार पर चयन किया जाता है। वर्ष 2001 में सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया जिसमें 306 उप निरीक्षक, निरीक्षक इस परीक्षा में बैठे, जिनमें से 27 का अंतिम रूप से सहायक कमांडेंट के लिए चयन हुआ।

आज के हालातों को देखते हुए इन उम्मीदवारों के लिए 25 सप्ताह का गहन प्रशिक्षण इनकी शारीरिक, मानसिक, व्यवसायिक क्षमता को विकास करने के साथ

साथ कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने के उद्देश्य से निर्धारित की गई है।



अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल श्रीजे.पी. वर्मा तथा आंतरिक सुरक्षा अकादमी की प्रिंसिपल पुलिस महानिरीक्षक श्रीमती मंजरी जारूहार, सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा में सहायक कमांडेंट के पद पर चयनित प्रशिक्षुओं तथा प्रशिक्षण अधिकारियों के बीच



सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा में सहायक कमांडेंट के पद पर चयनित प्रशिक्षु

बल में युवाओं को प्रोन्नति तथा विकास के बेहतरीन अवसर प्रदान करने का उद्देश्य उनके अंदर छिपी हुई इन्टेलीजेंस तथा कुछ कर गुजरने की इच्छा शक्ति को उभारना है। बेहतर, सुनियोजित प्रशिक्षण से ही कुशल नेतृत्व पैदा होता है। इसलिए ट्रेनिंग के हर पहलू पर ध्यान रखा गया है। किस जगह प्रशिक्षण दिया जाए, कैसी जलवायु हो कैसा वातावरण तथा परिदृश्य हो, यह भी प्रशिक्षण को प्रभावित करते हैं। अतः ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल पिंजौर एक रमणीय पर्यटक स्थल है तथा जलवायु की दृष्टि से प्रशिक्षण के लिए बहुत ही उत्तम स्थान है जहां प्रशिक्षुओं को हर प्रकार की ट्रेनिंग दी जा सकती है, क्योंकि पिंजौर पहाड़ी कम मैदानी समशीतोष्ण जलवायु वाला स्थल है। पर्यटन की दृष्टि से भी पिन्जौर का काफी महत्व है।

इन प्रशिक्षुओं की 25 सप्ताह की ट्रेनिंग का उद्घाटन पश्चिमोत्तर अंचल, चण्डीगढ़ के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा ने किया। आंतरिक सुरक्षा अकादमी केरिपु बल के प्रिंसीपल/पुलिस महानिरीक्षक श्रीमती मंजरी जारूहार तथा आंतरिक सुरक्षा अकादमी के अन्य प्रशिक्षण अधिकारी उपस्थित थे जो इन प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण देगें ताकि उन्हें नई जिम्मेदारी के अनुरूप ढाला जा सके। इन अफसरों को इस प्रकार से प्रशिक्षण किया जाएगा कि भविष्य में 100 फीसदी काउंटर इनसर्जेसी को सीआरआरपी हैंडलिंग कर सके, इस लिए कुशल नेतृत्व, एक मील पत्थर ऐसे प्रशासनिक और आपरेशन निर्णय के लिए जरूरी है। प्रशिक्षण के उपरान्त इन अफसरों को फील्ड यूनिटों में तैनात किया जाएगा जिससे कि फील्ड फोरमेशनों में युवाअधिकारियों का प्रतिनिधित्व अधिक हो सके। सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा से काफी हद तक अधिकारियों की कमी को पूरा करने के साथ साथ युवा कार्मिकों अपनी प्रतिभा उजागर करने का मौका भी मिलेगा।

आरएएफ में मानवाधिकार कोर्स



व्याख्यान देते हुए गृह मंत्रालय के आंतरिक सुरक्षा सचिव श्री एम.वी. कौशल, तथा बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

मानवाधिकारों के संरक्षण, सम्मान और रक्षा के मामले में संचालन और विस्तार की हाणो से विशालकाय बल केंद्रीय रिवर्ज पुलिस बल का रिकार्ड अद्वितीय रहा है। 20 अगस्त 2001 से महानिदेशालय केरिपु बल मुख्यालय में मानवाधिकारों पर आरएएफ के कमांडेंट स्तर के अधिकारियों के लिए एक पांच दिवसीय मानवाधिकार पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक डॉ. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि विगत वर्षों में अनेक विपरीत एवं कठिन स्थितियों में कानून व्यवस्था बनाए रखने, विद्रोहात्मक स्थितियों से निबटने के बावजूद केरिपु बल ने स्वयं की मानवाधिकारों के चैंपियन के रूप में साबित किया है।

रैपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री जोर्ज सी. पोडीपारा ने आरएएफ के गठन के उद्देश्यों और कार्यशैली पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि अपने निरपेक्ष और निवपक्ष रवैये के कारण आरएएफ अल्प संख्यक समुदायों का विश्वास जीतने में सफल रहा है। इस फोर्स में आरएएफ और सीआरपीएफ के 30 से अधिक वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

माह जुलाई-अगस्त और सितम्बर में मृत कार्मिक

केरिपु बल के निम्न कार्मिक माह जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

है.कां. त्रिवेणी प्रसाद (35 बटा.), सफाई कर्म. राजेश कुमार (67 बटा.), उप नि. राजेन्दर प्रसाद (40 बटा.), सि. मारीमथू (51 बटा.), सि. मुजिबर रहमान (ग्रु. केन्द्र इम्फाल), है.कां. पदम सिंह (14 बटा.), सि. सतबीर सिंह (4 बटा.), सि. राम नागराजप्पा (51 बटा.), है.कां. ड्राइवर धर्मपाल शर्मा (92 बटा.), सि. मिथ्थू लाल (48 बटा.), कुक राज देव यादव (123 बटा) है. कां. प्रताप सिंह (127 बटा.), सि. रघु टी.पी. ग्रु. के. बंगलौर, कुक शंकर कुमार पत्रा, (88 म. बटा), सि. ओम प्रकाश राम (72 बटा), है. कां. कमल देव (83 बटा), है.कां. सिद्ध नाथ सिंह (71 बटा), है. कां. रामव्यास रक (81 बटा.), सि./चा. वीरेन्द्र सिंह (71 बटा.), है.कां. जगजीवन ठाकुर (21 बटा), सि. कमलेश्वर भगत (2 बटा.), सि. बोध राज (2 बटा), सि. धर्म हरी त्रिपुरा (51 बटा.), है.कां. जशवन्त तोप्नो (140 बटा), सि. चोगा राम (आ.सु.अ.), सि. मोची महादेव (21 बटा.), उ.नि. (म) पी भट्टा चार्जी (31 बटा.), है.कां. पृथ्वी सिंह (73 बटा), सि. विजय कुमार पवार (122 बटा.), सि.एस. सिवान (87 बटा.), सि. रविन्द्र पंधारीनाथ कपादरी (79 बटा.), सि. देसाई पासवान (3 बटा), सि. एस.पी. शाह (45 बटा.), सि/चा. उमेश प्रसाद (64 बटा)।



आरएएफ की नौवीं वर्ष गांठ के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते जवान



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी के स्थापना दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते स्कूल के छात्र-छात्राएं।

रजि. न. 4767/87



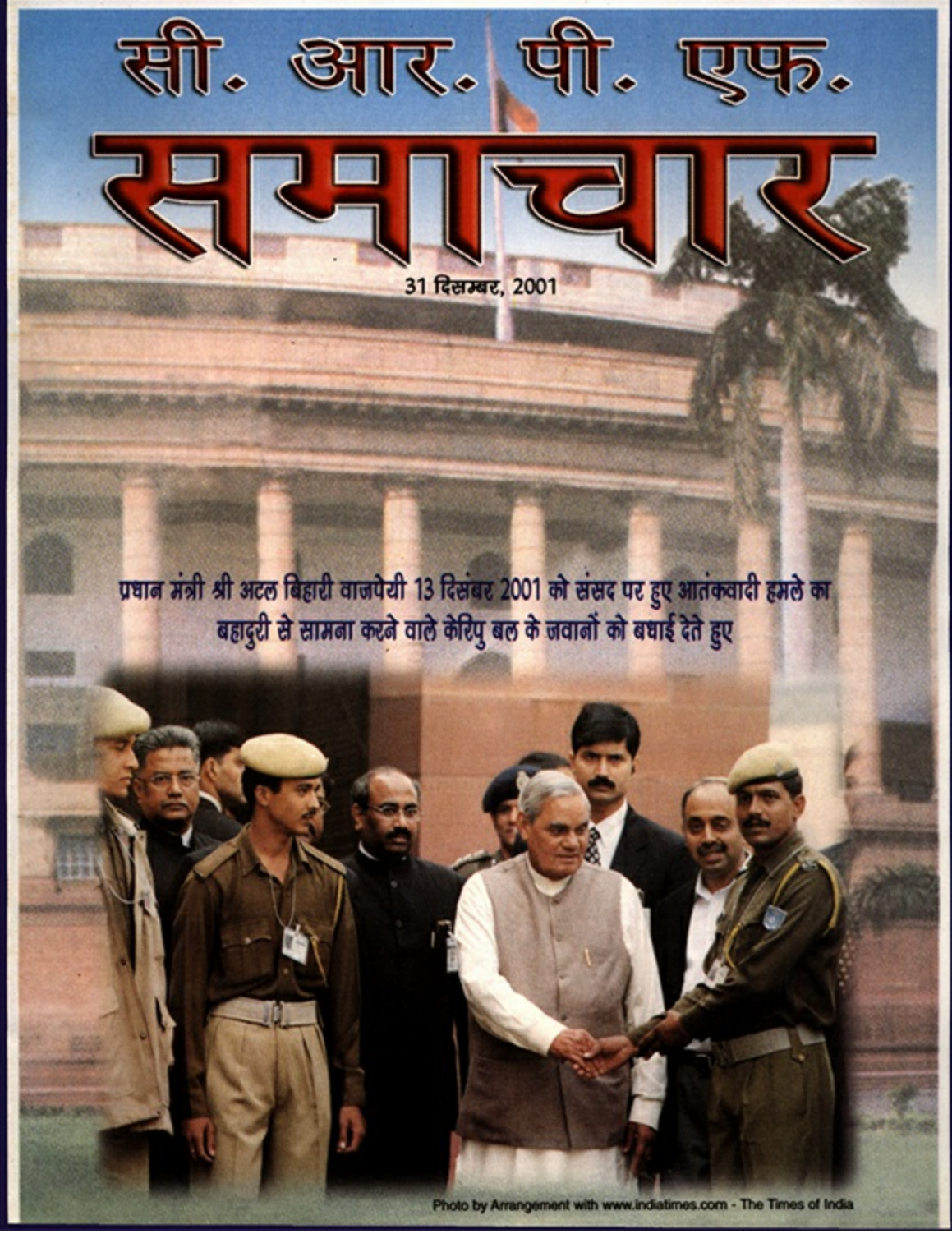
आरएएफ की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर में सांस्कृतिक कार्यक्रम 'पंजाब का भंगड़ा' करते हुए आरएएफ के जवान

62वें वार्षिकोत्सव पर विशेष

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 दिसम्बर, 2001



प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी 13 दिसंबर 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले का बहादुरी से सामना करने वाले केरिपु बल के जवानों को बधाई देते हुए

Photo by Arrangement with www.indiatimes.com - The Times of India



*50*वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक्स प्रतियोगिता की *200* मी. दौड़ के कांस्य पदक विजेता जोरावर सिंह को पदक प्रदान करने के बाद केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री यशवंत सिन्हा बल के धावकों के साथ।



कोरेपु बुल को टीम को 50वीं आखेल भारतीय पुलेस एथलेटेक्स प्रतियोगेता के पुरूष वग को चैम्पियनशिप ट्राफी प्रदान करते हुए झारखंड के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल मरांडी।



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-15 अंक-8
31 दिसम्बर, 2001
10 पौष, शक 1923

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

सम्पादकीय सहयोग
अनिल गुप्ता

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

इस अंक में

महानिदेशक की ओर से

CRPF : The Peace Keepers of The Nation

CRPF - Sharing Expertise

CRPF - An Asset to The Nation

A Cadre of Cats

Teerrorism, Human Rights and CRPF

Police Public Relations

Rapid Action Force - A Social Organisation in Uniform

Mission

CRPF and its Civic Action Programme

Human Resources in CRPF

Tactical Appreciation in Counter Insurgency Operation

Sports 2001 - A Saga of Success

Managing the Change

Jaikar - Lalkar

Comrades-in-Arms

Naxals bid to blast CRPF outpost foiled

Homage to Police Maryrs

A Retort to Terrorists

Family Welfare Centre : A Helping Hand

Supply of Ordnance for CRPF - An Introspection

बल का ध्येय

Down the Memory Lane

रैपिड एक्शन फोर्स – देश की सेवा में

रण आफ कच्छ में केरिपु बल बहादुरों की शौर्यगाथा

मागम पोस्ट - हमारा गौरव दुश्मन के लिए चुनौती

कश्मीर डायरी - दहशतगर्दी के बदलते दौर की आहट

Shri V.G. Kanetkar, the first and former DG extends his best wishes to all Officers and men of the Force on its 62th anniversary

महानिदेशक की ओर से



जाते वर्ष की दहलीज पर खड़े होकर एक बार पीछे मुड़ कर देखने की परंपरा है, ताकि हम बीते साल में की गयी गलतियों से सबक और उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर नए वर्ष में प्रवेश करें। हमारे लिये यह अवसर यों भी विशेष महत्व रखता है, क्योंकि हमारे बल की वर्षगांठ भी जाते वर्ष के बिल्कुल अंतिम छोर पर पड़ती है। इसलिए हमारे लिए यह एक मौका होता है देश सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की शपथ को दोहराने का, जो साथी कर्तव्य पथ पर हमसे बिछड़ गये हैं, उन्हें याद कर उनकी बहादुरी को सलाम करने का, उनके परिवारों को भरोसा दिलाने का कि उनकी मुसीबत की हर घड़ी में हम उनके साथ हैं। यह अवसर हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने और वो जिनको बहादुरी के सम्मान में तगमे दिये गये हैं, उन्हें बधाई देने का भी है, इस मौके पर हम अपने उन प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को भी सम्मानित करते हैं, बधाई देते हैं, जिन्होंने बीते वर्षों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश और अपने गौरवशाली बल के नाम को चमकाया है।

देश के अंदरूनी हालात हमारे जवानों की बहादुरी और जाबांजी का इम्तिहान ले रहे हैं, खासकर कश्मीर और देश के उत्तर पूर्वी इलाकों में। मुझे बहुत फक्र होता है ये कहते हुए कि हमारे अधिकारी और जवान अपने इस इम्तिहान में पूरी तरह कामयाब रहे हैं। अपनी लाख कोशिशों के बावजूद दुश्मन हमारे देश की एकता और अखण्डता को तोड़ नहीं पाया है, मगर इस एकता और अखंडता की कीमत हमारे जवानों ने अपनी जान पर खेल कर दी है। गये साल अकेले जम्मू कश्मीर में हमारे *28* बहादुर साथियों ने अपने फर्ज पर अपनी जान को कुर्बान किया, देश के उत्तर पूर्वी इलाके में यह तादाद *49* की रही और अगर देश के बाकी हिस्सों को भी इसमें शामिल कर लिया जाए जिनमें बिहार, झारखण्ड और आंध्र प्रदेश के नक्सली हमलों में शहीद हुए साथियों के नाम भी हैं, तो पूरे देश का यह आंकड़ा *99* को पार कर

जाएगा। कामयाबी का आलम यह है कि जम्मू में *206*, उत्तर पूर्व में *52* और पूरे देश में कुल मिलाकर *281* दहशतगर्द और दूसरे देशद्रोही तत्व हमारे साथ हुए मुकाबलों में मारे गये। बहादुरों की शहादत पर आंसू नहीं बहाए जाते, मगर उनकी चिताओं पर हर बरस मेले लगाने की रवायत है ताकि हम उनकी शहादत से प्रेरणा लेकर, कर्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहें, नये जोश और नये संकल्प के साथ।

13 दिसम्बर *2001* को संसद भवन पर हुए हमले का बहादुरी से सामना कर हमले को विफल कर देने वाले जवानों को भी मैं इस मौके पर विशेष रूप से बधाई देना चाहूंगा। उनकी बहादुरी और कर्त्तव्य के प्रति तत्परता ने आतंकवादियों को जता दिया है कि वे चाहे कितनी तैयारी के साथ आयें, हमारे होते उनका कोई इरादा, कोई षड्यंत्र कामयाब नहीं होगा।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और इसके साथ जुड़े रैपिड एक्शन फोर्स और महिला बटालियनें, आज देश में अमन के पहरेदार के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। समस्या चाहे कानून व्यवस्था की हो, आतंकवाद की हो, विद्रोह की हो, प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त मानवता की सहायता की हो या फिर भीषण दुर्घटनाओं आदि के बाद तत्काल सहायता की हो, सरकार और देशवासियों की पहली पसंद केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ही है। सरकार और जनता का यह भरोसा हमने कड़ी मेहनत, कर्तव्य के प्रति समर्पण, ईमानदारी और अपने उद्देश्य वाक्य **"सेवा और भक्ति"** का अनुसरण करते हुए जीता है। हमारी जीत का प्रमाण है हमें मिलने वाले तगमे और सम्मान। हमारे बहादुर साथियों ने अब तक अपने कारनामों के लिए इतने तगमे जीते हैं कि वो हमारे बल को तगमे पाने वालों की कतार में सबसे आगे खड़े कर देते हैं। अकेले इसी साल हमारे साथियों ने एक राष्ट्रपति का शौर्य वीरता का पुलिस पदक और *6* शौर्य वीरता के पुलिस पदक जीते हैं। हमारे खिलाड़ियों ने विश्व पुलिस खेलों से लेकर एशियाई और दूसरे विश्वस्तरीय खेलों में अपने हुनर का झंडा फहराया है। हम उनके हुनर की कद्र करते हैं और उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए हर मुमकिन कोशिश में भी लगे हैं।

असम और पंजाब में दहशतगर्दी की आग को हमारे साथियों ने अपने लहू के छींटे देकर शांत किया। आज जम्मू कश्मीर और देश के उत्तर पूर्वी हिस्सों के देशवासियों की पीड़ा भी पहाड़ का आकार ले चुकी है, किंतु इस पहाड़ को चीर कर सुख, समृद्धि, प्रगति और शांति की गंगा को बहाने के भागीरथी प्रयास में हम लगे हैं, हमारे प्रयास कामयाब होंगें, हमें भरोसा है। हम अपनी इस कामयाबी के लिए दुआओं की अपेक्षा बल की *62*वीं वर्षगांठ और नव वर्ष की पूर्व वेला पर पूरे देश से भी करते हैं। बदलते वक्त की जरूरतों को हम पहचानते हैं। यही वजह है कि हम अपनी फोर्स का तेजी से आधुनिकीकरण कर रहे हैं, चाहे वह फोर्स का कम्प्यूटाईजेशन हो या फिर वक्त की जरूरतों के मुताबिक अपने ट्रेनिंग ढांचे का बदलना हो, हम हर क्षेत्र में आधुनिकीकरण का जाल बिछाने की प्रक्रिया में जुट गये हैं। नये अस्त्र, नये शस्त्र, नयी तकनीक और इनसे मिलने वाले नये जोश के साथ

हमारे जवान आपरेशनल फील्ड में कामयाबी के नये इतिहास की रचना करेंगें, इसकी मुझे उम्मीद है और इस मौके पर यही मेरी शुभ कामना भी है।

सीआरपीएफ सदा अजय। भारत माता की जय।



(डा. त्रिनाथ मिश्र)
महानिदेशक, केरिपु बल

CRPF : The Peace Keepers of the Nation

— D.G. Mohapatra, PRO, CRPF

The Central Reserve Police Force (CRPF) has its origin on 27th July, 1939 at Neemuch as the Crown Representative's Police.The primary task of the force was to help the Princely States to preserve 'Law and Order'. The Force was also utilised for guarding the German and Italian detenues, tackling of the Hur menace in 1942, anti-dacoity operations in Central India etc.

The Independence of the country marked an important watershed in the life of the Force which was renamed as the Central Reserve Police by an Act of Parliament on 28 December, 1949. This Act constituted the CRPF as one of the Armed Forces of the Union. Sardar Vallabhbhai Patel, the then Union Home Minister visualised a multidimensional role for it in tune with the changing needs of the newly independent nation. The Force was presented colours on 19th March 1950 by Sardar Patel.

For The Pride of the Motherland

As the demand continued to increase, the Force grew in size. The work

of the CRPF detachments at Bhuj, in Pepsu and Chambal Ravines, attracted notice of the authorities and praise from the people. It was the CRPF which bore the brunt of the first onslaught of the Chinese at Hot Springs (Ladakh) on October 21, 1959 when a small CRPF patrol was ambushed and over-whelmingly out-numbered by the Chinese. In the ensuing skirmish, as many as 10 CRPF men laid down their lives for the Mother land. Their Martyrdom on October 21 is observed throughout the country as the 'Police Commemoration Day.



Sardar Patel presenting colours to CRPF on 19 March, 1950 - A Proud Moment

In Sri-Lanka, two CRPF Battalions and one Company of Mahila Battalion were deployed as a part of the IPKF. The first major offensive of the LTTE was directed against the CRPF in which the Force lost four men. This and other encounters found the CRPF men successfully repelling the attacks launched by the LTTE in an unconventional warfare.

The history of CRPF is a saga of sacrifice and sustained dedication to national integration, unity and maintenance of peace in the country. The CRPF has made its presence felt all over the country. Whether it is external danger, insurgency, communal clashes or natural calamities, the Force is always there to protect the lives of the citizen. The Force has always done justice to the confidence posed by the Government and the people.

From a single Battalion in 1939, the Force has now grown to 141 Battalions, 30 Group Centres, eight Training Institutions, three Base Hospitals and one Composite Hospital. It is the only Para Military Force in the country which has two Mahila Battalions. The bulk of CRPF Companies are deployed in Jammu and Kashmir and North-Eastern Region to quell the insurgent activities and to maintain law and order. Due to revival of insurgency in North-Eastern parts of the country, the deployment of CRPF has increased substantially. In the line of duty, many of the brave soldiers of the Force laid down their lives.

The CRPF also extends its assistance for socially useful works in the form of free medical camps at different places in which patients in thousands are checked and given medicines free of cost. A record number of blood donations were made by officers and men of the CRPF in blood donation camps organised by different Battalions of CRPF

RAF - Acting Fast

The Rapid Action Force (RAF), formed on October 7,1992 to deal with communal riots and riot like sitautions, has made its impact and won confidence of the people from the very beginning. Its mere presence has a preventive effect on a riot situation. In normal times, RAF Battalions carry out exercises to familiarize themselves with the ground situations, so that they have the full cooperation of the people while tackling a situation. They have given a credit-worthy performance to the full satisfaction of the State Governments and also earned high appreciation from the public and the media by their effective and firm handling of the situation.

RAF also plays a vital role in peaceful organisation of various fairs and festivals like the Muharram, Shivaji Jayanti, Ganesh Chaturthi, Car Festival of Lord Jagannath and Dashahra etc. held in different parts of the country. RAF personnel assist the local administration in carrying out rescue and relief operations during natural calamities and providing medical aid to the victims.



Athletes Deepa A.K. and Sudha K.R have won medals at World Police and Fire Games at Indianapolis, USA during June, 2001



CRPF as a part of UN Peace Keeping Mission in Haiti

The Green Force

The CRPF has undertaken the job of massive tree plantation. Over 18,000 trees were planted by the Force during 2001 alone. In Orissa, Barbera Forest (about 24000 hectares) was adopted by CRPF for preservation and protection of flora and fauna. It has been able to check effectively the illegal felling of trees and poaching of wild life. Forest wealth worth about Rs. 90 lakh has been recovered by vigilant CRPF personnel from miscreants.

The CRPF has its own Academy - Internal Security Academy at Mount Abu (Rajasthan) to provide basic and in-service training not only to the officers of CRPF but also to officers from other Police Forces in the country and abroad. A Counter-Insurgency and Anti-terrorist training school at Dayapur, Silchar (Assam) trains personnel in these areas. There are three Central Training Colleges at Neemuch (Madhya Pradesh), Avadi (Tamil Nadu) and Nanded (Maharashtra). These institutions organise training courses for officers and other ranks of the CRPF and also of State Police Forces.

Besides, there are four Recruits Training Centres at Neemuch (Madhya Pradesh), Avadi (Tamil Nadu), Pallipuram (Kerala) and Srinagar (J&K). These institutions organise basic and follow up training for the officers and men of the Force. Subjects concerning Human Rights have been included in the syllabi of basic training, in-service and promotional courses. Directions in the form of "do's and don'ts" have been formulated and issued down to the individual level.

Sporting Spirit

Many a bright star has shone on the sports firmanent of the CRPF during the last few decades. Names of Arjuna Award winner like G.S. Randhawa, Hari Chand, R.S. Bal, Khajan Singh and Kunjarani, who are CRPF's gifts to the world of sports shall always be remembered with pride, not only by the officers and men of the CRPF but by all sports lovers in the world.

While CRPF men excelled in the field of sports, CRPF women have also come to the fore front and emulated the feat of the men. Asst. Commandant Miss N. Kunjarani Devi hailing from Manipur has been instrumental in popularising the sports of weightlifting amongst women. CRPF sports persons like Jeevan Jyothi, N. Laxmi, Raja Ram Tokas, Tilak Thapa, Paramjit Singh and Rigzen Angmo also have shown outstanding performance at National and international levels in different fields.

Since its inception, the CRPF has earned one George Cross (G), one Vir Chakra, one Padma Shri, Three Kings Police medals for Gallantry, 49 President's Police Fire Service Medals for Gallantry, 91 President's Police Medals for Gallantry, 125 President's Police Medals for Distinguished services, 486 Police Medals for Gallantry, 1252 Police Medals for Meritorious serivces, four Vishisht Seva Medals, one Yudh Seva Medal, five Sena Medals, 77 Prime Minister's Life Saving Medals, one Jeevan Raksha Padak and 51 PMG.

The CRPF has all India composition. In every sub-units of the CRPF, there are men from all religions and from all parts of the country. It is in the true sense a National Force. The national and secular composition of the Force is its strength. It is because of this reason that the people have total faith in its performance and efficacy. Upholding its motto, "Service and Loyalty", the CRPF pledges to meet all these challenges with determination and perform effectively its role as the 'Peace Keepers of the Nation'.

CRPF-Sharing Expertise

— S.V.M. Tripathi, Ex-DGP UP & DG CRPF

The Central Reserve Police Force has achieved remarkable growth in strength and professional stature since it was raised as a single battalion on July 27,1939 at Neemuch. It was then christened as “His Excellency The Crown Representative’s Police”. It had responded creditably by performing an ever-expanding range of tasks even before Independence. As the sole Central Paramilitary Force at the disposal of Ministry of Home Affairs it was actively involved in border guarding after 1947, handling tasks, which are now being magnificently performed by the Border Security Force and the Indo Tibetan Border Police after their respective inceptions. It was called upon to bolster security in the industrial units under the control of Union Government, an area now being looked after by the Central Industrial Security Force. The traditional role of giving aid to Civil Power in the States remains intact and now covers a wider spectrum of duties.

CRPF is presently handling many routine law and order duties requiring unarmed presence, which should, in the normal course, be handled by the State Police. On the other extreme it is being increasingly called upon to deal with intense forms of terrorism and insurgency unleashed by highly motivated and well-armed anti-national elements, sometimes openly supported by hostile foreign countries. In view of the imperative involvement of CRPF in anti-terrorist and counter insurgency operation and preferred option is to leave the routine duties to the State security apparatus. This position has been accepted in the recent recommendations of the Group of Ministers on reforming the National Security System.

As an example of the multiplicity of functional and regional deployment we can notice the commitment of CRPF during the current year. The Force has been deployed in Jammu & Kashmir and North-Eastern States to quell insurgency and maintain law and order. They were successful in eliminating and apprehending a large number of militants/terrorists in these States and in recovering a substantial number of sophisticated arms, ammunitions and explosives. This force is also assisting State security apparatus of Andhra

Pradesh, Bihar and Jharkhand in dealing with the menace of Naxalites. In these operations a number of CRPF personnel have laid down their lives and several more have been wounded. This force always plays a pivotal role in the conduct of national elections and during the current year also it was deployed in significant numbers to handle Assembly elections in Assam, West Bengal, Tamil Nadu, Kerala and Pondicherry.



Shri S.K. Mathur, Ambassador of India to Yugoslovia addressing the Indian SPU at Kosovo



An NLFT extremist surrendering before Shri Vageesh Mishra, IGP (Ops) Tripura

A number of CRPF personnel were sent out to Kosovo as “Peace Keepers” and conducted themselves with great credit. As usual units of CRPF gave assistance in relief and rescue operations during diverse man made and natural calamities. The most notable was their performance during the horrendous earthquake in Gujarat. They promptly reached the scenes of occurrences in Ahmedabad, Bhuj and other places, supplemented communications, rescued a very large number of persons alive and also recovered dead bodies in extremely difficult and dangerous situations. Their effective efforts towards improving environment by tree plantation and ensuring regeneration of Barbera forest area in Orissa continued during the year. The contribution of the Force towards national and international games and sports is well known and is greatly valued in the country. A number of sportspersons belonging to CRPF have deservedly received highest honours in this field. These examples are over and above the deployment of CRPF in their traditional role of assisting the civil authority in States in handling aggravated law and order situations, which are far too numerous to be recounted here.

In the hierarchy-ridden world of governments, especially when dealing

with uniformed body of men, “coordination” is frequently equated with subordination. In these conditions free exchange of intelligence, information and techniques amongst organizations also becomes difficult. One of the results of this seeming insularity is that each organization is likely to commit the same mistakes and may come to learn from them the hard way. Mistakes are almost always seen as a cause for punishment or at least castigation and everybody assiduously tries to hide them. Thus, even intra departmentally, learning from mistakes does not always takes place. Facts are sometimes doctored so that the blame lies somewhere else. There are very few police organization in the world other than CRPF, which can boast of such a vast reservoir of rich operational experience in the handling of law and order, including the aggravated forms in the shape of terrorism, insurgency and militancy and handling of calamities.

In the first instance there is an imperative need to develop a database not only to guide the futuristic operations of CRPF but also to faithfully document its past evolutionary track. Official reports serve many purposes but are generally not very helpful as a realistic training aid. Formats are available in which “Case Study” can be prepared in a professional manner. In these documents all aspects such as administrative, tactical, disciplinary and leadership can be clearly delineated. The integrity of these documents has to be ensured after cogent and even ruthless examination at the unit level and other supervisory levels. In the few cases of fundamental importance involvement of the faculties of training institutions such as Internal Security Academy, various CTCs and RTCs would be benefical. It is certainly not desirable to focus only on mistakes. Successful actions, which have brought in rich dividends, should be highlighted with equal prominence. Besides enhancing the effectiveness of the learning process this is likely to lead to higher morale and espirit d’ corps. These case studies should be used in training institutions to explain the practical difficulties and ways and means should be discussed as to how these can be surmounted. These area specific cases would be especially useful during the pre-induction training, which is to be imparted before CRPF units are deployed in any particular region.

It is necessary to ponder over procedures through which the experience of one police organization is shared with other units, which are engaged in identical or similar operations. There is a lot of information and experience, which can be shared for optimizing the end result of the endeavours in

which police forces of the Centre and the States are engaged. For this specific purpose also the factual presentations of the various problems faced by CRPF and the methods adopted to solve them have to be prepared. Considerable interaction in person, besides providing literature, would yield better results.

This cannot be a one-way traffic. Ours is a country of continental proportions. Techniques, which are effective in one area, may not be successful in another depending on the local sensitivities and conditions. In these exchanges CRPF will also receive as much as it gives. This exchange can be institutionalized so that set procedures are available. In case of CRPF the procedure should work better with States as it has a presence, along with senior officers of appropriate rank, almost everywhere the country. A system of live, decentralized horizontal working groups, working together, will ensure communication, which will be beneficial to all concerned. This aspect needs to be given serious thought.



Demo on handling of sophisticated weapon

CRPF-An Asset to the Nation

— D.R. Kaarthikeyan, Ex-Director CBI,
Ex-DG NHRC & Ex-Spl. DG CRPF

In the year 1939, the British ad ministration established a small force of one battalion at the cantonment at Neemuch, in Mandsaur District of Madhya Pradesh to take over the duties of the British forces.

This force was then known as the Crown Representative's Police-CRP. It was a self sufficient force organised and trained on military lines to function in aid of civil power in the Princely states. This battalion was constituted on religious lines with 375 Hindus, 375 Muslims and 250 Sikhs and even these personnel were mostly from retired or released ex-army personnel from Punjab, Rajputana and Delhi areas.

It was Sardar Vallabhbhai Patel, the first Home Minister of independent India who had a vision of reorienting this force and saw the need for such a force in future India.

Introducing the Central Reserve Police Force bill in the parliament he said -

"Ours is a vast country, where consolidation has taken place with electric rapidity. So, unless we are very watchful we may find to our cost, difficulties arising for which we may have to pay heavily.

Therefore, we have taken care to organise our services, our police force and all the requirements that are considered necessary for keeping law and order in the whole land so that progress may be as effective and as rapid as possible."

"As part of the political settlement of transfer of power, the force passed on to the Central control and since then it has been used by us in various states whenever demands of law and order justified its use. This force, with further augmentation, partly to meet up the depletion on account of the partition and partly to meet the growing demands from the States and Unions has performed most useful functions and has been a very good reserve force, which has been sent from time to time in aid of local forces. In Junagarh, on the borders of Jaisalmer, in Mayurbhanj, In Saurashtra and elsewhere it has been stabilizing influence, whenever any threat to security

has manifested itself.



CRPF Jawans keeping vigil at Dal Lake Srinagar



CRPF men patrolling somewhere in North-East

Sardar Patel further added - “This little force which we had, came in very handy and it did very useful work also. But it is small and had to be augmented. We have done our best in this direction and it is still being increased”.

India’s Iron Man’s dream and message proved to be prophetic. The Crown Representative’s Police became Central Reserve Police Force and one of the armed forces of the Union and its scope of duty extended to all over India. The members of the force were clothed with certain powers connected with the larger objectives of active duty, that is, suppression of internal disturbances and restoration of order.

But no one would have even imagined that an organisation which was born as a tiny force of one battalion constituted purely on religious composition, would grow in the course of 62 years into a mighty and most dependable internal security force of India.

Tributes from Leadership

If we recall some of the tributes paid to the force by some of the former Presidents and Prime Ministers of this great nation from time to time, then the nation would truly be proud of this most versatile and multi dimensional force.

“The hallmark of the CRPF has been a high level of discipline, professional competence and a tradition of service to the community”.

“Central Reserve Police Force is the oldest and one of its own kind of security force in the country, which has been used everywhere and in every way”.

“The CRPF fulfilled an essential need which was to have a force which may comprise people from different states, speaking different languages and still working together”.

“We have observed that whenever the CRPF has gone, the people have reposed confidence in it and they (CRPF personnel) too have worked with great courage and dedication”.

“The CRPF men have shed blood in every part of the country in service of the nation. The challenges faced by the CRPF and sacrifices made, have given it an identity. The CRPF has become symbol of our unity and integrity”.

“CRPF has earned public confidence not once but again and again. We are sure that the CRPF will stand the test of time and will continue to strive to maintain the integrity, glory and honour of the country”.

“The country would always remember the martyrs of CRPF with honour for the sacrifices they had made in defending unity and integrity of the nation. The future of the country is safe in the hands of Central Reserve Police Force”.

Policing - An Arduous Task

Policing is the most difficult and thankless job among all the functions of the government. It is so all over the world. Police has to face the consequences of the omissions and commissions of the various functionaries in the government. When political parties fail to fulfill the promises made during the elections, when officers at various levels in various departments annoy or frustrate the public by their highhandedness, indifference or omissions and commissions, it is the police which has to face the brunt of the public anger. The police being charged with responsibility to maintain order, protect VIPs, preserve the integrity and security of the society and the nation and implement and enforce laws and lawful orders of the government of the day, are placed in an unenviable position. Very often when such negative role is played again and again, naturally the police comes to be disrespected and disliked. People forget the initial anger and aversion against various authorities which pushes them face to face against the law. They only remember the treatment they received at the hands of the law enforcement agencies. The frustration and anger of the public gets deflected towards the police, who invariably had no role in the omissions and commissions of the various departments and authorities. The main grievance is forgotten and the campaign starts against the police. Thus, the police are necessarily forced to play the role of shock absorber of the government authorities.

Someone in the society has to play this unenviable role and invariably it is the police which is called upon to perform this difficult, thankless and risky job. Their job becomes more difficult and unpopular when sufficient authority, power and status is not given by the laws in force.

What Makes CRPF Click

In spite of the fact that the law enforcement continues to be the most

challenging and thankless task, CRPF has enjoyed the highest credibility and utmost confidence of the nation. There are many factors which make it possible for the CRPF to be considered the most dependable and credible internal security force of the nation.

The Force is on the move all the time between various difficult theatres of operation in this vast country. Companies are moved constantly by air, train and road to different States with varying climatic conditions and vastly differing security challenges. The Force has suffered and continue to suffer considerable loss. The supreme sacrifice made by CRPF personnel is unparalleled. Many more sustain injuries, including disabilities in performance of their duties.

The Force, with utmost adaptability, is in great demand from all parts of the country and from governments run by various political parties. It is all due to its political neutrality, secularism, dedication, human rights consciousness, good behaviour and effectiveness in dealing with various situations.

They are called upon to deal with insurgency in Punjab, Jammu and Kaskmir and North East, the extremist violence in naxalite affected areas of Andhra Pradesh, communal riots in various parts of the country, provide security to the Amarnath Yatris, provide security during election process, provide relief and rehabilitiation during earthquakes, cyclones, floods and other natural calamities and provide protection to highly protected persons in the nation.

Proud Human Rights Record

Despite doing highly dangerous jobs in hostile conditions and suffering loss of life all the time and being away from their families for months together, the Force has shown tremendous restraint while dealing with the public. The human rights record of the Force has throughout been commendable. Odd violations here and there are promptly noticed and effective corrective action taken by officers.

With vast experience in dealing with various situations, the entire force is fully aware that their effectiveness and success in dealing with various situations will depend largely on the cooperation and respect that the Force is able to command from the local population. Efforts are on all the time in sensitizing the Force at different levels on finer aspects of human rights and

human rights laws.



Free medical camps organised by the Force as a part of civic action programme

A fine tradition is also built into the Force of serving the society in all possible ways. The Force has been undertaking blood donation from time to time showing concern for their fellow-beings in distress. Similarly, conscious effort has been made throughout to plant and raise trees as a contribution towards improvement of the environment and atmosphere In which we live. All the CRPF campuses are like mini forests.

Training and Tradition

Health and fitness is given utmost importance as it is only when the personnel are healthy physically, they will be healthy mentally also. Only healthy and fit people can have the courage to act and also will have the ability to work hard for long hours without getting fatigue. Only then sound decisions can be arrived at.

Training has been given the utmost importance in the Force. The training institutions, the syllabus and the methodology are constantly reviewed and improved upon.

The orientation is towards improving basic skills and aptitudes and professionalism in performance, whatever be the nature of duty. The effort

is to expand mental horizon, attain professional excellence and individual skills and more practical orientation to meet the present day operational challenge.

The Training methods have kept in view that the role of the Force demands both offensive action against insurgents, terrorists and extremists, while at the same time ensuring adequate sensitivity to public order and respect for Human Rights. The training is a planned process to help personnel acquire new competences and to fine tune the existing ones. The training aims at improving managerial competence, strategic competence, role effectiveness and responsiveness.

The services rendered by the Rapid Action Force and Mahila components of the CRPF on various occasions, including the IPKF operations in Srilanka, natural calamities, communal situations and while dealing with insurgency, terrorism, extremism, has been appreciated and commended by the concerned authorities and the people.

The CRPF personnel have also brought glory to the nation in international sports meets and also as part of the India’s contingents in the UN Peace Keeping Forces in many disturbed parts of the world.

Future

To make this Force more effective and raise the morale, a lot needs to be done in the area of housing and rationalizing the deployment of personnel so that they are enabled to spend more time with their families or at least function as close to their home towns as possible. Constantly living up to the motto “Service and Loyalty”, this multi-dimensional force has come to be regarded as the most dependable internal security force of the nation. I will always cherish the many years that I had spent with this great Force when I also had the opportunity to understand and appreciate the complexities and problems in various parts of our country.



CRPF Jawan frisking at a check-post in North-East

A Cadre of Cats

— A.V. Liddle, Ex-DGP CRPF



Study materials distributed to local children as a part of civic action programme

Humour in the CRPF is unique in many ways. It can certainly never be classified as buffoonery, satirical or irreverent, and is rarely at the cost of any individual. Usually, it is contributed by personnel who are sincere and deeply devoted to duty. They are not only well aware of the rules and guidelines on any subject, but are zealously committed to follow them. In a nutshell it is always serious business.

In all operational areas, to avoid compromising security, officers holding various ranks in the unit are called by different psuedonyms. For example the commanding officer is called “Tiger” the adjutant is called “Lion”, the second-in-command “Lamb”, (for some mysterious reason) and the medical officer “Sheep”. Other functionaries are variously called “The Elephant”, “Panther” and such other animals.

One of the facilities provided to officers posted in the North East is that dependant family members of the officer concerned can visit him, either individually or collectively, once an year at Govt, cost, if the family is not staying with the officer. On one such occasion during my tenure as DGP Manipur, the Subordinate Officer at the rear Head Quarters of a CRPF unit at Dimapur was deputed to receive the wife and daughters of CO and put

them in the upconvoy for Imphal from Dimapur. He performed the task entrusted with all sincerity and zeal, and as the convoy departed, sent a radio message to the unit :- *"Tigress with two Female Cubs left for your location at 0630 Hrs."*

The second-in-command in command in a unit, is, as a general rule, not a very popular person. This is because of the very nature of his duties. As he stays most of the time at the battalion head quarters, he is called upon to head most of the courts of enquiry-thereby constantly treading on the corns of one or the other colleague. However, just as dawn follows every dark night, he gets an opportunity to settle scores when the CO proceeds on his annual leave and he holds current charge at the unit. On one such occasion, the unit Doctor happened to be at the receiving end. The latter tolerated for some time, but when he could not bear it any longer flashed a signal to the DIG : *"In the Absence of Tiger Lamb Harassing Sheep"*



Patients under examination in a free medical camp put up by CRPF

Units deployed in some locations which become snow-bound during winters have to stock provisions to last through winter. A certain Dr. Bhattacharjee was posted to one such forward unit. To ensure proper reception and transport he intimated his train no. and expected time of

arrival through a radio message. His instructions were carried out carefully, but he was not amused to find three five - tonner trucks instead of jeep or Jonga to take him. During transmission of the message “Bhattacharjee” had become “Butter Achar Gee” and hence the convov!!!.

A very fastidious CO was on his round of the unit grainshop. He decided to carry out a surprise check of the holdings of various items. Many of these were found short in weight. On being asked for an explanation, the SO incharge submitted that it was the doing of rats (of which indeed there was no shortage) and he did not know what to do about them. The CO ordered a court of enquiry under the Chairmanship of the second-in-command with the adjutant, the medical officer and the head clerk (to check the accounts).

The enquiry was meticulously done and various suggestions that came up were carefully examined to “shift the grain from the chaff”.

The first suggestion was to use rat poison. The doctor rejected it outright for two reasons. Firstly it could contaminate the grain leading to chances of food - poisoning and secondly, because rat poison did not find mention in the MSD vocabulary (which he referred to) of medicines which could be indented or purchased locally.

A second suggestion was purchase of a rat trap. But his was truned down by the Chairman himself. Being the vigilance officer of the unit he was convinced that the trap was open to be misused by unscruplous subordinates for killing their own private rats during off-duty hours.

The third and final suggestion which came up before the committee was to procure a cat for the unit. This found favour with most members till the Head Clerk pointed out certain “Operational difficulties”. His first observation was that to sustain the cat, milk and bread will have to be purchased which will definitely be objected to by the Auditors. To get over the problem it was suggested to get a formal sanction for the appointment of the cat with an authorised scale of rations (as in the case of police dogs) from the Govt. This also did not satisfy the Head Clerk who quoted instructions from the department of personnel and training, Govt, of India that “creation of single post cadres is to be discouraged since at a later stage it leads to stagnation and consequent frustration in the individuals who hold such posts”.

TERRORISM, HUMAN RIGHTS AND CRPF

—T.G.L. Iyer, Ex-DGP, CRPF



Justice J.S. Verma Chairman NHRC presenting Human Rights debate competition trophy to Dr. Trinath Mishra, DG, CRPF

Terrorism is understood by peo pie but they cannot define it. Like sweetness, it can only be tested. Experts have tried to define it from various angles. The political definition describes it as unlawful acts of violence in an organised attempt to overthrow the Government. A social definition is that the terrorist uses it as a weapon to coerce and intimidate others. An economist's definition says that all progress is arrested due to turbulence, fear and panic. A philosopher's approach describes that Terrorism is good because it releases abundant energy which has only to be harnessed for constructive purposes. A definition on the spiritual plane says that when it hurts the conscience, it is Terrorism but when it liberates the conscience it is freedom. A last definition is that Terrorism starts where clean politics ends.

We must remember that a new civilization is being bom uprooting old

values, tradition and norms. This is a global phenomenon. Violence is one of the manifestations. The epoch and era of a peaceful society has ended. A restless existence of man is unfolding. The reasons attributed to this phenomenon are, population explosion, the widening gap between the 'Haves' and 'Have-nots', the disintegration of family life, the dominant presence of science and technology changing the style of living, the restlessness among the rebellious younger generation, erosion of the credibility of the State, a general defiance of law, the mass migration of humanity from one region to another, State terrorism on the people, and the snapping of Yesterday from today and tomorrow. In this uncertain atmosphere terrorism thrives.

The origin of terrorism is dated back to the Jacobins, their agents and partisans in the French revolution. It can be practiced by patriots and traitors making it a virtue or evil. For example, Marshal Tito, Sukarno and Castro became liberators. Menachim Begin starting as a terrorist became the Prime Minister of Israel. Chiang-kai-Shek, Marshall Stalin and Mao Zedong practiced State Terrorism and liquidated millions of their own innocent people. A UNO report says that about 3 million people in all parts of the world have been executed summarily during the past 15 years. In our country, Bhagat Singh was branded as a terrorist by the British, but we look at him as a Martyr in the freedom struggle.There-fore, terrorism derives various shades of meanings in different contexts.

Terrorism started in Punjab in a small way and was built up into gigantic dimensions through indiscreet handling by the Government. A phenomenon like Bidranwale was created to fight a political battle and the phenomenon became a legend later. Military action followed to liquidate him and his followers, but Terrorism did not subside. Police officers and men had to sacrifice their precious lives to put down Terrorism. A Hero like KPS Gill had to appear on the scene who had to adopt unconventional methods to liquidate Terrorism. A Chief Minister (Beant Singh) and Prime Minister (Indira Gandhi) lost their lives as a backlash, but Terrorism in Punjab was effectively uprooted.

Terrorism was shifted to Jammu & Kashmir. It became a religious war. The Pundits of J&K were driven out of their homes; their business mainly of carpet-making collapsed; the Tourist income of the State dried up; the Army and para-military forces were inducted into the state in a big way. Minor

incidents like Ambush of a convoy by Terrorists escalated into attacks on camps and nerve centres of the Army and Para-military, which spread further into a suicide attack on the J&K assembly secretariat. Human casualties increased and many VIPs including the Chief Minister of the State and Home Minister and the Prime Minister of the centre figured in the Terrorist Hit-list.

Pakistan became the training ground for Terrorists supplying arms and funds to the men fighting a proxy war. In the two wars of 1965 and 1971 between India and Pakistan the latter realised that it had no chance of winning a regular war on the battlefield especially after its eastern wing of Bangladesh got separated from its main body. Pakistan found that a Proxy war could keep the confrontation with India on the boil. Regular soldiers of Pakistan's Army in plain clothes, Afghans, and floating mercenaries who had nothing at stake or anything to lose became the backbone of cross-borderTerrorism. Along with military training, religious indoctrination was undertaken to make the fighter terrorist a diehard enemy.

In this scenario, units of the CRPF were inducted in a big way along with other Para-military forces to back up the J&K Police. The Army has a big presence from the time Terrorism shifted from Punjab and started striking roots in J&K. The Army and Paramilitary have suffered heavy casualties losing precious lives in shadow-fighting. There has been no relief or let up in spite of diplomatic offensive to solve the issue. New laws are being enacted (POTO); new strategies are being worked out. The Prime Minister, Foreign Minister and diplomats have visited Russia, UK and USA in a new effort to put Pakistan on notice in the light of new developments in Afghanistan. Instead of playing with Terrorism, a new awakening has come among major nations of the world to exterminate Terrorism so that the world economy may return to a state of growth than decline; trade between countries may resume and the fear and panic of violence may subside. But it is a long journey which may last for many years because what has been done in the past has to be undone and new innovative steps have to re-establish sanity.

Lord Denning, a British Judge said : "If we never do anything which has not been done before, we shall never get anywhere. The law will stand still and the world cannot go on without it". In the new situation the CRPF have to change tactics. Instead of being a back-up force for the State Police, the

CRPF is now fighting with Terrorists, Naxalites, insurgents, and violent Agitators where the strategy of thrust and Retreat will not work. Fighting violence requires new strategies, equipment, training, planning, thinking and winning. The force has to grow in the midst of adversity and it has to grow a new philosophy after evaluation and experience, to get on to the winning edge from a defensive posture.



Vigilant CRPF men at Panchtarni-during Amarnath Yatra



Huge cache of Arms and ammunition recovered after an encounter at North-Bast

As Terrorism is based on fear, it has to be fought with the virtue of courage only. The choice is between a free society and a society kept under constant fear. As Ex-Secretary of State USA, George Shultz observed 'A purely passive defence does not provide enough deterrent to terrorism; More active defence is called for'. Courage comes only when you fight for righteousness. The State is a mighty machinery with unlimited resources; Still, it takes a long time to overcome these handful of diehards. This situation arises because politics gets involved while isolating the terrorists. If all the political parties could combine to fight terrorism, they can be subdued quickly. But this will not happen, because the terrorist is a useful weapon to beat the opponent. If all were to combine, there will be no sanctuaries, intelligence flow will be able to strike pinpointedly and results would be dramatic. But there should be a willingness to share the credit of victory and if that happens, vote banks cannot be built up. In the political battle to gain control of vote banks, the main issue is lost sight of i.e., to give the birthright of Freedom to the citizen as guaranteed in the Constitution. In Democracy, so long as the political parties of whatever shade they are, cannot keep the party interests subservient to National interests, no amount of effort can bring the desired results. The awakening has to come to the political parties, not to the Terrorists who are already

awake.

In the midst of the spread of Terrorism, the concept of strengthening Human Rights has arisen. A new breed of lawyers, and social workers have now come together in a big way talking about value of Human life, Fundamental Rights, objection to apply unorthodox methods and necessity of dealing with the Terrorist under the normal laws. Well, a Terrorist is an abnormal person and a normal law cannot subdue him. The days of 'Dharma Yuddha' at Kurukshetra are over. A terrorist war is like fighting a shadow as there is no regular enemy to fight with. Normal laws can apply in normal situations. An abnormal situation requires unorthodox methods to handle.

Common man is concerned with results and not methods. Therefore Human Rights has relevance only up to a point when innocent people including women and children are mowed down. But when the security of the citizen is in jeopardy, we cannot talk about Human Rights, values, misuse and so on, because this can be practiced only by the law-abiding, and not the law-breaker who is a Terrorist; who has no value for his own life and for the life of others. Like in an ICU (Intensive Care Unit) we cannot talk about the patient to have patience where the remedy has to be given instantly, Human Rights Activists should only ensure that money-making through misuse and legitimate voices and demands are not suppressed through misuse of stringent laws. Beyond that, they should wait for normalcy to return and then raise their voice to establish Human Rights, as the suppression of Terrorism should not escalate into suppression of Civil liberty guaranteed under the constitution. Like stringent laws cannot be misused to suppress an adversary, Human Rights demand should not dilute stringent measures to put down Terrorism. Human Rights activists have many other areas to operate apart from Terrorism like ex-ploitatiorl of children, bonded labour, atrocities against women, favouritism, corruption and so on.

Every one believes in something when it is accomplished. The CRPF is required to accept a continuous chain of challenges. Like gold which is cleaned by passing it through fire, the force has to develop the strength and resilience to withstand calamities. Crisis management is the need of the hour. Leadership in the force at all levels has to accept the ground realities and lead the men to capture new heights. Whereas the Army has to fight only one or two wars in the life of a soldier, the CRPF has to fight a war

every day eternally. This predicament leads to battle-fatigue and this is the area where leadership and team work have to play a vital role to prevent it. The force has withstood many crisis situation and has not wilted. Many more crises will come. The training and preparedness have to be oriented to meet them effectively.

Police Public Relations

—P.P.S. Sidhu, IGP CRPF

The origin of police forces in various societies can be traced back to ancient times and was necessitated by the need felt by society to keep members of its social group within the approved patterns of social behaviour. Police, therefore, has a very close relationship with society. The ancient Indian concept of governance was that Dharma and Danda. While Danda symbolised the coercive power of the State, its arbitrariness was tempered by Dharma, which represented the moral and spiritual application of the power. Kautilya's Arthshastra refers to a detailed police organisation for policing units of villages and the application of Dhandaniti to regulate human conduct by punishment. Similar embrynic forms of policing existing in ancient Egypt, Mesopotamia and Imperial Rome.

The police is colsely entwined with the national culture and reflects the society from which it is drawn. The police, as Withan A Westley puts it, is "intimately related to the community in which it is located and which it serves." How does one define the police ? The type of polity existing in a country shapes the character of the police. In a rigid authoritarian dictatorship the police functions principally as the coercive arms of the state to enforce the dictates of the state and stifle discontent. In a benevolent democracy the police, like other government departments, has to serve the people and thus, apart from its role as a law enforcer, it also has a social role in the furtherance of social-political objectives of the state. Broadly speaking, the police, as it exists in various countries, could be defined as : (i) A law enforcement agency, (ii) An arm of the executive government, (in) The protector of rights and liberties of citizens, (iv.) A social service and agent for social change, (v) Having role in political development, (vi) An

agency to create a healthy environment for economic development.

These indicate that the police has a very close and pervasive relationship with the public. A police force responsive to the needs of society is essential to create the proper environment for the furtherance of the social objectives of the state.

In a democratic environment, healthy public reations are essential for any organisation to bring about a qualitative improvement in its administrative capabilities and also in achieving its targets. In a democratic society the public, through its elected representatives, is involved in laying down policies and executing them. Government departments involved in the application of such policies should therefore be accountable to the public. The degree, to which a government department is able to establish its relations with public and elicit their confidence, will reflect the extent to which it will be regarded as being successful or capable. This also applies to the police. In other words, the confidence which the public reposes in the police depends upon the extent to which the police work measures up to the public expectations.



Blood donation is a regular feature in civic action programme of CRPF



Sports item distributed among local

Police Public Relations Through the Ages

Maintenance of law and order has, through the ages, been the primary responsibility of any government. It is well known how difficult it can be to effectively maintain law and order in the absence of good public relations and public support. Therefore since the ancient days, the stress had been on maintaining good relations between the governed and governance. As the police,or its precursors of ancient days, represented the coercive power of the state at the grass root level, this directly translated into good relations between the police and public. In ancient days, governed by the concepts of Dharma and Danda, the law enforcers worked on the principle of local responsibility and mutual help. This appears to be evident from Kautaliya's Arthshastra and Emperor Ashoka's administrative arrangements. During the middle ages, the benevolent and decentralised character of governance changed. It become more centralised and militarized, and government oriented. It lost its public oriented character and the schism between the public and the enforcers of public security gradually came and kept widening. During the colonial period the situation became worse. The police

forces in the country were established with the objective of making them an instrument of colonialism for the commercial exploitation of the people. The police was organised to further the interests of the colonial rulers, rather than that of the public. Consequently, for the police in India from its days of inception in its present form during British rule, there was no requirement to establish a rapport with the public. The police was not a servant of the people but of the state. It was not accountable to the people, its main role being to enforce the British Raj. It was but natural that a mutual feeling of distrust, fear and seclusion should come up between the police and the public. The situation came to such a pass, that the Frazer Commission (1902-03) was constrained to observe that the state of police in the entire country was most unsatisfactory.

With the freedom from colonial rule, it was expected that the police would shed the repressive character which it had inherited from the British period, and would mould itself to the democratic aspirations of the people. This did not happen as expected. The police continued to be used as an instrument of the government (read ruling party) rather than as a medium for social upliftment. Consequently, the schism between the police and the public remained. The Indian police has traditionally been restrictive and negative in its working. It has always been seen as the coercive arm of the state, and consequently, usually finds itself in a situation of confrontation with the public. For example, during a public agitation against a public utility such as the electricity department for erratic electric supply, or the municipality for poor water supply, it is the police, which has to interpose to maintain order and protect property. In event of a firm action by the police in such situations, the ire of the public usually gets transferred to the police, adding to the negativity of public perception of the police.

Police Role in Economic and Social development

The police have a very important role to play in the socio-economic development of the state. The government has embarked on well-considered programmes for the socialupliftment of the masses, removal of social disparities, economic development and environmental protection. These are critical areas where the police have an important role to play. A country’s population is its wealth. India has a vast human resource potential which can be the engine for its economic development and its rightful place amongst the world powers. However, because of social inequalities and prejudices,

this potential instead of being an asset, is a liability. The police has a role in achieving the social objectives of a society free of prejudices and restrictions by enforcing the social legislations in the true spirit. As the principal government agency at ground level, with the authority to interpose and enforce the success of the police in this direction can only be gauged from the effectiveness and smoothness with which it is able to do this.

Till recently police was not recognised as having any role to play in economic development. This view is changing gradually. Industrialisation and job opportunities go hand in hand. It is the duty of the police to create a healthy climate for economic development by maintaining law and order. Some years back there was an exodus of entrepreneurs from western U.P. bordering Delhi due extortions, kidnappings, criminal intervention in placements and other like activities by mafia. The districts comprising Meerut Division contributed almost 30% of the revenue of UP Criminalisation of the area had seriously threatened the revenue earnings from the area. It led to a massive revamping of the police force in the area with mobile patrols and greater presence on the roads. Police have a role in environmental protection too through the enforcement powers given to them. Environment effects the state of health of a nation, upon which there is no need to amplify. All these are areas directly affecting the public. The police cannot work in a vaccum or without public accountability any longer.

It is an accepted fact that good police public relations are the prerequisite for a healthy law and order situation. The police have to work in society and cannot afford to distance itself from the public and work in isolation. It has to create an environment where the public is not hesitant to come forward and depose evidence. This is only possible if the public reposes confidence in the police and in its ability to give them protection.

Building Healthy Police Public Relations

A healthy relationship between the police and the public is essential to create the proper environment for the police to discharge its responsibilities effectively. The police can contribute substantially in building up this environment through the following steps :

(a) The police have to project a friendly attitude. The colonial projection of fear has to be replaced by a helpful police. Human rights and values should be given the highest priority. There should be respect for humanity.

(b) Transparency in police working. Police work encompasses many fields. There would be areas such as intelligence where secrecy has to be maintained, But in general day to day functioning, the public should be able to understand the rational behind decision making.

(c) The police was evolved to maintain social order. Social order, over a period of time, has been codified into law, which govern various facets of society. The police are, therefore, duty bound to uphold the law. The police should function apolitically without succumbing to external pressure.

(d) The policeman has to build the image of being a protector of the socially weaker sections - the downtrodden, inform, women and children. There are many areas where the socially weaker sections approach the police for succor, but are often turned away on the plea that no cognizable is made out and there the police cannot interpose. Helping a needy person to approach the proper authority for the mitigation of his problem will go a long way in building up the police image.

(e) Free and fair registration of crime. For various reasons, police stations are reluctant to register crime. This has a two-fold effect. Firstly, the victim is harassed and is made to run from pillar to post to get the FIR registered. Secondly, criminals are emboldened to commit more crime because wihout the registration of the case they cannot be brought to book.

(f) Associate the public in policing. The concept of community policing is being actively pursued by various police forces. This includes concepts like neighbourhood watch schemes. Because of the greater level of police interaction, the public perception of the policeman will automatically undergo a change.

(g) Organise social events like sports contests. The tribals of W. Bengal had been traditionally anti-establishment and reluctant to approach the police. Their hostility was broken by annual sports events organised by the police. Traditionally mothers have tried to get their children to behave by holding out the threat of a policeman. The police can only break this psychological fear if it actively associates itself in social programmes and works in accordance with the expectations of the public.



Study materials distributed to school children as a part of civic action programme

(h) Performs the functions and duties reposed in it by law.

Rapid Action Force - A Social Organisation in Uniform

— G.M. Srivastava, IGP, RAF

Growing influence of fundamen talist organisations and spread of communal violence by them necessitated creation of a Force to deal exclusively with communal riots. Govt, of India, therefore, decided to set up a Force for this purpose. Thus the Rapid Action Force was raised in October 1992 by converting 5 CRPF Bns to RAF Bns and 5 more Bns were added later.

The Force is primarily designed and utilised to handle communal riots or riot-like situations.The Govt, of India may, however, deploy it for any law and order. Duties in case of grave emergencies, and also to undertake

disaster management during natural and man-made calamities. Force also undertakes socially useful work by organising medical camps, cultural programmes, adult literacy programmes, sports events and other activities for the benefit of the community. Socially useful work not only benefits the society at large but also helps build a good and favourable image of the Force. RAF has played a vital role in Pulse Polio Campaigns too.

The motto of RAF is to serve humanity through sensitive policing. It seeks to control the situation with use of minimum force. The aim is not to kill or maim but to dissuage the rioters. Once the situation is brought under control, they immediately take up the work of providing medical aid to the victims of the riot and their evacuation to the hospital. Yeoman services rendered by RAF during 1993 floods in Delhi. 1994 Plague in Surat, 1995 floods in Punjab and Himachal Pradesh, 1999 Super Cyclone in Orissa and 2001 Earthquake in Gujarat has made RAF an object of icon and respect among the affected masses.

RAF follows the principle of “use of minimum force”. Handling of a riotlike situation by the RAF involves 8 different stages i.e. (i) Pursuation, negotiation and appeal, (ii) Warning against use of force through banners and loud speakers, (iii) Use of coloured water and water jet from water cannon, (iv) Use of tear gas, (v) Use of Shock Batons, Rubber Truncheons, (vi) Use of Lathis, (vii) Use of Rubber Bullets and Plastic Pellets and (viii) Use of actual bullets.

This Force is armed with sophisticated equipment, which come handy while handling communal riots and other riot-like siuations. These include shock batons, rubber truncheons, rubber bullets and plastic pellets, which though non-lethal are effective deterrents.



Shri Babu Lal Marandi the Chief Minister of Jharkhand inspecting the 9th RAF Anniversary Parade, at Jamshedpur

To maintain separate identity, the RAF personnel are given a distinct and separate uniform. While on operational duty, they wear blue/light blue striped overalls (Dungarees).

The Force is equipped with special tear smoke munitions and stun grenades apart from normal riot control equipment. The stun grenade which produces a resounding bang with blinding flash with temporary stunning effects helps disperse mobs without injuries. The dye marker grenade which stains the clothes of rioters helps to identify active participants during post riot operations.

Our goal is to achieve excellence in our performance by maintaining "Zero Response Time". The Govt, has authorised adequate transport to achieve total mobility for all the Bns of RAF to enable them to reach scenes of riots with least possible delay. The composition of vehicles has been designed to provide self contained mobility at Team, Platoon and Coy levels. 'VAJRA', a state of the art riot control vehicle, fitted with multi-barrel launchers, first aid box, a generator and emergency flood lights, had proved immensely effective in controlling riotous mobs.

Training is a regular feature in the RAF. On joining RAF, every SO/OR has to undergo conversion training to familiarise himself with the working

of RAF. Besides this, they also has to undergo specialised courses like Human Rights, First Aid, Fire Fighting, Rescue and Relief, Disaster Management and Tear Smoke, etc. About 4000 personnel undergo various courses at various locations in the country during a year. Officers are given orientation training on ‘contemporary social realities’ in special courses organised for them, in which renowned Police Officers and academicians share there thoughts and ideas with the participants of these courses. All ranks of the RAF are also acquainted with broad principles and practice of various religions to enable uninhibited interactions. They are also made aware of inter community misunderstandings and prejudices. Encouraged by the success of RAF, many State Governments have been approaching Dte. Genl, CRPF, to train their Armed Force personnel on the pattern of RAF. So far the RAF has trained the Armed Force personnel of the States of West Bengal, Karnataka, Goa, Uttar Pradesh, Rajasthan and Delhi.

Familiarisation Exercises are conducted to familiarise force personnel with the terrain, local leadership, area of responsibility and to equip themselves with all necessary information, which may be required for dealing with communal riots or riot like situations which may occur at these locations. In addition, the objective of this exercise is also to collect intelligence in respect of the area of responsibility, communal situation and mischievous elements of the area. These exercises tend to reduce inter community and inter-caste tension among members of vairous communities and castes. Besides, these exercises bring the force in close contact with the people so as to enable them to know each other from a close angle. It also enables RAF to act effectively without help from a paralyzed civil administration in the event of major riots. In view of increasing caste consciousness and general intolerance amongst various religious castes and communities role of RAF has become all the more significant and demanding, which call for more professionalised training for them in crowd control, rescue and relief and disaster management.



Gujarat quake-victims provided medical aid by RAF team

Although RAF is still a young Force, it has rendered commendable service to the nation and community at large. It has proved itself as an instrument of service to the society. This Force will continue to grow in stature as time passes by. RAF had its first exposure in UN Peace Keeping duties when one Coy consisting of 123 personnel was deployed in HAITI as part of Military Police from 30 March '95 to 2 December '95. The Force did very well there. Again the RAF got an opportunity to send a contingent of two Special Police Units consisting of 240 personnel for UN Peace keeping duties in Kosovo in May, 2000 and are doing very well. In a short period of time, the Force has come a long way living upto the expectations of the people and the Government. The RAF have instilled confidence in the people, who are looking to this Force with a renewed hope in the changing internal security scenario in the Country.

MISSION

The mission of the **Central Reserve Police Force** shall be to enable the

government to maintain Rule of Law, Public Order and Internal Security effectively and efficiently, to preserve **National Integrity** and promote **Social Harmony** and **Development** by upholding supremacy of the **Constitution.**

In performing these tasks with utmost regard for human dignity and freedom of the citizens of India, the force shall endeavour to achieve excellence in management of internal security and national calamities by placing **Service and Loyalty** above self.

CRPF AND ITS CIVIC ACTTION PROGRAMME

— Dr. K.K. Saini, Director (Medical)

While the jawans of CRPF are a most sought after persons in the country for their neutral policing and patrolling in the difficult and deteriorated law and order areas, the medicos of CRPF are no less a penetrating force to go into those areas and to ease out the pains and agony of the terrorized/ailing persons of the area through civic action programmes.

Going into the grief stricken population in the terrorist prone areas of the North East region, particularly in to the remote villages of Assam where scanty medical facilities are available, the Doctors and the Nursing Staff of this force have won the hearts of the people with their healing touch and Medicare. In one of the most shocking ambushes at Nagaon, one of the politically most sensitive areas, jawans of CRPF had been killed and some other ctirically injured. In a befitting response to the dastardly act, the CRPF Medical staff arranged a grand free-medical camp within a week of the ambush and at a distance of only few yards from the site of the sacrifice of blood of their fellow men. This act had not only created an overwhelming sympathy for the CRPF but also several requests received from the men of the locality for an extension of the medical camp for a few davs more.

A long caravan of medicos of CRPF containing Gynecologist, Medical specialist, Surgeon, Eye/ENT specialist and others, along with male and

female nursing staff, medical equipments and appliances, pathological laboratory etc are often seen in the different terrains of Assam in the far-flung areas as a part of Civic Action Programme. In the medical camps free medical facilities, medicines, lab investigations etc. have been provided to the sick persons irrespective of their caste, creed and religion. Language of the locality has become no bar for treatment to a suffering person since it was the human feeling and healing touch that mattered much more than feeling or hatred, terror and separatism exhibited by a few misguided fellow men of our country.

Several such memorable civic action programmes have been conducted during the height of terrorism, namely at Nagaon, Goriamari, Amingaon, Chhayagaon, in and around Guwahati city etc, all the terrorist prone areas where thousands of men and families of the locality have reported for their ailments to these medical camps. While medical treatment were extended to all the age groups, the prophylactic vaccination programmes were also conducted time and again during the Pulse Polio Immunization programmes and civic action programmes for the children over the period of years.

The civic action programmes are not just a health camp, they are infact a big festival where not only patients of the nearby areas come for treatment, but also the prominent persons of the area come to join hands with CRPF for plantation of the saplings in the village, attend the sports activities like Volley ball and Foot ball competitions etc. conducted by CRPF amongst the different teams and then to distribute books and prizes to the children. A large number of daily used articles and eatables sold by canteens of the unit in a reasonable rate are also the most favoured attractions of the population which get prominence in the civic action programmes.

The above multifarious activities in the civic action programme have not only brought the goodwill, co-operation and liking for our force, but also there have been exchange of ideas and ideology which play a major role in transformation of the sick minds of the misguided, anti social youths of the area, but also give a ray of hope that we will definitely sooner or later win over their hearts and minds.



RAF Mahilas helping in Pulse Polio Campaign

Human Resources in CRPF

— O.P. Singh, DIGP CRPF



Shri G.Jha, Addl. DG, *CRPF pinning up rank in an officer after POP of 33rd batch of DAGOs at ISA, Ml Abu recently*

The objectives of any personnel branch of an organization broadly revolve around effective utilization of human resources, desirable working relationships and maximum development of personnel working there. Due to its all India character, both in deployment and its composition, CRPF has played a very vital role in maintaining unity and integrity of our country and ensuring safety of the democratic fibres by engaging itself against subversive activities of militant groups in J&K and North-East, violence perpetrated by the left wing extremist groups and general law and order duties in various parts of India. In an organization like CRPF having almost a permanent presence through out the country with a strength of 140 battalions including 10 Rapid Action Force, 2 Mahila, 5 Signal battalions and a Special Duty Group, the role played by personnel branch of the organization cannot be over-emphasised. Harmonising various functions of such a big organization starting from the first step, recruitment, to the last step, retirement, the activities of this branch of CRPF not only include timely promotion, building satisfaction around job through placement, evaluation of its personnel through performance appraisal and manpower planning, but also identifying critical areas with respect to its human

resources and accomplishment of organizational tasks through formulating and monitoring various schemes within the organization.

Recruitment in CRPF

There exists a detailed recruitment policy in CRPF for all Non-Gazetted as well as Ministerial personnel of various ranks right from enrolled followers to Sub-Inspectors within the organization. Basically designed to fill slots at lower levels of hierarchy with persons having relevant, requisite qualifications and experience who would be able to discharge responsibility of the posts, the recruitment exercise also takes into account manpower planning of the organization. Recruitment policies of various levels lay down ‘job specifications’ such as qualifications, age, physical standards, etc to ensure that the right type of personnel are recruited. With a view to have desired age-spread i.e. distribution-mix of ‘new-blood’ and ‘old-hand’ as well as fast-track promotion, CRPF recently conducted **Limited Departmental Competitive Examination (LDCE)** for Assistant Commandants and SI (GD) for its personnel. At Assistant Commandant level, while there is 50% quota for direct recruitment through SSB, 17% vacancies have been earmarked for such Sub-Inspector (GD) and Inspectors who have completed four years of service in these ranks including period of training with clean record of serivce. Similarly, in case of SI(GD), Head Constables and Constables with minimum four years of service including training period have been made eligible to go for such selection. This year, we have recruited 27 personnel as Asstt. Comdt. and 13 personnel as SI through LDCE.

The following features are incorporated in Recuitment Policy of CRPF-

- Age for the candidates for the rank of constables should be between 18 to 23 years subject to 5 years relaxation for SC/ST and 3 years for OBC candidates.

- Minimum educational qualification should be matriculation or its equivalent for constable candidates.

- Besides possessing the prescribed physical measurements, each candidate should qualify in PET by securing at least 15 out of 25 marks. PET, consisting of race, long jumb and high jump, is intended to assess good physical fitness of the candidates.

- A written examination would be held to test the general awareness, mental

ability and aptitude of the candidates.

- Open advertisement with wide publicity to attract as many aspirants as possible.

- Medical fitness and antecedents should be satisfactory.

- Interview with 15 marks with weightage for participation in NCC, Sports, Scout & Guides, proficiency in computer and other trades relevant to CRPF.

- Relaxation is provided to wards of CRPF as welfare measure to its personnel.

Transfer Policy in CRPF

Being a highly mobile force with wide spectrum of duties being performed by its personnel, CRPF faces a major concern with regard to placement of its officers and men. Increasing frequency of short notice movement, deployment in far-flung remote places mostly in North-East and J&K, prolonged stay in inhospitable terrain away from families, social isolation at places of deployment are some of the issues which plague personnel branch in matters of placement of the personnel of all ranks. With a view to increase the effectiveness of the organization in terms of operational efficiency, to increase versatility and competence of key positions, to correct erroneous placement, to provide creative opportunities and last, but not the least, to provide relief to its personnel of various ranks in consideration of the interest of age, health, education of children, housing difficulties and to join immobile dependents, CRPF has a well-delineated transfer policy for all ranks. As Standing Order on the subject says, **“Though the organizational goals and the individual needs are at variance, there is a requirement to evolve a policy which meets both aspects. The policy, therefore, has to be balanced, pragmatic, transparent and to cater for the organizational health as well as individual needs.”**



Passing out parade of 90th batch of Recruits



In case of GOs, a new policy has been introduced that on appointment/promotion to the rank of Assistant Commandant, an officer will be posted to a duty battalion only and will continue to remian posted there, in the normal course, even after promotion subject to availability of vacancies, till he attains the rank of Second-in-Command or Commandant, after which he will be posted out of the Unit. The introduction of this policy has brought in a concept of a parent battalion for each officer joining CRPF.

The policy in case of GOs (Executive) also incorporates these broad features:

- All DAGOs will be required to complete minimum 3 years to become eligible for posting to static institutions or deputation to SPG or NSG.

- Even after deputation or special assignments in Training institutions/ SDG/RAF/GC etc, the officer will be reverted back to his parent Unit.

- All officers, even if moved out of battalion on compassionate/medical ground, will revert back to their parent Unit after completion of their tenure.

- Routine transfers from battalions which were in practice earlier, will not be made now.

- Keeping in view of number of static posts available and opportunites for deputation, an officer can expect a maximum of 3 static postings in a career span of 30 years.

- Officers retiring within 2 years can be considered for choice terminal posting subject to the condition that they did not have such posting in the preceding 3 years.

The policy in case of NGOs (Executive) contains the following broad guidelines :-

1. A fresh entrant to CRPF should be posted to a duty battalion and not to a static institution or Group Centre.

2. A stay for minimum 6 years in field will entitle him to seek choice posing and for second choice/static posting, he shall have minimum 10 years field service from the date of availing last static posting.

3. Normal stay on posting in a Group Centre/static institution/office should not be more than 3 years.

The Transfer Policy is well-delineated and exhaustive document in

which stipulations regarding placements of GD personnel to SDG and RAF have been codified. It also details procedure for screening for SDG and RAF besides stipulations on utilisation of Mahila personnel in CRPF

Deputation Policy in CRPF

CRPF personnel are sent on deputation to SPG, NSG, NPA, Ministry of External Affairs, Public Sector Undertakings, etc under a well-defined Deputaion Policy of the organization. Eligibility criterion in respect of age, service condition and education are defined under this policy for deputation to various organizations. The personnel branch maintains a panel of all wilding and eligible personnel for deputation and nominations of which are forwarded by concerning Sectors in a designed format once in a year in every November. A condition is put that the number of persons of any rank sent on deputation should not exceed 10% of the sanctioned strength in that rank. In case of SPG and NSG, however, such condition does not apply. At present, there are 125 personnel of various ranks who are on deputation to organizations like IB, SPG, NSG, Indian Oil Corporation, Ministry of External Affairs, Delhi Police, BHEL, Prasar Bharti, Lok Sabha Sectt, NCB, Delhi Vidyug Board, Bureau of Civil Aviation and Security, HMT, etc.

Promotional Prospects of GOs

The eligibility period fixed for promotion of GOs has been considerably reduced enhancing greater avenues. Thus while in case of promotion from Inspector to AC, the residency period for promotion has been reduced from 5 years to 3 years in our new recruitment rules formulated recently. In case of promotion from DC to Second-in-Command, the required residency period as DC is reduced from 5 years to 2 years, From Second-in-Command to Commandant, it is reduced to 2 years from 4 years. Similarly, in cases of COs to ADIGs and from ADIGs to DIGs, the residency periods have been brought to 2 and 1 year respectively from previous requirements of 3 and 2 years. In respect of promotion from DIG to IG, necessary residency period to remain as DIG has been brought down to 2 years as against 4 years earlier.

Recent Initiatives

It is expected that careers of personnel in terms of placement, promotion and mobility should oscillate within the above mentioned parameters of a

broad organizational framework. However, sometimes they do not happen that way in real life situations. Personnel Management is not a one-shot exercise but a functional continuum incorporating and internalising all the on-going, forward-looking and evolving things that constantly happen (or made to happen) to human beings engaged at different levels in a huge organization like CRPF. Thus with a view to achieve what may be called “human side of tomorrow”, recent instructions have been issued and devoted towards **greater openness** and **transparency** in functioning of this organization. With a view to give due opportunity to the officers and men of the Force, to be heard in person in order to redress their grievances, DG holds interview of such personnel every Friday from 1700 hrs to 1900 hrs. Officers of the rank of Commandant and above visiting Delhi are expected to call on the DG during their visit to Delhi on any date.

In area of recruitment of ASI (Steno)/HC (Min), the procedure for evaluation of answer sheets has been changed and now they will be evaluated through computer, centrally under the arrangements of the concerned Addl. DG or IGP.This has been done for the first time in CRPF to make the recruitment process quite transparent and fair without any extraneous considerations.



Demo on Gymnastics

The growth in size of organizations like CRPF and the growing emphasis on human components within such organization require that we must analyse the strength and weakness of the existing infrastructure; our internal support-system, the typical career patterns that require to be moulded according to the particularistic needs; the elements that go into evolving and installing an effective career development programmes, etc. In fact, proper integration and harmonious balance between the personal and organizational interests are badly needed for 'survival and growth' for both CRPF and its personnel.

Tactical Appreciation in Counter Insurgency Operation

— Brig. (Retd.) Govindji Mishra, VSM, DIG (Training)

With the increasing involve ment of CRPF in counter insurgency and anti-terrorist operations in different parts of the Country, Officers of the Force have to involve themselves in planning and execution of such operations both at unit/sub-unit and formation level. Operational planning demands a very systematic approach to consider all aspects related to the task. The terrain and demography, insurgent activities and their modus operandi, resources available and various restrictions imposed on conduct of operation, all need to be analysed in detail before arriving at any workable plan. Though every commander with trained mind, when confronted to a problem, carries out a quick thinking before arriving to a solution, step by step approach suggested for a tactical appreciation helps in arriving at most balanced and best possible solution to the problem. The aim of this article is to briefly outline the technique of tactical appreciation in counter insurgency operations.

Appreciation is a logical reasoning and analysis of a problem, leading to the best possible solution. It is a review of the tactical situation based on all available information which has or may have a bearing on the problem culminating into a plan of action. Though whenever a problem is confronted, an instinctive reaction comes to the mind. However, when every aspect of the problem is considered, this instructive reaction may not always be right. In tactical planning where life of men is involved, a balanced plan of operation, having considered all aspects of the problem is extremely essential. Appreciation is carried out in four stages : (a) Consideration of the back ground of the problem or “review of the situation” and considering various “terms of reference”, (b) Defining the problem - to arrive at the ‘aim’, (c) Analysis of the problem to consider various factors related to the problem so as to draw deductions leading to likely courses of action for accomplishment of the ‘aim’, (d) Develop alternatives and find solution, Analyse various options available and arrive at the best possible course of action.



New weapons and new tactics are integral part of our strategy

In an appreciation for Counter Insurgency operations, review of the situation becomes most important part. Review of situation implies analysis of the task along with any stipulations laid down. It forms the back ground and confines of the problem. At higher level this may include discussion of the broad picture of the situations, political direction and any other factor affecting selection of the ‘aim’. This normally includes consideration of complete background information about the militancy affected areas to include causes of militancy, militant groups, their modus operandi and extent of popular support to the militant's cause. The success and failures of Security Forces, attitude of Government towards the problem including international opinion, socioeconomic condition of the area and directions given by Government/higher authorities. Having discussed all these, some terms of reference will emerge. A term of reference is any restriction or limitation or stipulation placed by the higher authority on the achievement of aim and for conduct of operations. The terms of reference in Counter Insurgency operations may relate to no killing of innocent civilians, no destruction/damage to civil property; no harsh control measures, the authority to co-ordinate the operation, any time limitation and so on.

Having reviewed the situations and arrived at various terms of reference

we come to second stage of appreciation which is arriving at the ‘aim’. ‘Aim’ is the statement as to what actually is to be done in the given situation. Selection of correct ‘aim’ is most important in the whole process of appreciation. To evolve the aim in a Counter Insurgency Operations, one should ask questions like What is my task ? What does it involve ? How far I plan now ? What is the political aim? In a task of general nature in Counter Insurgency, some of the possible aim would be: to carry out effective Counter Insurgency Operations or to restore normalcy in the area so that civil administration can function smoothly.

The next stage is consideration of ‘factors’. A factor as per concise Oxford Dictionary “Circumstance influencing/contributing to a result”. A factor is defined as a statement or series of statement of facts, having bearing on the ‘aim’ from which deduction can be drawn. The purpose of considering factors is to arrive at logical and feasible course of action to achieve the ‘aim’. In a Counter Insurgency Operations of general nature, important ‘Factors’ which need consideration are: (a) Terrain and Population to include terrain in general, roads/tracks, village/towns, rivers, nullahs and other obstacles for movement, civil administrative/police setup and demography of the area having their effect on accomplishment of the aim. (b) Militant organisations, their modus operandi and external support. Consider various reactions of insurgents/militants against operation of Security Forces. (v) Own strength and available resources for the task and how best they could be deployed (assessment of troops to task). (d) Psychological operations including civic action and media management for winning hearts and mind of people. (e) Time and space for general deployment and conduct of specific operation. (f) Administration and logistics. (g) Surprise and deception, specific to an operation.



Briefing operational plans of the naxalite hit Malkangiri area on sand model during re-union seminar at Neemuch

To consider a factor in detail, relevant sub-factors and their ingredients are arrived at by asking series of questions pertaining to the factor. For example, if you have to carry out a raid on insurgent's hide out and you are considering 'ground' factor some of relevant questions may be, where is the hide out located and what features are dominating it ? Answers will give the lay out of the 'hide' as also possible places where early warning elements may be deployed which will have to be secured or avoided. Similarly, another question. How can I approach the 'hideout' ? Answer will give likely routes and means of transportation and so on.

Aim of consideration of various factors is to draw deduction which is basically conclusion drawn from a factor which suggests or rules out or modifies or limits a course of action. To draw deduction each factor is examined for its effect or influence on attainment of the 'aim'. The method to arrive at a deduction is to consider a fact and ask the question "so what" till no further answer to "so what" is available. For example, if you have to raid a "hide-out" and you are considering various approaches, the 'so what" method is illustrated below : (a) My move from RV to hide-out along southern approach is open and may be observed from High Ground (a statement of fact). So what ? (b) It means insurgents will be able to observe my move from High Ground (an effect). So what ? (c) My move therefore is

likely to be interfered from High-Ground (an inference). So what ?

At this stage no further answer to so what may be forth-coming and therefore you have reached the stage of drawing deduction which may be : (a) I should move along Southern approach only by night, (b) I should secure High Ground before approaching the hide-out.

The above has suggested a course of action and, therefore, is a correct deduction.

Having considered various factors and drawn deductions, it is now possible to evolve likely opinions available to achieve the ‘aid’. The methods of achieving the aim are the courses open to a Commander. A course, in-fact is plan in outline. Since insurgents will also react to any course of action, it is important that their reaction is also considered against our possible course of action. Since insurgent/ militant normally have the initiative, courses of action should be considered in the following sequence : (a) Examine the courses open to insurgents and discuss their likely-hood and effect and decide as to which is most likely course he is expected to adopt. (b) Examine own course of action in the light of most likely insurgent course of action by considering their advantages and disadvantages. (c) Select the best course of action which is likely to achieve the aim.

Once the appreciation is complete and the preferred course of action has been selected, it should lead to a plan for the accomplishment of the ‘aim’. Based on various deductions pertaining to the selected course of action, the out line plan should be drawn.

To conclude, for a balanced plan of operation, it is essential that all factors are systematically considered, deductions drawn to evolve possible options and best course of action selected after proper evaluation keeping in mind the possible reaction of insurgents. This consideration will also throw up some of the weaknesses of your plan which once known should be taken care of by any Commander. In certain situation, it may not be possible to carry out a detailed appreciation as outlined above. A Commander may carry out a quick appreciation by assessing his tasks and mentally considering important factor leading to most likely course of action. As a matter of fact, a mind trained to think logically will find it very easy to tackle any problem in day-to-day life effectively.



Officers attending the briefing session on "Tactical Appreciation" by DIG Training

Sports-2001 : A Saga of Success

Inspite of heavy operational com mitments, regular sports activities in the Force have continued through out the year. It has been possible to hold Inter-Battalion and Inter-Sector competitions in almost all disciplines as planned and our sportsmen and women have excelled in National and International sports arena where ever they have got a chance. For sports enthusiasts, the year commenced on a very happy note when the President awarded the prestigious Arjun Award to our Olympion Weight Lifter Inspector (Mahila) Sanamacha Chanu for her performance during the year 2000. She became the 8th CRPF Sports person to receive this honour.

Our domination in All India Police games have continued. In 15 sports events conducted during the year so far, CRPF teams have secured 7 first, 4 second and 3 third places. For the third consecutive year our men and women Athletic teams have won Gold. The swimmers have retained their supremacy in the pool having won 16 Gold, 13 Silver and 3 Bronze medals in recently concluded All India Police Swimming Championship held at

Goa. At the same venue, our Cross-Country runners in both 4 Kms and 12 Kms race have secured first position. The Hand Ball team has kept up its lead by winning Gold medal again this year. The Gymnasts and Women Weight Lifting teams are also winners.

At the National level, our first success came this year when in January-2001 at Kolkata, the Wrestling team representing West Bengal State won National Federation Cup in free style having won 12 medals. This success was repeated immediately by the Weight Lifters representing All India Police Sports Control Board team in Senior National Weight Lifting Championship-2001 held at Visakhapatnam having contributed 7 Medals for Men and 15 Medals for Women Police team. Performance of our Judokas have been equally impressive. In Senior National Championship held at Lucknow in March-2001, our Mahila Team who won the championship secured 9 Medals and Men's team 4 medals. The Kabaddi team though had to remain contended with only second position in All India Police Games, they have won most of All India level tournaments this year including prestigious Chhatrapathi Sivaji Gold Cup Kabaddi tournament held at Latur in April, 2001. They also have the distinction of winning National Kabaddi Championship representing Delhi State in recently concluded National Games. The Karate team again won 4th All India Karate Championship held in October at Meerut by winning 4 Gold, 2 Silver and 3 Bronze medals. The Hand Ball team, however, remain satisfied only with the runner's up position in 16th National Hand Ball Federation Cup for men held at Haldwani (Uttaranchal). One can justifiably feel proud on the achievements of our sports personnel in National Games-2001 where CRPF men and women have won a total of 57 medals including 21 Gold, 18 Silver and 18 Bronze. Inspector Vikas Pandey of the Force representing UP State was declared best sportsman of the Country having won 7 Gold medals.



Weightlifter Sanamacha Chanu receiving Arjuna award from Shri K.R. Narayanan the President of India.



Shri Babu Lal Marandi, the Chief Minister of Jharkhand giving away the Women's Championship trophy to CRPF team at the recently concluded All India Police Athletic Meet at Jamshedpur

In the International Sports arena, our winning spree started with

impressive share in the World Police and Fire Services Games hald at Indianapolis, USA where 9 sports personnel of the Force brought 28 medals; 17 Gold, 7 Silver and 4 Bronze. The indomitable trio of Mahila Weight Lifters comprising of Miss. N. Kunja Rani Devi, AC, Inspector (M) Pratima Devi and Inspector (M) Nandini Devi won two Gold, one Silver and three Bronze medals in Senior Asian Weight Lifting Championship held at Jeonju (Korea) in July, 2001. Our Wrestlers, Judokas, Swimmers, Taekwondo and Kabaddi players have represented the Country in international events and won medals for the Country; notable among them are SI Kuldeep Singh Gold - medal in 4th Asian Kabaddi Championship at Bangkok, HC Sandeep Kumar - Gold in Wrestling, Insp. Kailash Nath and Richa Mishra - Bronze in Asian Age Group Swimming Championship. Insp (M) Richa Mishra also won "Golden Dolphin" award of Alliance International Youth Affairs and Educational Society. It will not be out of place to mention here that 10 sports personnel of CRPF comprising of 3 Athletes, 3 Wrestlers, 2 Weight Lifters and 2 Judokas were honoured by Ministry of Sports and Youth Affairs for their excellent performance in International sports.

Organised sports has been an integral part of the Force culture. Our sports personnel have brought glories to the Force and to the Nation. The annual medal tally for the year-2001 given below is fully illustrative of their performance :

	G	S	B	Total
International Events	24	10	13	47
Nationals	51	46	46	143
All India Police Games	56	43	28	127

Sports in the Force is "On the March".

— Brig. (Retd.) Govindji Mishra
VSM, DIG (Training)

MANAGING THE CHANGE

— D.C. Dey, Addl. DIGP

Change is a universal truth that has been taking place since the birth of the Universe whether one liked it or not. The evolution of human also came through the same process of change. Everyone experiences change in one's own self as well as all around. Yet it is ingrained in human nature to react adversely to change. Our tendency towards a changed situation is to react and when normal conditions are restored then we immediately tend to return to the routine.

Another fact of Universe is that at the initial stage the pace of change is rather slow, but as the time passes the pace increases and it is continuously increasing due to accelerative thrust. A vivid example of which is the IT revolution in last one decade. This thrust is being forced upon through more knowledge, more diversity and more novelty in our lives.

We all have personally experienced these change all around us, in the social, economic, political, religious, ethnic, ethical etc. fields. Infact in every field that one can think of, changes have being taking place. The changes within and around our Force have also been there. For example, the background from which today's youths are joining us, perhaps could not have even thought of 25/30 years back, the environment under which force was working in seventies and eighties of the last century, is no longer the same and we all are aware of it, yet we have not perhaps able to handle these changes as we should have and perhaps also could have.

When these inevitable changes have taken place and are continuing to take place with increasing pace, we have to learn how to manage the changes and the best way to manage is to prepare ourselves to find ways to harness the Force of change, not to impede the change but rather to develop strategies to harness the change. Thus, changing the attitude of ourselves towards the inevitable changes, is the necessity and the only answer. But seldom anyone amongst us welcome change and be proactive towards the changes taking place around us. We rather try to handle changed situation/circumstances with our old mind set and strategies.

The three main enemies of change can be identified as under :- (i)

Pessimism : The ideology, “It is no use making any effort, things will remain in a mess. We are prisoners of Forces beyond our control.” (ii) *Adhocism :* The philosophy of, “Let us tide over the present problem, the future will look after itself.” (iii) *Complacency :* The idea of, “It could not be better. Things should now work out at their own.”

A bit of self introspection by us will perhaps prove the above statement. Any individual or organisation when makes itself open to attack from these enemies of change, finally gets faded out.



Self contained pouch recovered from militants in J&K

How to identify anybody who is averse to change ? There are few typical syndromes/beliefs to be found in such a body, such as :- (i) Field operations should be closely directed from the Headquarters, (ii) None below a certain rank of the managerial cadre is intelligent or responsible enough to have concrete ideas. (iii) The chief executive and his managerial staff know always what is best. (iv) The seniors are always right and anyone offering criticism, however justified that may be, seen to be the enemy. (v)

Adherence to rules which was originally prescribed as a means becomes an end. Rules and procedures become ritualized with no scope for any flexibility and policy manual is used as weapon against dissenters rather than a guide and purpose for which it was initially framed.

When the enemies of change are so identified, they can be effectively tackled as under :

(i) The Pessimism can be overcome by developing the quality of positive thinking and optimism that changes are for better.

(ii) To overcome Adhocism one needs to come out of the cocoon of insulated existence and straight jacketed one track mind set and be able to understand that in today's world one can not move from crisis to crisis hope for the best in the intervening period and leave it, at that.

(iii) The worst enemy is the Complacency-leaving things at their own. This can be overcome by perseverance during preparation which makes one fit to face and tide over crisis when it comes. Constant alertness helps to obviate lapses likely to be caused by complacence.

Identifying the enemies of change and initiating steps to overcome them, at self level, one can fully arm himself to manage the change. One also has to visualize that his subordinates particularly at the middle hierarchy, perceive change as bad news. They tend to see the change as an impingement on their time tried and secure professional existence. The reluctance to move forward with the change, if left un-addressed, will create an inertia that will slow down and even stop progress.

Therefore, the need will be to clear the doubts of the subordinates by being more flexible and approachable. Individual interest will have to be made subordinate to the organizational goals and all concerned will have to work in an atmosphere of Team Spirit and decisions may have to be taken in ambiguity in the initial stages when nature of changes could be vaguely defined. Thus, the unidentified start to manage the change would require trial and error forays into a totally uncharted territory and the change agents, the managers, would have to guard against a slide back by providing firm direction let the doubts of subordinates be defrayed by constant briefing discussion about goals, roles and procedures. The impression to be given is that it is a team effort and all have to sail or sink together while facing the turbulence due to the change.



Demo on new equipments given during Training Seminar held at Neemuch during this year

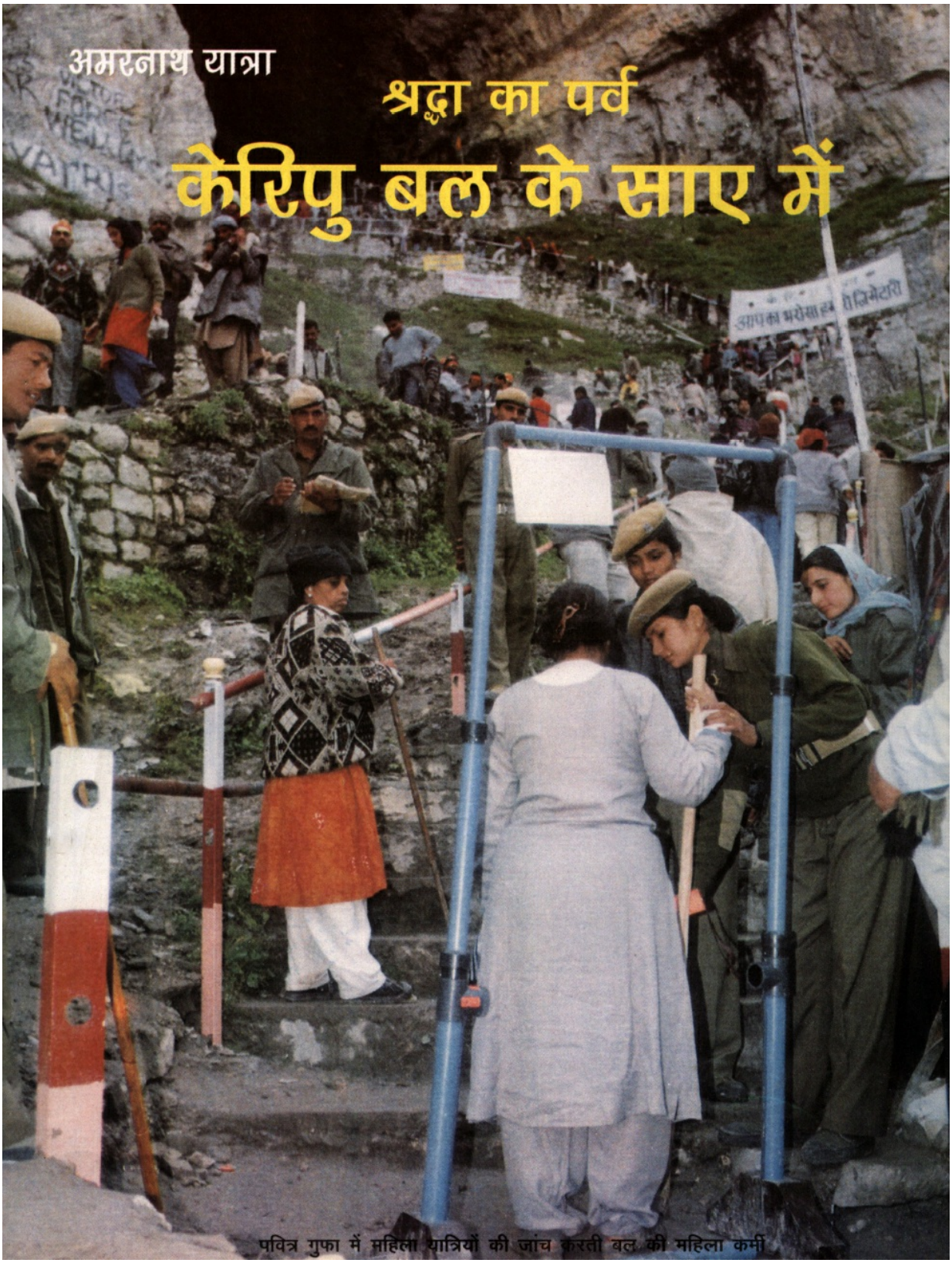
To conclude, following quotations appear to be very appropriate for us on this very important issue :

(i) “Successful Police Managers will be those who learn how to understand, accept and manage change. Issues of compelling urgency and increasing complexity emerge from physical, economic and social change and policy and decision makers need to develop skills in recognizing change factors and must implement the appropriate action. (Favreau and Gillespe-Modern Police Administration).

(ii) “The most common cause of executive failure is inability or unwillingness to change. The executive who fails to understand this, will suddenly do the wrong things the wrong way even though he does exactly what in his old job had been the right things done in right way.” (Peter Drucker)

(iii) “Ever if you are on the right track, you will get run over if you sit there” (Will Rogers)

Reference : “Not a Licence to Kill”
Shri Rajendra Shekhar



पवित्र गुफा में महिला यात्रियों की जांच करती बल की महिला कर्मी

संसद पर आतंकवादी हमला

विफल हुआ केरिपु बल के जवानों के फौलादी इरादों से टकरा कर



प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी संसद भवन में आतंकवादी हमले का सामना करने वाले केरिपु बल के जवानों का अभिवादन स्वीकार करते हुए

हर आतंकवादी हमला अपने पीछे कुछ शौर्यगाथाएं छोड़ जाता है। इन गाथाओं के नायक और नायिकाएं हमेशा अपने अन्य सहयोगियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहते हैं। यही हुआ 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद भवन पर हुए आतंकवादी हमले में भी
-

इस हमले में कुल मिलाकर सात वर्दीधारी अपनी जान कुर्बान कर वतन के लिए जान देने वाले शहीदों की कतार में शामिल हुए। पांच जवान फर्ज को अंजाम देते हुए शहीद हुए तो बाकी इसलिए गोलियों की बौछार झेल गये ताकि बाकी लोग सुरक्षित रह सकें। पांच शहीद हुए वर्दीधारियों में एक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 88 महिला बटालियन की कांस्टेबल कमलेश कुमारी है। बाकी जवान दिल्ली पुलिस सहित संसद की सुरक्षा में तैनात अन्य जवान हैं।

इस घटना में वीरगति को प्राप्त हुई कमलेश कुमारी इस घटना में शहीद हुयी अकेली महिला हैं। उन्हें श्रेय जाता है कि उन्होंने अपनी जान पर खेलकर इस हमले के बारे में संसद परिसर में तैनात अन्य सुरक्षा बलों को सचेत किया।

13 दिसंबर, 2001 को हुआ यह हादसा कई कारणों से हमेशा याद किया जाएगा। याद किये जाने वाले कारणों मे से एक होगा, संसद परिसर में तैनात केरिपु बल जवानों की तुरंत कार्रवाई, जिसने एक बड़े हादसे को टाल दिया। अगर आतंवादी अपने मकसद में कामयाब हो जाते तो शायद दिल्ली के 13 दिसंबर को, न्यूयार्क के 11 सितंबर बनने में ज्यादा देर नहीं लगती। केरिपु बल के जवानों की तत्परता इस कदर थी कि हिंदुस्तान अखबार ने "..और वह बिना कमीज पहने राईफल लेकर निकल पड़ा" शीर्षक से अगले दिन खबर छापी -

"सच में ही सीआरपीएफ देश की शान है। जिस तरह जवानों ने आज अपनी जान पर खेलकर देशभक्ति की भावना का परिचय दिया है, उससे साबित हो गया है कि जब तक ऐसे सपूत हैं देश को कोई खतरा नहीं है। यह कहना है संसद भवन के एक कर्मचारी का, जिसने संसद भवन में हुए खूनी खेल को अपनी आंखों से देखा।

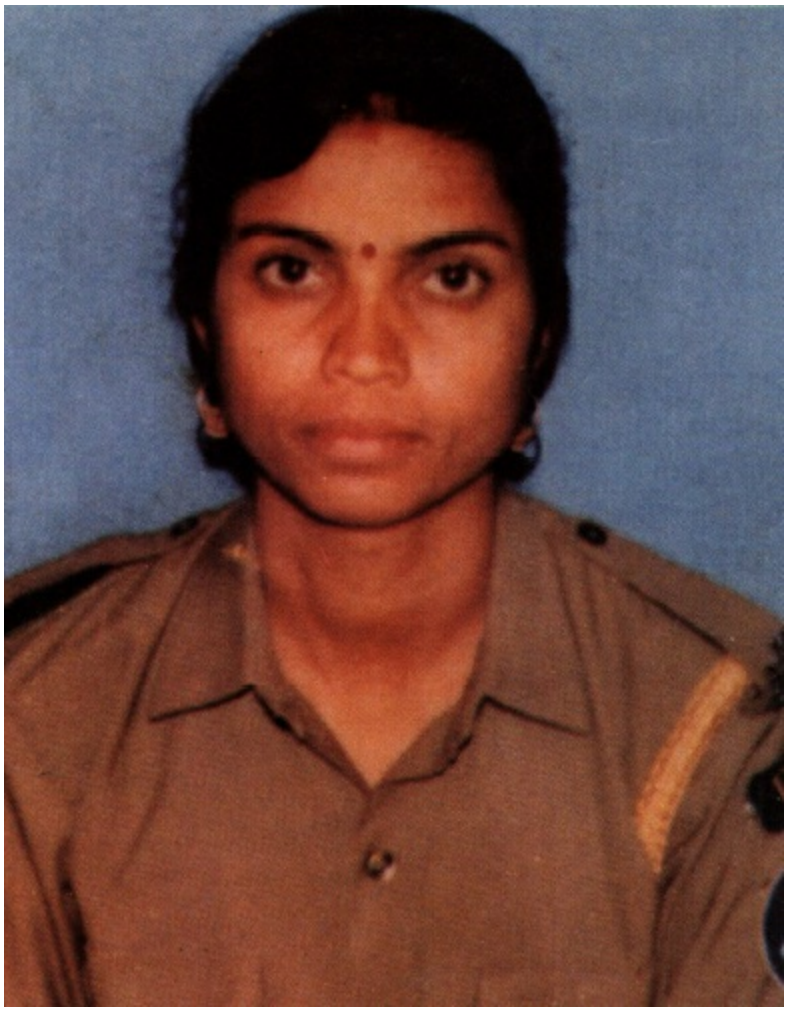
उक्त कर्मचारी ने अपना नाम न छापने के अनुरोध पर बताया कि वह परिसर में ही खड़ा था कि अचानक गोलियां चलने की आवाज सुनाई दी। इसके बाद दिल्ली पुलिस के सुरक्षाकर्मियों ने उसे कहीं छिप जाने को कहा। तभी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल सीआरपीएफ का एक जवान राईफल लेकर बाहर की ओर लपका। हैरत की बात यह है कि उसने मात्र पेंट ही पहन रखी थी। दिलेरी के साथ उसने आतंकियों का सामना करना शुरू कर दिया।

उक्त कर्मचारी ने सीआरपीएफ जवानों की दिल खोल कर प्रशंसा करते हुए कहा कि आज जिस तरह सीआरपीएफ के जवानों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए आतंकियों पर जवाबी हमल किया, उससे देश के प्रत्येक नागरिक को सबक लेना चाहिए। उसने जवानों की तरीफ करते हुए कहा कि इस वाकये ने साबित कर दिया है कि जब तक देश के ऐसे सपूत हैं देश की आन को कोई खतरा नहीं हो सकता। संसद भवन में माली का काम करने वाले मनोहर लाल शर्मा भी सीआरपीएफ के जवानों के प्रति नतमस्तक दिखे। उन्होंने बताया कि इन जवानों ने देशभक्ति की एक अनूठी मिसाल कायम की है, जिस पर प्रत्येक भारतवासी फक्र कर सकता है। उन्होंने बताया कि किसी भी जवान ने अपने प्राणे की रत्ती भर भी परवाह नहीं की और आतंकियों को ढेर कर दिया। श्री शर्मा के अनुसार यदि सीआरपीएफ के जवान तत्परता न दिखाते तो इस हमले के परिणाम और भी गंभीर होते।"

एशियन ऐज में छपी खबर के मुताबिक प्रत्यक्षदर्शी उद्यान विभाग का एक कर्मचारी बाबू राम कहता है, जब गोलियां चली, तो मैं और मेरे साथी अपनी जान बचाने के लिए भागे। देशराज जो पौधों को पानी दे रहा था, गोलियों से छलनी हो कर वहीं ढेर हो गया। सीआरपीएफ के जवानों ने तुरंत फायरिंग का जवाब दिया और आतंकवादियों को मार गिराया, इससे पहले कि वो अपने मिशन में कामयाब होते।

14 दिसम्बर, 2001 के अखबार केरिपु बल के जवानों की बहादुरी के कारनामों से भरे पड़े थे, हिंदुस्तान टाइम्स, टाइम्स आफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, स्टेटसमैन, पायनियर, जागरण, नवभारत टाइम्स और दूसरे लगभग हर अखबार ने केरिपु बल

के जवानों की तुरंत कारवाई और प्रेजेंस आफ माइंड की भरपूर तारीफ की है। जवानों की जरा सी चूक भारतीय लोकतंत्र की चूलें हिला सकती है ये बात, कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता और देश सेवा की शपथ से बंधे जवान जानते हैं। यही वजह है कि बिना एक पल गंवाये किसी भी खतरे के सामने कूद पड़ने के उनके प्रशिक्षण ने ऐन वक्त पर काम किया और चार दहशतगर्दों को संसद भवन के अंदर कोई कहर ढाने से पहले ही ढेर कर दिया गया।



88 महिला बटालियन की कांस्टेबल कमलेश कुमारी

दुश्मन के इरादे चाहे जो भी हों, मन्सूबे बांधने के लिए वह स्वतंत्र है, किन्तु उसका हर मन्सूबा, हर इरादा हमारे जवानों के फौलादी वतनपरस्ती के जज्बे से टकराकर ढेर हो जाएगा। देश आश्वस्त रहे उसकी हिफाजत का जिम्मा केरिपु बल का है, और इस जिम्मे को बल के जवान अपनी जान पर खेल कर भी पूरा करेंगे। उसी तरह जिस तरह 13 दिसम्बर को संसद भवन के गेट नं. 1 पर 33 बटालियन के हेड कांस्टेबल वाई.बी. थापा और कांस्टेबर सुखबिन्दर सिंह ने किया, आत्मघाती आतंकवादी को ढेर कर। जिस तरह अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह गेट नं. 5 पर 23 बटालियन के कांस्टेबल

श्यामबीर सिंह और कांस्टेबल विजय बहादुर सिंह ने किया दूसरे आतंकवादी को ढेर कर । जिस तरह गेट नं. 9 पर 23 बटालियन के कांस्टेबल डी. संतोष कुमार, कांस्टेबल कुलवंत सिंह, कांस्टेबल मफतबल, कांस्टेबल सत्यवान और कांस्टेबल काली मैथ्यू ने किया तीन आतंकवादियों को ढेर कर।

प्रेस/मीडिया रिपोर्टों पर आधारित

पिड एक्शन फोर्स

वतन की पहरेदारी के 9 सफल वर्ष



आरएएफ की नौवीं वर्षगांठ के अवसर परेड में शामिल केरिपु बल ध्वज



रैपिड एक्शन फोर्स की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री बाबू लाल मरांडी को स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



परेड में शामिल आरएएफ का दंगा नियंत्रण वाहन वज्र

नीमच में पुनर्मिलन सेमीनार



केरिपु बल जन्म स्थली नीमच में *1971* बेच के अधिकारियों के पुनर्मिलन सेमीनार के दौरान महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र का स्वागत करते अधिकारी



1971 बेच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी पुनर्मिलन सेमीनार में



महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र जून *2001* में इंडियाना पोलिस अमेरिका में हुए विश्व पुलिस एवं फायर गेम्स

में शामिल बल के खिलाड़ियों को बधाई देते हुए। इन खेलों में बल के खिलाड़ियों ने *17* स्वर्ण, *7* रजत एवं *4* कांस्य पदक जीते।



केरिपु बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र भोपाल में हुए अखिल भारतीय पुलिस खेल-*2001* के विजेता केरिपु बल के खिलाड़ियों के साथ।

केरिपु बल कल्याण प्रदर्शनी



केरिपु बल कल्याण मेले का उदघाटन करती केरिपु बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा मिश्र

CRPF'S PRANAV MANTRA :

JAIKAR - LALKAR

—S.S. Rawat, Addl. DIG (OPs)



CRPF Jawans on firing exercise

War cries like बन्दे मातरम, हर हर महादेव, बोले सो निहाल, etc., are familiar from mythology to historic times. They are nothing but Jaykara and Lalkara which acts as a catalyst for converting group energies into spontaneous synergies in the war front/battle fields.

Being one amongst the oldest Para Military Forces of this continent, CRPF was initially created as the Crown Representative's Police during the colonial rule for primarily dealing with the unrest in British times. It was later renamed as CRPF for doing multifarious duties from sentry roles to guarding borders to wield ladhies in group control during post independence period providing succour and relief for the striking calamities. Its versatility, flexibility and mobility became synomin and provided a distinctive character since inception. In the last three to four decades time, this mother Force gave birth to offsprings such as BSF, ITBP, CISF each having some

specialized role of taking over border protection, strategical installations, etc. Being experienced the Force was selected by the Centre to deal exclusively with the internal security scenario.

Existing diversities like cultures, habits, practices of topography and environment coupled with rising expectations of the modern era gave rise to multifarious problems akin to threaten the internal security of a developing country like ours, where CRPF is being put to test while dealing with such crisis situations. Wherever deployed, the Force could successfully nullify those destructive forces that are disturbing peace, tranquility and integrity of this country.

Conventional wars are rare nowadays but disguised proxy wars like fighting insurgency come up demanding attention of CRPF to deal with these under existing internal security scenario, leading to stretching its feet beyond the capacity at times in the field, causing tension or hazardous duties clubbed with anxiety of separated family's welfare, nomadic nature of duties etc. not only mounting threat on those serving in CRPF but also adversely affecting their psyche and efficiency. To negate and counter such a causing concern, a positive way of orientation/meditation through emotional integration is felt essential and this gave birth to the Pranava Mantra “CRPF सदा अजय भारत माता की जय” which means CRPF is ever invincible, victory to the mother land, providing spontaneous integration of groups impelling them to achieve their goal/target.

The need for such a jaykara and lalkara should be understood. Basically Army in war front kills enemy to achieve victory as they deal with trans-border foes. Whereas while maintaining internal security, CRPF as confronted usually by disillusioned and misguided elements of our mother land who are otherwise the Indian citizens and the objective of this Force is not to kill them. More so, the Force has to remain invincible not only against its disgruntled brethren but other mercenaries even, for protecting the sovereignty and integrity of our country.

The first step in pursuing national goals in CRPF’s invincibility as it ensures defending the sovereignty and integrity of the nation even at the cost of attaining martyrdom. Thus, we recite “Bharat Mata ki Jay”.

Like the Sikhs during their historical struggle against Mughals have adopted reciting during every congregation, the anthem that “O Lord, give me boon that I never shun a righteous task, let me be fearless while I am at

the war front, aid me with faith that victory will be mine and the power to sing thy's praise and when the time comes to end my life, let me fall in a mighty strife".

Since disintegrated and turmoiled Forces within and outside this country have been intensely and nebulously trying to destroy our sovereignty and integrity, they need to be quelled. For this it is high-time now that we in the Force unitedly synergise and orient ourselves irrespective of caste, creed, rich, poor, religion, etc. demanding the need to rise, awake and be prepared to serve the clarion call of the duty to achieve the Force goal. Unifiedly let's proclaim the Pranava Mantra "CRPF सदा अजय भारत माता की जय".

CRPF, ever invincible, Glory to Motherland Bharat.



Mahilas aiming at target

Comrades-in-Arms

—Bhudeb Chakrabarti, DIG, CRPF (Retd.)



CRPF Mahilas undergoing weapon training

I was detailed to undergo a course in Weapons and Tactics in the Central School of Weapons and Tactics at Indore for a duration of twelve weeks from September to November, 1965. Then I was posted in 4 Battalion CRPF deployed in Manipur. After a long train journey I reached Indore and reported at the School. Central School of Weapons and Tactics was being run at that time by the Madhya Pradesh Police on behalf of the Government of India. The participants of the course came from various State Police Forces and Central Para Military Forces and were drawn from various ranks from Head Constables to Deputy Superintendents of Police. T.J. Quinn was the Commandant of the School.

The course commenced on the scheduled date. We were four officers in this course. N.K. Patnaik from Indo - Tibetan Border Police, Madhusudan Pathak from Madhya Pradesh Police and Raj Singh Phougat and myself from CRPF. All of us were quite young with hardly two-three years of service.

Our first job in the morning when it was still dark was to fall in on the queue to draw our .303 rifles along with bayonets and scabbards. After the strenuous workout with the bayonets, we were rewarded with the first break. We headed for a hurried breakfast and after breakfast we had weapons

training till the longer break for lunch. After lunch we again had bayonet fighting prior to more weapons training. Sometimes for a change we had assault courses, which happened to be more strenuous, particularly after a hearty lunch.

In the first phase of our training, we had mostly to do with weapons. The weapons selected were small arms like 303 rifle, stengun, Thompson Machine Carbine, LMG and .38 pistol and area weapons like 2 inch mortar, hand grenade and G.R Rifle. We also had to learn about riot guns, tear smoke shells etc.



CRPF men patrolling in turbulent area of Punjab

At the end of gruelling week, we had invariably a road run with full battle gear from our campus to the Bijwasan Hill which was not an inconsiderable stretch. The last lap was the most backbreaking. We were required to make a final assault on the double. When we reached the top of the hill we were always out of breath.

As the training progressed, we developed a lot of camaraderie with our fellow trainees. We seemed to forget all our rank distinctions and came to inculcate a rare esprit de corps. We found that many of the subordinate officers and under officers were better than us professionally and we the

officers felt the need to improve ourselves in all respects.

The theory and practice of weapons led to musketry training before we were put through CQB firing with .38 pistol, 9mm stengun and Thompson Machine Carbine and long range firing with .303 rifle and LMG. We also had the opportunity of field firing with hand grenade, G.F, Rifle and 2 inch mortar. The practice firing in the long range required us to spend the whole day in the firing range itself. What gave us considerable satisfaction was that we got plenty of time in between the various practices to lie down on the ground and have perfect nap.

The battle inoculation part was quite interesting although a bit hazardous. We were asked to move under LMG fire from LMGs on fixed line. We moved by making proper use of field craft to reach the finishing line without getting hit by bullets. We thanked our stars when we finished the exercise safe.

The next phase of our training was devoted to tactical operations. We had to put quite a bit of hard work for long hours through day and night.

We did not know how quickly the last phase of our training arrived. The final phase of training was to be conducted in the jungles on the bank of Narmada river. On arrival at the Jungle Camp, we set our camp first of all. We pitched our own tent for four of us. We were required to sleep on the ground. We had hurricane lantern for light during night.

Our jungle training started the next day. We had to toil very hard. There was no holiday. We had exercises day and night.

During the jungle training, we conducted a river crossing exercise on a river called Kaveri a tributary of Narmada. Kaveri was not that wide. We were required to cross the river tactically. We were of a platoon strength. All the three sections first took positions at strategic places with the advance party taking the rope from this bank of the river to the other bank. The rope was secured to the branches of trees on the respective banks. After proper signal from the advance party from the opposite bank, one section crossed the river with the other two sections providing the required cover. In the process all the three sections crossed. Patnaik, Phougat and myself who constituted the rear party were entrusted with the task of taking the platoon weapons like LMGs and 2 inch mortars with their accessories. We made an improvised raft, stacked the weaponry and wrapped them with ground sheets. First we untied the rope secured to the three on our side and

signalled to the opposite side to pull the rope to their side. Then we got down to the river with the raft. We took the raft safely up to the midstream. Then all of a sudden, the rift capsized and sank to the bottom of the river. We were totally dazed. We, however, regained our courage quickly. We dived to the bottom of the river to get to the raft. Initially our efforts were not successful. But then fortune smiled on us. We found the end of the rope attached to the raft. We now towed the raft underneath the water. Eventually we reached the other bank. We took the raft out of the water and then to the high bank with the help of the other members of the platoon. We unwrapped the covers of the ground sheet and to our great relief we found all the arms and accessories safe.

Inspite of the hectic schedules of the endless exercise we found our life in the jungle camp much better. We had better appetite and sound sleep.

Generally we went for our bath in Narmada river around midday after coming back from our exercises. Pathak was always on the bank as he was not conversant with swimming. One day Patnaik, Phougat and myself went for a swim in the river. We swam with the strong current of the river. From time to time we looked at our bank while swimming. Suddenly we saw Pathak struggling in the rather deep water away from the bank. We swam swiftly towards the direction of Pathak. When we were close to the place where Pathak was struggling, we saw the hands of Pathak going down the water. We dived and dived with the hope of getting to our drowning friend. We did not get any trace of him. We still did not give up. We swam further and dived in to the water again and again. When we did not get any trace of Pathak, we gave up our efforts.

The sad and unfortunate event cast a pale of gloom over the jungle camp. However we continued our exercises but in every exercise we badly missed our dear comrade Pathak.

Our jungle training camp came to an end after the Long Range Patrolling (LRP). Immediately on our arrival at Indore, We got busy with our final test we all passed the tough Weapons and Tactics Course.



Jawans undergoing Jungle Training

We left Indore for our units on conclusion of the course. We made many friends during the course. Over the years I lost touch with most of them and forgot many of them. However I never forgot Pathak during all these years. I feel I will remember him as long as I breathe and would cherish the memory of the days when we were comrades-in-arms.

Naxals bid to blast CRPF outpost foiled

—Shailendra Kumar, Commandant, 61 Bn, CRPF

Extremists of the People's War Group (PWG) made an abortive attempt to overrun an Armed Out Post (AOP) in Ramareddy town of Nizamabad district (AP) in the early hours on Oct. 31, 2001. The CRP jawans who were manning the outpost resisted the attempt forcing the PWG cadres to flee after abandoning a van.

The naxalites surrounded the AOP and began firing, but the CRP sentries who were alert repulsed the attack. The exchange of fire continued for more than 15 minutes.

—The Hindu dated Nov. 1, 2001

The Armed out-post of Ramareddy is situated on the road going from Ramareddy to Sirkanda. The post is 12 kms away from P.S. Kamareddy and two sides of the post is covered with thickest forest. The post is highly sensitive and is used as check post to curb dalams movements from jungle to Kamareddy urban area by conducting anti-naxalites operation under the guidance of Civil Police. PWG naxaiites and Macha Reddy dalam members are active in this area under the leadership of Mr. Gangula Venkata Swamy.

One SI and 24 ORs of D/61 CRPF and one ASI with one Constable of AP Police were deployed in the out-post. On 31st October, 2001 at 0120 hrs, one Motor Cycle and one Scooter seated with 3 personnel on each crossed the out-post, minutely watching the sentry standing in the Morcha on the roof top of the out-post. Within the gap of few minutes. at about 0130 hrs, our sentry heard the sound of a vehicle coming towards his post which halted for a while near a big tree and again moved towards the post. Watching the suspicious and unusual movement of vehicles during odd hours. Ct. Virender Singh Yadav who was performing sentry duty with LMG in the Morcha on the roof top, flashed dragon light continuously on the face of driver of the vehicle and cautioned to halt the vehicle for identification.



Dr. Trinath Mishra, DG, CRPF visiting the Rama Reddy post on 1.11.2001

The driver who observed the alertness of our sentry, jumped from the vehicle, leaving the vehicle in front of the out-post and fired upon our sentry deliberately. Our above sentry alerted the personnel and returned burst fire by LMG. Other miscreants also fired upon our post from the opposite side of the post. Our sentries retaliated the fire effectively and overpowered the situation. The fire was exchanged between CRPF personnel and PWG naxalites about 10 to 15 minutes.

The matter was immediately reported to the SP, Nizamabad by the Commandant 61 Bn and rushed to the site along with DC (Ops) and quick reaction team for reinforcement. The area of incident was searched thoroughly. The District Bomb Disposal Squad with dogs were also requisitioned who searched the site and vehicle left by the naxalites and found three heavy iron boxes loaded with gelatin explosives, four detonators and 23 Nos. five Kg. weights in each box lying with dual arrangement to ignite the explosive by remote control as well as timer devices covered under grain bags.

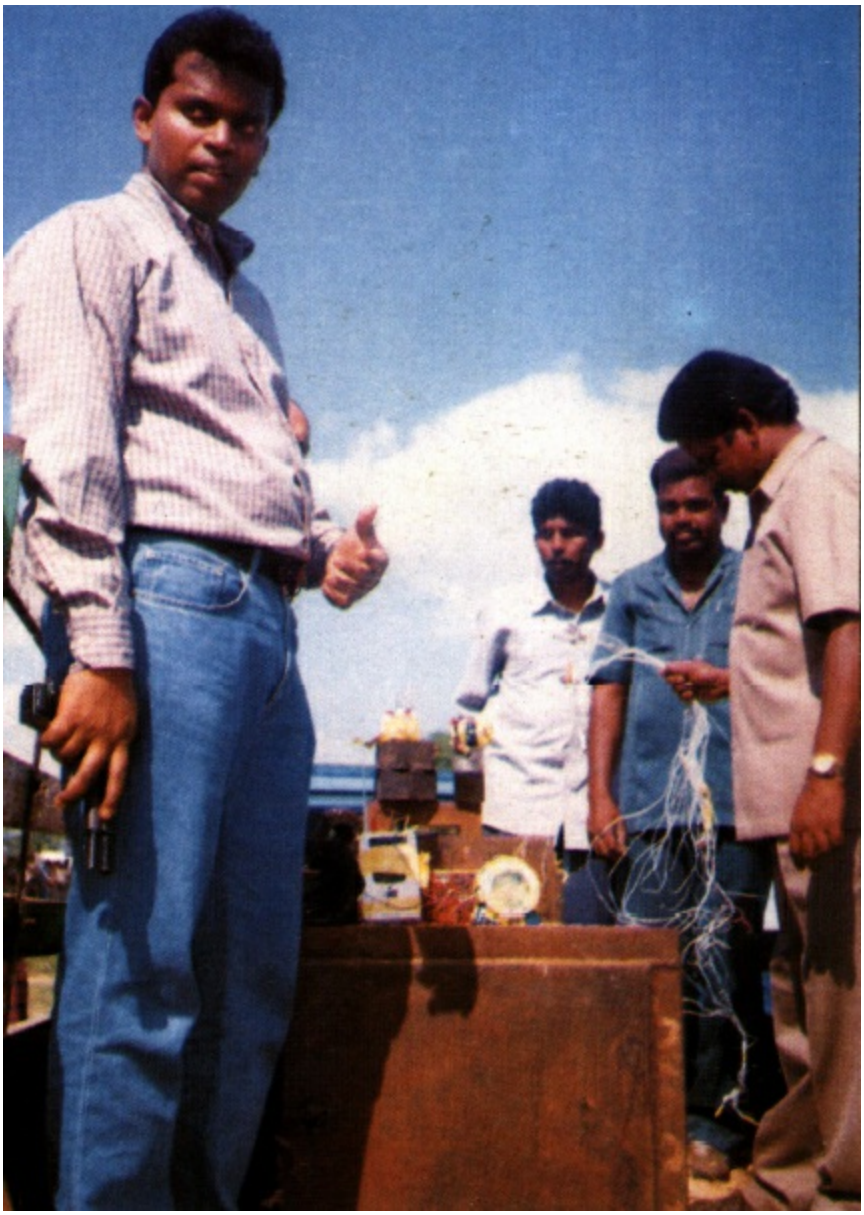
The Bomb Squad personnel also defused the mines found in the vehicle. Since the plan of attacking/ killing our personnel at armed outpost, Ramareddy and looting of our arms/amns. remained futile, the naxalites before leaving the site of incident, blasted three culverts on approach roads

at Gargul (on Kamareddy road), Uppalwai on road leading to Sadasivanagar) and in between Reddipet and Annaram (Road leading to Machareddy) to obstruct re-inforcement of the force from any other side. The naxalites also telephoned to the Police Stations, Kamareddy, Ramareddy Police out-post, Sadasivanagar and CI of Kamareddy by giving falls phone calls of robberies and invite them for trapping and killing.

The Police personnel tactfully tackled the situation and overted the trap and major mishap. The vehicle bearing Registration No. AET-8536 and other recoveries so made on the site were handed over to Circle Inspector-Kamareddy on 31st October, 2001 for further needful action. FIR has been lodged in PS Sadasivanagar by the ASI of the out-post.

The role of 61 Bn personnel deployed at Ramareddy post, in this operation has been highly appreciated by the State Civil Police authorities and local leading news papers. If the sentry at LMG morcha has not been attentive, the naxalites could have destroyed the entire armed out-post fully and their morale would have been up.

The SP, Nizamabad who rushed to the spot of incident, has appreciated the role of our personnel, and awarded cash reward of Rs. 10,000/- to sentry, Ct. V i r e n d e r Singh Yadav. The DGP, AP Police has also awarded cash reward of Rs. 20,000/- which was distributed among the platoon post personnel present at the time of incident.



Iron Boxes loaded with Gelatin explosive, detonator, Splinter and remote control/times device to ignite the explosive

It is also worthwhile to mention that Dr. Trinath Mishra, DG, CRPF who was stationed at Hyderabad also visited the platoon post on very next day of the incident and made a thorough analysis of the incident and came to the conclusion that only because of the alertness and intelligence of Ct. Virender Singh Yadav and prompt return of fire by post personnel, the post was saved from a disaster. He appreciated the prompt and intelligent action of Ct. Virender Singh Yadav and other personnel. A panel for reward has submitted to the DIGP, CRPF Hyderabad, as desired by DG, CRPF.

Homage to Police Martyrs

— M.P. Nathanael, Group Commander, NSG



At long last, my desire to pay homage to the police martyrs at Hot Springs near the Indo-China border was fulfilled. As a member of the Police Party that visits the martyrs memorial at hot Spring, every year, I could pay homage on September 5 this year.

On August 20, 2001 the police party that was to proceed to Hot Springs concentrated at the Police Officers Institute in Chandigarh. There were officers and men of all ranks ranging from Constables to Superintendents of

Police. The CRPF was represented by Shri B.P. Singh, Asstt. Commandant of 76 Battalion. A briefing session at the Institute had mentally prepared us for what was to come an arduous journey that demanded top physical fitness but amply compensated by stunning scenes all along.

The following morning, we were all heading in two buses towards Leh. Since the uphill journey was to be gradual with periodic halts for acclimatization, our first halt was at Kullu. By evening we were there.

On August 23 morning, we left Kullu. After an hour long drive, we were in Manali. Our first climb uphill was to Rohtang Pass, a mighty height of 3980 meters. By noon we had reached Marhi, 17 Kms short of Rohtang Pass. As the clouds descended, the weather turned cold and all of us were pulling out our woollens from our bags. A sumptuous lunch followed by hot tea, and were again heading towards Rohtang pass. Excitement mounted as we gradually ascended and we were soon at Rohtang Pass. It had started drizzling and the slippery descent on the narrow winding road kept us on our tenterhooks. Thanks to the skill of our driver, he negotiated the curves and sharp turns carefully. The cold weather and the light drizzle enhanced the pleasure of having tea at Koksar in Lahaul Spiti district of Himachal Pradesh. A lone police post with a few small hotels that specialize in serving tasty momos and noddles is all that we find here.

“The next petrol station is 365 Kms away” screams a board at Tandi. Be it a gimmick or a grim warning, our driver - not the one to take any risk in this part of the world, miles and miles of which are bereft of any inhabitants - tops up his diesel tank. A little later, we overtake our other vehicle which had developed a snag and was being repaired by a mechanic.

As darkness descends, we reach Keylong a small town which serves as the District headquarters of Lahaul Sipti. Having settled down in the newly constructed Circuit House, we set out for dinner at a restaurant. There we learn that our other bus had developed serious technical snag and it would not be ready for onward move till the next day. We were otherwise supposed to leave Keylong in the wee hours, the next day.

Forced to spend a day, we santer around the small township clicking photographs of whatever fascinated us, the locals included. A sparsely populated town at a height of 3090 meters, Keylong offers spectacular view of the hills all around with silver-white streams flowing through-to add to the scenic beauty of the place.

The bus that had developed snags not having been repaired till late evening, another bus was arranged and we resumed our journey at 0200 hrs on August 25 reaching Sarchoo five hours later. On our return journey, we are to stay at the ITBP Camp here, we were informed.



The Pyongyoug Lake



Marsimek La - the highest Motorable Pass in the World

In the few hotels that are run in tents here, we have our breakfast and move on crossing Lalchungla at a height of 16,634 feet. The changing hues of the mountains and the magnificent figures on rocks sculpted by nature by the strong blowing winds are simply fascinating. After a descent of 1300 feet, we are in Pang, a place where all tourists break for a halt. A delectable lunch under the bright sun with cold winds blowing is indeed refreshing.

Back into the buses, we head for Tanglangla Pass. On the way, we counter young children asking for bottles of water, for water is scarce in the region and the nearest water point would be no less than four to five kilometers away.

As we near Tanglangla Pass, the distant snow-capped mountains come in sight and this being the first glimpse of shining mountain peaks, all of us furiously click away shots after shots not knowing that a few days later these would be common sights. At a height of 17,852 feet, Tanglangla is the second highest peak in the region, as we notice etched on the stone there.

Driving down the descent, we reach Upshi in the evening, where we are told that we have almost reached Leh. A short break and driving along River Sutlej we enter Leh town well in time for a sumptuous dinner at the Indo Tibetan Border Force Mess where we were accommodated.

Early morning on August 28, we go on a long trek of about seven kilometers in the outskirts of Leh-something that we should not have done as the Chief Medical Officer of the local ITBF unit later told us in the course of our medical examination.

An interesting and educative talk by one Shri Sonam Wangyal, who retired as Assistant Director from the ITBF, regarding his early days in Hot Springs as a Constable of ITBF kept everyone spellbound. He was right on the spot near Hot Spring when the CRP men clashed with the Chinese intruders on October 21, 1959. He was lucky to escape and survived to recount the incident vividly. Honoured with a Padma Shri and the Arjuna Award for excellence in mountaineering, Shri Wangyal now runs a restaurant in Leh on a plot of land gifted to him by the Jammu and Kashmir Government.

The medical check up of every member of group proved to be a disappointment for all of us. While almost half of the group members were not found to have been sufficinelty acclimatized to proceed to Hot Springs, those who are medically fit are disappointed that the others would not be making it with us to Hot Springs.

Accompanied by Dr. M.P. Naria, the Chief Medical Officer of ITBP at Leh, the party comprising of seven officers and eight other Ranks left Leh in two buses on August 31, 2001 morning for Hot Springs. Ascending to a height of 18,300 feet, we feel the biting cold wind at Changla Pass. Good scenic view all around - a photographers delight.

Treated to a delectable lunch, courtesy the ITBP post at Tangtse, we reach Pyongyong lake after covering 27 Kms. The splendid scene of the bluish lake surrounded by mountains of different hues is a sight, one would rarely get to see, in one’s life time. While 110 kms of the lake falls in the Chinese territory, just 30 Kms of the 140 Kms long lake fascinates the tourists and our countrymen in India. We spend a short while freezing the lake in our cameras.

At Phobran, we enjoy the hospitality of ITBP as we halt for the night and spend the next day too, for acclimatization. Adequately acclimatized, we

leave Phobran in a 5-ton truck of ITBP and marvel at the expertise of driver Govind Singh in driving through rugged terrain and the sturdiness of the vehicle that could withstand the rought and tough of the barren terrain.

Driving up to a height of 18,634 feet we get down at the Marsimek La Pass, the highest motorable road in the world and activate our cameras. Thanks to the efforts of the brave ITBP personnel and the Border Roads men, the Pass could be made motorable with a semblance of road having been laid there. Having driven through rugged terrain crossing five river beds, we reach Tshokshalu to a grand welcome by the ITBP post personnel there. Stay at the post the following day passed off uneventfully.

Came September 4 and we set off on our last leg of the fortnight-long journey. Our destination - the Hot Springs. The weather turns cloudy. In less than two hours we are at Hot Springs - our spot of pilgrimage.

Nestling between the hills, the lone ITBP Post is the only habitation, not far from the Indo China border. The post personnels' delight on seeing us is writ large on their faces. A warm reception followed by hot cups of tea and 'Pakora' and we are all on our business getting our uniforms ready for the following day's event.

Getting uniforms ironed and polishing our shoes and belts, we hang our uniforms near our beds. Cameras are checked to see that they withstand the extreme cold as we were told that the cameras fail to function at these places.

Came the D-day. All of us in the best of our uniforms are there at the memorial well before the appointed time of 8 O'Clock in the morning. Having run out of patience waiting for our watches to indicate 8 O' Clock, the solemn function begins a few minutes before the appointed time.

Two minutes silence is observed in memory of the martyrs. Each one of us marches upto the memorial, salutes, places a wreath, salutes and marches off. With everyone having paid homage, the solemn function ends.

Thereafter it is all photography session - to freeze the memories of our trip to Hot Springs memorial - for our friends and near and dear ones to see. Rolls after rolls are exposed. A few minutes later we are back in our rooms to change over to civvies. A quick breakfast and soon we are in the 5-ton vehicle to start our return Journey.

The author is a CRPF Commandant presently on deputation to

NSG)

Photos by Shri M.P. Nathanael



A Ladakhi damsel in traditional dress

A Retort to Terrorists

—Darbara Singh Bains, Second-in-Command, 84 Bn CRPF

CRPF is usually performing the role of Internal Security and Counter-insurgency duties either in North-Eastern States or in Jammu & Kashmir, but there is a part in the Country where CRPF playing its role as "Neutral Force" between two States i.e. Assam and Nagaland. Like me, many other force personnel may not be aware of it before I was posted to the area. It is called DAB Area (Disputed Assam-Nagaland Border Area) having its one side with Golaghat and Jorhat Districts of Assam State and other side with

Wokha District of Nagaland State. In this DAB area, the role and nature of the force is altogether different. Whole area has been divided into Six sectors calls as Sector “A” “B” “C” “D” “E” & “F”. Presently “A” and “B” Sectors are under operational jurisdiction of 85 Bn CRPF with its HQr at Bokajan under Karbi-anglong Distt. (Assam) and “C” & “D” Sectors are under 84 Bn CRPF with its HQr at Golaghat Distt. (Assam) and “E” & “F” Sectors are under Assam Rifles. Melapani is situated in the foothills of Assam-Nagaland Border at a distance of 34 Kms from 84 Bn HQr CRPF Golaghat (Assam) and geography of the area is generally plain from Golaghat side but suddenly it culminate into mountains of Nagaland.

The 5th day of September, 2001 was a usual day for the men of F/84 Coy HQr at Merapani and being “Thursday” a “Maintenance Day” for the Force, men were busy in bringing-out Arms/equipments from the Coy’s Kote to clean them in the morning. One party was getting ready for carrying out patrolling in the area. Amid the normal hustle-bustle a gunshot broke the entire harmony and peace at the next moment CRPF men of Merapani Camp were in their Sentry posts keeping eagle's eye all around. It was a group of NSCN(K) outfit who had crossed the Border of Nagaland and came to Merapani Bazar. They attempted to hijack an Ambassador Car from the Bazar to carry-out their nefarious and wicked design in the shape of kidnapping some ONGC Officials (with an ulterior motive for extortion) working in the area at nearby Drilling Sites.



CRPF men keeping vigil on a Highway in Kashmir

One shot of the militant in the air created panic and utter confusion among the people and people started running helter-skelter. Realising their folly, militants also started fleeing towards their homeland (Nagaland) which is at a distance of approximately 2 to 3 Kms from Merapani Bazar. While passing near the F/84 Merapani Camp, one militant fired at the Sentry Post No. 3 of the CRPF Camp, which is situated at a Check Post on road to keep watch on the passing vehicles and articles being transported. Militant also threw one Rifle Grenade at the Sentry Post but by fortune and good-luck of No. 850845751 Ct. Dharam Pal and Guard Commander No. 83076093 HC P.K. Bora it could not explode. Within fraction of moments Ct. Dharam Pal and Head Constable P.K. Bora showered a volley of fire on the militant resulting killing him on the spot.

Meanwhile other militants managed to flee towards foothills along Nagaland Border continuing firing on the CRPF Party. At this Shri Parkash Singh, Dy. Comdt. Sector Commander of “D” Sector Merapani immediately ordered SI Roshan Lal to chase militants with Bullet-proof Gypsy along with some Jawans and directed two Constables namely Tirath Ram and G. Ramakrishna to block the route of fleeing militants from Nagaland foothill side. Dy. Comdt. Sh. Parkash Singh himself ran after the militants

undauntedly through paddy fields along with Insp. Dilbag Singh OC-F/84 and a handful Jawans. The daring step of Ct. Tirath Ram and Ct. G. Ramakrishna could able to compel one militant to kneedown and face the music. The distance between militant and Ct. Tirath Ram was hardly 15 yards and both were spotting face to face in the muddy paddy field. Ct. Tirath Ram challenged the militant to surrender but he welcomed him with a volley of fire. At this, Ct. Tirath Ram valiantly retaliated and killed the militant on the spot.

Later on re-inforcement party under Command of Shri D.S. Bains, Second-in-Command of 84 Bn also reached Merapani from Bn HQr and reorganised and launched a massive man-hunt in the area along with Civil Police headed by S.P. Golaghat. The third militant was also caught alive who was hiding in a house of nearby village taking shelter forcefully. Out of two killed militants one identified as Captain Z. Ekka Sema of NSCN (K) outfit and remaining slain militant with arms could not be identified. The captured militant identified as Momembo Lotha of NSCN(K) outfit. A huge quantity of Arms/Amn containing one AK-47 Rifle with one Magazine with one live round, one 7.62 mm Autofall Rifle and four magazine, 171 live rounds of 7.62 mm and one live round of unknown Calible and one unexploded foreign made grenade was recovered.



Jawans undergoing Jungle Training

This unique successful operation with its outstanding nature was highly praised by Local Administrative authorities and CRPF higher authorities and so many appreciation received from different walks of life as it was a ready reply and slap on the face of terrorism by brave and valiant Jawans and Officers of F/84 Bn who retorted to terrorists without losing any life or injury from CRPF side of civilians side.

Family Welfare Centre : A Helping Hand

— Annie Thomas, 2nd-in-Command, 88(M) Bn

The mere feeling when a jawan dons a uniform that it has been sewn by one of his own family members would instill in him a sense of pride and he is ready to take on all the hurdles that comes his way when fighting for

his motherland. This could be synonymous with the ancient tradition of 'Tika' ceremony by the wives when their husbands left for the battlefield. The concept of Family Welfare Centre in CRPF or any other CRPF establishment has provided the family of a jawan this opportunity.

The force ever since its raising has been witness to many internal upsurges, communally volatile situations, assembly elections, natural disasters etc. and has actively involved itself in talking them the most affected on account of all these has been the jawans who would never be sure about the next move and what lies in store for him. With 80% of the troops deployed in sensitive areas like J&K and the North-East, the jawans can hardly think of keeping their families with them and thus they have to bank upon their parents or relatives a back home who would cater to the welfare of the family. With the joint family structure crumbling, many times the families are left behind to fend for themselves and the personnel in turn have to cater to many establishments. The establishment of Group Centres in CRPF to some extent could sort out this problem as atleast some of the personnel could leave their families behind at these Group Centres.



Smt. Chitra Mishra, President CWWF inaugurating the CRPF Welfare Exhibition at New Delhi on Dec. 13, 2001

Family Welfare Centres started functioning in the Group Centres of CRPF more than 25 years ago with the objective to generate job opportunities for dependant family members of CRPF personnel so that it is an additional source of income, to fabricate articles of uniform and make other consumer goods for the benefit of members of the force and the public, to provide vocational training to the dependant of the members of the force and to provide financial grants for various welfare activities.

The Family Welfare Centre also provides opportunity for families of Jawans to interact with families of officers and project their problems who in turn also counsels them and help them sort them out.

The Family Welfare Centres organise Adult Education Classes for the families as most of them hail from villages thus helping them to build up their confidence. Vocational training in tailoring, embroidery, knitting, painting, pottery cookery etc. is also imparted so that it could help them in their day to day life.

The Family Welfare Centres over the period of years have diversified their activities. Apart from fabrication of uniform articles which is a major source of income for the families of jawans, the manufactures of articles like jercey khaki, Web equipment, Water proof, Riot drill equipment, Plastic/Leather Bags, Pickles, Mustard Oil, Sacks, Paper Bags, Candles, Soaps, Agarbathies, Cane Products, Phenyl etc. are also under taken which are sold at very reasonable rates to the families and in the open market.



Smt Kamala Advani, W/o Shri L.K. Advani the Union Home Minister giving away prizes in CRPF Welfare Mela.

Family Welfare Exhibition which has become an annual feature is being organised since the past 6 years as a part of the CRPF Raising Day Celebrations. Family Welfare Centres from all sectors participate in this exhibition. Each stall specialises in the regional products depending on where these Group Centres are based. They also display goods made by the families of CRPF personnel like Bed Spreads, Table Covers, Sweaters, Shawls, Paintings, Handicrafts etc. The income so generated is utilised for various Welfare activities like education of children of Group 'D' employees and of men killed in action, providing equipments to handicapped children of personnel, hiring of trained hands to impart vocational training for running Montessori School, Bal Bhavan, Creche etc.

Family Welfare Centres help in promoting Small Family norms by educating men and women on the subject through films, visual aids, charts etc. with the help of Family Welfare officials. They also motivate men and families to save money by opening Saving Bank Accounts. They organise 'SHRAMDAN' in their campuses to promote cleanliness and hygiene. Family Welfare Centre thus provides all possible opportunities for the families to cope up with life in the absence of their men.

The force does not lag bahind either when it comes to Welfare Scheme for the personnel. The dependants of men who lay down their life for the sake of the country, are compensated to some extent through the various Welfare schemes existing in CRPF but nothing can adequately compensate the less of a dear one to their family. Other than the financial benefits the force also considers appointment of the dependant to any group ‘C’ or ‘D’ post if found fit.

CRPF is thus one of the oldest paramilitary organisations in the country who can boast of maintaining an equilibrim when speaking of Welfare activities for its men and their families and all also in the operational areas.

Supply of Ordnance for CRPF : An Introspection

— S. Sengupta, Dy. Comdt. AWS-VII



Demo on sophisticated weapon being presented

In any paramilitary force like CRPF, supply of ordnance; Its up keep maintainance, and above all; the personnel behind the ordnance management play a vital role. Amongst all material resources in CRPF, ordnance is the most important aspect which requires some sort of specialisation in todays specialised world. Ours is a country with limited resource with enormous volume of population. We hence have no other option but to resort to the cost effectiveness and reliability of material resources. As per the theory of increasing reliability and optimum use of a machine/components, it has been observed that reliability is a function of time and cost. Reliability decreases with increase in time and reliability increases with increase in cost of production. After reaching certain points for increasing one unit of reliability one has to invest a huge number of cost units as input for production. Reliability can be increased by the methods : Such as (i) By increasing components reliability. (ii) By derating i.e.; if a machine is supposed to work for a prescribed life period of 10 years then by derating its life it should be kept in service for say only 8 years. The method is not cost effective and (iii) By ensuring better maintenance. This is the most cost effective and solvable method of increasing reliability of any system. It requires observance of discipline and implementation of correct drill.

Here lies the importance to create a specialised outfit after giving them specialised training who can create a general awareness amongst the rank and file of CRPF regarding maintenance of strict discipline to ensure 100% reliability of ordnance stores at the hour of need and also their long life. Perhaps on this line of thinking Central Weapon Stores (CWS) came into existence in Dec. ‘68 at Kishangerh (Rajasthan). Later on it was shifted to Rampur, during 1972 and started acting as an extension of Group Centre Rampur, one Dy. S.P. being the head of this institution.



Handling of weapons-part of training

With the rapid expansion of the force and the manifold increase in the work-load, the CWS was elevated to the status of an independent institution and started functioning as such since 8th July, 1975 and posts of a Commandant, and Asstt. Comdt (Now, Dy. Comdt) were created. The main functions of CWS are procurement/storage/distribution of ordnance stores which speaks not much of technical. The idea behind the creation of Central Weapon Stores at the very initial stage in the pattern of army ordnance depot, was legitimate which really met the requirement of the contemporary age/period.

But afterwards with the diversification and manifold increase in workload myth has been carried forward and CWS has become the apex body of the all workshops with regard to the technical matters. And such a myth has been accepted over the years. It is evident by its name that it is Central Weapon Stores not Central Workshop. Hence the creator was right who has given its light name as Central Weapon Stores on the basis of Job requirement. But after wards his noble idea must have been faded into the oblivion with unkown reason and CWS with its head of the office and other officers most of the time being non-technical has become supreme authority

of all AWS functioning in technical matters.

In the army the role of ordnance depot is only limited to procurement, storage and distribution of ordnance stores and their related accounting which can perhaps give an indication to the background of creation of Central Weapon Stores, in CRPF.

Pure technical stream with regard to the ordnance matters in CRPF has been emerged with the inception of AWS-I (at Hyderabad); II (at Rampur) and III (at Guahaty) which came into existence together in the force in early ‘80s. Due to non availability of technically qualified staff in CRPF, qualified personnel including officers of Indian army were re-employed in CRPF to run such workshops. Emphasis was also laid to train our own men in the same line so that we could achieve self sufficiency.

For a pretty long time, the technical branch of all most all AWSs was limited to the weapons only. But afterewards, lot of accidents/incidents involving failure/mishandling of ammunition parts started taking place which perhaps gave birth to the idea of furthering our vision to new line of expertise ‘Ammunition technology’. To meet the immediate requirement a few army JCOs; retired from the army ordnance corps were re-employed in CRPF. In the midst; with the rapid expansion of the force number of AWSs kept on increasing. And at present there are 7 AWSs all over the country.

Locating of Arms Workshops is again an important aspect. Arms Work Shops in CRPF are the permanent features and have been designed on the line of Base Workshops in Army. These should preferably be in prominent cities/towns or nearer to such places where raw materials for fabrication/repair job are easily available. These should again not be situated in places close to international border and sensitive places from the angle of communal upsurge.

Installation of AWSs (Where infrastructure and technical know-how of manufacture/repair/modification of Arms/ Ammunition & their allied stores are available) in a sensitive places like J&K, North-East or any other communally hyper sensitive/sensitive places always gives vent of the possibility of passage of such sensitive and restricted technical information of the unwanted elements like insurgents/terrorists/subversive elements. Perhaps on this analogy; the maximum nos of Base Workshops, of Army/BSF are situated in peace areas conforming the above requirements.

Officers qualified with AIA training (Weapon side) perhaps could study

the job requirement of the armoury structure in CRPF. And with the graceful assistance of then policy makers of this force could provide a strong knit to such specialised structure of armourers by way of creation of recognised cadre for them.

At the initial stage; such a creation could provide the colour in the shape of new enthusiasm from the angle of rank and file or qualified armourers. But afterwards, gradually their enthusiasm started diluting with the obvious reason that their career prospects were not so much smooth and assured vis-a-vis general duty line. Perhaps keeping option open for armourers to go to the G.D. line at the time of their promotion in case of non existance of vacancies in technical cadre could have affectively eased away the armourers.

Till today; unlike specialised armourer line; the service of ammunition technicians in CRPF are met on adhoc basis. Some G.D. personnel are being trained in Army/CRPF for a very limited duration of course and thereafter placed to offer their services in such specialised outfit.

“Ammunition” is a subject which requires due attention and importance. Weapons are never proved to be fatal unless they are charged with the ammunition. While on the other hand, without the aid of weapon, to be fatal. The behavioural pattern of ammunition also keeps on changing exhibiting peculiar characters involving potential threat under different circumstances. Hence, all training concerning Ammunition/Explosives, are extensive and require full service life devotion.

And perhaps on this background, in army, ammunition technicians are placed at Group ‘A’ service. Apart from this; such technicians are always exposed to the threat of accidental blast/ explosion of ammunition while handling these apart from slow and continuous inhalation of decomposed chemical of explosive items in vapourised form which is hazardous to health.



It is perhaps the high time that we should sincerely think for the following measures to glorify the ordnance structure of CRPF : (i) Setting up the research and development wing for ordnance matters including their training structure. (ii) Opening a technical training institution and diversion of all training courses relating to ordnance matters there from various AWSs

& CWS. (iii) Placement of technically qualified persons (in weapon and ammunition) with adequate experience of AWS/CWS functioning in ordnance section of Provisioning Directorate, who can understand the plight of armourers/Ammunition Technicians of the force and try to taper down their dissatisfactions into narrow. Such a step may provide a colour to the apex body of ordnance matter to ensure and exercise an effective ordnance management of the force.

बल का ध्येय

के0रि0पु0 बल का लक्ष्य है राष्ट्र की **एकता, अखण्डता एवं संविधान** की मर्यादा को अक्षुण्ण रखना । देश की आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित रखने तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए शासन को कौशलपूर्ण एवं प्रभावी सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य है ताकि **सामाजिक सद्भाव** तथा **राष्ट्र के विकास** को गति मिले ।

राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने के लिए और आंतरिक सुरक्षा के कुशल प्रबंधन की श्रेष्ठता के लिए बल के सदस्य सदा प्रयत्नशील रहेंगे ।

हमारा संकल्प है कि हम यह लक्ष्य नागरिकों की स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा का सम्मान करते हुए पूर्ण करेंगे । राष्ट्र की **सेवा एवं भक्ति** हमारे जीवन के सर्वोच्च मूल्य होंगे ।

DOWN THE MEMORY LANE

— Lakshmi Srinivasan

On the eve of 62nd CRPF Anniversary Celebrations during which my husband is receiving President's Police Medal for Distinguished Service, my memory crawls back to 1974. To be precise it was September, 1974, I became part of CRPF family when Shri Srinivasan tied the Nuptial knot. Since then I have been seeing the life of officers, men and their families in CRPF. My journey in CRPF started in Group Centre, Kishangarh (Rajasthan)., on a CRPF Anniversary Day i.e. 31.10.1974. What a coincidence ! (Later this GC was moved to Durgapur during 1974). I attended the Group Centre level CRPF Anniversary celebrations on that day. Later I got the opportunity of attending the Anniversary celebrations only during 1995, 1996, 1997 and 1998 in Delhi which were celebrated on 28th December.

In my capacity as a house wife, I moved with my husband all over the country including J&K, Punjab, Tripura etc. However, I could not accompany him to Jaffna (Srilanka) where he commanded a Bn under IPKF. My son's first journey in CRPF as 7 month old child started from my native place in Tamilnadu to Sopore in J&K. Similarly my daughter as a 2 year old kid moved to Narsingarh (Tripura). Though the environment, culture, climatic conditions, educational standard for the children etc. had been varying from place to place posing problems to me, the espirit-de-corps, warmth, love and affection which prevailed in the Force had always remained as a soothing factor. A challenging life indeed !

The Almighty God blessed me with the gift of closely watching my husband working in Bns in Ops areas as well as in peace areas, Group Centres, Training Centres, DIGP Office, IGP Offices and Directorate General. Each exposure has been an asset in his career. However, I specially cherish the proud moment of his posting as Assistant Director (Admn) in the Directorate General, during which he used to coordinate all functions connected with the CRPF Anniversary Celebrations and welfare activities during 1995,1996 and 1997 with lot of zeal and enthusiasm.

Our stay with RAF, an elite wing of CRPF has been another unique experience during which I could see the RAF personnel in a few places and

also witness the RAF Anniversary in Delhi during 1998.



The Union Home Minister Shri L.k. Advani inspecting the 61st CRPF Anniversary Parade

As a lady wife of a CRPF officer living with the Force for the last 27 years, I have not only seen the officers and men working with loyalty, sincerity and utmost devotion to duty despite many odds and constraints but also their family members who cheerfully encourage their husbands in performing their onerous duties efficiently by providing moral support. Sorrow surrounds me whenever I attend the Widows Welfare Day and interact with the widows whose husbands had laid down their lives for Nation’s Security. Certainly any amount of compensation is not sufficient

enough to recognise the sacrifice made by them in the altar of duty!



Smt Chitra Mishra, President CWWA lighting the lamp in the Annual Day celebration of CRPF Public School at Rohini

I have been watching the Force growing manifold with tremendous speed and performing multifarious duties in various theatres. I had been a spectator when my husband used to rush out on duty even at odd hours in Tripura, Punjab and J&K. The alertness with which officers and men of the Force work under all circumstances is really worth emulating. I have seen the personnel moving out in lightening speed to carry out the assigned tasks whenever orders are issued.

Sports activities, cultural programmes, welfare programmes etc. are also organised in the Force in an unique and impressive manner which are highly appreciated by the audience and I also had the privilege of attending a few.

I was thrilled to know that it was a small contingent of CRPF which faced the first attack by a Chinese party in the Ladakh region of J&K on 21 st October, 1959 and that day is being observed as Police Commemoration Day every year by all the Police Forces in India. My grievance is that I could not visit Hot Springs in Ladakh though I got the rare opportunity of going upto Leh covering Zozila Pass, Dras, Kargil etc. My salutations to those brave men of this great Force in whose honour a memorial exists in

Hot Springs.

The services being rendered by CRPF to the Nation in various fields really strengthens the decision taken by the iron man of India Sardar Vallabhbhai Patel to retain the Crown Representative's Police after Independence of India by rechristening it as Central Reserve Police Force. Motto of the Force "SERVICE and LOYALTY" glitters in every CRPF Establishment which is always kept up by all CRPF officers and men in letter and spirit in order to keep the CRPF Flag flying high.

I am indeed proud to be a member of the family of this great Force-CRPF.

(The author is the wife of Shri A.N. Srinivasan, Addl. DIG, G.C. Bangalore, CRPF.)

रैपिड एक्शन फोर्स : देश की सेवा में

–डी.जी. महापात्र, जन सम्पर्क अधिकारी

पुलिस का प्राथमिक कार्य कानून व्यवस्था को बनाए रखना तथा अपराधों की रोकथाम एवं जांच करना है। लेकिन समय के साथ-साथ हुए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के कारण पुलिस के कार्यक्षेत्र का भी विस्तार हुआ है। कार्यक्षेत्र में हुए इस विस्तार के कारण विभिन्न क्षेत्रों में पुलिस से दक्षता की भी अपेक्षा की जाने लगी। परिणामतः विभिन्न क्षेत्रों में दक्ष कई अलग-अलग तरह के पुलिस बलों का गठन किया गया। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में साम्प्रदायिकता एक ऐसा संवेदनशील पहलू है, जिससे निबटने के लिए बेहद कुशल एवं दक्ष कार्य-बल की आवश्यकता है। सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए रैपिड एक्शन फोर्स के गठन की स्वीकृति के साथ ही सरकार ने इसके लिए उद्देश्यों एवं दिशा-निर्देशों का भी निर्धारण किया। बल के सदस्यों को राज्य के दिशा-निर्देशक सिद्धान्तों की अच्छी जानकारी होना आवश्यक है। उनका जातिगत तथा सांप्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर कार्य करने के लिए विशेष तौर पर प्रशिक्षित होना आवश्यक है। कर्त्तव्य-निर्वाह के दौरान निष्पक्ष तथा निरपेक्ष भाव के साथ कार्य करने की शिक्षा उनके प्रशिक्षण में शामिल है। उन्हें विशेष तौर पर तैयार किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत इस प्रकार तैयार किया गया है कि वह सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से, अपने जन-प्रभाव के कारण सुगमता के साथ निबट सके। आरएएफ की बटालियनें जब कर्त्तव्य पर तैनात नहीं होगी, तो उनके सदस्यों को इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाएगा कि आपस में उनके बीच मेल-मिलाप एवं सहयोग

की भावना बढ़े।



आरएएफ परेड टुकड़ी का निरीक्षण करते झारखण्ड के मुख्य मंत्री श्री बाबूलाल मरांडी

उपरोक्त उद्देश्यों एवं निर्देशों को दृष्टि में रखते हुए 7 अक्टूबर, 1992 को रैपिड एक्शन फोर्स का गठन किया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इस विशेष अंग का मुख्य उद्देश्य संवेदनशील पुलिसिंग के जरिए सेवा है। पिछले नौ वर्षों के दौरान आरएएफ की बटालियनों ने अपने कार्य-क्षेत्रों में परिचितीकरण अभ्यास के द्वारा संवदेनशील क्षेत्रों पर कड़ी नजर रखी है। आरएएफ ने दिए गए जीरो रिस्पोंस टाइम के अनुसार पूरे देश में जहां-कहीं भी दंगे या दंगों जैसी स्थितियां पैदा हुई हैं, हरकत में आकर कम से कम समय में स्थितियों पर काबू पाकर शांति बहाल की है। इसने अपनी उपस्थिति मात्र से कई गंभीर स्थितियों को दंगों का रूप लेने से भी रोका है। तात्पर्य यह है कि यह बल अपनी छवि के ही अनुरूप द्रुत, प्रभावी तथा संवेदनशील दंगा-रोधी पुलिस के रूप में कार्य करने में सफल रहा है।

आरएएफ की दस बटालियनें हैदराबाद (99 बटा.), अहमदाबाद (100 बटा.), इलाहाबाद (101 बटा.), मुम्बई (102 बटा.), दिल्ली (103 बटा.), अलीगढ़ (104 बटा.). त्रिवेन्द्रम (105 बटा.), जमशेदपुर (106 बटा.), भोपाल (107 बटा.), तथा मेरठ (108 बटा.) में स्थित है। इन सभी स्थानों पर इन बटालियनों के मुख्यालय स्थित हैं तथा ये सभी बटालियनें अपनी परिधि के 400 किलोमीटर के अंदर पड़ने वाले संवेदनशील जिलों के प्रति उत्तरदायी हैं। इस प्रकार आरएएफ की ये बटालियनें देश

के लगभग सभी संवेदनशील इलाकों पर दृष्टि रखती हैं। केवल उत्तर-पूर्वी राज्य तथा जम्मू–कश्मीर ही आरएएफ से अछूते हैं।

आरएएफ बटालियन की प्रत्येक दंगा नियंत्रण टीम में महिला अधिकारी एवं कार्मिक भी शामिल होती है। इस कारण महिला दंगाइयों से निबटने, महिलाओं तथा घरों की तलाशी लेने तथा बचाव और राहत–कार्यों के दौरान महिलाओं और बच्चों की मदद में काफी सहायता मिलती है। तैनाती के दौरान प्रत्येक टुकड़ी के साथ महिला ग्रुप भी रहता है, जो उनकी संचालनिक क्षमता का ही एक हिस्सा है। आरएएफ की प्रत्येक टुकड़ी को प्राथमिक उपचार के लिए उपकरण तथा दवाएँ उपलब्ध कराई गई हैं तथा इसके प्रत्येक सदस्य को प्राथमिक उपचार तथा अग्निशमन का प्रशिक्षण दिया गया है।

उपलब्धियाँ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की इस विशेष शाखा आरएएफ ने पूरे देश में अपनी दक्षता एवं कार्यकुशलता के कारण एक अलग पहचान बनाई है। विशेष तौर पर दंगा पीड़ित इस बल को राहत प्रदान करने वाले एक निरपेक्ष शांति–बल के रूप में याद करते हैं। दंगा प्रभावित क्षेत्रों में आरएएफ की मांग लगातार बढ़ रही है। जनता का यह विश्वास इस बात का प्रतीक है कि आरएएफ उन अपेक्षाओं पर पूर्णतया खरी उतरी है, जिनके तहत इसका गठन किया गया था।

अपने गठन के बाद आरएएफ की पहली तैनाती अक्टूबर, 1992 में सीतामढ़ी (बिहार) में साम्प्रदायिक दंगों के दौरान की गई। दंगों से निबटने के दौरान अपने निष्पक्ष व्यवहार तथा बाद में राहत–कार्यों के दौरान किए गए उसके कार्यों ने उसे जनता के साथ–साथ स्थानीय प्रशासन के विश्वास का भी पात्र बनाया। उसके कार्यों की जनता के साथ–साथ प्रेस ने भी भरपूर प्रशंसा की।

दूरदर्शन बंगलौर पर उर्दू समाचारों की शुरूआत के साथ 7 अक्टूबर, 1994 को बंगलौर में भड़के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान आरएएफ को वहाँ तैनात किया गया। आरएएफ ने तुरंत पूर्ण दक्षता और कुशलता के साथ दंगों पर काबू पाकर जल्दी ही स्थिति को सामान्य बनाने में अपनी भरपूर मदद दी।



आरएएफ का मजमा तितर–बितर दस्ता

26 जनवरी, 1995 (गणतन्त्र दिवस) को हुबली के ईदगाह मैदान में तिरंगा फहराए जाने को लेकर पैदा हुए विवाद एवं तनाव के बाद वहाँ आर.ए.एफ. को तैनात किया गया। आर.ए.एफ की कड़ी चौकसी और निगरानी के कारण समारोह शाति–पूर्वक सम्पन्न हो गया। 11 फरवरी, 1995 को मुरादाबाद में भड़के साम्प्रदायिक दंगों को भी आरएएफ ने बिना समय नष्ट किए तुरंत काबू में कर लिया।

फरवरी, 1995 में वाराणसी में शिवरात्रि को महाजलाभिषेक के दौरान ज्ञानवापी मस्जिद के पास एकत्र हुए विशाल जनसमूह को नियंत्रण में रखने तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने में आरएएफ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ किसी भी क्षण साम्प्रदायिक उन्माद भड़क उठने की उम्मीद थी, मगर आरएएफ की उपस्थिति मात्र से स्थिति नियंत्रण में रही। जुलाई, 1995 में केरल में दो साम्प्रदायों के बीच तनाव उभर आने के बाद भड़के दंगो को दबाने के लिए आरएएफ की छ: कम्पनियाँ तैनात की गई। आरएएफ ने पूर्ण कुशलता के साथ स्थिति पर नियंत्रण कर सामान्य स्थितियाँ बहाल की, जिसकी प्रेस सहित समाज के हर वर्ग ने प्रशंसा की।

जन्माष्टमी के दिन मथुरा में आयोजित विष्णु महायज्ञ के दौरान मथुरा में 21 आरएएफ कम्पनियों को तैनात किया गया। आरएएफ की निरंतर चौकसी तथा नियंत्रण के कारण आयोजन बिना किसी घटना के शांतिपूर्वक सम्पन्न हो गया।

106 बटालियन की एक कम्पनी को गंगटोक (सिक्किम) में हुए भूस्खलन के बाद बचाव और राहत कार्यों के लिए तैनात किया गया। आरएएफ ने यहाँ पीड़ितों को सहायता पहुँचाने के अतिरिक्त उनकी सम्पत्ति की भी रक्षा की। गुजरात के बाढ़

प्रभावित क्षेत्रों में आरएएफ की 100 बटालियन के जवानों द्वारा किए गए बचाव और राहत कार्यों ने वहाँ के नागरिकों के दिलों पर आरएएफ के प्रति एक विशेष छाप छोड़ी। जबलपुर में आए भूकम्प के दौरान मलबे में फंसे नागरिकों को 107 आरएएफ बटालियन के जवानों ने अपनी जान पर खेल कर बचाया। आरएएफ के जवानों ने यहाँ पीड़ितों को दवाइयाँ, राशन तथा अन्य सहायता प्रदान करने के अतिरिक्त उन्हें सुरक्षित स्थानों पर भी पहुँचाया। जुलाई, 1997 में 104 आरएएफ बटालियन के जवानों ने पटना में लगभग 300 नागरिकों को बाढ़ के प्रकोप से बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। 105 बटालियन के जवानों ने 17 जुलाई, 1997 को एक बस दुर्घटना के 22 पीड़ितों को तुरंत सहायता उपलब्ध करा कर अस्पताल पहुँचाया। आरएएफ की तुरंत कार्रवाई से 20 यात्रियों के प्राण बचाए जा सके।

कोयम्बटूर में हुए लगातार बम विस्फोटों के बाद आरएएफ ने न केवल नागरिकों के लिए तुरंत बचाव और राहत कार्य चलाए, अपितु बाद में उभरे साम्प्रदायिक दंगों पर भी कुशलता से काबू पाकर पीड़ितों की मदद की। आरएएफ की उपस्थिति मात्र से कोयम्बटूर वासी स्वयं को सुरक्षित समझ रहे थे। 1998 में आम चुनावों के दौरान भी आरएएफ की तैनाती से चुनावों के सुचारू रूप से संपन्न होने में मदद मिली।

इसके अतिरिक्त भी देश के विभिन्न भागों में दंगों, साम्प्रदायिक या अन्य प्रकार के तनावों के दौरान जहाँ–जहाँ भी आरएएफ को तैनात किया गया, इसने पूर्ण सफलता के साथ अपने कार्य को अंजाम दिया।



पुरी रथ यात्रा के दौरान तैनात आरएएफ के मुस्तैद जवान

11 जून, 1998 को गुजरात के कांडला बंदरगाह क्षेत्र में आए तूफान से हुई बर्बादी के बाद 100 आरएएफ बटालियन के सदस्यों को वहाँ बचाव और राहत कार्यों के लिए तैनात किया गया। 20 जून, 1998 तक चले बचाव और राहत कार्यों के दौरान आरएएफ ने मलबे में से 40 व्यक्तियों को बाहर निकाला, 80 शवों को खोज निकाला तथा 937 पीड़ितों को उपचार उपलब्ध कराया। साथ ही आरएएफ ने पीड़ितों को करीब 10,950 खाद्य सामग्री के पैकेट वितरित किए। आरएएफ के इस कार्य की सर्वत्र व्यापक प्रशंसा की गई।

26 जनवरी, 2001 को गुजरात राज्य में आये विनाशकारी भुकम्प प्रभावित क्षेत्र में वस्त्रआल में स्थित 100वीं बटालियन आरएएफ़ की चार कम्पनियाँ : अहमदाबाद एक घंटे के भीतर इतने कम समय में पहुँचकर राहत कार्य शुरू करने पर, अहमदाबाद के नागरिकों द्वारा बल कार्मिकों का आभार व्यक्त किया गया। 102 वीं बटालियन आरएएफ मुम्बई से तथा 107वीं बटालियन भोपाल से प्रभावित क्षेत्र में पीड़ितों की सहायता के लिए भुच, वचाअट, अंजार, गांधीधाम, में पहुँची। आरएएफ

द्वारा अक्टुबर, 1999 में उड़ीसा राज्य में विनाशकारी तूफान के दौरान भी इसी प्रकार की सहायता प्रदान की थी, इसलिए आरएएफ, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए प्रभावी एजेंसी के रूप में उभरी है। आरएएफ के कार्मिकों ने जून, 2001 में जगनाथपुरी तथा अहमदाबाद की प्रसिद्ध रथ यात्रा को शांति पूर्ण ढंग से पूरा कराया। मार्च, 2001 के दौरान जब कानपुर तथा अगस्त, 2001 में अहमदाबाद में साम्प्रदायिक दंगे भड़के तो स्थिति पर काबू पाने के लिए आरएएफ को तैनात किया गया तभी लोग इस बल से परिचित हुए।

संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में आरएएफ

पिछले नौ वर्षों में आरएएफ कई बार देश की सरहदों के बाहर भी शांति का पैगाम ले कर गया है। 1995 में आरएएफ के 123 सदस्यों के एक दल के संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत हैती में वहाँ की चुनाव प्रक्रिया को शांतिपूर्वक ढंग से पूरा करने और कर्तव्य परायणता के लिए भरपूर प्रशंसा मिली।

वर्तमान में विशेष रूप से प्रशिक्षित तथा सज्जित आरएएफ की 240 कार्मिकों की दो कंपनियाँ संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत अशांत कोसोवो में तैनात भारतीय दल के एक अंग के रूप में काम कर रही हैं। जहाँ यह विशेष पुलिस दल संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों को सुरक्षा प्रदान कर रहा है। स्थानीय पुलिस को हिंसक प्रदर्शनों एवं आन्दोलनों के दौरान भीड़ पर काबू पाने में और वहाँ कार्यरत मानवीय कार्यों में लगी संस्थाओं को मदद दे रहा है।



कोसोवो से लौटे आरएएफ के अधिकारियों व जवानों के साथ वार्तालाप करते बल के अपर महानिदेशक (मुख्यालय) श्री जी. झा

रण ऑफ कच्छ में के.रि.पु. बल बहादुरों की शौर्य गाथा

–सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)

जनवरी, 1965 में करीमशाही में तैनात भारतीय सीमा पुलिस ने पाया कि पाकिस्तानियों ने सुरई से डींग तक 10 कि.मी. का ट्रैक लगभग एक मील भारतीय सीमा के अंदर से गुजरते हुए बिछा लिया।

10 फरवरी को राइफलों/स्टेनगनों तथा मशीनगनों से लदी एक पाकिस्तानी टुकड़ी ने कंजरकोट पर कब्जा कर लिया। 15 फरवरी, 1965 को कंजरकोट में डी.आई.जी. राजकोट और इन्डस रेंजरस के कमांडेंट लेफ्टीनेंट कर्नल आफताब अली के बीच एक बैठक हुई। इन्डस रेंजरर्स के कमांडेंट ने बताया कि उन्होंने कंजरकोट पर कब्जा नहीं किया है, बल्कि वे लोग कंजरकोट के दक्षिण ट्रैक तक इलाके में गश्त कर रहे हैं, जो कि "सुरई और डींग" ट्रैक पर गश्त की एक पुरानी परंपरा है। 18 फरवरी को भारतीय हाई कमिश्नर ने पाकिस्तान के विदेश विभाग से निवेदन किया कि वे अपने विशेषज्ञ सर्वेयरों के साथ भारतीय सर्वेयरों की बैठक की व्यवस्था करें, ताकि सीमा रेखा का निर्धारण हो सके और पाकिस्तानी फौजों को भारतीय इलाके से हटाया जा सके। (इंडिया–पाक वार–1965 व रन आफ कच्छ) (लेखक श्री आर.एच. गुप्ताः 50 व 51)

3 मार्च, 1965 को पाकिस्तानी टुकड़ियों ने सीमा के लगभग 1000 गज दक्षिण में स्थित कंजरकोट किले के खंडहरों पर एक पोस्ट की स्थापना कर ली और उसे खाली करने से इंकार कर दिया।

15 मार्च, 1965 को पाकिस्तानियों ने भारतीय सीमा के अंदर डींग में एक और पोस्ट की स्थापना कर ली।

यह सब हरकतें हिन्दुस्तानी सीमा पर हमला करने और उसे कब्जाने के पाकिस्तानी इरादे को जाहिर कर रही थी। कंजरकोट और डींग में पाकिस्तानी पोस्टों की स्थापना के बाद भारतीय सीमा पुलिस बीगोकाट में हरकत में आयी और इसने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की दो कंपनियों को भारतीय सीमा के 6 मील अंदर स्थित सरकार पोस्ट की ओर रवाना किया। भारतीय सीमा पुलिस में उस समय केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की 2 बटालियन की 4 कंपनियाँ थी।

युद्ध

कंजरकोट और डींग में पाकिस्तान द्वारा अपनी पोस्टों की स्थापना को एक

हमलावर कदम मानते हुए केन्द्रीय रिजर्व बल की दूसरी बटालियन की 4 कंपनियों को आगे बढ़कर पाकिस्तान को रोकने और सरदार तथा टॉक में अपनी चौकियाँ स्थापित करने के लिए आदेश दिए गए। कंजरकोट और डींग चौकियाँ मार्च, 1965 से पहले अस्तित्व में नहीं थी। सरदार पोस्ट कंजरकोट के 4600 गज दक्षिण पश्चिम में और टाक पोस्ट हींग पोस्ट के 1000 गज दायरे के अंदर थी। चीन की दोस्ती और नए हासिल किए युद्ध के उपकरणों से मिले साहस ने पाकिस्तान को भारतीय सीमा चौकियों पर "आपरेशन डेजर्ट हॉक" के तहत हमला करने के लिए प्रेरित किया। मार्च के दूसरे हफ्ते में इस आपरेशन की योजना बनाई गई और ब्रिगेडियर बजहर खां के नेतृत्व में 51वीं इन्फेंट्री ब्रिगेड का मूवमेंट इस योजना का एक हिस्सा था। साथ–साथ आठ इन्फेंट्री डिवीजन भी अपनी सहायक टुकड़ियों के साथ हरकत में आ गई। इस जोखिमपूर्ण दुःसाहस के लिए वायु सेना का सहयोग भी वाडिन एयर बेस से उपलब्ध था। यह स्थान कंजरकोट से 30 मील उत्तर में स्थित है।

सरदार पोस्ट एक सपाट मैदान में स्थित थी जो कि रणनीति की दृष्टि से सही नहीं थी और जिस पर सेना के स्थानीय युनिट कमांडर (लेफ्टीनेंट कर्नल के. सुन्दरजी जो कि बाद में सेना अध्यक्ष भी बने) ने आपत्ति भी जताई थी, लेकिन पाकिस्तानियों को रोकने के लिए यह पोस्ट वहीं बनी रही।

पाकिस्तानियों ने अपने आपरेशन "डेजर्ट हॉक" के इरादे के बारे में पूरी सावधानी बरती और भारतीय पोस्ट को अंधेरे में रखने में पूरी चालाकी बरती। 8 अप्रैल को वेस्ट पाकिस्तानी रेंजर की तरफ से पुलिस उप महानिरीक्षक राजकोट रेंज को एक संदेश भेजा गया, जिसमें 10 अप्रैल, 1965 को स्थानीय कमांडरों की एक बैठक का प्रस्ताव किया गया था। यह बैठक बोर्डर पर यथा–स्थिति बनाए रखने के लिए थी। उनका इरादा शान्ति वार्ता का प्रस्ताव देकर भारतीय पक्ष की गतिविधियों को रोकना था। जब पाकिस्तान द्वारा यह प्रस्ताव किया जा रहा था तब 51वीं ब्रिगेड ने 3500 आदमी जिनमें 18 पंजाब, 8 फ्रंटियर राइफल्स और 8 ब्लूच के जवान शामिल थे, ने 7 अप्रैल को लेफ्टीनेंट कर्नल मुमताज अली के नेतृत्व में भारतीय सीमा पोस्ट सरदार की ओर बढ़कर 8/9 अप्रैल को तड़के हमला कर दिया। 9 अप्रैल, 1965 को सुबह लगभग 3.30 बजे पाकिस्तानी टुकड़ियां अपनी पोजीशन से आगे बढ़ी और धुएं के आवरण का सहारा लेते हुए पाकिस्तानी सेना ने मोर्टार और 25 पॉडर बंदूकों के साथ सरदार और टॉक पोस्टों पर हमला कर दिया।

उस समय हैड कां, रणजीत सिंह एक मशीनगन थामे ड्यूटी पर तैनात थे, उन्होंने 50 से 100 गज उत्तर की ओर कुछ हलचल देखी। यह मानकर यह हलचल दुश्मन की हो सकती है, उन्होंने घुसपैठियों को ललकारा, बदले में उन्हें मिली गोलियों की बौछार जो कि पाकिस्तानी सेना के लिए मोर्टार और 25 पॉडर बन्दुकी का फायर खोल देने के लिए एक संकेत थी। एक पूरी ब्रिगेड ने अपनी पूरी ताकत के साथ सरदार और टॉक पोस्ट पर हमला कर दिया, जिसकी सुरक्षा के लिए केरिपु बल की 2 बटा, की 4 कंपनियां तैनात की गई थी। पोस्टों में स्थित जवानों ने तत्काल पोजीशन

लेकर गोलीबारी रोक दी और पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने दिया। वे सांस रोके पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ते हुए देखते रहे, चारों और छाए मौत के सन्नाटे ने पाकिस्तानियों को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि उनके द्वारा की गई भारी फायरिंग के कारण या तो पोस्ट में मौजूद सभी जवान मर गए हैं या घायल हो गए हैं। उत्साहित पाकिस्तानी टुकड़ियों ने आगे बढ़कर पोस्ट को चारों ओर से घेर लिया। पोस्ट पर जीवन का कोई निशान मौजूद नहीं था। इस मौके पर 20 हमलावर कालम में आगे बढ़े कि सभी पोस्ट में मौजूद 3 मशीनगनें हरकत में आ गई और दुश्मन पर आग बरसाने लगीं। एक पल में वे सभी जमीन पर ढेर हो गये थे। दुश्मन का दूसरा हमला पिछली तरफ से हुआ और उनका हर्ष भी वही हुआ जो पहले कॉलमों का हुआ था। इस हमले में 14 मारे गए और 4 को जीवित पकड़ लिया गया। दुश्मन को एक छोटी सफलता तब मिली, जब उत्तर पूर्वी कोने में स्थित मशीनगन जाम हो गई लेकिन केरिपु बल के जवानों ने तत्काल स्थिति को संभालते हुए जवानी हमला कर दुश्मन को खदेड़ दिया। हालांकि हमलावर लौट गए, लेकिन वह अपने साथ 19 केरिपु बल जवानों को पकड़ कर ले गए, जिनमें पोस्ट कमांडर मेजर सरदार कर्नल सिंह भी थे। यह गोलीबारी एक घंटे तक चली जिसमें दुश्मन ने पोस्ट पर कब्जा करने की तीन कोशिशें की और तीनों ही बार उसे भारी नुकसान के साथ वापस लौटना पड़ा। केरिपु बल जवानों द्वारा जवाबी कार्रवाई दुश्मन के लिए इतना बड़ा आघात थी कि संख्या और उपकरणों में बहुत श्रेष्ठ व अधिक होने के बावजूद भी उसने दोबारा हमला करने की हिम्मत नहीं की। पोस्ट पर मौजूद हमारे कुछ सौ जवानों जिनके पास हथियार भी पर्याप्त मात्रा में नहीं थे – का ऐसा था साहस और आखिरी सांस तक लड़ने की प्रतिबद्धता कि दुश्मन भी हैरत में पड़ गया।



सरदार पोस्ट

जब सुबह का धुंधलका छटा, तो पोस्ट के चारों ओर दुश्मन की लाशें बिखरी पड़ी थीं, केरिपु बल जवानों की जवाबी कार्रवाई से घबराया दुश्मन अपने 34 साथियों की लाशें पीछे छोड़ गया था और इसी धुंधलाहट में केरिपु बल जवानों पर यह राज भी खुला कि रात को उन पर हमला पाकिस्तानी सेना की पूरी पैदल ब्रिगेड ने किया था। मगर केरिपु बल के बहादुर इससे घबराए नहीं और 5 बजे तक लगातार लड़ते हुए पोस्ट की रक्षा करते रहे, जब तक कि भारतीय टुकड़ियों ने आकर पोजीशन नहीं संभाली, केरिपु बल को वापस बिर्गाकोट भेज दिया गया।

बाद के हालात

युद्ध के इतिहास में यह एक बेजोड़ घटना थी, जिसमें एक भारी संख्या में शस्त्रों और कार्मिकों से सुसज्जित सेना की टुकड़ी को एक छोटे से अर्द्ध सैनिक पुलिस बल की टुकड़ी ने लगातार 12 घंटे तक उलझाए रखा। यह नेतृत्व और संचालन की, सहयोग और मर मिटने की भावना, व उच्चकोटि के शौर्य और कौशल की अद्वितीय मिसाल थी। तत्कालीन गृह मंत्री गुलजारी लाल नंदा ने जब संसद में भारतीय जवानों के इस पराक्रम की सूचना दी, तो जवानों के शौर्य की सभी संसद सदस्यों ने खुले दिल से सराहना की। केरिपु बल के जवानों की प्रशंसा करते हुए गृह मंत्री ने संसद में कहा कि सरदार पोस्ट पर मौजद हमारी केरिपु बल यूनिटों ने कड़ा मुकाबला करते हुए

पाकिस्तानी बटालियनों को अपने चार जीवित साथियों और 34 साथियों की लाशों को छोड़कर जिनमें दो अधिकारी भी थे, पीछे लौटने के लिए मजबूर कर दिया। सरदार पोस्ट पर भारतीय जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री नंदा ने कहा कि :-

"मैं सरदार पोस्ट पर पुलिस बल के उन जवानों की बहादुरी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने पाकिस्तानी सेना की दो बटा. के हमले को भारी कठिनाईयों के बीच भी 12 घंटे तक बहादुरी के साथ लड़ते हुए विफल कर दिया।"

इस युद्ध में केरिपु बल की दूसरी बटा. के जवान मातृभूमि की रक्षा में और देश की अखण्डता को बनाए रखने के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए : (1) ना. किशोर सिंह, (2) सिपाही शमशेर सिंह, (3) सिपाही खान सिंह, (4) सिपाही हुद्दू राम, (5) सिपाही सिधवीर प्रधान – (वह घायल हो गए थे और 19.4.65 को वीरगति को प्राप्त हुए) (6) सिपाही किशन सिंह लोन : (31 जुलाई, 65 को पाकिस्तानी हिरासत में वीरगति को प्राप्त हुए। वह सरदार पोस्ट पर हमले के दौरान गोली से घायल हो गए थे।)

केरिपु बल के इन अधिकारियों और जवानों की बहादुरी पर पूरे देश ने सम्मान किया। उन्हें राष्ट्रपति के पुलिस एण्ड फायर सर्विस मेडल और शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदकों से नवाजा गया।

शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस और फायर सर्विस मेडल : (1) श्री डी.एस. पॉल, पुलिस उप अधीक्षक, कम्पनी कमांडर, (2) सूबेदार कबीरमन सुब्बा, (3) हवलदार रणजीत सिंह, (4) सिपाही विश्वनाथ सिंह, (5) सिपाही मदन लाल दत्त और (6) सिपाही श्यौ राम।

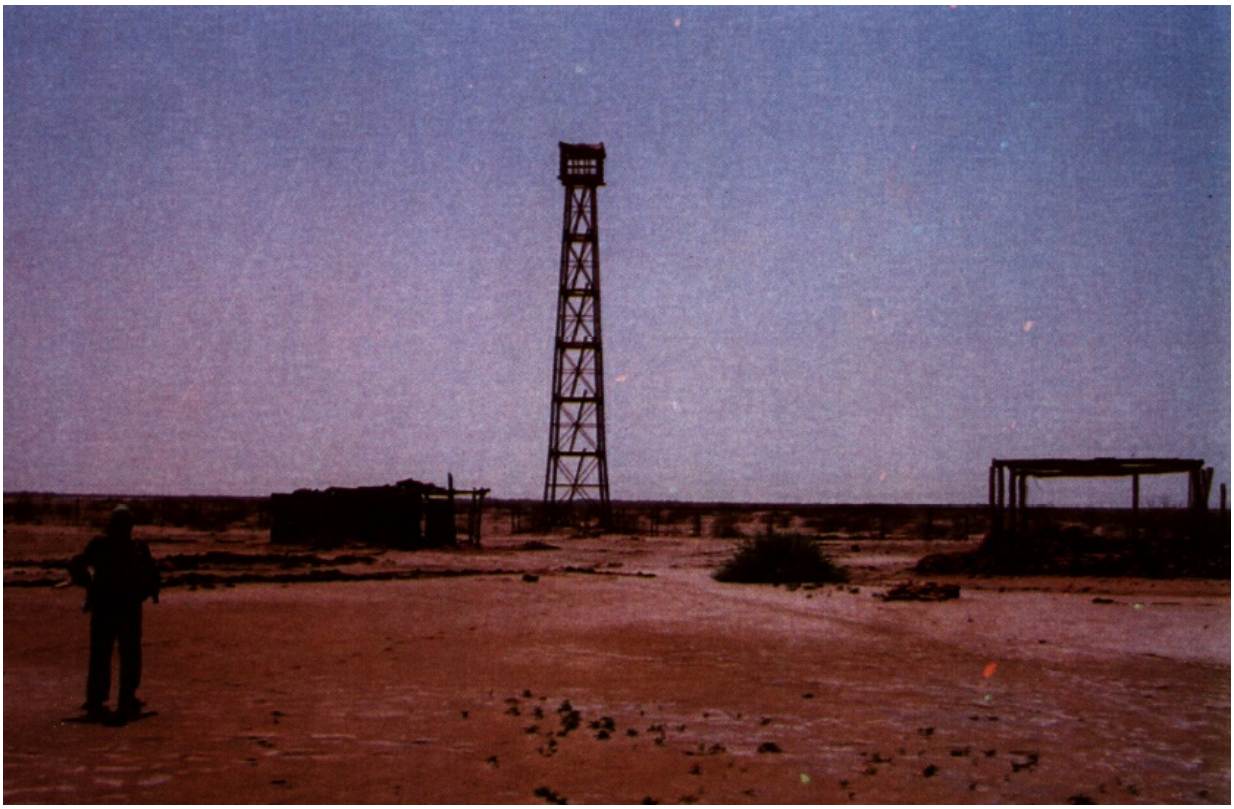
शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदकः (1) सूबेदार बलबीर सिंह, (2) जमादार जय नारायण सिंह, (3) हवलदार भवाना राम, (4) हवलदार महादेव मिलगुडे, (5) सिपाही सुच्चा सिंह, (6) सिपाही किशन सिंह और (7) सिपाही मुन्नी सिंह।

इन पदकों के अलावा सरदार पोस्ट पर अद्वितीय वीरता दिखाने वाले अन्य जवानों को बिना बारी के पदोन्नतियां और नकद इनाम दिए गए।

दूसरी बटालियन के इन बहादुर जवानों को शौर्य वीरता के पुलसि पदक प्रदान करते हुए तत्कालीन गृह मंत्री गुलजारी लाल नंदा ने कहा :-

"यह युद्ध सिर्फ भारतीय पुलिस के इतिहास में ही नहीं बल्कि सैनिक युद्ध के इतिहास में दर्ज किया जाएगा।"

सरदार पोस्ट पर केरिपु बल की एक छोटी सी, मगर बहादुर टुकड़ी के 3500 सदस्यों वाली एक विशाल सशस्त्र पाकिस्तानी ब्रिगेड को खदेड़ देने की यह एक अद्वितीय मिसाल है, यह है अद्वितीय बहादुरी, कर्तव्य परायणता और मातृभूमि की रक्षा के लिए सीधे मौत से भीड़ जाने का केरिपु बल का गौरवमयी इतिहास।



आज की सरदार पोस्ट जो सीमा सुरक्षा बल की आउट पोस्ट है

मागम पोस्ट

हमारा गौरव, दुश्मन के लिए चुनौती

—महिपाल सिंह, कमांडेंट 122 बटा, केरिपु बल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 122 बटालियन की "बी" कम्पनी की श्रीनगर गुलमर्ग मार्ग पर मागम कस्बे से लगभग एक किलोमीटर दूर स्थित मागम पोस्ट जहां आतंकवादियों की आंख की किरकिरी बनी हुई है, वहीं केरिपु बल के लिए जम्मू– कश्मीर में यह मागम पोस्ट प्रतिष्ठा का प्रतीक है। है, स बीरवाह मार्ग पर स्थित मागम पोस्ट के पश्चिम में करवा है और अन्य तीन घिरी है।

मागम आतंकवादियों का गढ़ है, हिजबुल मुजाहिदीन का यह बटालियन हैडक्वार्टर है। इस कारण से इस इलाके में आतंकवादियों की आवाजाही बहुत है किन्तु केरिपु बल की यह पोस्ट और इसमें तैनात बल के जवान आतंकवादियों की गतिविधियों में सबसे बड़ी बाधा हैं। यह पोस्ट आतंकवादियों को हमेशा सीने पर पत्थर की तरह महसूस होती रही है। इसलिए वे किसी भी तरह इस पोस्ट को ही उड़ा देना चाहते हैं, किन्तु पोस्ट में तैनात जवान उनकी हर कोशिश को नाकाम कर उनके इरादों पर पानी फेरते रहे हैं।

केरिपु बल की 122 बटालियन की "बी" कम्पनी ने 21 अप्रैल, 2001 को इस पोस्ट की स्थापना की। करीब नौ साल पहले यहां भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की एक पोस्ट थी, जिस पर आतंकवादियों ने हमला किया था। भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के जवानों को इस हमले में भारी नुकसान उठाना पड़ा था। उसके बाद से यह पोस्ट खाली पड़ी थी। 122 बटालियन की "बी" कम्पनी ने इस पोस्ट को अपने अधिकार में लेने के बाद यहां पुख्ता इंतजाम किये। हम जानते थे कि इस पोस्ट की स्थापना से आतंकवादियों की हरकतों पर रोक लगेगी, जिसे बर्दाश्त करना उनके वश में नहीं होगा, इसलिए हमें अपनी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त रूप से सजग रहना था। पोस्ट के चारों तरफ पत्थरों की दिवार बनायी गयी और मोर्चे स्थापित किये गये। मगर आतंकवादियों के खेमे में हलचल मच चुकी थी। पोस्ट स्थापना के महज तीसरे ही दिन 23–24 अप्रैल 2001 की रात–सुबह लगभग 0340 बजे पोस्ट पर रॉकेट लांचरों, राइफल ग्रेनेडों और ए.के. 47 राईफल के फायर के साथ हमला कर दिया गया। चूंकि पोस्ट चारों तरफ से ऊंचे पेड़ों से घिरी है, अतः आतंकवादी पोस्ट को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके। होशियार जवानों ने फायर का जवाब दिया और हमला नाकामयाब हो गया।

इस हमले का पोस्ट में मौजूद जवानों ने जोरदार ढंग से मुकाबला किया, हमारी तरफ से 51 एम.एम. 2" मोर्टार से 6 हाई एक्सप्लोसिव बम और 51 एम.एम. के तीन पारा बम फायर किये गये। घुप्प

अंधेरे में हमारे जवानों द्वारा स्वचालित हथियारों से फायरिंग भी लगातार जारी रही। लगभग 40 मिनट तक चले इस हमले में हमारे जवानों ने पोस्ट पर कब्जा करने या पोस्ट को तबाह कर देने की आतंकवादियों की कोशिशों को धूल में मिला दिया। तेजी से उजाले की ओर बढ़ती रात और जवानों के जवाबी हमले से घबराये आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठाते हुए अपने दांत तुड़वा कर वापस लौट गये। रोशनी होने तक कैम्प स्टैंड टू में रहा। अगली सुबह के उजाले में तड़के-कैम्प पर हुए हमले की गंभीरता का एहसास हुआ। एक आतंकवादी की लाश कैम्प के पास से बरामद की गई जिसकी शिनाख्त अशरफ बानी के रूप में कर ली गयी, जो बारामूला का रहने वाला था। उसकी मौत 51 एम.एम.एच.ई. बम के स्पलिटर लगने से हुई थी।

हम जानते थे कि अपनी इस नाकामयाबी से बौखलाए दहशतगर्द फिर हमला करेंगें। क्योंकि मागम पोस्ट उनकी आंख में कील की तरह चुभ रही थी। किसी भी संभावित हमले से बचने के लिए पोराट में हर संभव सुरक्षा इंतजाम किये गये। जवानों को सुरक्षा इंतजामों और हमले का सामने करने की रणनीति आदि के बारे में मैं स्वयं ब्रीफ करता रहा।

आतंकवादी कुछ बड़ा करने वाले मैं इसकी सूचनाएं लगातार मिल रही थी, हेजबुल मुजाहिद्दीन के बटालियन कमांडर मुस्तफा खान पर लगभग 150 हत्याओं का आरोप था। उसके हाथों मारे गये लोगों में पुलिसकर्मी, मुखबिर और आत्मसमर्पण कर चुके आतंकवादी शामिल थे। हमारे पास पुख्ता खबर थी कि पहले हमले में मुस्तफा शामिल था, और मुझे पूरी आशंका थी कि वो फिर हमला करेगा, और हमारी आशंका सच साबित हुई। महज 15 दिन बाद 9 मई, 2001 को मुस्तफा खान के नेतृत्व में दहशतगर्दों ने फिर मागम पोस्ट पर हमला किया। शाम लगभग 6 बज कर 10 मिनट पर दो व्यक्ति आईसक्रीम की रेहड़ी लेकर कैम्प के पास आए। दोनों ने संतरी से गुजारिश की कि वो उन्हें वहां आईसक्रीम बेचने दे। होशियार संतरी ने उन पर बिगड़ते हुए उन्हें फौरन वहां से खदेड़ दिया। संतरी द्वारा खदेड़ दिये जाने पर वो लोग कैम्प के गेट से लगभग 50 गज दूर मागम कस्बे की ओर जाकर खड़े हो गये। कुछ देर बाद वो फिर कैम्प की तरफ बढ़े और फिर संतरी द्वारा उन्हें पीछे लौट जाने के लिए मजबूर कर दिये जाने पर पीछे लौटते हुए कैम्प की पिछली तरफ बी.एस.एफ. कैम्प के लगभग सामने आइसक्रीम रेहड़ी में विस्फोट हो गया। रेहड़ी में आई.ई.डी और लगभग 30 किलो आर.डी.एक्स. था। तत्काल मागम शहर की ओर से कैम्प पर फायर भी होने लगा। इस विस्फोट में सात नागरिक मारे गये, और आइसक्रीम बेचने वालों के रूप में आए दोनों दहशतगर्द भी मारे गये। बाद की खबरों ने हमारी आशंका को पुष्ट किया कि विस्फोट के लिए रिमोट खुद मुस्तफा खान ने दबाया था। इस विस्फोट में सीमा सुरक्षा बल की 194 बटालियन की "ए" कम्पनी के सहायक कमांडेंट प्रमोद कुमार शहीद हुए और कुछ जवान घायल हुए, क्योंकि विस्फोट ठीक उनके कैम्प के गेट के आगे हुआ था। हमारा एक जवान घायल हुआ, मगर कैम्प की इमारत का पिछली तरफ का लगभग आधा हिस्सा इस विस्फोट के कारण ध्वस्त हो गया। इस दूसरे हमले में भी दहशतगर्द अपने इरादों में नाकामयाब

रहे।

मागम पोस्ट के महत्व को ध्यान में रखते हुए, इस घटना के बाद से मैं ने बटालियन कमांडेंट होने के नाते अपना ज्यादा वक्त मागम पोस्ट पर गुजारना शुरू किया।

इन दोनों हमलों के बीच के लगभग 15 दिनों में हमारी युनिट ने दहशतगर्दों के खिलाफ 10 बड़े ऑपरेशन किये। मागम और बडगाम जिले में चलाए गये इन सभी आपरेशनों में मैं स्वयं शामिल था। इन ऑपरेशनों में 16 कट्टर आतंकवादी मारे गये, और 8 खतरनाक आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। मारे गये आतंकवादियों में हिजबुल मुजाहिद्दीन का बटालियन कमांडर मुस्तफा खान भी शामिल था। आतंकवादियों द्वारा मागम कैम्प पर किये जा रहे कायराना हमलों का यह हमारा करारा जवाब था। इन आपरेशनों में 24 अप्रैल, 2001 को हमारे कैम्प पर हमला करने वाले आतंकवादियों के गुट का लगभग सफाया हो गया। उन 12 दहशतगर्दो में से सिर्फ दो युसूफ और सिकंदर अभी बाकी बचे हैं। खबर है कि युसूफ ने मागम इलाका छोड़ दिया है। सिकन्दर अब हिजबुल मुजाहिद्दीन का बटालियन कमांडर है। इलाके में जैश-ए-मुहम्मद और लश्कर-ए-तोयबा के भी कुछ दहशतगर्द सक्रिय हैं।

दहशतगर्द जानते थे कि उनका हर मनसूबा मागम पोस्ट में तैनात हमारे जवानों के फौलादी इरादों और जांबाजी से टकराकर ध्वस्त हो रहा है। जब तक मागम पोस्ट अपनी जगह खड़ी है, दहशतगर्दो का हर मूवमेंट बाधित है। लिहाजा दहशतगर्दो ने मागम पोस्ट पर अब तक के सबसे बड़े हमले की योजना बनाई।

पाकिस्तान में अपने आकाओं के साथ बात कर रहे दहशतगर्दो का एक वायरलैस संदेश पकड़ा गया। "हैदर भाई अब तक का सबसे बड़ा आई.ई.डी. बना लिया गया है, उसका नाम क्या रखूं", उधर से जवाब आता है। "नाम कुछ भी रखो मगर धमाका जबरदस्त होना चाहिए। "यहां से जवाब दिया जाता है, "धमाका तो ऐसा होगा कि बी.बी.सी. में खबर आएगी और इस तरह मागम पोस्ट पर हमले की योजना बनायी गयी। खबर मिलते ही मैं होशियार हो गया। और अपने कैम्प को भी होशियार कर दिया। मगर हमला हुआ, और यह किसी भी सुरक्षा बल पर किया गया अब तक का सबसे बड़ा हमला था।

हमले की योजना सिकंदर और विदेशी भाड़े के उग्रवादियों ने बनायी। 7 सितम्बर, 2001 को शाम लगभग 1730 बजे कम्पनी कमांडर राम पलट को सूचना मिली की मागम बाजार में एक ग्रेनेड पड़ा है। राम पलट फौरन एक प्लाटून के साथ बताए गए स्थान की ओर निकल गये। लेकिन कैम्प से बाहर निकलने से पहले राम पलट ने सब इंस्पेक्टर ए.पी. मंडल के नेतृत्व में एक सेक्शन को एरिया डोमीनेशन के लिए बाहर निकाल दिया। यह शाम का स्टैंड टू पोजिशन का वक्त था। अतः कैम्प में मौजूद बाकी जवान स्टैंड टू पोजीशन में थे। पोस्ट में 9 कवर मोर्चे है, जिन पर रात के वक्त संतरी तैनात रहते हैं। रात के पहले संतरी कवर मोर्चे पर अपनी पोजीशन ले चुके थे, और बाकी संतरी भी कैम्प की सीमा के साथ लगे अनकवर मोर्गों में तैनात हो गये थे।

लगभग 1920 बजे मागम की ओर से एक टिपर आता हुआ देखा गया। जब वह बिल्कुल कैम्प के नजदीक आ गया, तो वह सड़क के एकदम बायीं ओर हो गया। इसी दौरान सड़क की दूसरी तरफ से आती एक टाटा सूमो भी आ रही थी। कैम्प के मुख्य द्वार पर तैनात संतरी ने सोचा टिपर टाटा सूमो को रास्ता देने के लिए बायीं ओर सड़क पर उतरा है। टाटा सुमो उस वक्त बिल्कुल प्रवेश द्वार के आगे से गुजर रही थी तभी अचानक टिपर एकदम से मुड़कर लोहे के बैरीयर, कंटीले तारों और लकड़ी के लट्ठों से बने गेट को तोड़ता हुआ कैम्प के अंदर घुस गया, संतरी ने तत्काल शोर मचा दिया। प्रवेश द्वार के बायीं ओर के संतरी ने ट्रक पर फायर किया, मगर ट्रक सारी बाधाओं को तोड़ता हुआ कैम्प की रिहायशी इमारत से महज 10 फुट पहले एक भयंकर विस्फोट के साथ उड़ गया। ट्रक में तीन प्लास्टिक के ड्रमों में 100 किलो आर.डी.एक्स/आई.ई.डी. मौजूद था। ट्रक में मौजूद फिदायन दहशतगर्द का इरादा रिहायशी इमारत को उड़ा देने का था, लेकिन वह अपने इरादे में कामयाब नहीं हो पाया, क्योंकि ट्रक का अगला पहिया रिहायशी इमारत से 10 फुट पहले बनी ट्रैंच में फंस गया।



कमांडेंट महिपाल सिंह मागम कैम्प पर आतंकवादियों द्वारा दागा गया एंटी टैंक राकेट दिखाते हुए / राकेट फटा नहीं, क्योंकि उसे दागने वाले आतंकवादी उस की पिन निकलना भूल गए थे / आतंकवादियों द्वारा एंटी टैंक राकेट के इस्तेमाल की यह अपनी तरह की पहली घटना है /

तीन प्लास्टिक के ड्रमों में भरे 100 किलो आर.डी.एक्स. के धमाके ने न सिर्फ पूरी इमारत गिरा दी, बल्कि कैम्प के आहते में लगे पेड़ों को भी धमाके से साथ उड़ा दिया। इसी दौरान तीन मारूति कारें कैम्प की ओर बढ़ती देखी गयीं, उन्हें रोकने

और वापस लौटने का संकेत दिया गया, किन्तु वे नहीं रूकें। कम्पनी कमांडर अब तक कैम्प में लौट आए थे, उन्होंने तत्काल कारों पर फायर खोलने का आदेश दिया। चुनौती मिलने पर पिछली दो कारों में सवार दहशतगर्द फौरन पलट कर भाग खड़े हुए। अगली मारूति की लाइटें जलती छोड़कर उसे सड़क पर ही छोड़ दिया गया। दरअसल दहशतगर्द इस मारूति और टाटा सूमो को कवरअप की तरह इस्तेमाल कर रहे थे।

इस आई.ई.डी. धमाके में 122 बटालियन की "बी" कम्पनी के 7 जवान घायल हुए। एक सिपाही विजय पवार मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हुआ। लगभग डेढ़ किलो लोहे का टुकड़ा उसके चेहरे पर लगा था। जिससे उसका ऊपरी चेहरा पूरी तरह उड़ गया था। फिदाईन हमलावर का जिस्म चिथड़ों में उड़कर लाईन के अंदर जा गिरा। सड़क पर जा रही टाटा सूमो की छत पूरी तरह उड़ गयी और उसमें सवार एक नागरिक वहीं मारा गया। कैम्प के जवान अगर धमाके के सदमे से उबरने में जरा भी देर लगा देते, और कैम्प की ओर बढ़ती मारूतियों में सवार दहशतगर्दों को नहीं रोक देते, तो बहुत बड़ा हादसा हो जाता। जवानों की तुरंत हरकत और मोर्चे संभाल लेने के कारण, पूरे कैम्प और कैम्प में मौजूद सभी जवानों को एक ही झटके में खत्म कर देने के उनके मनसूबे फिर धूल में मिल गये। कैम्प में मौजूद ट्रकों को रूकावट के रूप में प्रवेश द्वार पर अड़ा दिया गया। सारे अधिकारियों और जवानों ने सारी रात मोर्चों में काटी।

दरअसल रिहायशी लाईन से पहले जिस ट्रेंच ने विस्फोटक से लदे ट्रक को इमारत तक पहुंचने से पहले ही रोक लिया था। वह ट्रेंच कुछ दिन पहले ही महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर, श्री एच. के. सरीन के आदेश से खोदी गयी थी। श्री एच.के. सरीन की इस दूरदर्शिता के कारण कई जानें जाने से बच गई।

सिविल पुलिस की तहकीकात के बाद जो जानकारी प्रकाश में आयी, उसके मुताबिक मागम से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर बुदरान गांव से टिपर में विस्फोटक लादा गया। करीब 20 दहशतगर्दों को विस्फोट के फौरान बाद कैम्प पर हमला करने के आदेश दिये गये। एक दहशतगर्द टिपर से आगे मारूती में था। उसी के हाथ में विस्फोटक को उड़ाने के लिए रिमोट था और जब टिपर सारे बैरियर तोड़ने के बाद ट्रेंच में फंस गया, तो उसी दहशतगर्द ने रिमोट दबाकर विस्फोट कर दिया। इस हमले के बाद रेगुलर स्टैंड टू की महत्ता एक बार और स्पष्ट हो गयी। अगर जवान स्टैंड टू में न होकर लाईन में होते, तो उस हालात में होने वाले नुकसान की कल्पना करना भी नामुमकिन है।

इस घटना के बाद कैम्प की सुरक्षा के इंतजाम और पुख्ता कर दिये गये। फिदाइन हमलों से बचने के लिए अगले ही दिन पूरे कैम्प के चारों ओर 4 × 4 फुट की ट्रेंच खोद दी गयी। कैम्प के अंदर गाड़ियों के प्रवेश के रास्ते को दुश्वार बना दिया गया। कैम्प की चारदीवारी ऊंची कर दी गयी। रात दिन लगकर जवानों ने ध्वस्त इमारत को फिर खड़ा कर दिया।

घाटी में स्थित सिर्फ केरेपु बल ही नहीं, बल्कि अन्य सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने भी बारबार मागम कैम्प का दौरा किया, और यहां के सुरक्षा इंतजामों से सबक लेकर उन्हें अपने कैम्पों में भी लागू किया।



फिदाईन हमले में ध्वस्त हुआ ट्रक एवं कैम्प की इमारत

इस हमले के बाद मैं बहुत ज्यादा सतर्क हो गया। मैं जानता था इतना बड़ा हमला नाकामयाब हो जाने की चोट दहशतगर्द और सरहद पार बैठे उनके आका बर्दाश्त नहीं कर पाएंगें। इसलिए दहशतगर्दों पर हमने अपना दबाव बढ़ा दियां। छोटे-मोटे ऑपरेशन चलते रहे, किन्तु कोई बड़ी कामयाबी हाथ नहीं लगी।

हमारी मागम और बीरवाह पोस्ट पूरी तरह सतर्क है। हम दहशतगर्दों के किसी भी इरादे को कामयाब न होने देने के लिए कृतसंकल्प हैं। ये बात दहशतगर्द भी जानते हैं कि उनके मकसद और उनकी राह के बीच अगर कोई रोड़ा बनेगा, तो वह केरिपु बल की 122 बटालियन की मागम पोस्ट में स्थित जवान ही होंगे। तभी सरहद पार से पकड़े जाने वाले दहशतगर्दों के करीब-करीब हर वायरलैस संदेश में यह जुमला जरूर होता है "मागम पोस्ट का क्या हुआ"। मागम कैम्प आज जहां काश्मीर में सिर्फ केरिपु बल के लिए ही नहीं, बल्कि सभी सुरक्षा बलों के लिए प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गयी है। वहीं यह दहशतगर्दों के लिए आंख की किरकिरी भी बनी हुयी है, ऐसी किरकिरी जो हिन्दुस्तान से लेकर पाकिस्तान तक में दहशतगर्दों के आकाओं को परेशान किये हुए है।

अगर दुश्मन को कामयाब होना है, तो पहले उसे मागम पोस्ट को तबाह करना

होगा। हम जानते हैं वह चुप नहीं बैठेगा, हमला फिर होगा।

हम होशियर हैं, हमारा हर जवान चौकन्ना है, और इस बार दुश्मन के दांत नहीं कमर तोड़ देने के लिए तैयार हैं। जम्मू-कश्मीर में दहशतगर्दी के दौर ने कश्मीरियों के साथ-साथ हर वतन-परस्त हिन्दुस्तानी के दर्द को पहाड़ जैसा विशाल कर दिया है, किंतु हमारा हर जवान इस कोशिश में लगा है कि काश्मीर में अमन, तरक्की और सकून का दौर फिर लौटे, हर जवान इस उम्मीद से बंधा है कि उसकी कोशिशें जरूर कामयाब होंगी। और जब खुशहाली के दिनों में कश्मीर के इतिहास पर चर्चा होगी तो हमारी मागम पोस्ट को उसी सम्मान और गर्व के साथ याद किया जाएगा, जिस सम्मान और गर्व के साथ गुजरात की सरदार पोस्ट को याद किया जाता है।

काश्मीर डायरी

दहशतगर्दी के बदलते दौर की आहट

–सहा. कमांडेंट अनिल गुप्ता, 122 बटा., केरिपु बल

17 नवम्बर 2001 को 122 बटालियन केरिपु बल के उप कमांडेंट परिचालन श्री भट्टाचार्य, अपनी मागम पोस्ट पर जाने वाले थे, उनके साथ मागम पोस्ट पर भेजा जाने वाला ड्रमों में भरा पेट्रोल और डीजल भी था। कमांडेंट महिपाल सिंह को भनक मिली कि कुछ गड़बड़ है और श्री भट्टाचार्य को मागम जाने से रोक दिया गया। बावजूद इसके कि मागम पोस्ट पर गाड़ियों के लिए तेल की अत्याधिक आवश्यकता थी। आशंका सच थी, रास्ते में दहशतगर्द घात लगाए बैठे थे और करीब करीब ठीक उसी वक्त जब कि श्री भट्टाचार्य उस रास्ते से गुजरने वाले थे, दहशतगर्दों ने एक नागरिक बस में ग्रेनेड फेंक कर कई नागरिकों को घायल कर दिया। निशाना हम थे, शिकार हुए मासूम नागरिक, भाग्य हमारे साथ था। अगले दिन 18 नवम्बर 2001 को कमांडेंट महिपाल सिंह स्वयं अपनी पार्टी को लेकर अपनी मागम और बीरवाह पोस्टों की तरफ निकल गये, जहां उन्हें दो जबरदस्त सूचनाएं मिली। जबरदस्त इसलिए कि इसमें से एक सूचना दहशतगर्दों के तथाकथित जेहाद के नैतिक आधार को उघाड़ती थी, और दूसरी सूचना ये संकेत दे रही थी कि शायद घाटी में दहशतगर्दी का दौर नयी करवट लेने वाला है।

पहली खबर सिकंदर के बारे में थी। सिकंदर-बड़गाम जिले में हिजबुल मुजाहीद्दीन का बटालियन कमांडर। 122 बटालियन की मागम पोस्ट पर हुए हर हमले में शामिल। खबर मिली कि उसे करीब 15 रोज पहले खुद उसी के साथियों ने मार दिया। खबर चौंकाने वाली थी। दूसरी खबर सरहद पार के दहशतगर्दों के बारे में थी। जो काश्मीर में दहशतगर्दी के मुत्तालिक दुश्मन की मंशाओं को जाहिर कर रही

थी। मगर उसका जिक्र बाद में मागम हम गये थे 16 और 17 नवम्बर 2001 को, दो मुठभेड़ों में मिली सफलताओं के लिए जवानों की हौंसला आफजाई करने।

16 नवम्बर 2001 को मालपोरा हंजन, माजमा और लावाएपोरा में दहशतगर्दों के साथ हुए जबरदस्त मुकाबले में चार विदेशी आतंकवादी मारे गये। सुबह साढ़े पांच बजे से देर शाम तक चले इस मुकाबले में राष्ट्रीय रायफल्स के जवानों के साथ मिल कर 122 बटालियन के जवानों ने जबरदस्त घेराबंदी की नतीजतन दहशतगर्दों की घेरा तोड़ कर भागने की हर कोशिश नाकामयाब रही और उन्होंने गांव हंजन के एक घर में पनाह ले ली, यही पनाहगाह आखिर उन की कब्रगाह बनी। जैश-ए-मोहम्मद के इन चार दहशतगर्दों के पास से चार ए.के. 56 राईफलें, एक पिस्तौल और भारी तादाद में दूसरा असला बरामद किया गया।



मागम पोस्ट के एक मोर्चे पर तैनात जवान

इससे अगले ही दिन 17 नवम्बर 2001 को फिर हमारे इन्हीं जवानों ने बड़गाम जिले के गांव रियार बीरू में संदिग्ध अवस्था में भागते एक शख्स को ललकारा, तो उसने हमारी पार्टी पर फायर खोलते हुए एक घर में पनाह ले ली। कुछ देर चली गोलीबारी के बाद मकान से दहशतगर्द की लाश बरामद कर ली गयी। साथ ही दो मैगजीन के साथ एक पिस्तौल भी बरामद की गयी।

इन दो आपरेशनों के फौरन बाद अगले ही दिन 18 नवम्बर 2001 को कमांडेंट महिपाल सिंह ने अपनी मागम पोस्ट पर अपने सैट पर दहशतगर्दों के एक वायरलैस संदेश को पकड़ा। मागम से कुछ दहशतगर्द सरहद पार अलबदर के कमांडर के साथ बात कर रहे थे।

यहीं हमें मालूम हुआ कि सिकंदर मारा गया। खुद उसी के साथियों ने उसे निहत्था कर पीरपंजाल की पहाड़ियों में ले जाकर गोलियों से भून डाला। खबर हैरत अंगेज थी। सिकंदर इतनी आसान मौत मरा होगा, और वो भी अपने ही साथियों के हाथों; यकीन नहीं हो रहा था, आखिर क्यों ?

इस क्यों का जवाब हमें बीरवाह में मिला और इसी जवाब ने इन कथित जेहादियों के नैतिक आधार को भी उधेड़ कर रख दिया।

मागम से बीरवाह तक का सफर कुछ ऐसा है, मानो हम सड़क पर बारूद की परतों पर से गुजर रहे हों, पता नहीं कब कहां किस घर से आप की गाड़ी पर ग्रेनेड फेंक दिया जाए या फायरिंग खोल दी जाए। यह काश्मीर घाटी में दहशतगर्दों की सर्वाधिक होट बेल्ट है।

बीरवाह में 16 और 17 नवम्बर को मारे गये दहशतगर्दों की शिनाख्त के लिए करीब करीब पूरा गांव मौजूद था। दहशतगर्दों में से तीन की पहचान फरहान, तोयूब और सज्जाद के रूप में हो चुकी थी। यहीं हमें सिकंदर के कत्ल कि असलियत मालूम हुयी। मालूम हुआ कि सिकंदर अपने ही एक साथी मुस्तफा की बहन पर आशिक हो गया था। सिर्फ उसी पर नहीं बल्कि उसकी नजरों में आने वाली हर खूबसूरत लड़की उसकी हवस का शिकार बनी। उसने जिस घर में पनाह ली उस घर की बहू बेटियों को उसका हम बिस्तर होना पड़ा। जब तक ये लड़कियां मासूम नागरिकों की थी, तब तक ठीक था, मगर जब वह अपने ही साथियों की बहन बेटियों पर भी नजर रखने लगा तो खुद उसी के साथियों ने उसे निहत्था कर मार दिया। यों कसूर सिकंदर का भी नहीं था, उसे और बाकी अफगान दहशतगर्दों को भी घाटी में धकेलने से पहले और दूसरे लालचों के अलावा एक लालच ये भी दिया जाता है कि काश्मीर अगर जन्नत हैं तो जन्नत की हूरें उनकी मिल्कियत हैं और उनके जेहाद की कीमत भी। शायद इसीलिए करीब करीब हर विदेशी दहशतगर्द ने यहां कई कई शादियां की हैं।



अपने सैट पर आतंकवादियों के सरहद पार के संदेश को सुनते कमां. महीपाल सिंह

जिस मुस्तफा की बहन पर आशिक हो कर सिकंदर ने अपनी जान गंवाई, वो खुद खतरनाक दहशतगर्द था, जिस पर करीब 150 हत्याओं का आरोप था, और जो 30 जुलाई 2001 को 122 बटालियन के जवानों के साथ हुई एक जबरदस्त मुठभेड़ में मारा गया था। जुलाई से अक्तूबर 2001 तक के महिनें 122 बटालियन के लिए जबरदस्त आपरेशनल कामयाबियों के महिने थे, मगर इन कामयाबियों में भी मुस्तफा का सफाया इसलिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि उसके खात्मे के बाद इलाके से हमें सूचनाएं मिलने लगी। वरना मुस्तफा के जिंदा रहते तो आलम ये था कि सूचना देने वाले के पूरे के पूरे परिवार को वह उड़ा देता था। जबरदस्त शातिर और चालाक

था वो। 21 अप्रैल 2001 को मागम में स्थापित होती 122 बटालियन की पोस्ट को वह सामने 15-20 गज के फासले पर धूप में एक आम गांव वाले की तरह लेट कर देखता रहा, और महज तीन दिन बाद उसने अपने साथियों के साथ पोस्ट पर हमला कर दिया।

जंग के मैदान में कामयाबी की दास्तान खून से लिखी जाती हैं और वो खून कायरता से छिप कर, मासूमों पर हमला कर नहीं बहाया जाता। वो खून जो कामयाबी की दास्तान लिखता हैं, वो या तो बहादुरी से अपने सीने पर गोली खाते जवानों के जिस्म से गिरता हैं या फिर उनकी गोली ये खून दुश्मन की छाती चीर कर जमीन पर गिराती है।

हर जुल्म की इन्तहा हैं, हर पाप का अंत हैं, बदी पर नेकी की जीत निश्चित हैं। मुस्तफा के पापों का घड़ा भी भर चुका था। बहुत जल्दी वो हमारे जाल में फंस गया। मुस्तफा का सफाया उसके खौफ के बावजूद इलाके में काम कर रहे हमारे सूचनातंत्र की सक्रियता के कारण हुआ। 30 जुलाई 2001 को बडगाम जिले के गोइगाम इलाके में मुस्तफा की मौजूदगी के बारे में मिली पुख्ता खबर के बाद खुद कमांडेंट महिपाल सिंह अपनी क्यू.आर.टी. और मागम में मौजूद अपनी कम्पनी के जवानों के साथ मौके पर पहुंचे। बाद में आपरेशन में राष्ट्रीय राईफल्स के जवान भी शामिल हुए। खबर पुख्ता थी कि मुस्तफा और उसके साथी गांव की मस्जिद के साथ लगी जियारत में मौजूद हैं। सुबह 5.30 बजे मस्जिद और जियारत को घेर लिया गया। बार-बार एलान कर दहशतगर्दों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। उन्हें कहा गया कि वे अपने हथियार फेंक कर बाहर आएं, मगर मुस्तफा और उसके साथियों ने आत्मसमर्पण का नाटक रचा और करीब 9.10 बजे दो दहशतगर्द अपने हथियार ऊपर उठाये बाहर आए, उनकी उंगली हथियारों के ट्रिगर पर थी, पास आकर वह निशाना साधते इससे पहले ही उनकी मंशा भांपकर हमारे जवानों ने एल.एम.जी. का फायर खोल दिया। पहले से ही होशियार दहशतगर्दों ने भी पोजीशन ले ली और उनकी तरफ से भारी फायर होने लगा। 18.00 बजे तक एक भी दहशतगर्द नहीं मारा गया। तीन दहशतगर्द जियारत की चारदिवारी के साथ एक ट्रेंच में पोजीशन लिए हुए थे। आखिर उन्हें ट्रेंच में घेर कर जब ग्रेनेड दागे गये तो उनकी और से फायर आना बंद हुआ। करीब 18.00 से 19.00 बजे के बीच तीन आतंकवादी मारे जा चुके थे। उनके पास से तीन ए.के. 47 रायफलें, और भारी असला बरामद हुआ। मारे गए दहशतर्दों में जब एक की पहचान मुस्तफा खान के रूप में हो गयी तो मालूम हुआ कि कामयाबी की एक जबरदस्त दास्तान लिखी जा चुकी है।



मागम पोस्ट के एक मोर्चे पर तैनात जवान

मुस्तफा के मारे जाने की खबर इतनी जबरदस्त थी कि लोगों को यकीन नहीं हो रहा था। खुद एस.पी. बड़गाम अश्क हुसैन बुखारी, कमांडेंट महिपाल सिंह से उनके सैट पर बार बार पूछ रहे थे कि क्या ये सच है कि मुस्तफा मारा गया। आप ने उसे देखा हैं, उसे पहचाना हैं। कमांडेंट महिपाल का जवाब था, "मैंने उसे देखा है, पहचाना है, उसकी लाश मेरे सामने पड़ी है।"

खबर इलाके में फैली और लोग झूम उठे। पाठकों को सहज यकीन नहीं होगा, मगर यह सच है कि दहशतगर्दों के गढ़ माने जाने वाले इस इलाके में मुस्तफा की मौत पर लोग सड़कों पर निकल कर नाचे।

करीब 150 मासूमों, जवानों, पुलिस वालों और आत्मसमर्पण कर चुके राह के भटके नौजवानों का बेरहमी से कत्ल कर चुके इसी मुस्तफा की बहन पर नजर रखने के लिए सिकंदर मारा गया।

दूसरी खबर जो बीरवाह में मिली वो ये थी कि पाकिस्तान 1990 के आसपास के उन काश्मीरी लड़कों को अब वापस काश्मीर भेज रहा है, जो वहीं बस चुके हैं। अपने और अफगानी दहशतगर्दों को शायद अब वो अपने और अफगानिस्तान के हालात से निबटने के लिए तैनात किये रहना चाहता है। यानी आने वाले दिनों में घाटी में विदेशी दहशतगर्दों की हरकतों में कमी आने का अंदेशा हैं, मगर साथ ही लोकल नौजवानों को ये कह कर बरगलाया भी जा रहा हैं कि ये तुम्हारी लड़ाई है तुम लड़ो। हां मदद हम जरूर देंगे। दुश्मन की इस मंशा की पुष्टि इस बात से भी होती है कि

पिछले दो महिनो में ही अकेले बड़गाम जिले की खानसाब से बीरवाह हो कर मागम तक की बेल्ट के ही करीब 100 लड़कों को सरहद पार कर पाकिस्तान भेजा गया है। उनका ब्रेनवाश कर आंखों के आगे गफलत का पर्दा डाल कर, हथियारों की ट्रेनिंग देने के लिए। ताकि वो अंधे हो कर आएं, और खुद अपनी उसी जमीन का सीना गोलियों से छलनी करें जिसकी गोद में वो खेलकर बड़े हुए हैं, परवान चढ़े हैं। जिस की मिट्टी से उनके वो हाथ बने हैं, जिन में उन्होंने उसी के खिलाफ बंदूक थामी हुयी है।


adidas

अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक्स चैम्पियनशिप की हैमर थ्रो प्रतियोगिता में नया रिकार्ड स्थापित कर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली केरिपु बल की कुमारी फूलपति

रजि. न. 4767/87



देश की सेवा, प्रतिबद्धता और समर्पण के 62 सालों की गौरवशाली परंपरा के साथ
भविष्य की चुनौतियों से निबटने के लिए कटिबद्ध केरिपु बल